Rs 10 P 00

प्रकाशक—
कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी।

RAKTA-MANDAL

[Vol. I]

Rs. 6/-

प्रथम संस्करण—सन् १९२६ ई०
बारहवां संस्करण—सन् १९७० ई०
सजिल्द, मूल्य—६/-

—मुद्रक
लहरी प्रेस,
वाराणसी।

दो शब्द

इस रक्त-मंडल उपन्यास का भी अपना एक निजी छोटा सा इतिहास है। यह लिखा गया सन् १९२३ में परन्तु कई कारणों से पहला भाग प्रकाशित हुआ सन् १९२६ में जिसके बाद अन्तिम अर्थात् चौथा भाग सन् १९३० में छपा। पहला भाग छपते ही पुस्तक ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया और इसकी धूम मच गई जिससे सन् १९३० में ही समूची पुस्तक का दूसरा संस्करण भी हो गया। असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में सन् १९३०, १९३१, तथा १९३२ का अधिकांश समय इसके लेखक को जेलों में काटना पड़ा और कदाचित् इसी कारण सी०आई०डी० की दृष्टि इस उपन्यास पर पड़ गई। एक दिन अचानक ही लहरी प्रेस पर पुलिस का धावा हुआ और एक हजार प्रतियों का नया पूरा संस्करण पुलिस समूचा उठा ले गई, जिसके कुछ समय बाद सरकारी आदेश-पत्र द्वारा यह उपन्यास जब्त घोषित कर दिया गया।

मगर इसी बीच जनता में इस पुस्तक के प्रति इतनी रुचि बढ़ गई थी कि इसकी एक एक प्रति सोलह सोलह और बीस बीस रुपयों में खरीद कर लोगों ने पढ़ी और पुस्तक की मांग चारो तरफ से होने लगी। जनता की पुकार देख कर इसका नया संस्करण करने की बात सोची जाने लगी। मूल संस्करण के अनुसार छापना तो असाध्य था परन्तु जनता का आग्रह देख लेखक ने इसकी कहानी में किंचित साधारण सा परिवर्तन कर दिया। इसका घटनास्थल 'भारत' से हटा कर पड़ोस का एक काल्पनिक स्वतन्त्र राज्य 'सुंग' कर दिया गया और गवर्नर-जेनरल की जगह महाराज जालिम-सिंह तथा जंगी लाट की जगह मेहता कृष्णचन्द्र आदि आदि नाम रख दिए गए। इस तरह केवल कुछ नामों के फेर बदल के सिवाय बाकी सब की सब कहानी अक्षरशः ज्यों की त्यों छोड़ दी गई और इस परिवर्तित स्वरूप में 'मृत्यु-किरण' के नाम से यह उपन्यास पुनः प्रकाशित किया गया।

इस नए रंग-रूप में भी उपन्यास का प्रचार बढ़ता ही गया परन्तु चूंकि स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी वह जब्ती का आर्डर बना ही रहा इस कारण उसी परिवर्तित स्वरूप और 'मृत्यु-किरण' नाम से इस उपन्यास के कई और संस्करण हुए।

आज यह देख कर कि वातावरण बहुत कुछ बदल चुका है, इस पुस्तक का एक ऐतिहासिक महत्व हो गया है, और जनता पुनः इसका पूर्व-स्वरूप देखने की अभिलाषी हो गई है, यह उपन्यास अब अपने उसी मूल स्वरूप में प्रकाशित किया जा रहा है जिस स्वरूप में इसे भारतीय स्वराज्य संग्राम का एक अंग बनने का गौरव प्राप्त हो चुका है, परन्तु हम नहीं जानते कि इस रूप में वर्तमान समाज इस पुस्तक को कितना पसन्द करेगा क्योंकि आज की स्थिति उस समय से एकदम भिन्न हो गई है जब यह पहले पहल प्रकाशित हुआ था।

मूल संस्करण से बाद के संस्करणों में जो कुछ अन्तर डाला गया था उसकी मोटी मोटी बातें इस प्रकार हैं:—

(१) भारत	—सुंग राज्य
(२) बड़े लाट	—महाराज जालिमसिंह
(३) जंगी लाट	—मेहता कृष्णचन्द्र
(४) छोटे लाट	—राजकुमार
(५) मिस्टर ग्रिफिथ	—सरदार हुकुमसिंह
(६) कलेक्टर	—दीवान
(७) शिमला	—माहिमपुर
(८) गंगा नदी	—सांगा झील

आदि आदि—

——

॥ श्रीः ॥



रक्त-मंडल

(पहिला भाग)

चोट पर चोट

[१]

राय साहब बाबू बटुकचन्द अपने कमरे में आरामकुर्सी पर बैठे एक उपन्यास पढ़ रहे थे जब नौकर ने अखबार ला कर सामने रख दिया ।

लपक कर राय साहब ने अखबार उठाया और खोल कर देखा । आज पहिली तारीख थी । नये साल की खुशी में सरकार की तरफ से जो ओहदे बंटे थे उनकी सूची छपी होगी । राय साहब को भी कुछ पाने की आशा थी, क्योंकि गत वर्ष जब बहुत कुछ दौड़ धूप और 'डाली भेजौवल' पर भी उन्हें कुछ मिला न था तो कलेक्टर साहब ने इनका रोना मुंह देख कर बड़ी सहानुभूति के साथ कहा था, "वेल बटुकचन्द, इस साल टो कुछ न हुआ मगर मैं अगले साल डेखूंगा कि तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं ।" बटुकचन्द साहबों की बात ब्रह्मवाक्य समझते थे। इतना सुन उन्हें विश्वास हो गया था कि अगले साल वे जरूर 'साहब' से 'बहादुर' हो जांयगे । इसी से साल भर उन्होंने कलेक्टर साहब और उनकी मेम की पदचर्या भी

अच्छी तरह की थी और सब तरह से उन्हें राजी रखने की कोशिश करते रहे थे, परन्तु अफसोस ! साल बीतने के एक ही महीना पहिले पुराने साहब बदल कर गाजीपुर चले गये और एक नये साहब उनकी जगह आ गये जिनसे अभी बटुकचन्द की काफी 'घिस-पिस' हो न सकी थी, फिर भी यह सोच कर कि 'निष्काम सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती' वे इस आशा में थे कि अबकी पहिली तारीख उनके लिये जरूर ही वह सुखदाई खबर लायेगी जिसके लिए उन्होंने गत पाँच वर्षों से लगातार कोशिश की थी और एड़ी का पसीना माथे तक पहुंचाया था ! आज वही दिन आया था और पहिली तारीख की 'उपाधि-वर्षा' उनके सामने थी । उत्तेजना के मारे बटुकचन्द का हाथ कांपने लगा ।

सब शीर्षकों को सरसरी निगाह से देखते और पन्नों को तेजी के साथ उलटते हुए वे उस जगह पहुंचे जहाँ उपाधियों की लम्बी सूची छपी हुई थी । धड़कते कलेजे के साथ बटुकचन्द उसे पढ़ने लगे ।

एक दफे पढ़ा, दो दफे पढ़ा-तीन दफे पढ़ा, मगर उस सम्बी सूची में राय साहब को कहीं भी अपना नाम न दिखाई पड़ा । उनका दिल बैठ गया, आंखों में आँसू आ गये, मुँह से एक 'आह' निकल गई । माथे पर हाथ मार उन्होंने अखबार फेंक दिया तथा टेबुल पर सिर टेक लम्बी लम्बी साँसें लेने लगे ।

बड़ी देर तक बटुकचन्द की यही हालत रही । आखिर उन्होंने सिर उठाया । इस बीच में वे 'साहबों की भुठाई' से लेकर 'किस्मत की बदनसीबी' तक सभी तरह की बातें विचार चुके थे और अपनी किस गलती की वजह से इस साल भी रायबहादुरी से वंचित रह गये इसे भी सोच चुके थे । अपने को सम्हाल उन्होंने फिर अखबार उठाया और 'काशी' हेडिंग के नीचे के नामों को खोज कर यह जानने की फिक्र में पड़े कि उनके शहर में से और किस किस को क्या क्या मिला है । केवल तीन ही चार नाम थे पर उनमें 'नकुलचन्द' के नाम के आगे 'राय बहादुर' देख वे फिर तिलमिला गये । अचानक उनके मुँह से निकल पड़ा—"हैं ! इस खुशामदी

लौंडे को राय बहादुरी मिल गई और मैं सूखा ही रह गया !!" उन्हें उस दिन की बात याद आ गई जब आज से कोई छः महीने पहिले कलेक्टर साहब के बंगले पर वे और नकुलचन्द एक साथ ही पहुँचे थे। सिर्फ आध ही घन्टा ठहरने के बाद वे साहब के 'हुजूर' में बुला लिए गये थे और नकुलचन्द बरामदे में ही टहलते रह गये थे। उनके कान में नकुलचन्द के डाह से भरे ये शब्द गूँज उठे—"अच्छा अच्छा, रायसाहब हो, तभी भीतर चले हो,मगर देखना मैं भी छः महीने के अन्दर रायसाहबी न पाऊँ और तुम्हारे मुकाबले में न आ पहुंचूँ तो मेरा नाम नकुलचन्द नहीं !!"

बस इसके बाद ही तो खुशामद और मुखबिरी की जो मुहिम नकुलचन्द ने शुरू की कि बड़े बड़े लोग लोहा मान गये। 'ताबेदार' तो उनका नाम ही पड़ गया। जितने टोपधारी गोरे साहब उस समय काशी में थे या बाद में आए सभी का नकुलचन्द अपने को 'ताबेदार' समझते और मानते थे और वे भी खुलेआम उनको वैसा ही समझते थे, यहां तक कि कुछ साहब तो उन्हें चीठी में भी 'माई डियर ताबेदार' लिखते थे। बटुकचन्द और कितने ही दरबारी नकुलचन्द पर हँसते थे और उसे 'खुशामदी' 'टाउट' 'टोडी' और न जाने किस किस नाम से पुकारते थे—पर आज सब का बदला चुक गया। आज नकुलचन्द बाजी मार ले गया। वह बिल्कुल मामूली आदमी से 'राय बहादुर' बन बैठा और बटुकचन्द राय साहब के राय साहब ही रह गये। बटुकचन्द को यह चोट उससे भी कहीं कड़ी लगी जो अपने को तरक्की करते न देख अभी थोड़ी देर पहिले उन्हें लगी थी। एक खुशामदी लौंडे को अपने बराबर ही नहीं अपने से बढ़ जाते देख उन्हें यही मालूम हुआ कि यह उनका अपना निजी अपमान हुआ है। उनके लिये यह वैसी ही बात हुई—"पिय को मारिबो न सालत है पर सालत सौत बचाइबो तेरो !"

बटुकचन्द ने जोर से एक मुक्का नकुलचन्द के नाम पर मारा और अखबार फर्श पर फेंक उठ खड़े हुए।

(२)

रायसाहब बाबू बटुकचन्द की मोटर उनके आलीशान मकान के फाटक पर आकर रुकी और रायसाहब उस पर से उतरे। न जाने इस समय वे कहाँ से लौट रहे थे, पर उनके चेहरे की मुसकुराहट से मालूम होता था कि वे जहाँ और जिस काम के लिये भी गये हों, उसमें सफल हुए हैं।

नौकर चाकर अदब से खड़े हो गये। रायसाहब फाटक के अन्दर घुसा ही चाहते थे कि किसी आदमी ने आगे बढ़ कर सलाम किया और एक बन्द लिफाफा उनके हाथ में दे दिया। बटुकचन्द ने आश्चर्य की निगाह उस लिफाके पर और दूसरी सवाल की उस आदमी पर डाली जिसने इस तरह उनके 'पोजीशन' का कुछ भी खयाल न कर उनके हाथ में चीठी देने की जुर्रत की थी पर वह आदमी कुछ भी न बोला और फिर एक दफे सलाम करने बाद घूम कर चला गया। कुछ सोचते हुए राय साहब भीतर चले।

कपड़े उतार कर कुछ देर ठंढे होने के बाद रायसाहब ने वह लिफाफा खोला। उसका लाल रंग देख उन्होंने उसे किसी तरह के न्योते की चीठी समझा था पर भीतर जो कुछ पढ़ा उसने तो उनका सिर ही घुमा दिया। चीठी का मजमून यह था :—

"बटुकचन्द !

"तुम्हारे पास रुपया जरूरत से ज्यादा है और हमारी संस्था को अपने काम के लिये उसकी सख्त जरूरत है। ऐसी हालत में कुछ फेर-बदल दोनों ही के लिये अच्छा होगा।

"अगर अपनी बेहतरी चाहते हो तो दो दिन के अन्दर एक लाख रुपया हमारे सुपुर्द कर दो। परसों रात को बारह बजे एक आदमी तुम्हारे बाग के दर्वाजे पर पहुंचेगा। उसके हाथ में अगर यह रकम तुमने दे दी तब तो ठीक है नहीं तो उसी जगह तुम अपने लड़के की लाश पाओगे जिसे हम लोग ले जा रहे हैं।

"खबरदार! अगर पुलिस को खबर दी या किसी दूसरी तरह का

फिसाद खड़ा करके धोखा देना चाहा तो अपने लड़के से हमेशा के लिये हाथ धोओगे !!"

यह चोठी पढ़ बटुकचन्द की तो यह हालत हो गई कि काटो तो लहू नहीं। उन्होंने फिर उसे पढ़ा, तब नीचे दस्तखत की जगह पर गौर किया, मगर कोई नाम दिखाई न पड़ा, वहां एक बड़ा सा कत्थई रंग का धब्बा इस तरह का जरूर दिखाई दिया मानों ऊपर से गाढ़ी लाल स्याही या खून की बड़ी बूंद गिरी हो और उस जगह चारो तरफ फैल गई हो। धब्बे के बीचोबीच में कुछ सफेद जगह छूटी हुई थी जो देखने में चार उंगलियों के दाग की तरह मालूम होती थी। बस दस्तखत या निशानी अगर कुछ थी तो इतनी ही, और कुछ भी नहीं।

कुछ देर परेशानी और बदहवासी की हालत में बैठे रहने के बाद बटुकचन्द ने एक नौकर को हुक्म दिया, "बच्चे बाबू को देखो तो कहां हैं?" नौकर चला गया और थोड़ी देर में लौट आ कर बोला, "उनको रामगोविन्द टहलाने के लिये ले गया है और अभी तक लौटा नहीं है।" सुनते ही बटुकचन्द का कलेजा काँप गया। उन्होंने रुकते गले से कहा, "कई आदमी जाओ और देखो रामगोविन्द कहां है, जल्दी बच्चे बाबू को खोज कर लाओ!" नौकर दौड़ता हुआ चला गया मगर बटुकचन्द के दिल में किसी ने कहा, "जरूर रामगोविन्द उसे ले कर भाग गया!" वे परेशानी के साथ कमरे में इधर उधर टहलने और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

एक घंटे के बाद बच्चे बाबू की खोज में गये हुए आदमी लौटे। बच्चे बाबू तो नहीं मिले मगर बहुत दूर निराली सड़क पर बेहोश रामगोविन्द और वह हाथगाड़ी जिस पर बच्चे बाबू बैठ कर घूमने निकलते थे मिली। रामगोविन्द मुश्किल से होश में आया था और इस समय नौकरों के साथ यहाँ तक लौटा था। बटुकचन्द ने उससे पूछा, "बच्चा कहाँ है?" वह बोला, "बाबूजी मैं उनको घुमाता हुआ मडुआडीह की सड़क पर से लौटा आ रहा था कि पीछे से तीन आदमियों ने आ कर मुझे पकड़ लिया

और एक गाड़ी पर से बच्चे बाबू को उठाने लगा। जब मैंने रोका तो सभों ने मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया। इसके बाद को मुझे खबर नहीं। ये लोग गये हैं और पानी वगैरह छिड़का है तो होश में आया हूं और बड़ी मुश्किल से यहाँ तक पहुंचा हूं।"

कह कर रामगोविन्द अपनी चोटें दिखाने लगा परन्तु बटुकचन्द का ध्यान उधर न था। वे अपने प्यारे बेटे और उस चीठी की बात सोच रहे थे।

(३)

गंगा के तट पर, काशी से लगभग तीन चार कोस ऊपर चढ़ कर, एक ऊंचे टीले पर एक छोटा मगर सुन्दर सा मकान है जिसके तीन तरफ सुहावना बागीचा है और चौथी तरफ कल-कल-नादिनी गंगा बह रही हैं।

मकान छोटा है। शायद मुश्किल से उसमें आठ दस कमरे होंगे, मगर फिर भी मजबूत बहुत बना हुआ है। इसकी कुरसी लगभग आठ हाथ ऊंची है और उसमें पूरब की तरफ एक मजबूत दरवाजा है जो बागीचे की सतह से कोई नौ दस हाथ की ऊँचाई पर पड़ता है। उस दरवाजे तक जाने के लिये काठ की सुन्दर सीढ़ियाँ हैं जो मकान की कुरसी के साथ साथ उठी हुई हैं। इन सीढ़ियों के अलावे और कोई रास्ता उस मकान में जाने का नजर नहीं आता। सिर्फ यही नहीं, इतने ऊँचे चढ़ कर मकान की पहिली मंजिल में पहुंचने पर भी उस खंड में सिवाय सदर दरवाजे के और एक भी खिड़की दरवाजा या रौशनदान नहीं है। चारो तरफ मजबूत और मोटी संगीन दीवार है, हां जब इसके भी ऊपर चल कर आप दूसरी मंजिल में पहुँचेंगे तो आपको वह मंजिल बहुत ही खुली और खुलासी दिखाई पड़ेगी और चारो तरफ बड़ी बड़ी खिड़कियाँ भी हैं जिनकी राह बखूबी हवा आती है और चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ता है। गंगा तो यहाँ से ऐसी मालूम पड़ती हैं मानों इस मकान की दीवार से सटी हुई बह रही हों मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। बहुत दूर पर

रामनगर का किला दिखाई पड़ता है और अगर आसमान साफ है तो काशी नगरी का अस्सी की तरफ वाला हिस्सा तथा दूर पर के माधोराव के दोनों धरहरे धुंधले धुंधले नजर आ सकते हैं।

इसी मकान के गंगाजी के तरफ वाले एक कमरे में हम इस समय अपने पाठकों को ले चलते हैं। कमरे की तीन बड़ी बड़ी खिड़कियाँ खुली हुई हैं और उनकी राह ठंढी ठंढी हवा आ रही है। बीच में सुफेद फर्श बिछा हुआ है और चारों तरफ कुछ कोच तथा कुरसियां पड़ी हुई हैं जिनमें से एक पर इस समय एक नौजवान अधलेटा सा पड़ा हुआ पंखी से अपने बदन की गर्मी दूर कर रहा है। उसका साफा सामने के एक छोटे टेबुल पर पड़ा हुआ है और उसी पर एक चमकदार छोटी पिस्तौल भी रक्खी हुई है। नौजवान के माथे की पर पसीने की बूँदें बता रही हैं कि वह अभी अभी ही कहीं दूर से चलता हुआ आ रहा है।

गर्मी शान्त हुई और नौजवान कोच पर से उठ खड़ा हुआ। उसकी निगाह दीवार पर लटकने वाली बड़ी घड़ी पर पड़ी और उसने बेचैनी के साथ कहा, "पौने आठ बज रहा है और वे लोग अभी तक नहीं पहुंचे— क्या कुछ.......!" अभी बात खतम नहीं हुई थी कि दूर से 'भग-भग' की भारी आवाज सुनाई पड़ी। नौजवान चौंका और खिड़की के पास आ कर उत्तर की तरफ देखने लगा। सुबह के सूर्य की रोशनी में चमकते हुए गंगा के साफ पानी पर दूर कोई काली चीज दिखाई पड़ी, नौजवान ने दीवार में बनी आलमारी खोली और उसमें से दूरबीन निकाल कर उस चीज की तरफ देखा। साफ मालूम हो गया कि वह एक मोटर-बोट है जो बड़ी तेजी से पानी काटती हुई सीधी इसी तरफ को आ रही है। नौजवान के चेहरे पर सन्तोष की निशानी दिखने लगी और वह उसी जगह फर्श पर एक मोटे गावतकिये के सहारे इस तरह लेट गया कि उसका मुँह गंगाजी की तरफ रहे।

'भग-भग' की आवाज तेज होने लगी और देखते देखते वह बोट पास आ पहुँची। जब वह इस मकान से लगभग आध मील के फासले पर

पहुंची तो नौजवान पुनः उठा और खिड़की में आ खड़ा हुआ। मोटर की चाल कम हो गई थी और अब वह बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। नौजवान ने पुनः दूरबीन हाथ में ली और उसकी मदद से देखा कि कोई आदमी उस नाव के अगले हिस्से में आ कर खड़ा हुआ है। नौजवान गौर से उस तरफ देखने लगा। उस नाव वाले ने एक लाल रंग को झंडी उठाई और कुछ इशारा किया। नौजवान ने भी आलमारी में से एक लाल झंडी निकाली और किसी इशारे के साथ उसे दिखाया। झंडियों के इशारों में ही कुछ बातें हुईं और तब उस बोट की चाल फिर तेज हुई। पाँच ही मिनट बाद वह मकान के पास आ कर किनारे से लग गई और उस पर से कई आदमी उतर कर इस मकान की तरफ बढ़े। इन्हें देख नौजवान भी अपनी जगह से हटा और नीचे की मंजिल में उतर सदर दर्वाजे के पास जा पहुँचा। अब तक नाव पर से उतरे हुए आदमी भी जो गिनती में चार थे वहां आ पहुंचे थे। सदर दर्वाजा खोल उँगलियों के इशारे से नौजवान ने उनसे कुछ बातें कीं जिसके बाद वे सब सीढ़ियाँ चढ़ ऊपर आ गये। नौजवान सभों से बड़े प्रेम से मिला और तब सभों को ऊपर चलने को कह आप एक कोठड़ी में घुस गया जो फाटक के बगल ही में पड़ती थी। इस कोठड़ी की दीवारों में और फर्श में भी तरह तरह के कल-पुर्जे लगे हुए थे। नौजवान दीवार में लगे एक बड़े पहिये के पास पहुंचा और उसका मुट्ठा पकड़ कर घुमाने लगा। पन्द्रह या बीस दफे घूमने के बाद वह पहिया रुक गया और तब नौजवान इस कोठड़ी से बाहर निकल कर ऊपर की मंजिल के उसी कमरे में जा पहुँचा जिसमें वह पहिले बैठा था और जिसमें अब वे चारो आदमी भी पहुंच गए थे जो मोटर बोट से उतरे थे। नौजवान भी उन्हीं के पास जा बैठा और एक आदमी से पूछने लगा, "कहो क्या हुआ?"

वह बोला, "जैसा हम लोगों ने सोचा था ठीक वैसा ही उतरा!"

नौजवान०। वह लड़का कहाँ है?

"यह है!" कह कर उस आदमी ने एक बड़ा सा चमड़े का बेग

खोला जो अपने साथ लाया था। बेग के अन्दर कपड़े के बीच में अच्छी तरह सम्हाल कर रक्खा हुआ मगर बेहोश तीन चार बरस का एक सुन्दर लड़का था। नौजवान ने उसे मुलायम हाथों से बेग के बाहर निकाला और एक बार कलेजे की धड़कन और सांस पर ध्यान देने बाद फर्श पर सुला दिया। सभों में फिर बातें होने लगीं।

नौजवान०। इसको लाने में कोई तरद्दुद तो नहीं पड़ा ?

एक आदमी०। नहीं कुछ भी नहीं, सिर्फ इसके साथ जो नौकर था उसने कुछ हाथ पाँव चलाये पर जल्दी ही हम लोगों ने उसे बेकाबू कर दिया और इसे ले कर चले आये।

नौज०। हमारी चीठी बटुकचन्द के पास पहुँच गई ?

आदमी०। हाँ जब हम लोगों ने देख लिया कि वह खास उन्हीं के हाथ में दे दी गई तभी हम वहाँ से हटे। रात भर तो अपने अड्डे पर छिपे रहे और सुबह को यहाँ के लिये चल पड़े। अब जैसी कुछ आज्ञा हो किया जाय।

नौज०। तुम लोगों ने और कोई कार्रवाई करने की बात सोची है ?

आदमी०। हां एक बात सोची है, अगर आपकी राय हो तो की जाय।

नौज०। क्या ?

आदमी०। काशी के एक रईस नकुलचन्द का नाम शायद आपने सुना होगा ?

नौज०। हां मैंने सुना है।

आदमी०। उसे रायबहादुरी मिली है और इस खुशी में वह सारनाथ के अपने बागीचे में एक पार्टी देने वाला है।

नौज०। अच्छा !

आदमी०। वह पार्टी सिर्फ उसके दोस्तों की ही नहीं होगी बल्कि उनकी पत्नियें भी उसमें आवेंगी जिनके लिए सवारी का खास तौर पर बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया गया है। इसके इलावे कोई आधा दर्ज रंडियाँ भी मौजूद रहेंगी।

नौज० । तब ?

आदमी० । हम लोगों की राय है कि उस वक्त उस बागीचे पर छापा मारा जाय । बड़ी गहरी रकम हाथ आवेगी ।

नौज० । हैं ! औरतों पर छापा !!

आदमी० । क्या हर्ज है? हम लोगों का उद्देश्य तो सब तरह से पाक और साफ है । औरतों का केवल जेवर उतरवा लिया जायगा, और किसी तरह से उनको न तो तकलीफ दी जायगी न बेइज्जती ही की जायगी । जितनी औरतें आवेंगी सब अमीरों ही की होंगी जिन्हें कुछ जेवर निकल जाना जरा भी न अखरेगा मगर हम लोगों को दस पाँच लाख से ज्यादा ही मिल जाय तो कोई ताज्जुब नहीं ।

नौज० । फिर भी... ...!

आदमी० । एक यह बात भी सोचिये कि वह एक नये नये राय-बहादुर बने हुए को पार्टी होगी । सब रायसाहब, रायबहादुर, राजासाहब और खान-बहादुर ही वहां इकट्ठे रहेंगे । सरकारी नौकर और ओहदेदारों की भी कमी न होगी जिन्हें सताना हम लोगों का पहिला काम है । सरकार के खुशामदी 'जी हुजूर' और भेदिये तो वहां मौजूद ही रहेंगे, मुमकिन है कि कलेक्टर और कमिश्नर भी मौजूद रहें । अगर एक ही हमले में इतने आदमियों पर हम लोग अपना आतंक जमा सकें तो क्या कुछ काम न होगा ?

नौज० । हाँ सो तो.......ठीक है........अच्छा मैं 'भयानक चार' के सामने यह प्रस्ताव रख दूंगा, जैसा वे कहेंगे वैसा ही किया जायगा ।

सब० । बस बस यही तो हम लोग चाहते हैं ।

नौज० । यह पार्टी कब होने वाली है ?

एक० । शायद पन्द्रह दिन में होगी ।

नौज० । तब तो काफी मौका है, मैं उनसे सलाह कर के तुम्हें उसी ठिकाने पर खबर दूंगा ।

एक० । बहुत अच्छा ।

नौज० । इधर कोई नया हाल चाल तो नहीं है ?

एक० । जी कोई नई बात तो नहीं है पर सुना है काशी के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर गिबसन छुट्टी पर जा रहे हैं और उनकी जगह आगरे से कोई आ रहा है ।

नौज । आगरे से ! क्या नाम है कुछ मालूम हुआ ?

एक० । ठीक तो नहीं मालूम मगर शायद मिस्टर कैमिल या ऐसा ही कुछ है ।

'केमिल' यह नाम सुनते ही वह नौजवान चौंक उठा और सिर नीचा कर कुछ सोचने लगा । कुछ देर तक उसके साथी लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखते रहे । आखिर एक ने पूछा, "मिस्टर केमिल का नाम सुन कर आप चौंक गये सो क्यों ? क्या आप उन्हें जानते हैं ?"

नौजवान ने सिर उठा कर कहा, "हाँ मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं । वह बड़ा ही कट्टर आदमी है और डर या घबराहट तो उसे छू तक नहीं गई है । खैर देखा जायगा, अब तुम लोग जाओ मगर जाने से पहिले इस लड़के को उस औरत के सपुर्द करते जाओ जिसे पहिले से इसी काम के लिये हम लोगों ने यहां बुला रक्खा है । अब यह होश में आ रहा है ।"

"बहुत अच्छा" कह कर वे आदमी उठ खड़े हुए । एक ने उस लड़के को गोद में उठा लिया और दूसरे ने सब कपड़ा लत्ता भीतर बंद कर वह बेग हाथ में ले लिया । नौजवान ने एक से पूछा, "चीठी में कै दिन की मोहलत दी गई है ?" जवाब मिला, "दो दिन की ।" नौजवान ने कहा, "दो दिन की ! तब फिर कल संध्या को एक बार मुझसे मिल लेना ।"

सब कोई नीचे की मंजिल में उतर गये, वह नौजवान भी उनके साथ साथ था ।

(४)

राय बटुकचन्द की वह रात किस तरह बीती यह उन्हीं का दिल जानता होगा । रायबहादुरी न मिलने का गम तो था ही, ऊपर से प्यारे

बेटे के खो जाने ने और भी गजब ढा दिया। पहिली चोट पर इस दूसरी चोट ने पड़ कर उनके दिल और दिमाग को एक दम चौपट कर दिया।

उनकी वह रात पलंग पर पड़े करवटें बदलते ही बीत गई। कभी उन दुष्टों की बात सोचते जिन्होंने उन्हें चीठी लिखी थी, कभी अपने बच्चे की मुसीबत का ख्याल करते, कभी उस एक लाख रुपये की तादाद पर सिहरते उस चीठी के अनुसार जिसे देने पर ही वे अपने बच्चे को वापस पा सकते थे, और कभी इस धमकी पर काँपते कि अगर पुलिस को खबर की गई तो लड़का मार डाला जायगा। तरह तरह की तर्कीबें सोचने पर भी कोई कारगर होती दिखाई नहीं पड़ती थी और इसी कारण वह समूची रात उन्हें चिन्ता फिक्र और घबराहट में ही काट देनी पड़ी।

सुबह होते ही वे पलंग पर से उठे और अपने बैठके में आए। वह चीठी निकाली और बड़ी देर तक उसे बराबर पढ़ते रहे। आखिर उन्होंने अपने मन में कोई कार्रवाई करने का निश्चय किया और चीठी बन्द कर जरूरी कामों से निपटने चले गये।

आठ बजने के कुछ पहले ही सब तरह से फारिग हो बटुकचन्द अपनी मोटर में आ बैठे और शोफर से बोले, "कलेक्टर साहब के बंगले पर चलो।" यह कहते हुए उन्होंने अपने चारो तरफ गौर की निगाह डाली। उनके चारो तरफ उनके नौकर चाकर ही थे, कहीं कोई गैर आदमी नजर नहीं आ रहा था।

मोटर तेजी से रवाना हुई और पन्द्रह मिनट से कुछ कम ही देर में कलेक्टर साहब के बंगले के फाटक पर पहुंच गई। बटुकचन्द उतरे और बंगले के पास पहुँचे। सीढ़ियां चढ़ रहे थे कि चपरासी ने आ कर लम्बी सलाम की। उन्होंने सलाम कबूल करते हुए कहा, "बड़ा ही जरूरी काम है, साहब क्या कर रहे हैं?" चपरासी बोला, "मैं अभी देखता हूं, हुजूर तशरीफ रक्खें।" बटुकचन्द बरामदे में रक्खी कुरसियों में से एक पर बैठ गये और बार बार घड़ी की तरफ जो सामने ही टंगी थी इस तरह देखने

लगे मानों उन्हें बहुत थोड़े वक्त में कई काम निपटाने हैं।

यकायक एक प्यादा उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसके हाथ में एक लाल लिफाफा था जिसे उसने बटुकचन्द की तरफ बढ़ाया और कहा, "हुजूर को देने के लिये उस आदमी ने दिया है।" लाल लिफाफा देखते ही न जाने क्यों बटुकचन्द का कलेजा काँप गया। उन्होंने चौंक कर उस तरफ देखा जिधर उस प्यादे ने बताया था। फाटक के पास खड़ा एक आदमी दिखाई पड़ा जिसने उन्हें अपनी तरफ देखता पा हाथ उठा कर चार उँगलियां दिखाईं और तब उंगली होंठ पर रख चुप रहने का इशारा करने बाद एक तरफ को चला गया।

बटुकचन्द सिहर उठे और कांपते हाथों से उन्होंने लिफाफा खोला। लाल कागज पर लिखी एक छोटी चीठी थी जिसका मजमून यह था :—

"खबरदार !

"हम लोग तुम्हारे एक एक कदम पर निगाह रखते हैं यह तो इस चीठी से ही तुम्हें मालूम हो गया होगा। अब होशियार करे देते हैं कि अगर तुमने किसी से हम लोगों के बारे में कुछ भी कहा तो तुम्हारी खैरियत नहीं है। तुम्हारा लड़का तो जान से मार ही दिया जावेगा—और भी एक ऐसी कार्रवाई की जायगी जिससे तुम कहीं के न रहोगे। बस होशियार ! 'कपास के फूल' की बात बाद करो और सम्हल जाओ !!

"अगर कल रात को बारह बजे हमें एक लाख रुपया न मिल जायगा तो तुम्हारी खैर नहीं !!"

चीठी के नीचे उसी प्रकार का खून के धब्बे जैसे दाग और बीच में चार उंगलियों का निशान था जैसा पहिली चीठी में था।

पढ़ कर बटुकचन्द का चेहरा पीला पड़ गया। न जाने चीठी में किस गुप्त भेद की तरफ इशारा किया गया था कि वे एक दम कांप उठे। इसके बाद उनकी हिम्मत न पड़ी कि उस जगह ठहरे या साहब से वह बात कहें जिसके लिये यहाँ आये थे। उठ खड़े हुए और बंगले की सीढ़ियां उतरने लगे।

इसी समय चपरासी ने वहां पहुँच कर कहा, 'यह क्या! हुजूर जा रहे हैं!!"

बटुकचन्द रुक गये और बोले, "क्यों, साहब का पता मिला? क्या कर रहे हैं!"

चपरासी बोला, "कुछ बहुत ही जरूरी काम कर रहे हैं, मुझे आपको सलाम देने को कहा है और कहा है कि मैं इस वक्त बड़ा ही 'बिजी' हूं, किसी और मौके पर तशरीफ लावें तो बेहतर हो।"

यदि और कोई मौका होता तो शायद बटुकचन्द इस बात से अपनी बड़ी भारी बेइज्जती समझते और साहब के दर्शन किये बिना कभी न टलते पर इस समय उन्हें यह सुन सन्तोष ही हुआ। वे बोले, "कोई हर्ज नहीं, कोई जरूरी काम न था, फिर कभी मिल लूँगा!" चपरासी की लम्बी सलाम लेते हुए वे फाटक की तरफ बढ़े, चपरासी भी यह कहता हुआ भीतर लौट गया, "का जाने दुई अच्छर में का रक्खल हौ कि नाहीं मिलत त दौड़त चलल आवलन और मिले बदे साहबन क पैर चाटत रहलन्! आज भला साहब ऐसन कौनों से मिलिहें जिनके रायबहादुरी नाहीं मिलल हो!!"

चपरासी की टिप्पणियों से बिल्कुल बेखबर डरे और घबराये हुए बटुकचन्द अपनी मोटर पर सवार हुए और शोफर को घर चलने का इशारा किया।

(५)

पौ फट गई है परन्तु सूर्यदेव के आगमन की सूचना देने वाली लाली अभी आस्मान पर फैली नहीं है।

ऐसे समय में बाबू बटुकचन्द अपने मकान के बाहर निकले। दरवाजे पर उनकी छोटी दो आदमियों के बैठने वाली मोटर खड़ी थी। बटुकचन्द उसके पास गये और ड्राइवर को उतर जाने का इशारा किया। जब वह उतर आया तो खुद ह्वील पर जा बैठे और उससे बोले, "तुम्हें चलने की जरूरत नहीं, मैं अकेला ही जाऊँगा।" फट-फट की आवाज के साथ

इन्जिन चला और झटके के साथ मोटर आगे बढ़ गई।

तेज चाल से बटुकचन्द ने शहर की सड़कें पार कीं और तब उस सड़क पर घूम गए जो सारनाथ से होती हुई गाजीपुर की तरफ जाती है। बनारस से गाजीपुर करीब चालीस मील पड़ता है और वहाँ जाने की सड़क बहुत ही रमणीक स्थानों से होती हुई कई जगह गंगाजी के इतने पास से गुजरती है कि सड़क पर से उनका दर्शन होता है। कई पुराने जमाने की इमारतें और ऐतिहासिक खंडहर इस सड़क पर पड़ते हैं। बटुकचन्द ने मोटर को पूरी तेजी से छोड़ दिया और वह घण्टे में साठ मील को तेजी से दौड़ने लगी।

एक घण्टे के कुछ अन्दर ही बटुकचन्द गाजीपुर के पास जा पहुँचे। दूर से वहाँ की अफीम की कोठी का ऊँचा बुर्ज देख कर उन्होंने मोटर की चाल कम की और तब उस सड़क पर घूम गए जो मुख्य सड़क से कट कर अफ़ीम के कारखाने को जाती है। गंगा से कुछ ही हट कर तीन चार खूबसूरत और आलीशान बंगले बने हुए थे जिनमें से एक के आगे उन्होंने अपनी मोटर रोकी और फाटक खोल भीतर घुसे।

एक नवयुवती मेम अपने दो सुन्दर बच्चों के साथ बंगले के सामने वाले रमने पर टहल रही थी। मोटर की आवाज सुन कर वह चौंकी और जब बटुकचन्द को अपनी तरफ आते देखा तो उनकी तरफ ताज्जुब के साथ बढ़ी। जरा आगे बढ़ने पर दोनों ने एक दूसरे को पहिचान लिया। बटुकचन्द ने बड़े तपाक के साथ मेम से हाथ मिलाया और मेम ने उनसे पूछा, "हलो राय साहब, इस वक्त इतना सुबह सुबह कहां?"

बटुकचन्द दोनों लड़कों को प्यार करने बाद बोले, "किंग साहब से कुछ बहुत ही जरूरी बात करनी है, वे उठे हैं?"

मिसेज किंग बोली—"हां हां, वे अपने सुबह के कमरे में कुछ काम रहे हैं, मैं अभी उन्हें आपके आने की खबर करती हूं।"

मेम साहब ने लड़कों को खेलने को कहा और आप बंगले की तरफ

बढ़ी। बटुकचन्द उनके साथ हो लिये। बंगले के पास पहुंचते ही किंग साहब से उनकी मुलाकात हुई जो सीढ़ियां उतर रहे थे। बटुकचन्द को देखते ही वे आगे बढ़ आये और प्रेम के साथ हाथ मिला कर बोले, "इतना सुबह आज आप कहां!" बटुकचन्द ने कहा, "मैं एक बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ कर आपसे सलाह लेने आया हूं।" मि० किंग ने चौंक कर कहा, "मुसीबत! सो कैसी?" बटुकचन्द बोले, "भीतर चलिये तो सुनाऊँ।" किंग उनका हाथ पकड़े भीतर चले गये। मौका समझ मिसेज किंग बाहर ही रह गईं।

अपने प्राइवेट कमरे में ले जा कर किंग ने बटुकचन्द को एक कुरसी पर बैठाया और आप सामने बैठ कर पूछा, "हां अब कहिये क्या मामला है?"

बटुकचन्द ने अपने चारो तरफ गहरी निगाह डाली और तब जेब से वह पहिली चीठी जो उन्होंने दुष्टों की तरफ से पाई थी निकाल कर उनके सामने रख दी। किंग ने उसे उठा लिया और चुपचाप पढ़ने लगे। ज्यों ज्यों चीठी पढ़ते जाते थे उनके चेहरे से घबड़ाहट और परेशानी प्रगट होती जाती थी और जब समूची चीठी खतम कर वे उस जगह पहुँचे जहां दस्तखत की जगह पर लाल धब्बा बना हुआ था तो एक दम उछल कर बोले, "ओफ ओह! यह तो उन्हीं शैतानों की कार्रवाई है जिन्होंने अपने को 'रक्त-मंडल' के नाम से मशहूर कर रक्खा है!"

बटुकचन्द ने ताज्जुब से पूछा, "रक्त-मंडल क्या?" किंग साहब बोले, "वह खूनियों और शैतानों की एक कुमेटी है जिसका काम ही रईसों और भले मानुसों को तकलीफ पहुँचाना और सरकार को तंग करना है। उसके मुखिया कोई चार आदमी हैं जो अपने को 'भयानक चार' कहते हैं। उनकी कम्बख्त निगाहें जिस पर पड़ती हैं उसकी खैरियत नहीं।"

बटुकचन्द काँप कर बोले, "आपको इनका हाल कैसे मालूम?" किंग साहब बोले, "मैं जब बनारस का पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट था तभी मुझे इस मामले की खबर लगी थी और इधर तो मैं खुद इनके फेर में पड़ गया हूं। यह देखिये आज चार दिन हुआ यह चीठी मुझे मिली है।"

कह कर किंग साहब ने एक चीठी दराज में से निकाल कर बटुकचन्द को दिखाई। बटुकचन्द ने उसे पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"मिस्टर किंग,

"हमारी संस्था ने यह निश्चय किया है कि इस देश से सब तरह के नशे शराब गांजा अफीम आदि आदि का नाम निशान मिटा दिया जाय जिसने देशवासियों की आत्मा देह और मन को चौपट कर उन्हें गुलामी की बेड़ी पहिना रक्खी है।

"इस लिये तुम्हें खबर दी जाती है कि अगर आज से पन्द्रह दिन के भीतर तुम अपनी अफीम की कोठी बन्द कर के सब तैयार अफीम बर्बाद न कर डालोगे तो तुम्हारा और तुम्हारी कोठी का नाम निशान मिटा दिया जायगा। खबरदार खबरदार खबरदार !!"

इस चीठी के नीचे भी उसी प्रकार का खून के धब्बे की तरह गोल दाग और बीच में चार उँगलियों का निशान था।

बटुकचन्द बोले —"खैर आप तो सरकारी नौकर हैं और सरकार आपकी मदद करेगी मगर मैं गरीब तो बेमौत मर रहा हूं। किसी से फरियाद भी करने नहीं पाता। कल कलेक्टर साहब से मिलने गया था, सोचा था इस बारे में उनसे मदद लूँगा, मगर वहां भी ये कम्बख्त पहुँच ही गये !"

इतना कह बटुकचन्द ने कल का सब हाल कह सुनाया और वह दूसरी चीठी भी आगे रख दी। किंग साहब सब हाल सुन बोले, "इन कम्बख्तों का जाल कुछ इस तरह चारो तरफ फैला हुआ है कि कोई बात इनसे छिपा कर करना बहुत मुश्किल है।"

बटुक०। मगर अब मेरी जान तो किसी तरह छुड़ाइये ! कोई ऐसी तर्कीब निकालिये कि मेरा रुपया भी न बर्बाद हो और मेरा बेटा भी वापस मिले।

किंग साहब देर तक कुछ सोचने के बाद बोले—"अच्छा मुझे एक तर्कीब सूझी है। बेईमानों के साथ बिना धोखेबाजी किये काम नहीं चलेगा। आप ऐसा करिये—

दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। दिन दो घंटा चढ़ चुका था जब बटुकचन्द किग साहब से बिदा हुए और अपने घर की तरफ लौटे।

(६)

रात आधी के लगभग जा चुकी हैं। बाबू बटुकचन्द के पिसनहरिया वाले बागीचे में इस समय बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है। माली चौकीदार और सिपाही सभी रात की पहिली नींद में गाफिल हैं। सिर्फ बीच वाली इमारत के सब से ऊपर के कमरे में दो आदमी एक टेबुल के पास बैठे हुए धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बटुकचन्द हैं और दूसरे मिस्टर किंग। टेबुल पर एक लम्प जल रहा है जिसकी रोशनी मद्धिम की हुई है। न जाने कब से ये लोग यहां बैठे हुए हैं परन्तु जिस समय घड़ी ने बारह बजाये उस समय किंग साहब ने एक अङ्गड़ाई ली और कहा, "रायसाहब, अब तैयार हो जाइये।"

राय बटुकचन्द ने टेबुल का दराज खोला। उसमें नोटों के दो थाक रक्खे हुए थे। बटुकचन्द ने दोनों को निकाला और गिना। हजार हजार के पचास पचास नोट थे, कुल एक लाख रुपये के।

नोटों को हाथ में लेते हुए एक बार बटुकचन्द का कलेजा काँप गया और उन्होंने डरे हुए स्वर में कहा, "देखिये किंग साहब, कहीं ऐसा न हो कि यह एक लाख रुपया भी चला जाय और मेरा बेटा भी हाथ न आवे!"

किंग साहब बोले, "नहीं ऐसा कभी न होगा, मेरे नौकर बड़े ही होशियार हैं और उनके काम में किसी तरह की भूल नहीं होगी। आप बेफिक्र रहिये, मगर इतना जरूर याद रखियेगा कि जैसे ही आपका लड़का आपको मिले वैसे ही वह इशारा कीजियेगा और तब तुरन्त बागीचे के अन्दर आ फाटक बन्द कर लीजियेगा। अच्छा अब आप फाटक पर जाइये मैं भी अपनी जगह पर जाता हूं।"

बटुकचन्द उठ खड़े हुए, मगर उनका पैर काँप रहा था। किंग साहब

तो अपनी जेब से पिस्तौल निकाल और उसे खोल गौर से एक बार देखने बाद दर्वाजा खोल न जाने कहाँ चले गये, पर बटुकचन्द डरते और काँपते हुए मकान के नीचे उतरे और बाग के फाटक पर पहुंचे। फाटक वन्द था और बगल के दालान में पहरेदार पड़ा घुर्राटे ले रहा था। आहिस्ते से बटुकचन्द ने फाटक की छोटी खिड़की खोली और बाहर सड़क पर निकल गये।

बटुकचन्द का यह बागीचा शहर के बाहर बड़े ही निर्जन और सूनसान स्थान में था। इसके चारो तरफ ऊँची चारदीवारी थी जिसे टप कर किसी का यकायक भीतर चले आना कठिन था, खास कर उसकी सड़क की तरफ वाली दीवार तो बहुत ही ऊँची थी जिसमें सिर्फ यही एक फाटक था जिसके दोनों तरफ बनी हुई नौकरों के रहने की इमारतें तथा अस्तबल वगैरह दूर तक चले गये थे। इस बाग के ठीक सामने किसी दूसरे रईस का बाग था और उसकी भी ऊँची चारदीवारी दूर तक चली गई थी मगर उसका फाटक बहुत आगे जा कर पड़ता था। इस तरह यहां की सड़क दो तरफ से कोई दो सौ गज तक ऊँची दीवारों से घिरी हुई थी।

बटुकचन्द फाटक के बाहर निकले। चारो तरफ घोर अन्धेरा था, हाथ को हाथ नहीं दिखाई देता था और तारों की रोशनी को ऊपर के पेड़ रोक रहे थे। फाटक के दोनों तरफ वाली लालटेनें भी बुझी हुई थीं। डर से कांपते हुए बटुकचन्द अपने फाटक के सामने इर से उधर टहलने लगे।

टहलते हुए मुश्किल से दस या पन्द्रह मिनट हुए होंगे कि किसी तरह की रोशनी की चमक बहुत दूर से उन्हें दिखाई पड़ी। वे चिहुँक उठे और साथ ही उनका हाथ सामने के जेब में गया जिसमें एक लाख रुपये के नोट रक्खे हुए थे जिनके नीचे उनका कलेजा जोर जोर से धड़-धड़ कर रहा था। वे थोड़ा आगे बढ़कर देखने लगे और शीघ्र ही उन्हें मालूम हो गया कि वह एक साइकिल की रोशनी है जो कुछ तेजी से उसी तरफ आ रही है। वे फिर लौट कर अपने फाटक के पास हो गये और हाथ पीछे कर यह विश्वास कर लेने बाद कि खिड़की खुली हुई है और वे मौका पड़ने पर

तुरत भीतर भाग जा सकते हैं अपने कलेजे को जोर से दबा कर उसी जगह खड़े हो गये ।

देखते देखते साइकिल नजदीक पहुँची और तब रुक गई। बिजली की बत्ती की तेज चमक उनके चेहरे और आसपास की चीजों पर पड़ी और तब कुछ देर इधर उधर दौड़ती रही, इसके बाद यह रोशनी बन्द हो गई और मानों यह निश्चय कर लेने के बाद कि वहाँ पर सिवाय बटुकचन्द के और कोई नहीं है, साइकिल का सवार पुनः आगे बढ़ा। कुछ ही सेकेन्डों में वह इनके पास आ पहुँचा और साइकिल पर चढ़े ही चढ़े अपने पैर जमीन पर टेक खड़ा हो जाने बाद उसने कहा, "कौन खड़ा है, बटुकचन्द ?"

यह सवाल कुछ ऐसे रोब के साथ किया गया था कि खामखाह खुशामदी बटुकचन्द के मुँह से निकल गया, "जी हाँ, हुजूर !" इसके साथ ही उन्होंने जुबान रोकी मगर उसी समय आदमी ने पुनः पूछा, "क्या इरादा है, रुपया लाए हो !!"

बटुकचन्द ने हाथ जोड़ कांपते कांपते कहा, "हुजूर, मैं गरीब....!" पर उस आदमी ने इनकी बात खतम न होने दी और डपट कर कहा, "बक-बक मत करो ! हमें मालूम है कि आज ही तुमने एक लाख रुपये के नोट बंक से मंगवाये हैं। अगर तुम अपने लड़के को जिन्दा देखा चाहते हो तो रुपया हमारे हवाले करो नहीं तो उसकी लाश देखने के लिए तैयार हो जाओ।"

बटुकचन्द का मुँह खुला पर कोई जवाब उसके बाहर न निकल सका। एक गहरी सांस लेकर, जो उनके कलेजे को फोड़ती हुई निकली थी, उन्होंने जेब में हाथ डाला और नोट के दोनों बंडल निकाल कर उस आदमी की तरफ बढ़ाये। उस आदमी ने बंडल ले लिए और साइकिल के लम्प की रोशनी में उन्हें गौर से देखा। जिस समय वह हैन्डिल पर झुका हुआ नोटों की जांच कर रहा था उस समय लम्प की रोशनी पड़ने से बटुकचन्द ने देखा कि उस आदमी की पौशाक लाल रंग की है यहां तक कि हाथों में भी लाल दस्ताने चढ़े हुए हैं तथा चेहरे पर लाल नकाब पड़ी हुई है।

तेजी मगर कुछ लापरवाही के साथ उस आदमी ने नोटों को गिना और तब दोनों बंडलों को जेब के हवाले करते हुए कहा, "ठीक है, तुमने बुद्धिमानी की जो हम लोगों से दुश्मनी मोल नहीं ली। मैं जाता हूं, मेरे पीछे मेरी ही तरह के दस आदमी और आवेंगे। जब वे सब निकल जाएं तो बारहवां आदमी जो इधर से जायगा तुम्हें तुम्हारा लड़का देता जायगा।"

(७)

किंग साहब इस फिक्र में पड़े थे कि जिस तरह हो ऐसा करना चाहिये कि बटुकचन्द का लड़का भी मिल जाय, उनका रुपया भी न मारा जाय, और वे दुष्ट लोग भी गिरफ्तार कर लिये जायँ।

इसके लिये उन्होंने इन्तजाम भी बहुत अच्छा किया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि बटुकचन्द के बागीचे के बाहर की सड़क काफी लंबाई तक दोनों तरफ से दो ऊंची दीवारों से घिरी हुई थी। इन दीवारों के सबब से कोई आदमी जो इधर से जाने वाला हो, दो तीन सौ गज तक सिवाय आगे जाने या पीछे लौटने के और कहीं आ जा नहीं सकता था और किंग साहब ने इसी बात का लाभ उठाना चाहा था। उनके दो खास आदमियों की मातहती में बीस होशियार और मजबूत आदमी बहुत पहिले से काम कर रहे थे। इस सड़क पर थोड़ी थोड़ी दूर पर ऊंचे ऊंचे इमली सेमल आदि के पेड़ थे। इनमें से दस पेड़ों पर इस समय दस आदमी बन्दूकें लिये बैठे हुए थे और बाकी के दस आदमी हाथ में लोहे की पतली मगर मजबूत तारें जिनका एक एक सिरा उन्हीं पेड़ों से बँधा था लिये पेड़ों की आड़ में छिपे खड़े थे। किंग साहब का हुक्म था कि जिस समय मेरी सीटी एक दफे बजे उसी समय ये तार वाले आदमी दौड़ कर अपने ठीक सामने सड़क के दूसरी तरफ चले जायं और तार के दूसरे सिरों को सामने के पेड़ों से कस कर बांध दें। जिस समय सड़क पर दस जगह इस तरह दस तारें बंध जातीं उस समय घोड़ा मोटर साइकिल या पैदल किसी का भी

अचानक एक तरफ से दूसरी तरफ निकल जाना कठिन था, क्योंकि अन्धेरे में ये पतली तारें दिखतीं नहीं और भागने वाले इनसे लड़ कर जरूर चोट खाते जिससे उन्हें रुकना मजबूरी हो जाता। किंग साहब का दूसरा हुक्म था कि जिस समय उनकी सीटी दो बार बजे उसी समय पेड़ पर के सिपाही गोलियों की बाढ़ हवा में दागना शुरू करें, तथा जैसे ही वे तीसरी सीटी सुनें पेड़ से उतर आवें और सब लोग मिल कर डाकुओं को गिरफ्तार कर लें। इस प्रकार सब तरह का पक्का इन्तजाम कर के किंग साहब स्वयम् भी एक पेड़ की आड़ में पिस्तौल लिये खड़े थे और उन्हें पूरा निश्चय था कि उनकी इस तर्कीब द्वारा डाकू जरूर पकड़ जायंगे।

किंग साहब को विश्वास था कि रक्त-मंडल वाले कम से कम दस पन्द्रह आदमी के गरोह में जरूर होंगे क्योंकि आखिर उन्हें भी तो अपने पकड़े जाने का अन्देशा होगा, मगर इसके विपरीत जब उन्होंने सिर्फ एक आदमी को मामूली तौर पर साइकिल पर चढ़े आते देखा तो उन्हें ताज्जुब हुआ। वे कुछ निश्चय नहीं कर सके कि इसे रक्त-मंडल का आदमी समझें या कोई मामूली मुसाफिर? अस्तु वे इसी उधेड़बुन में पड़े रह गये और वह साइकिल सवार उनके सामने से गुजर गया। तब वे पेड़ की आड़ से बाहर निकले और फाटक की तरफ देखने लगे। बहुत गौर से देखने पर उन्हें मालूम हुआ कि उस आदमी ने बटुकचन्द से कुछ बातें कीं और बटुकचन्द ने उसे कुछ दिया। वे समझ गये कि जरूर यह कुछ वही मामला है मगर वे तब तक कुछ नहीं कर सकते थे जब तक कि बटुकचन्द का लड़का उन्हें मिल न जाता और वे बंधा हुआ इशारा न करते क्योंकि उन्हें यह अन्देशा तो था ही कि अगर वे जरा भी जल्दीबाजी कर गये तो ताज्जुब नहीं कि उस बेचारे लड़के की जान चली जाय क्योंकि अपने को फँसा देख कर रक्त-मंडल वाले, जो दया क्या चीज है इसे बिल्कुल जानते तक नहीं, लड़के को कदापि जीता न छोड़ेंगे। इसी से वे ठीक ठीक कुछ निश्चय न कर सके और चुपचाप खड़े रह गए। वह आदमी आगे

बढ़ गया और सड़क पर अन्धेरा छा गया।

थोड़ी देर बाद एक दूसरा आदमी साइकिल पर सवार आता दिखाई पड़ा। किंग साहब होशियार हुए पर यह आदमी बिना रुके या बटुकचन्द से कुछ बात किये आगे बढ़ गया। इसके कुछ देर बाद तीसरा आदमी आया और चला गया और तब इसी तरह कई आदमी साइकिल पर सवार आये और चले गये। अब किंग साहब घबराए और सोचने लगे कि आखिर यह मामला क्या है। उनकी समझ में कुछ भी न आया और अन्त में वे दीवार के साथ साथ आड़ आड़ होते हुए बटुकचन्द के पास जा पहुंचे जो एक टक मूरत की तरह फाटक के सामने खड़े हुए थे। किंग साहब ने उनकी कोहनी पकड़ कर हिलाई और धीरे से पूछा, "आखिर मामला क्या है? रक्त-मंडल वालों ने तुमसे कुछ बातें कीं या नहीं?"

बटुकचन्द ने बहुत धीरे और संक्षेप में सब बातें कहीं और अन्त में बोले, "उस पहिले आदमी के बाद नौ आदमी जा चुके हैं, एक और जाने बाद बारहवां जो आवेगा वह मेरे लड़के को लेता आवेगा।" किंग साहब ने सुन कर दांत पीसा और कहा, "अफसोस! मेरा सब सोचा विचारा बेकार गया, खैर मैं उस बारहवें आदमी को गिरफ्तार करूँगा।" बटुकचन्द ने कहा, "खैर जो चाहिये कीजिये मगर मेरा लाख रुपया तो चला ही गया, अब इतना ख्याल रखियेगा कि लड़का जीता जागता मिल जाय तब जो कुछ होना हो सो हो!"

इसी समय ग्यारहवां आदमी सामने से गुजरा। किंग साहब होशियार हो गये, सीटी जेब से निकाल उन्होंने हाथ में ले ली और इस फिक्र में हुए कि बारहवां आदमी उधर से जाय और वे सीटी बजावें जिसके साथ ही सड़क तारों से घिर जाय और वह आदमी गिरफ्तार हो जाय।

यकायक कोई एक काली छोटी चीज सड़क पर दौड़ती आती हुई दिखाई पड़ी जो फाटक के सामने आ कर रुक गई। मिस्टर किंग और बटुकचन्द ने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह लड़कों के घुमाने वाली

एक छोटी हाथ-गाड़ी है जिसके अन्दर कोई बच्चा लेटा हुआ है। बटुकचन्द ने झुक कर देखा तो उन्हीं का बच्चा था जो इस समय गहरी नींद में था। उन्होंने गाड़ी का हैंडिल पकड़ लिया तथा उसे घुमा कर फाटक के अन्दर ले चले, उस समय मालूम हुआ कि उसके साथ एक लम्बी रस्सी बँधी हुई थी जिसका दूसरा सिरा शायद आगे जाने वाले साइकिल सवार के हाथ में था।

बटुकचन्द ने बाग के अन्दर के एक लम्प के नीचे जा कर अपने बच्चे को अच्छी तरह देखा और तब एक लम्बी साँस लेकर बोले, "किंग साहब, आपकी कारीगरी कुछ काम न आई और मेरा एक लाख रुपया चला ही गया! खैर मेरा बच्चा मुझे मिल गया, यही गनीमत है!!"

किंग साहब ने कहा, "मुझे बड़ा ही अफसोस है कि इतनी तर्कीब करने पर भी दुष्ट लोग निकल ही गये, मगर खैर, तुम्हें अपने रुपये जाने का अफसोस न करना चाहिये!"

बटुकचन्द ताज्जुब से बोले, "सो क्यों?"

किंग साहब ने कहा, "वे सब नोट जो तुमने उन्हें दिये एकदम रद्दी हैं, वे नकली नोट जाँच के लिये मेरे पास आये थे। मैंने तुम्हारी गैर-हाजिरी में तुम्हारे दोनों बंडल निकाल कर उन नकली नोटों के दो बंडल उस दराज में रख दिये थे। वे असली नोट तुम्हारे नीचे के बैठक वाले कमरे के टेबुल की दराज में रक्खे हुए हैं जा कर ले लो।"

बटुकचन्द के मुँह से खुशी की एक किलकारी निकल गई, वे लड़के की गाड़ी दौड़ाते हुए अपने बैठकघर के सामने पहुंचे और गाड़ी तथा लड़का नीचे ही छोड़ दौड़ कर सीढ़ियां चढ़ने बाद कमरे में पहुंचे। पीछे पीछे किंग साहब भी पहुंचे।

बटुकचन्द ने रोशनी की। किंग साहब ने कहा, "वह बाईं तरफ वाला दराज खोलो।" बड़ी उत्कंठा के साथ बटुकचन्द ने दराज खोला, मगर भीतर कुछ भी न था। बटुकचन्द ने इधर उधर देख कर कहा,

"कहाँ ? इसमें तो कोई बंडल नहीं है !!"

ताज्जुब के साथ किंग साहब ने भी आगे बढ़ कर देखा मगर उस दराज में नोट थे ही कहां जो दिखाई पड़ते ! आश्चर्य में डूब कर उन्होंने कहा, "बड़ी विचित्र बात है ! मैंने अपने हाथ से दोनों बन्डल इसी जगह रक्खे थे !!"

इसी समय बटुकचन्द की निगाह लाल कागज के एक टुकड़े पर पड़ी जो उसी दराज में पीछे की तरफ पड़ा हुआ था। काँपते हाथों से उन्होंने उसे उठाया और खोल कर पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"रक्त-मंडल ही के साथ चालाकी ! यह नहीं सोचा कि तुम्हारे ऐसे नौसिखुओं को अभी हम लोग दस बरस तक चरा सकते हैं !!

"बटुकचन्द ! तुम्हारा एक लाख रुपया तो गया ही, अब तुम अपने लड़के से भी हाथ धो बैठो ! हाँ काश तुम अगर दो लाख रुपया खर्चने पर तैयार हो जाओ तो शायद उसे पुनः पा जाओ !!

"किंग ! तुमने नाहक ही इस मामले में हाथ डाल बटुकचन्द का बुरा किया और हम लोगों से भी दुश्मनी खरीदी। तुम्हारी बीबी सुबह से गायब है, जाओ पहिले उसे खोजो !"

इसके नीचे रक्त-मंडल का लाल निशान था।

चीठी पढ़ कर बटुकचन्द के मुँह से चीख निकल गई। उन्होंने कागज किंग साहब के आगे फेंक दिया और दौड़ कर उस गाड़ी के पास गये जिसमें उनका लड़का सोया हुआ था। लड़के को गाड़ी से उठाते ही सब कलई खुल गई – वह सिर्फ मोम का एक पुतला था जो रंग रंगा कर ठीक उनके लड़के की सूरत का बना दिया गया था। बटुकचन्द के मुँह से फिर एक चीख निकल गई। यह दोहरी चोट उनका परेशान दिमाग सह न सका। वे उसी जगह जमीन पर गिर गये और वेहोश हो गये।

——

सच्चा नाटक

(१)

राय बहादुर बाबू नकुलचन्द का बड़ा भारी बाग इस समय हजारों रोशनियों से जगमगा रहा है। बीच की आलीशान इमारत तो दिन की तरह चमक रही है।

बाग और इमारत में सैकड़ों आदमियों की भीड़ इधर से उधर घूमती फिरती दिखाई दे रही है और बड़े फाटक पर जिसके ऊपर रोशनी से 'स्वागतम्' लिखा हुआ है सैकड़ों सवारियों की लम्बी कतार जुट रही है। इसके बगल ही में एक दूसरा इससे कुछ छोटा दर्वाजा है जिस पर कई औरतों का गरोह दिख रहा है। मर्दानी सवारियां इस बड़े फाटक पर उतरती हैं और जनानी उस दूसरे पर।

इस जगह के मालिक बाबू नकुलचन्द ने इस बार रायबहादुरी पाने की खुशी में आज अपने दोस्तों और मेहरबान अफसरों की दावत की है। केवल उन्हीं की नहीं बल्कि उनकी औरतों और बिरादरी की औरतों को भी न्योता दिया गया है। नकुलचन्द की स्त्री की दौड़धूप और खुशामद की बदौलत शहर से दूर होने पर भी औरतों की काफी तायदाद

आ रही है जिन्हें वे खुद 'रिसीव' कर रही हैं और जो उस दूसरे दर्वाजे की राह अलग ही अलग भीतर के जनाने महल में पहुँच रही हैं जहाँ उनके लिये तरह तरह के खातिर तवाजो के सामान जुटाये गये हैं। मर्दों के बैठने के लिये बाग के बीच वाले लान पर एक बहुत बड़ा शामियाना टाँगा गया है जिसके नीचे गाने बजाने और भोज की तैयारियां हो रही हैं। चारो तरफ बड़ी चहलपहल दौड़ धूप और गुलशोर मचा हुआ है जिसके बीच बाबू नकुलचन्द फिरकी की तरह व्यस्त और परेशान घूम रहे हैं।

चारो सरफ जगह जगह लगे हुए और रोशनी से जगमगाते खूबसूरत छोटे बड़े खेमों और शामियानों में से एक में हम अपने पाठकों को ले चलते हैं। इसके बीचोबीच में संगमर्मर का बड़ा टेबुल है जिस पर लेमोनेड सोडा और अन्य साथिनी बोतलें दिख रही हैं तथा चारो तरफ की कई कुरसियों में से एक पर बनारस के सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० गिबसन, दूसरी पर रायसाहब बाबू बटुकचन्द, तीसरी पर फौज के कप्तान मि० पैनकेक और बाकी तीन चार कुरसियों पर और कई अफसर और रईस बैठे हुए बातें कर रहे हैं। और तो सभी खुश हैं मगर बाबू बटुकचन्द के चेहरे पर अफसोस की काली छाया पड़ी हुई दिखाई पड़ती है।

अचानक दर्वाजे पर छाया पड़ी और एक नया आदमी भीतर आया। यह गाजीपुर की अफीम कोठी के मैनेजर मि० किंग थे। "ओहो, आप लोग यहाँ बैठे हैं!" कहते हुए उन्होंने सभों से हाथ मिलाया और तब बटुकचन्द के बगल वाली कुरसी पर बैठ गये। उसी समय उनकी निगाह बटुकचन्द के उदास चेहरे पर पड़ी और उन्होंने झुक कर धीरे से कहा, "क्यों बटुकचन्द, तुम इतने उदास क्यों हो?"

बटुकचन्द ने किंग की तरफ विचित्र निगाह डाल कर कहा, "आप तो जानते ही हैं किंग साहब !!"

किंग०। वही अपने लड़के के गम में ?

बटुकचन्द ने सिर हिलाया। किंग साहब ने पुनः कहा, "क्या उसका

अभी तक कोई पता नहीं लगा ? खैर लगेहीगा इसमें इतना गमगीन होने की क्या बात है ? मुझे देखो, मेरी औरत तभी से गायब है, मुझे तुमसे कहीं ज्यादा फिक्र है मगर मैं इस लिये चारो तरफ अफसोस की बारिश करता हुआ तो नहीं फिर रहा हूं !"

बटुक० । क्या आपकी पत्नी का भी अभी तक पता नहीं लगा ?

किंग० । नहीं बिलकुल नहीं, मगर उम्मीद है कि जल्दी ही लग जायगा । गिबसन साहब बहुत कोशिश कर रहे हैं और मैं भी पूरा जोर लगा रहा हूं ।

बटुक० । (कुछ ताने के साथ) ठीक है मगर दूसरों के लिये तो उतना जोर नहीं लगाया जा सकता न ! मेरा लड़का चाहे मरे चाहे जीये इसकी किसी को परवाह ही क्या है !!

किंग साहब ने यह सुन तेजी से बटुकचन्द की तरफ देखा और कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय खेमे के दरवाजे पर कलेक्टर साहब दिखाई पड़े जिनको बाबू नकुलचन्द बड़ी तवज्जह और खातिर से बार बार झुकते और सलामें करते हुए अपने साथ ला रहे थे । उन्हें देखते ही सब लोग खड़बड़ा कर उठ खड़े हुए । कलेक्टर साहब ने हँसते हुए सब से हाथ मिलाया और दो चार बातें कीं, इसके बाद मौका देख नकुलचन्द ने नम्रता से कहा, "अगर हुजूर उधर तशरीफ ले चलें तो खेल शुरू कर दिया जाय ।"

कलेक्टर साहब चलने को तैयार हो गये और नकुलचन्द इन सभों को लिये हुए उस आलीशान शामियाने की तरफ बढ़े जिसमें एक छोटे थियेटर का स्टेज खड़ा किया गया था तथा जिसके बगल वाले दूसरे शामियाने में दावत का इन्तजाम था । थियेटर वाला शामियाना महल के साथ सटा हुआ था और स्टेज इस तरह खड़ा किया गया था कि महल की खिड़कियों में से, जिन पर चिकें पड़ी हुई थीं, औरतें भी बखूबी सब तमाशा देख सकती थीं । कलेक्टर साहब के साथ साथ इधर उधर फैले हुए सब आदमी भी उसी तरफ इकट्ठे होने लगे और फाटक तथा बाग

में एक तरह से सन्नाटा हो गया, केवल नौकर सिपाही आदि ही इधर उधर दिखाई पड़ते रहे।

(२)

प्रधान मेहमान (कलेक्टर) के कुर्सी पर बैठते ही थियेटर का पर्दा उठा और खेल शुरू हो गया।

यद्यपि स्टेज छोटा था पर सीन सीनरी सजावट और पौशाकें इतनी तड़क भड़क की थीं और ऐक्टरों की इतनी बहुतायत थी कि खेल ने तुरन्त सभों का ध्यान अपनी तरफ आर्कर्षित कर लिया और थोड़ी ही देर बाद पूरी मजलिस खेल देखने में मशगूल हो गई।

कोई पन्द्रह मिनट तक तमाशा होने बाद पहिला ड्राप-सीन हुआ। लोगों ने थपोड़ी की आवाज से जगह गुंजा दी और कलेक्टर साहब ने झुक कर अपने मेजबान से कहा, "ये लोग ऐक्टिंग तो बहुत अच्छी कर रहे हैं, क्या इन्हें कहीं बाहर से आपने बुलाया है ?" नकुलचन्द बोले, "जी हाँ हुजूर! आज कोई दस बारह दिन हुआ इनका मैनेजर मेरे पास आया और कहने लगा कि 'मैंने नई कम्पनी अभी तैयार की है जिसका कोई खेल अभी तक कहीं नहीं हुआ।' उसकी इच्छा थी कि मैं कम्पनी की कुछ मदद करूँ, मुझे भी आज के लिये किसी शगल की जरूरत थी, अस्तु मदद का वादा किया और बातचीत करके आज के लिये ठीक कर लिया। मगर इनकी सीन सीनरी सजावट और ऐक्टिंग देख कर तो विश्वास होता है कि ये लोग जल्दी तरक्की कर जायंगे।" कलेक्टर साहब बोले, "बेशक यही बात मालूम होती है। अगरचे खेल की बातचीत का पूरा मतलब मैं नहीं समझ सकता हूं फिर भी उठने की तबीयत नहीं करती है। आपकी तजवीज बहुत अच्छी हुई इसमें शक नहीं रायबहादुर साहब !"

तारीफ सुनते ही बाबू नकुलचन्द तो फूल कर कुप्पा हो गये और आपने एक लम्बी सलाम अदा की जिसे देख साहब ने मुस्कुरा कर दूसरी

तरफ मुंह फेर लिया। इतने ही में घन्टी बजी और लोग पुनः खेल की तरफ आकर्षित हुए। इसी समय थियेटर का मैनेजर एक पात्र के रूप में पर्दे के सामने आया और सलाम करके बोला, "साहिबान मजलिस ! इस दूसरे ड्राप में आप लोगों को आग लगने का एक दृश्य दिखाया जायगा जिसे हम लोगों ने बड़ी मेहनत से तैयार किया है। इसके लिये हम लोगों ने राय बहादुर साहब के महल का एक हिस्सा दखल किया है क्योंकि स्टेज पर आग लगने का सीन दिखाने से खतरा हो सकता था। गुजारिश यही है कि खिड़कियों में से आग की लपटें निकलते देख और चीखने चिल्लाने की आवाजें सुन कर आप लोग बिल्कुल न घबड़ावें क्योंकि यह सब कुछ बनावटी होगा और सीन हर वक्त हम लोगों के काबू में रहेगा।"

यह कह पुनः सलाम कर वह साइड में चला गया और थियेटर का पर्दा उठ कर एक होटल के 'डाइनिंग-हाल' का दृश्य दिखाई पड़ा। बहुत से लोग छोटे छोटे टेबुलों के चारो तरफ बैठे खा पी रहे थे। महल से सटे हुए हिस्से की तरफ एक ऊँची बारहदरी सी बनाई गई थी जिसमें गाने बजाने वाले थे तथा जिसमें होटल का पिछला हिस्सा दरसाया गया था। खेल यह दिखाया जा रहा था कि अमीरों के एक होटल में रात के वक्त लोग खा पी रहे थे जब डाकुओं ने यकायक हमला किया और लोगों को लूट लेना चाहा, अस्तु देखते ही देखते यकायक चारो तरफ से बंदूकों और पिस्तौलों की आवाजें आने लगीं और बहुत से भयानक सूरत वाले आदमियों ने आकर होटल में बैठे हुए आदमियों को डराना शुरू किया। होटल के बाकी मेहमान तो डर कर खड़े हो गये पर एक कप्तान ने जिसके साथ कुछ फौजी सिपाही भी थे और जो वहीं भोजन कर रहा था डाकुओं का मुकाबला किया और दोनों तरफ से पिस्तौलें चलनें लगीं। डाकुओं को मुकाबला होते देख गुस्सा आ गया! उनके दो दल हो गये, एक से तो सिपाहियों तथा उन अन्य लोगों का मुकाबला होने लगा जिनमें उस कप्तान तथा उसके सिपाहियों की हिम्मत ने थोड़ी हिम्मत ला दी थी और दूसरा दल होटल में चारो तरफ आग लगाने

लगा। देखते देखते वहाँ इतना शोरगुल चीख चिल्लाहट और खूनखराबा मचने लगा कि नर्क का दृश्य मालूम होने लगा। इसी समय दो तीन डाकू हाथों में जलती हुई मशालें लिए बारहदरी में घुसते दिखाई पड़े और इसके साथ ही उधर भी आग लग गई। इसी समय किसी ने होटल की बिजली की रोशनी बुझा दी और अब अंधेरे में से चीख चिल्लाहट और पिस्तौलों की आवाजें सुनाई देने तथा आग की लपटें दिखाई पड़ने लगीं। बड़ा भयानक हो-हल्ला मच गया जो इतना सजीव मालूम होता था कि अगर मैनेजर पहिले ही से आकर दर्शकों को खबरदार न कर दिये होता तो शायद लोग यही समझ बैठते कि सचमुच ही कोई भयानक दुर्घटना मच रही है। थोड़ी देर बाद स्टेज पर तो कुछ शान्ति हो गई मगर होटल के पिछले हिस्से अर्थात् महल के अन्दर से शोर-गुल और चीख चिल्लाहट की आवाजें आती ही रहीं जिनके साथ मिले हुए तरह तरह के धड़ाके तथा खिड़कियों में से निकली हुई आग की लपटें बता रही थीं कि डाकू लोग अन्दर घुस कर उपद्रव मचा रहे हैं।

कोई पन्द्रह मिनट तक यही सब कुछ होता रहा और तब यकायक स्टेज पर पुनः रोशनी हो गई। मालूम हुआ कि घुड़सवार तथा पैदल पुलिस आग बुझाने वाली दमकल के साथ आ मौजूद हुई है। पुलिस ने होटल को चारो तरफ से घेर लिया और सीढ़ियाँ लगा लगा कर खिड़कियों की राह भीतर घुसने लगी तथा दमकल आग बुझाने लगी। यह सब कुछ इतना ठीक और दुरुस्त हो रहा था कि दर्शक लोग मुश्किल से विश्वास कर सकते थे कि वे एक भयानक दृश्य नहीं देख रहे हैं बल्कि नाटक का एक सीन देख रहे हैं। खिड़कियों की राह असबाब का फेंका जाना, आदमियों का कूदना, पुलिस का पीछा करना आदि आदि बिल्कुल स्वाभाविक सा मालूम होता था। धीरे धीरे आग कब्जे में आ गई, शोरगुल भी कम हो गया और अपेक्षा-कृत शान्ति के बीच में होटल के भीतर से कोई आठ दस डाकू हथकड़ी बेड़ी से जकड़े निकाले गये जिनके पीछे पीछे उनके लूटे

हुए सामान को उठाये कुछ गैर लोग और आगे पीछे पुलिस थी। दर्शकों की थपोड़ी की आवाज के बीच में पुलिस इन डाकुओं को पकड़ ले गई और मानों दर्शकों की पसन्द के लिये उन्हें धन्यवाद देने के लिये पुलिस का सार्जएट दर्शकों को एक लम्बी सलाम करता गया। स्टेज पर एकदम सन्नाटा हो गया तथा पर्दा गिर गया।

कलेक्टर साहब ने माथे पर हाथ फेरते फेरते सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब की तरफ देख अंग्रेजी में कहा, "इन लोगों की ऐक्टिंग हैरतअंगेज है! सचमुच मालूम होता था मानों हम लोग कोई भयानक दुर्घटना देख रहे हैं! गजब का काम इन लोगों ने किया है!!"

सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने कहा, "बेशक ऐसी ही बात है। मैंने एक दफा कलकत्ते में आग लगते हुए देखा था। ठीक वही दृश्य था जो आज इस जगह दिखाई पड़ा!"

मिस्टर किंग जो उनके बगल में बैठे हुए थे बोल उठे, "ठीक है मगर अब स्टेज ऐसा खाली क्यों पड़ा हुआ है? इतनी देर तक खाली पर्दा पड़ा रहना तो अच्छी ऐक्टिंग नहीं कहला सकती!"

इतने हो में मिस्टर गिबसन ने ताज्जुब से कहा, "हैं। फाटक पर वे कौन लोग दिखाई पड़ रहे हैं? वे ही कैदी और सिपाही आदि तो मालूम होते हैं जो अभी अभी यहां स्टेज पर से गए हैं!"

सब लोग उसी तरफ देखने लगे और कइयों के मुंह से निकला, "बेशक वे ही तो मालूम होते हैं! मगर ये लोग स्टेज छोड़ कर बाग के बाहर क्यों जा रहे हैं!!"

कई बोल उठे, "स्टेज पर तो ऐसा सन्नाटा है मानों यहां कोई आदमी ही नहीं है। आखिर यह सब मामला क्या है?"

तरह तरह की ताज्जुब की बातें लोग करने लगे मगर कुछ निश्चय नहीं हो सका कि यह सब क्या हो रहा है। कैदी तथा सिपाही लोग फाटक पार करके बागीचे के बाहर हो गये पर स्टेज पर से कोई आहट न मिली। दर्शक

लोग ताज्जुब से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। आखिर नकुलचन्द से न रहा गया और वे अपनी कुर्सी पर से उठ कर स्टेज पर चढ़ उस पर्दे के पीछे पहुँचे जो आग और खून-खराबे के दृश्य पर गिरा दिया गया था।

यकायक उनके जोर से चीखने और तब एक 'हाय' करके धमाके के साथ जमीन पर गिरने की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुनते ही बहुत से आदमी "क्या हुआ ! क्या हुआ !!" कहते हुए लपक कर उनके पास पहुंचे। देखा कि टूटी फूटी कुर्सियों और सन्दूकों के ढेर के बीच में बाबू नकुलचन्द बेहोश पड़े हुए हैं और उनके हाथ में लाल कागज का एक टुकड़ा दबा हुआ है। कुछ लोग उन्हें होश में लाने की फिक्र करने लगे मगर बाबू बटुकचन्द ने आगे बढ़ कर हाथ से पुर्जा खींच लिया और उसे पढ़ा, पढ़ते ही उनके मुँह से भी चीख निकल गई और वे भी बदहवासों की तरह इधर उधर देखने लगे। जब कलेक्टर साहब ने उनके पास जाकर पूछा, "क्या हुआ बटुकचन्द ! इस पुर्जे में क्या है ?" तो उन्हें होश हुआ और उन्होंने पुर्जा साहब की तरफ बढ़ाया। कलेक्टर साहब ने पुर्जा पढ़ा, लिखा हुआ था—

"रक्त-मंडल ने एक बड़ा भारी काम अपने सिर पर उठाया है, स्वदेश को जुलमियों के पंजे से छुड़ाना। उसके लिये सब से बड़ी जरूरत रुपये की है मगर अफसोस कि जिनके पास रुपये हैं वे इस काम के लिये खर्च करने को तैयार नहीं हैं। लाचार होकर हमें जबर्दस्ती करनी पड़ती है और जिस तरह, जहाँ से, और जैसे मिलता है, रुपया लेना पड़ता है।

"आज का अच्छा मौका हम लोग किसी तरह छोड़ नहीं सके। महल में जितनी औरतें थीं उनके जेवर हम ले जा रहे हैं। रायबहादुर नकुलचन्द को रायबहादुरी मिली है, इस खुशी में उन्हें सब से अधिक देना चाहिये, अस्तु हम उनका वह खजाना भी लेते जा रहे हैं जो महल के तहखाने में बन्द था ?"

इतना ही उस चीठी का मजमून था और उसके नीचे एक बड़ा सा लाल धब्बा पड़ा हुआ था जो खून की तरह मालूम होता था और जिसके

बीच में चार उँगलियों के निशान पड़े हुए थे।

इस चीठी ने थोड़ी देर के लिये कलेक्टर साहब के भी होश गुम कर दिये मगर उन्होंने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से कुछ बातें करके अन्दर महल की तरफ बढ़े। बाग भर के सिपाही और सभी नौकर चाकर मामला गड़बड़ देख वहां आ जुटे थे तथा बहुत से मेहमान भी उनके साथ साथ अन्दर चले मगर साहब ने अधिकांश को महल के दर्वाजे पर ही रोक दिया और केवल मुख्य मुख्य आठ दस आदमी भीतर घुसे।

महल के अन्दर पहुंचते ही वहाँ अद्भुत दृश्य नजर आया। कई नौकर मजदूरनियाँ जिनके हाथ पैर बंधे थे तथा मुंह में लत्ते ठूँसे हुए थे चौक में खम्भों के साथ बँधे हुए थे तथा एक बड़ी कोठड़ी के अन्दर बहुत सी औरतें बदहवास पड़ी हुई थीं। कुछ औरतें अब जरा जरा होश में आ रही थीं तथा कुछ एक दूसरे कमरे के अन्दर बन्द रो रही थीं। नकुलचन्द के ख़जाने वाले तहखाने का मजबूत दर्वाजा टूटा पड़ा था और बहुत से सन्दूक टूटे फूटे इधर उधर बिखरे हुए थे। चारो तरफ तरह तरह के टूटे फूटे और अधजले सामान फैले थे जिनसे मालूम होता था कि लुटेरों ने पूरी तरह लूट-पाट मचाई है।

कलेक्टर साहब ने उन नौकर मजदूरनियों को खोलने का हुक्म दिया और जब वे सब छूटे तो उनसे सब हाल पूछा। जो कुछ उनकी घबड़ाई और डरी हुई बातों से मालूम हुआ वह यह था कि जब थियेटर में लूट मार और आग का दृश्य दिखाया जा रहा था तो सभी मेहमान तथा घर की औरतें इसी तरफ आकर तमाशा देखने लगी थीं। उसी समय कई आदमी हाथ में मशालें लिए खिड़कियों की राह महल में आ घुसे। हम लोग समझ रहे थे कि यह सब भो खेल ही हो रहा है इससे उन लोगों को रोका नहीं, और वे लोग बीच महल में आ पहुंचे जहाँ उन्होंने किसी तरह का मसाला जलाया जिससे बहुत धूंआ पैदा हुआ और सभों की तबीयत बेचैन हो गई तथा सिर घूमने लगा। इतने ही में बन्दूक पिस्तौलें लिये वे लोग

औरतों के पास पहुंचे और धमका कर बोले, "चुपचाप अपने अपने जेवर उतार कर दे दो ! जरा भी चूं-चपड़ किया तो गोली मार देंगे !" बेचारी औरतें क्या कर सकती थीं ? महल भर में वे लोग फैले हुए थे, फिर भी दो एक ने जो शोर मचाया तो बेदर्दी के साथ उन हत्यारों ने उन्हें मार पीट कर सब जेवर उतार लिये । लाचार सभी ने अपने अपने जेवर उतार कर दे दिये । इस बीच में जो धूआं चौक में हो रहा था उसने तबीयत एकदम खराब कर दी और सब लोग बेहोश हो गये । जो थोड़ा बहुत होश में रह गये उनकी यह गति की गई जो आप देख रहे हैं। इसके बाद उन लोगों ने तहखाने का दर्वाजा तोड़ कर खजाना लूट लिया और फिर सब के सब चले गये ।

यह विचित्र हाल सुनते ही सभों के होश दंग हो गये । इतने भयानक काम का वे लोग कभी गुमान भी नहीं कर सकते थे । यद्यपि लुटेरे लोगों को गये देर हो गई थी पर फिर भी सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने बहुत से आदमियों और सिपाहियों के साथ बाग के बाहर निकल कर उनका पीछा किया और इधर कलेक्टर साहब ने अन्य लोगों की मदद से बेहोश औरतों को होश में लाने और उनका इजहार लेने का काम शुरू किया ।

× × × ×

दौड़ धूप और खोज परेशानी में सुबह हो गई मगर उन लुटेरों का कुछ पता न लगा, हाँ यह सभों को मालूम हो गया कि महल में जितनी औरतों के बदन पर जो कुछ भी जेवर था वह सब लूट लिया गया और उसके साथ साथ नकुलचन्द के खजाने में भी एक पाई न छोड़ी गई । सब मिला कर कोई दस लाख रुपये की जमा लेकर रक्त-मंडल के सदस्य ऐसा गायब हुए कि सब लोग सिर पीटते ही रह गये और उनकी धूल का भी पता न चला । तमाशा देखने और सैर का मजा लेने जो मर्द और औरतें यहाँ आई थीं वे सभी लुटलुटा कर रोती कलपती अपने अपने

घर लौटीं मगर नकुलचन्द वहीं रह गये। उनका जो नुकसान हुआ था वह इतना भारी था कि वे पागल से हो गये थे और इस लायक नहीं रह गये थे कि अपनी जगह से हिलते।

बिजली की तरह यह खबर चारो तरफ दूर दूर तक फैल गई और देखते ही देखते महामारी की तरह 'रक्त-मंडल' का नाम चारो तरफ गूँज उठा, मगर कोई भी नहीं जानता था कि यह क्या बला है और इसके कार्यकर्ता कौन कौन से लोग हैं। हाँ इस मंडल का डर सभों और विशेष-कर अमीरों के दिल में बैठ गया और सभी को अपनी अपनी जान और दौलत बचाने की फिक्र पड़ गई।

हाथियों की टक्कर

(१)

एक बहुत बड़े बँगले के ड्राइंग-रूम में जो बिल्कुल अंगरेजी किते से सजा हुआ है हम अपने पाठकों को ले चलते हैं। यह बँगला और वह आलीशान बाग जिसके अन्दर यह बना हुआ है आगरे के प्रसिद्ध विद्वान और पर्यटक पंडित गोपालशंकर का है जिन्होंने कई लाख रुपये लगा कर इसे बनवाया है। इस समय पंडित गोपालशंकर अपने ड्राइंग-रूम में बैठे हुए एक अखबार पढ़ रहे हैं तथा साथ ही साथ उस मोटे सिगार का धूआं भी फेंक रहे हैं जो उनके ओठों के बीच दबा हुआ है।

अखबार पढ़ते हुए यकायक गोपालशंकर* चिहुंक उठे और कुर्सी की पीठ का ढासना छोड़ तन कर बैठ गये। उन्होंने कोई ऐसी खबर पढ़ी थी जिसने उन्हें हैरत में डाल दिया था, एक बार फिर उस समाचार को पढ़ा, और तब नौकर को बुलाने वाली घंटी की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि बाहर की बरसाती में एक मोटरकार के आकर खड़े होने की आवाज सुनाई

* पंडित गोपालशंकर का इसके पहिले का विचित्र हाल जानने के लिये 'लाल-पंजा' नामक उपन्यास देखिये।

पड़ी । उन्होंने घूम कर देखा और साथ ही न जाने क्यों उनका चेहरा एक बार जरा देर के लिये लाल हो गया ।

वड़े दरवाजे के शीशों की राह गोपालशंकर ने देखा कि मोटर में से एक अंगरेज और एक लड़की उतरी और कमरे की तरफ बढ़ी । इन्हें देखते ही गोपालशंकर भी फुर्ती से उठ खड़े हुए और जब तक नौकर उन दोनों के आने की खबर करे उसके पहिले ही वे दर्वाजे पर पहुंच गये । दोनों को उन्होंने वड़े आदर से लिया और हाथ मिला कर कमरे के अन्दर ले आये।

ये आने वाले यहाँ के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल और उनकी लड़की मिस रोज थे जिनसे पंडित गोपालशंकर की बड़ी पुरानी जान पहिचान और वहुत गहरी दोस्ती थी । मिस्टर केमिल की बदली यहाँ से बनारस के लिये हो गई थी और ये दो ही एक दिन में अपनी नई ड्यूटी पर जाने वाले थे । इस समय अपने दोस्तों से मुलाकात करने मिस्टर केमिल निकले थे परन्तु इनके चेहरे पर चिन्ता की एक झलक थी जिसे चतुर गोपालशंकर ने पहिली ही निगाह में देख लिया और मामूली बातचीत के बाद कहा, "आज आपके चेहरे से कुछ वेचैनी जाहिर हो रही है, क्या कोई नई बात हुई है ?"

केमिल साहब कुछ रुकते हुए बोले, "हाँ कुछ तो जरूर हुई है । गाजीपुर में मेरे एक दोस्त मिस्टर किंग रहते हैं, उनकी एक चीठी आई है जिसमें उन्होंने लिखा है कि आज कई दिनों से उनकी पत्नी मिसेज किंग का पता नहीं लग रहा है । उनको सन्देह है कि उसी रक्त-मंडल वाले शैतानों की यह कार्रवाई है जिन्होंने अफीम की कोठी बन्द करने को लिखा था ।

गोपाल० । वही रक्त-मंडल जिसने उस दिन बनारस के किसी रईस की महफिल लूट ली थी ?

केमिल० । हां वही । ये लोग बड़े शैतान मालूम होते हैं और इनका जाल वहुत दूर दूर तक फैला जान पड़ता है ।

गोपाल० । रक्त-मंडल ? रक्त-मंडल ? यह नाम कुछ परिचित सा

मालूम पड़ता है। जरूर पहिले कभी इसे सुना है पर ख्याल नहीं पड़ता। खैर तो मिसेज किंग को गायब हुए क्या बहुत दिन हो गये हैं ?

केमिल०। हां, और उनके गायब होने के पहिले किंग को इस रक्त-मंडल वालों की तरफ से धमकी की चीठियाँ मिल चुकी हैं जिनमें लिखा था कि अगर वे अफीम की कोठी बन्द न कर देंगे तो उनकी बीवी जान से मार दी जायगी !!

गोपाल०। (गुस्से से) पाजी ! शैतान ! स्त्री पर जुल्म ! नीचता की हद है !!

गोपालशंकर की बात जो बहुत धीमे स्वर में कही गई थी केमिल साहब ने नहीं सुनी अस्तु वे कहते गए—

केमिल०। जान पड़ता है कि यह रक्त-मंडल मुझे काफी तकलीफ देगा। पिछले कुछ ही दिनों में तीन घटनाएँ इसके सबब से बनारस में हो चुकी हैं। मगर उम्मीद है कि अगर जरूरत पड़ी तो आप मुझे जरूर मदद देंगे।

गोपाल०। हाँ हाँ, मैं हमेशा अपने भरसक आपकी मदद करने को तैयार रहूंगा, मगर अफसोस तो यही है कि मेरा यहां रहना अब ज्यादे दिनों के लिये नहीं है।

केमिल०। सो क्या ? आप क्या कहीं जा रहे हैं ?

गोपाल०। हाँ मैं एक सप्ताह के अन्दर ही हिमालय की सैर करने को रवाना हो जाऊँगा। मैं बहुत दिनों से वहाँ जाने का विचार कर रहा था पर मौका नहीं मिलता था। अब इस बार नैपाल दरबार की तरफ से मुझे बुलावा मिला है और मैं यह मौका छोड़ना नहीं चाहता।

रोज जो अब तक चुप बैठी थी बोल उठी, "नैपाल दरबार ने आपको क्यों बुलाया है ?"

गोपाल०। अपनी रियासत के कुछ प्राचीन खंडहरों की जाँच के लिए तथा यह भी देखने के लिये कि उनके राज्य में कहीं मिट्टी का तेल मिल सकता है या नहीं। हाँ खूब ख्याल आया, नैपाल दरबार ने दो चार विचित्र

जानवर मेरे चिड़ियाखाने के लिये भेजे हैं। क्या आप उन्हें देखेंगी ?

रोज०। (खुशी से) हां जरूर !

तीनों आदमी उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर निकले। गोपालशंकर को चिड़िया और जानवर पालने का बहुत शौक था और उन्होंने बड़े खर्च से बहुत दूर दूर के पशु पच्छी मंगा कर अपने बाग के चिड़ियाखाने में इकट्ठे किये थे। इसके लिए उन्होंने अपने बड़े बाग का एक काफी हिस्सा जिसमें नकली पहाड़, नाले, तालाब, आदि सभी कुछ थे अलग कर दिया था और उसे बहुत शौक से अपने दोस्तों को दिखाया करते थे। इस समय ये मिस्टर केमिल तथा मिस रोज को लिये उसी तरफ चले।

न जाने कब से एक आदमी कमरे के भीतर एक पर्दे की आड़ में छिपा खड़ा था। इन लोगों के जाते ही वह आड़ से बाहर निकला और बीचोबीच में रक्खे टेबुल के पास आया। उस आदमी के हाथ में एक लिफाफा था जिसे उसने टेबुल पर रख दिया और उसके ऊपर एक छोटी खुखड़ी जो उसके कपड़ों में छिपी हुई थी गाड़ दी। इसके बाद वह कमरे के दर्वाजे के पास आया और इधर उधर देख तथा सन्नाटा पा कमरे के बाहर निकल गया। पेड़ों की आड़ देता और लोगों की निगाहें बचाता हुआ वह बंगले के पीछे की तरफ निकल गया।

(२)

लगभग आध घंटे के बाद मिस्टर और मिस केमिल को बिदा कर गोपालशंकर अपने कमरे में वापस लौटे। इस समय उनका चेहरा हँस रहा था और उनके होठों पर एक गीत था, पर कमरे के अन्दर पैर रखते ही उनकी निगाह टेबुल पर गड़ी भुजाली पर पड़ी जिसे देखते ही उनका गीत उनके होठों पर ही रह गया। वे झपट कर टेबुल के पास आये और उस खुखड़ी तथा चीठी को देखने लगे। न जाने क्यों उनका दिल किसी अनजानी मुसीबत की बात सोच कर एक बार जोर से धड़क गया।

कुछ देर तक वे एकटक उन दोनों चीजों को देखते रहे और तब उन्होंने उस गड़ी हुई भुजाली को टेबुल से उठाने के लिये हाथ बढ़ाया पर न जाने क्या सोच कर रुक गये और वहां से हट कर कमरे के चारो तरफ घूमने लगे। हर एक खिड़की दरवाजे और पर्दे को उन्होंने देख डाला पर कहीं किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी पर इससे उनके मुँह पर नाउम्मीदी की कोई झलक दिखाई न पड़ी, शायद वे पहिले ही से सोचे हुए थे कि जिसका यह काम है वह अब तक वहां बैठा न होगा। कमरे की जाँच पूरी कर वे बाहर निकले और अपने खास नौकर को बुला कर उन्होंने पूछा, "क्या मेरे जाने बाद कोई आदमी इस कमरे में आया था?" उसने जवाब दिया, "जी कोई नहीं!" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "तुम या दूसरे नौकरों में से भी कोई नहीं आया?" वह बोला, "जो कोई नहीं, हम सभी लोग वह नई आलमारी ऊपर वाले कमरे में रखने में लगे हुए थे।" यह सुन गोपालशंकर ने फिर कुछ नहीं पूछा और आदमी को बिदा कर कमरे के अन्दर लौट आये।

टेबुल के पास जाकर उन्होंने खुखड़ी को टेबुल से अलग किया जिसकी नोक एक इंच से ज्यादा लकड़ी में धंसी हुई थी और कुछ देर तक बड़े गौर से उसे देखते रहे। छोटी होने पर भी वह खुखड़ी बहुत सुन्दर बनी हुई थी और उसका फौलादी लोहा बहुत ही अच्छे पानी का था। उसकी बेंट हाथीदाँत की थी और उस पर बहुत उम्दा नक्काशी का काम बना हुआ था जिसे देख गोपालशंकर ने धीरे से कहा, "खास काठमांडू की बनी चीज है।"

भुजाली को एक बगल रख अब इन्होंने उस चीठी को उठाया जो उसके नीचे गाड़ दी गई थी। चीठी लाल रंग के लिफाफे के अन्दर बन्द थी जिस पर किसी का नाम न था। लिफाफा फाड़ने पर अन्दर से लाल ही कागज की एक चीठी निकली जिस पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था। लाल कागज पर लाल ही स्याही होने के कारण हरूफ साफ साफ पढ़े नहीं जाते

थे फिर भी गोपालशंकर ने मतलब निकाल ही लिया। चीठी का मजमून यह था :—

"गोपालशंकर—

"हम लोग तुम्हें बहुत दिनों से जानते हैं। वक्त बेवक्त अंग्रेजों की मदद करते रहने पर भी अभी तक हम लोगों ने कभी तुम्हें कुछ नहीं कहा क्योंकि हमलोग जानते हैं कि तुम बड़े भारी विद्वान हौ और मुल्क तुम्हें इज्जत की निगाह से देखता है।

"मगर हम लोगों ने सुना है कि तुम नैपाल जा रहे हौ। किस काम से जाते हौ यह भी हमें मालूम हो गया है, इसी से यह चीठी लिख कर तुम्हें होशियार करते हैं कि तुम अपना इरादा बदल दो वरना तुम्हारे लिये ठीक न होगा।

"तुम्हें चाहे यकीन हो या न हो पर हम लोग ठीक कहते हैं कि जो कुछ हम लोग कर रहे हैं वह अपने देश के फायदे के लिये ही कर रहे हैं। हम लोगों के काम में रुकावट डालने वाला चाहे कितना ही बड़ा विद्वान क्यों न हो पर देश का दुश्मन ही कहलावेगा और उसे इस दुनिया से उठा देना ही मुनासिब होगा। इसी से तुम्हें खबरदार करते हैं कि हम लोगों के मामले में दखल न दो और न झूठ मूठ अपनी जान के ही ग्राहक बनो। याद रक्खो कि जो भुजाली आज तुम्हारे टेबुल पर गड़ी है उसी को तुम किसी दिन अपनी छाती में गड़ी पाओगे अगर हम लोगों का हुक्म न मानोगे। होशियार ! होशियार !!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था पर एक बड़ा सा लाल धब्बा बेशक दिखाई पड़ता था जो देखने में खून के दाग की तरह मालूम होता था और जिसके बीच में चार उँगलियों का निशान साफ मालूम पड़ रहा था।

अपनी जिन्दगी में गोपालशंकर ने हजारों ही दफे खतरे के काम किये थे और सैकड़ों ही धमकी की चीठियां अब तक ये पा चुके थे जिन पर सर-

सरी एक निगाह से ज्यादा वे कभी डालते न थे मगर न जाने क्यों इस चीठी को उन्होंने इस नाकदरी की निगाह से नहीं देखा। इसके पढ़ते ही उनके माथे पर सिकुड़न पड़ गई और वे कुछ तरद्दुद के साथ बोले, "खून की बूंद पर 'भयानक चार' का निशान चार उंगलियां! इस मुल्क के सब से जबर्दस्त गिरोह का निशान! यह मामूली मामला नहीं है! खूब सोच विचार के कोई बात ठीक करनी पड़ेगी!!"

चीठी लिये हुए वे एक कुरसी पर जा बैठे और आँखें बन्द कर बड़े गौर से कुछ सोचने लगे। चौथाई घंटे से ऊपर इसी तरह बीत गया और इस बीच में उनके चेहरे ने तरह तरह के रंग बदले मगर हम कुछ भी नहीं कह सकते कि उनके दिल में इतनी देर तक क्या क्या बातें घूमती रहीं या उन्होंने क्या तय किया, पर काम का कोई ढंग उन्होंने जरूर ठीक कर लिया था यह मालूम होता था, क्योंकि इसके बाद वे कुरसी पर से उठे और उस चीठी और भुजाली को लिए हुए कमरे के बाहर हो कर ऊपरी मंजिल के एक दरवाजे के पास आ खड़े हुए जो बन्द था। कमर से एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने ताला खोला और दर्वाजे के अन्दर जा कर पुनः भीतर से बन्द कर लिया। ताला इस तरह से जड़ा हुआ था कि वही ताली भीतर बाहर दोनों तरफ से काम देती थी। दरवाजे के आगे पर्दा खींच दिया और तब खिड़की खोल दी जिससे इस कमरे में बखूबी रोशनी फैल गई।

यह बड़ा कमरा आधा लेबोरेटरी और आधा लाइब्रेरी के ढंग पर सजा हुआ था। एक तरफ की दीवार के साथ आलमारियों की एक कतार थी जिनके अन्दर तरह तरह की बड़ी छोटी रंगीन सादी बोतलों में तरह तरह की चीजें रक्खी हुई थीं, सामने कई बड़े टेबुल थे जिन पर तरह तरह के विचित्र यन्त्र और औजार रखे हुए थे, तथा दूसरी तरफ जमीन से लेकर छत तक टांड़ें बनी हुई थीं जिनमें हजारों किताबें रक्खी हुई थीं। सामने एक गोल टेबुल और कई कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। इस वक्त गोपालशंकर इसी किताबों वाले हिस्से की तरफ बढ़े और एक टाँड़ के सामने जाकर खड़े हो

गये। किसी गुप्त स्थान को अँगूठे से दबाते ही इसका एक हिस्सा घूम कर अलग हो गया और पीछे दीवार में जड़ी लोहे की आलमारी दिखाई दी जिसमें ताली लगाने की कोई जगह दिखाई नहीं पड़ती थी। किसी तरकीब से गोपालशंकर ने इस आलमारी को खोला और उसके भीतर से एक मोटी सी किताब निकाली जिसे टेबुल पर रख वे पन्ने उलटने लगे।

पन्ने उलट पुलट करते हुए एक जगह पहुंच कर गोपालशंकर रुके और कुर्सी खींच उस पर बैठ कर गौर से वही पढ़ने लगे। ऊपर की तरफ कुछ मोटे हरफों में लिखा हुआ था—'रक्त-मंडल' और उसके नीचे बहुत ही बारीक बारीक अक्षरों में यह लिखा हुआ था :—

"यह बलवाइयों के एक गरोह का नाम था। इसके सब सदस्य लाल कपड़ा पहिनते तथा मुर्दे की खोपड़ी और ताजे कटे हुए भैंसें के सर पर हाथ रख कर कसम खाते थे* कि उनकी जाति अब 'हिन्दी' हुई और उनकी जानमाल का मालिक 'रक्त-मंडल' हुआ। देश को जिस तरह से हो सके स्वतन्त्र करना उनका मुख्य उद्देश्य था। इनके चार मुखिया थे जो अपने को 'भयानक-चार' कहते थे। इन लोगों ने सन्—के लगभग बहुत जोर बाँधा था यहाँ तक कि सरकार भी इनसे घबड़ा गई थी। मुल्क भर में इस मंडल की शाखें थीं। अन्त में फतेहउद्दीन रघुबीरसिंह और कई अन्य होशियार जासूसों की मेहनत से इसका भंडा फूटा और इसके कई मुख्य कार्यकर्ता पकड़े गये। तब से यह गरोह टूट गया और फिर कभी इसने सरकार को तंग नहीं किया मगर यह न मालूम हुआ कि इनके मुखिया वे भयानक चार भी मारे गये या कहीं निकल गये।"

इसके नीचे पतले अक्षरों में और भी कुछ बातें लिखी हुई थीं जिन्हें गोपालशंकर पूरी तरह से पढ़ गये और तब किताब बन्द कर उसी स्थान

---

* रक्त-मंडल का इससे पहले का हाल और 'भयानक-चार' के भयानक कामों का पूरा परिचय जानना हो तो 'प्रतिशोध' उपन्यास पढ़िये।

में बन्द कर देने के वाद वे कमरे के वाहर चले आये। दरवाजे में ताला बन्द कर दिया और नीचे उतर गये।

(३)

अपनी मुलाकातों से छुट्टी पा मिस्टर केमिल घर वापस लौटे और भोजन करने बाद नौकरों से असबाव इत्यादि बँधवाने की फिक्र में लगे क्योंकि इन्हें दो ही एक दिन के अन्दर काशीजी के लिये रवाना होना था। इनकी पत्नी और लड़की भी अपने अपने असवाब के फेर में पड़ी हुई थीं।

लगभग दो घंटे के बाद केमिल साहब को कुछ फुरसत मिली और वे इतना मौका पा सके कि अपने बंगले के बरामदे में पड़ी आरामकुर्सी पर बैठ कर अखबार पढ़ते हुए एक सिगार का लुत्फ ले सकें। उन्होंने ताजा अखबार उठा लिया और फकाफक धूंआ उड़ाते हुए उसके पेजों पर सरसरी निगाह डालने लगे। यकायक एक समाचार की मोटी हेडिंग ने उनका ध्यान आकर्षित किया। वह समाचार यह था :—

'वैज्ञानिकों में हलचल !'

'बेतार का तार बन्द !!'

"दो दिनों से यहां के बेतार के सब यंत्र बेकार पड़े हुए हैं। कहीं का कोई भी यंत्र न तो कहीं समाचार भेज ही सका है न कहीं का समाचार पा ही रहा है। यंत्रों में कहीं कोई खराबी नहीं है। वैज्ञानिक परेशान हैं क्योंकि इस बात का कोई सबब मालूम नहीं होता। लोगों में तरह तरह के खयाल फैल रहे हैं। कुछ का कहना है कि मंगल ग्रह वालों ने कोई कार्रवाई की है और कुछ समझते हैं कि पृथ्वी पर बिजली का बड़ा भारी तूफान आया हुआ है जिसने बेतार की तार के सब यंत्र बेकार कर दिये हैं। अभी तक कुछ भी ठीक नहीं हो पाया है।"

यही वह समाचार था जिसने सुबह गोपालशंकर को ताज्जुब में डाल दिया था। इस समय केमिल साहब को भी इसे पढ़ कर बड़ा ही ताज्जुब

हुआ और वे मन ही मन बोले, "आज शाम को मौका मिला तो कप्तान रूबी से मिल कर पूछूँगा कि यह क्या मामला है ?"

कप्तान रूबी बेतार के तार के बड़े भारी जानकार थे और आगरे के सरकारी बेतार के तार-घर में उसी के सम्बन्ध की कुछ नई मशीनें बैठाने के लिये आज कल यहीं आये हुए थे। इनसे और मिस्टर केमिल से बड़ी दोस्ती थी क्योंकि दोनों विलायत में एक ही स्कूल में पढ़े हुए थे।

मिस्टर केमिल ने दुबारा अखबार उठाया ही था कि उनके कान में मोटर की आवाज आई जो अभी अभी उनके फाटक पर आकर रुकी थी और जिस पर से एक आदमी उतर कर तेजी से इनकी तरफ आ रहा था। केमिल साहब ने पहिचाना कि वे आगरे के प्रसिद्ध मगर सूम अमीर बाबू गोपालदास हैं। "यह इस वक्त क्यों आ रहे हैं?" कहते हुए केमिल साहब उठे और दो एक कदम आगे बढ़े, तब तक गोपालदास भी आ पहुँचे। केमिल साहब ने उनसे हाथ मिलाया और कुर्सी पर बैठाते हुए कहा, "बाबू गोपालदास, इस समय बेमौके कैसे आना हुआ ?"

गोपालदास ने जिनके चेहरे से डर और घबराहट बरस रही थी बेचैनी के साथ डरते डरते चारो तरफ देखा और तब एक लम्बी सांस लेकर कहा, "केमिल साहब, मैं बड़े भारी तरद्दुद में पड़ कर आप के पास आया हूं"

मिस्टर केमिल ने कहा, "सो क्या ? मुझे बताइये, मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं करने को तैयार हूं।"

यह सुन गोपलादास ने अपनी जेब से लाल कागज का एक टुकड़ा निकाला और केमिल साहब के पास पहुंच दिखाते हुए कहा, "मेरी घबराहट का यही सबब है।"

केमिल साहब ने वह पुर्जा लिया और पढ़ा। लाल कागज पर लाल ही स्याही से मगर मोटे मोटे हरफों में यह लिखा हुआ था :—

"गोपालदास,

"तुमने अपनी शैतानी और सूमड़ेपन की बदौलत बहुत सा रुपया

इकट्ठा किया है। यह दौलत तुम्हारे लिये बिल्कुल वेकार है क्योंकि तुम्हारा कोई लड़का बाला नहीं है जो तुम्हारे बाद तुम्हारे धन को भोगे। इस लिये तुम्हें मुनासिब है कि अपना रुपया किसी अच्छे काम में खर्च करो। हम लोग देश को स्वाधीन बनाने की कोशिश कर रहे हैं और तुमसे मदद की उम्मीद रखते हैं। हमें विश्वास है कि आज से तीन दिन के भीतर तुम हम लोगों को एक लाख रुपया दे कर देश का उपकार करोगे। आज के तीसरे दिन आधी रात को अपने सोने वाले कमरे को खिड़की से ऊपर से गिरा देने से रुपया हमें मिल जायगा।

"खबरदार! अगर तुमने रुपया नहीं दिया तो तुम्हारी खैर नहीं है! यह भी ख्याल रखना कि पुलिस या किसी भी तीसरे आदमी को हमारा हाल न मालूम होने पावे। अगर तुमने किसी को भी खबर की तो उसी वक्त मार डाले जाओगे!!"

यही उस चोठी का मजमून था और इसके नीचे एक बड़ा सा लाल बूंद की तरह का निशान बना हुआ था जिस पर चार उँगलियों का दाग था। इसे देखते ही केमिल साहब पहिचान गये कि रक्त-मंडल के 'भयानक-चार' का मशहूर निशान है। न जाने क्यों चीठी पढ़ और निशान देख कर एक वार केमिल साहब घबरा गये मगर तुरन्त ही उन्होंने अपने को काबू में किया और गोपालदास से बोले, "यह चीठी आपको कब मिली?"

गोपाल०। वस आज ही मिली है, यही कोई आधा घन्टा हुआ होगा। और पढ़ते ही मैं इतना घबराया कि सीधा आपके पास दौड़ा चला आया हूं। यह चीठी किसने भेजी है और यह निशान कैसा है यह सब तो मुझे कुछ मालूम नहीं मगर मेरा दिल कह रहा है कि इसके लिखने वाले कोई बड़े ही खराब आदमी हैं और मुझे तकलीफ पहुंचाने का उन्होंने पक्का इरादा कर लिया है।

केमिल०। मैं इस निशान को पहिचानता हूं। यह ऐसे शैतानों के एक गिरोह का निशान है जो बड़े ही दुष्ट और लालची हैं।

गोपाल०। (रोने स्वर से) तो हुजूर मेरी जान इन बदमाशों से बचाइये ! मुझे वस आपही का भरोसा है !!

केमिल० । घबराइये नहीं, घबराइये नहीं ! ये लोग आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, आप बेफिक्र रहें, मैं आपकी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त कर दूंगा और इन कम्बख्तों को पकड़ने का भी उपाय करूंगा ।

गोपाल० । जी हां हुजूर । बस कुछ ऐसा कर दीजिये कि इस ढली उमर में मेरी गाढ़े पसीने की कमाई इन पाजियों के हाथ में न पड़ने पावे और मैं गरीब मुफ्त में न सताया जाऊं । मैंने जब से चीठी पाई है मेरा जी बेतरह घबड़ा रहा है, कभी मन में आता है कि शहर छोड़ कर चला....

केमिल० । नहीं नहीं, आप बिल्कुल घबड़ाइए नहीं, ये लोग कुछ नहीं कर सकेंगे, आप बेफिक्री से घर जाकर रहें, मैं अभी कोतवाल साहब को लिख कर आपका इन्तजाम करे देता हूं । एक सिपाही बराबर आपके मकान के इर्द गिर्द पहरा देगा और आपका बाल बांका न होने पावेगा । मगर आपकी बेहतरी के खयाल से यह जरूर कहूंगा कि आप जहां तक हो सके मकान के अन्दर ही रहें और बिना कोई जरूरी काम हुए बाहर न निकलें।

गोपाल० । जी हाँ हुजूर ऐसा ही कर दें । बल्कि दो सिपाही रहें तो और ठीक होगा । मैं आज से जब तक आप न कहेंगे घर के बाहर न निकलूंगा—मगर अब मेरी जान आपके हाथ में है ।

केमिल साहब ने कुछ और बातचीत कर गोपालदास को शान्त किया और उनके सामने ही कोतवाल साहब को टेलीफोन कर के उनकी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त भी कर दिया । तब जाकर गोपालदास की घबराहट दूर हुई और वे केमिल साहब को बहुत धन्यवाद देते हुए वहां से विदा हुए। वह चीठी केमिल साहब ने अपने पास ही रख ली ।

उनके जाने के बहुत देर बाद तक केमिल साहब रक्त-मंडल की वह चीठी बार बार पढ़ते और गौर से कुछ सोचते रहे । इसके बाद वे उठे और भीतर जा कपड़े पहिन कर बाहर निकले । उनके बंगले से थोड़ी ही

दूर पर वर्तमान कलेक्टर का बंगला था, केमिल साहब उसी तरफ रवाना हुए। उनकी चाल तेज थो श्रौर माथे पर की सिकुड़नें उनके दिल में घर कर लेने वाले तरद्दुद की खबर दे रही थीं।

(४)

श्रागरे के कमिश्नर मिस्टर टेम्पेस्ट श्रपने प्राइवेट रूम में पंडित गोपालशंकर के साथ बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं। श्रौर कोई इस कमरे में नहीं है।

गोपालशंकर०। गुप्त ! इस बात को तो मैंने इतना गुप्त रक्खा कि श्राज मिस्टर केमिल के साथ बातचीत होने पर भी मैंने कुछ प्रगट नहीं किया कि मैं वास्तव में किस काम के लिये नैपाल जा रहा हूं, मगर फिर भी इन लोगों को पता लग ही गया !

टेम्पेस्ट०। मगर तब इससे यह भी मालूम होता है कि नैपाल के उस गुप्त किले से इन लोगों को भी कुछ सम्बन्ध है ?

गोपाल०। केवल सम्बन्ध ही नहीं मुझे तो गुमान होता है कि कहीं वही तो इन लोगों का हेड-क्वार्टर नहीं है श्रौर वहीं से तो ये लोग काम नहीं करते हैं, कोई ताज्जुब नहीं कि वे शैतान 'भयानक-चार' इसी गुप्त किले में ही रहते हों।

टेम्पेस्ट०। (उछल कर) बेशक यही बात है ! श्रापका खयाल ठीक हो सकता है ! होने दो वह गुप्त किला ही रक्त-मंडल का हेड श्राफिस है। श्रब जो मैं खयाल करता हूं तो मुझे भी यही बात मालूम पड़ती है। मगर.......?

गोपाल०। मगर क्या ?

टेम्पेस्ट०। मगर इस हालत में रक्त-मंडल ने श्रापको चीठी भेज कर एक तरह पर क्या श्रपना भंडा नहीं फोड़ा है ? श्रगर वे यह चीठी न भेजते तो श्रापको या मुझे यह गुमान हो क्योंकर होता कि जिस किले का भेद लेने जाने के लिये सरकार श्रापसे इलतिजा कर रही है वह रक्त-मंडल के ही भेदों का खजाना है।

गोपाल० । हाँ यह बात जरूर है और इसी से मैं ख्याल करता हूं कि जो चीठी मेरे पास आई है वह कोई फजूल की धमकी नहीं है बल्कि एक भयानक आगाही है जिससे होशियार हो जाना चाहिये, क्योंकि इतनी मोटी बात तो वे भी सोच ही चुके होंगे ।

टेम्पेस्ट० । (हँस कर) मालूम होता है आपके दिल में रक्त-मंडल का डर समाने लग गया है ।

गोपाल० । (गम्भीरता से) बेशक ! अगर डर नहीं तो उनकी ताकत की इज्जत और कद्र जरूर मेरे दिल में घर कर गई है । सिर्फ इसी बात से देखिये कि जिस बात की खबर केवल लाट साहब को उनके सेक्रेटरी को आपको और मुझे है और जिसे हम चारो के सिवाय इस मुल्क भर में कोई नहीं जानता उसका पता इन लोगों को लग गया है और ये लोग पूरी तरह से जान गये हैं कि नैपाल और भूटान की सरहद के बीच पड़ने वाले भयानक जंगलों में दबे एक पुराने किले पर सरकार सन्देह की नजर डाल रही है और मैं उसकी खोज करने वास्ते जा रहा हूं । इसे क्या आप मामूली बात समझते हैं !!

टेम्पेस्ट० । नहीं नहीं, मैं इसे मामूली बात नहीं समझता मगर क्या इसे कोई बहुत बड़े महत्व की........?

गोपाल० । आपको शायद रक्त-मंडल का पिछला इतिहास पूरी तरह मालूम नहीं और न आपको यही खबर है कि उनका मजबूत जाल किस तरह चारो तरफ फैलता जा रहा है । शायद काशीजी की तीनों घटनायें आपके खयाल से उतर गई हों मगर मैं उन्हें भूल नहीं सकता बल्कि मुझे तो डर है कि आज ही कल में यहां भी कोई न कोई उपद्रव होने वाला है । खैर यह सब जो कुछ भी हो, आज मैं जिस मतलब से आया हूं वह यह था कि मुझे अब पहिले की बनिस्बत कहीं ज्यादा इन्तजाम करके वहां जाना होगा और सरकार को और भी गहरी तरह पर मेरी मदद करनी होगी नहीं तो मैं अपने काम में सफल होने का जिम्मा न लूंगा ।

टेम्पेस्ट०। बेशक बेशक, यह तो मैं भी समझ रहा हूं कि मामला अब पहिले से ज्यादे मुश्किल हो गया है। पर यह मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि आप जो जो और जैसा इन्तजाम चाहेंगे सरकार वैसा ही करने को तैयार है। आप मुझे बतावें कि आप क्या चाहते हैं ?

गोपाल०। पहिली बात जो मैं चाहता हूं वह यह है कि सरकार की निजी तार और टेलीफोन से काम लेने का अधिकार मुझे मिल जाय और ऐसा प्रबन्ध हो जाय कि जरूरत पड़ने पर वहाँ से सीधे दिल्ली तक गुप्त रीति से खबरें भेजी जा सकें।

टेम्पेस्ट०। (ताज्जुव से) ठीक है मगर ऐसा क्यों ? बातचीत के लिये तो आप अपने साथ निज की एक बेतार मशीन ले ही जा रहे हैं !

गोपाल०। शायद वह मेरे ज्यादे काम न आवे। क्या आपने आज यह नहीं पढ़ा कि दो रोज से उत्तर के सब बेतार के तार यंत्र बेकाम हो गये हैं !

टेम्पेस्ट०। हाँ वह खबर तो मैंने पढ़ी है मगर इससे क्या ?

गोपाल०। इससे यही कि वह किला या उसमें के रहने वाले जब चाहें मेरे बेतार के यंत्र को बेकार कर सकते हैं।

टेम्पेस्ट०। क्या ? क्या ? क्या आप इसे भी उस किले वालों की ही कार्रवाई समझते हैं ?

गोपाल०। बेशक !! क्या आपने जर्मनी के प्रोफेसर ब्लूशर का वह लेख नहीं पढ़ा था जिसमें उन्होंने दो बरस पहिले के बेतार के तार को बेकार कर देने वाले अपने एक आविष्कार का हाल प्रकाशित किया था ?

टेम्पेस्ट०। (जोर से टेबुल पर हाथ पटक कर) हाँ ठीक है, अब मुझे ख्याल आया ! उनका लेख जर्मन अखबार 'तुङ्ग-जी-तुङ्ग' में निकला था और उस पर बड़ी खलबली मच गई थी। तो आपका सोचना है कि उस किले में भी उसी तरह की कोई मशीन बना ली गई है जैसी प्रोफेसर ब्लूशर ने ईजाद की थी ?

गोपाल०। हाँ।

टेम्पेस्ट० । (कुछ गौर करके) आपका कहना ठीक हो सकता है । तब तो यह मामला बहुत ही गहरा होता दिखाई देता है । अगर आपका बेतार का यंत्र काम न कर सका तो जरूर मुश्किल होगी ।

गोपाल० । बेशक और उस वक्त थोड़ी बहुत उम्मीद मामूली तारों और टेलीफोनों की ही रह जायगी । मगर मैं उन्हीं पर बिल्कुल भरोसा नहीं रख देना चाहता हूं । मेरा विचार है कि एक हवाई जहाज भी मेरी मदद पर दिया जाना चाहिये ।

टेम्पेस्ट साहब यह बात सुन कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि दरबान ने आकर कहा, "कलेक्टर साहब और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब आये हैं ।" टेम्पेस्ट साहब ने कहा, "यहीं भेज दो" और तब गोपालशंकर की तरफ देख कर बोले, "इन दोनों साहबों का एक साथ आना मतलब से खाली नहीं है !" गोपालशकर बोले, "बेशक कोई नई बात हुई है !" और तब कुर्सी से उठने लगे मगर मिस्टर टेम्पेस्ट ने कहा, "आप भी बैठिये; मेरा दिल कह रहा है कि आपकी भी मौजूदगी की हम लोगों को जरूरत पड़ेगी ।" गोपालशंकर यह सुन फिर अपनी जगह बैठ गये और उसी समय मिस्टर डगलस और मिस्टर केमिल ने कमरे में पैर रक्खा ।

चारो आदमियों ने एक दूसरे से हांथ मिलाया और तब कुर्सियों पर बैठने के साथ ही मिस्टर केमिल ने कहा, "पंडित गोपालशंकर का यहां मौजूद रहना अच्छा ही हुआ, हम लोगों को शायद जल्दी ही इनकी मदद की जरूरत पड़ेगी ।"

टेम्पेस्ट० । सो क्या ?

केमिल० । यही कि रक्त-मंडल ने इस शहर में भी अपना शैतानी काम शुरू कर दिया ।

मिस्टर टेम्पेस्ट और गोपालशंकर यह सुनते ही चौंक पड़े और दोनों ने एक दूसरे पर गम्भीर निगाह डाली । इसके बाद टेम्पेस्ट बोले, "क्या बात है कुछ खुलासा कहिये ?"

केमिल साहब ने यह सुन कर गोपालदास से पाई हुई चीठी सभों के सामने टेबुल पर रख दी और कहा, "यहाँ के रईस बाबू गोपालदास से इस चीठी के जरिए एक लाख रुपया माँगा गया है और न देने पर जान से मार डालने की धमकी दी गई है।"

चारो आदमी कुछ देर के लिये चुपचाप हो गये। इस खबर ने सभी पर असर किया क्योंकि रक्त-मंडल का नाम इन थोड़े ही दिनों में शैतान की तरह मशहूर हो गया था। कुछ देर बाद मिस्टर टेम्पेस्ट ने वह चीठी उठा कर पढ़ी और पढ़ने बाद गोपालशंकर के हाथ में दे दी, इसके बाद चारो आदमी धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे।

आधे घंटे के बाद इन लोगों की बातचीत खतम हुई और तब सब कोई बाहर निकले। चलती समय कमिश्नर साहब ने मिस्टर केमिल से कहा, "गोपालदास की पूरी हिफाजत होनी चाहिये। खुदा न खास्ता कुछ हो गया तो शहर एक दम डर जायगा और बड़ी मुसीबत आ जायगी!" जवाब में मिस्टर केमिल ने कहा, "जो कुछ सम्भव है करने से मैं बाज न आऊँगा।"

(५)

पौ फट चुकी है। खुली हुई खिड़कियों की राह बाग के फूलों की मीठी खुशबू लिए हुए ठंढी हवा आ रही है जिससे गोपालशंकर की मसहरी का पर्दा लहरें ले रहा है।

एक करवट लेकर गोपालशंकर ने आँखें खोलीं और तब अँगड़ाई लेकर उठ बैठे। आज उन्हें उठने में कुछ देर हो गई थी कारण कल बहुत रात गये तक वे अपनी लेबोरेटरी में कोई जरूरी काम करते रहे थे जिससे सोने में कुछ देर हो गई थी। उन्होंने पर्दे के बाहर हाथ निकाला और पानी की सुराही उठानी चाही मगर उनका हाथ किसी दूसरी ही पतली और ठंडी चीज से लगा जिससे वे चौंक पड़े और तुरत हाथ उन्होंने खींच लिया, मसहरी का पर्दा उठाया, और तब आगे झुक कर देखते ही उन्हें मालूम हो गया कि जिस टेबुल पर उनके पीने और हाथ धोने के लिए पानी

वगैरह रक्खा रहा करता था उस पर एक खुखड़ी गड़ी हुई है जिसकी नोक एक लाल कागज के टुकड़े को दबाये हुए है। पानी और दूसरा सामान टेबुल के नीचे जमीन पर पड़ा हुआ है।

यह अद्भुत बात देखते ही गोपालशंकर की सब खुमारी दूर हो गई और वे छलाँग मार कर पलंग के नीचे उतर आये। कुछ देर तक वे उस खुखड़ी को देखते रहे जो ठीक उसी तरह की थी जैसी एक वे कल पा चुके थे, इसके बाद उन्होंने खुखड़ी को टेबुल से अलग किया और उसके नीचे से वह कागज निकाल कर पढ़ा। लाल स्याही में यह लिखा था :—

"गोपालशंकर,

"तुमने हमारी कल की चीठी पर कोई ख्याल न किया ! टेम्पेस्ट से मिल कर जो कुछ बातें तुमने की हैं वह सब हमको मालूम हो चुकी हैं इसलिए आज पुनः हम तुम्हें आगाह करते हैं कि अपना इरादा छोड़ दो और हमारे काम में विघ्न न डालो। याद रक्खो कि तुम्हें मार डालना हमारे लिए अदनी सी बात है और आज ही हम लोग यह कर सकते थे पर फिर भी 'भयानक-चार' की आज्ञा से केवल होशियार करके छोड़ देते हैं। अब भी समझ जाओ और मुफ्त ही हम लोगों से बैर मोल लेकर अपनी जान के ग्राहक न बनो !"

इसके नीचे रक्त-मंडल का वही निशान—लाल दाग में चार उगलियां—बना हुआ था।

गोपालशंकर कुछ देर तक इस चीठी को पढ़ते रहे, इसके बाद यह सोचने लगे कि इस चीठी और खुखड़ी को यहाँ रखने वाला कमरे में आया क्योंकर क्योंकि सोने के पहले वे इस कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द करके सोये थे जो अब भी उसी तरह बन्द था और उसके सिवाय अन्य कोई दर्वाजा कमरे में आने का न था। आखिर सब कुछ देख भाल कर उन्होंने निश्चय किया कि आने वाला जरूर किसी तरह इस खुली खिड़की की राह ही आया होगा।

वे खिड़की से झांक कर कुछ देखने के लिए बढ़े ही थे कि दीवार के साथ लगे टेलीफोन की घंटी जोर से वज उठी। उन्होंने पास जाकर चोंगा कान से लगाया तो केमिल साहब की ग्रावाज सुनाई पड़ी। घबराहट भरे स्वर में वे कह रहे थे, "पंडित गोपालशंकर हैं क्या? कृपा कर के जल्दी गनेश मोहाल में बाबू गोपालदास के मकान पर ग्राइये। मैंने सुना है कि रात को उनका खून हो गया।"

गोपालशंकर ने चौंक कर कहा, "खून! किसने किया?" केमिल की कांपती हुई ग्रावाज ग्राई, "उसी कम्बख्त रक्त-मंडल ने! उनके गले में एक रेशमी रस्सी का फन्दा पड़ा हुग्रा था जिसके साथ बंधे लाल कागज पर उसका खूनी निशान बना हुग्रा था। ग्राप जल्दी ग्राइये, मैं वहीं जा रहा हूं!'

"मैं ग्रभी ग्राया" कह गोपालशंकर ने चोंगा टांग दिया ग्रौर तब यह कहते हुए कमरे के बाहर निकले, "इस खूनी गरोह की कार्रवाई शुरू हो गई। मुझे बड़ी होशियारी से काम करना पड़ेगा नहीं तो इन हाथियों की टक्कर मैं वर्दाश्त न कर सकूँगा!!"

———

मृत्यु-किरण

(१)

गिरिराज हिमालय की ऊँची चोटियों के बीच में दबे हुए जमीन के एक नीचे परन्तु समथर टुकड़े की तरफ हम अपने पाठकों को ले जाना चाहते हैं।

यह जमीन का टुकड़ा जो चौड़ाई में कोई आध कोस और लम्बाई में इससे कुछ ज्यादा होगा अपने चारो तरफ के ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के बीच में कुछ इस तरह पर दवा हुआ है कि न तो यकायक यहां पर किसी का आना ही सम्भव है और न आस पास की किसी पहाड़ी चोटी से अचानक इस पर निगाह ही पड़ सकती है। यहां तक आने का कोई सीधा रास्ता भी दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि इस जमीन के चारो तरफ कितने ही भयानक गार और दर्रे हैं जिनको पार करके यहां तक पहुँचना बहुत ही कठिन है। केवल यही नहीं, इस जमीन को घेरने वाली पहाड़ियाँ भी इतनी विकट और ऊँची हैं कि उनको पार करना भी काम रखता है। यद्यपि चारो तरफ की पहाड़ियों पर प्रायः और विशेष कर जाड़े के दिनों में बरफ पड़ा करती है पर इस जमीन के नीची होने कारण यहां बर्फ की सूरत नहीं दिखती

ग्रौर इसी सबब से हरियाली ग्रौर जंगली पेड़ों की भी बहुतायत है। दूर से देखने में यह स्थान एक भयानक जंगल की तरह मालूम होता है ग्रौर ऐसा भास होता है मानो गैब के ग्रंगूठे ने उसे पहाड़ों के बीच में दबा दिया हो।

सरसरी निगाह से देखने वाले को इस मैदान ग्रौर जंगल में कोई विशेषता या विचित्रता नहीं मालूम होगी ग्रौर वह तुरत कह देगा कि इस स्थान में शायद जंगली ग्रौर खूँखार जानवरों के ग्रलावे किसी ग्रादमी का पैर कभी भी न पड़ा होगा, मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। यह एक बड़े ही भयानक गरोह का ग्रड्डा है ग्रौर यहां की एक एक बित्ता जमीन विचित्रता से भरी हुई है जिसका हाल ग्रापको थोड़ी ही देर में मालूम हो जायगा। मगर इस समय हम ग्रापको यहां से हटा कर पूरब तरफ के पहाड़ों में ले चलते हैं ग्रौर यहां से दो या तीन कोस के फासले पर पहुंचते हैं जहां पहाड़ की चोटी पर खड़ा एक घुड़सवार ग्रपने चारो तरफ बड़े गौर से देख रहा है। इसका घोड़ा पसीने से लथपथ है ग्रौर खुद इसके चेहरे पर की बूंदें बता रही हैं कि कहीं बहुत दूर से ग्रा रहा है। पौशाक से यह कोई फौजी जवान मालूम होता है बल्कि कोई ऊँचा ग्रफसर होने का गुमान होता है ग्रौर सूरत शक्ल देखने से यह भी मालूम हो जाता है कि यह नैपाली है।

मालूम होता है कि यह नौजवान यहां किसी खास चीज की खोज में पहुँचा था क्योंकि बहुत देर तक इधर उधर देखते रहने के बाद इसने ग्रपनी जेब से एक दूरबीन निकाली ग्रौर उसकी मदद से तुरत ही उस ग्रादमी को खोज निकाला जो सामने की तरफ के पहाड़ी ऊबड़ खाबड़ पत्थरों ग्रौर ढोकों पर से चलता हुग्रा तेजी के साथ उसी की तरफ ग्रा रहा था, मगर जो ग्रब भी कोई मील भर के फासले पर होगा। इसे देख कर नौजवान के मुँह पर सन्तोष की झलक दिखाई पड़ी। वह घोड़े से उतर पड़ा ग्रौर उसे लम्बी बागडोर के सहारे बांध कर उस ग्रादमी तरफ बढ़ा जो उसे देख कर ग्रब ग्रौर भी तेजी से ग्राने लगा था। घड़ी भर के ग्रन्दर ही दोनों में मुलाकात हो गई। नये ग्राने वाले ने नौजवान को सलाम किया ग्रौर तब

एक चीठी दी जो लाल रंग के लिफाफे में बन्द थी। नौजवान ने लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढ़ी। चीठी का मजमून क्या था इसे तो हम नहीं कह सकते परन्तु उसे पढ़ कर नौजवान के माथे पर शिकनें जरूर पड़ गईं और वह कुछ देर के लिये किसी गहरे सोच में पड़ गया। आखिर वह उस आदमी से बोला, "मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।" उस आदमी ने यह सुन पुनः सलाम किया और साथ आने का इशारा कर पीछे की तरफ मुड़ा। नौजवान उसके साथ हुआ और दोनों तेजी से उसी बीच वाले मैदान की तरफ चले जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

यद्यपि वह जगह दो कोस से ज्यादे दूर न थी मगर वहाँ तक पहुँचने का रास्ता इतना घूसघुमौवा भयानक और पेचीला था कि मैदान तक पहुंचने में तीन घंटे से ऊपर लग गये और सूरज अपने सफर का आधे से ज्यादे हिस्सा तय करके अब नीचे की तरफ झुकने लग गए थे। अभी तक सिवाय इन दो आदमियों के और किसी तीसरे आदमी की शक्ल दिखाई नहीं पड़ी थी मगर अब एक लम्बे चौड़े गार के सामने पहुंच कर जो इस बीच वाले टुकड़े को चारो तरफ की पहाड़ियों से अलग कर रहा था वह आदमी रुका और जेब से एक सीटी निकाल कर उसने एक खास इशारे के साथ बजाई। आवाज के साथ ही सामने की चट्टानों की आड़ से निकल कर एक आदमी सामने आ गया जिसने इशारों ही में इस आदमी से कुछ बातें कीं और तब किसी तरफ को चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह लौटा तो उसके साथ दो आदमी और थे जो एक मोटा रस्सा लिये हुए थे। यह गार के इस पार फेंक दिया गया जिसे इधर वाले आदमी ने एक चट्टान के साथ खूब मजबूती से बांध दिया, दूसरा सिरा दूसरी तरफ बांध दिया गया और तब एक झूला इसके बीच में लटका दिया गया जिसके साथ लम्बी रस्सी बंधी हुई थी। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "इसी झूले में बैठ कर उस पार जाना पड़ेगा।" जवाब में नौजवान ने कहा, "मैं तैयार हूं।" झूला रस्सी से खींच कर इस पार लाया गया, नौजवान

उस पर बैठ गया और तब इस आदमी ने कहा, "मैं अब इसी पार रह जाऊँगा, यहाँ से आगे अब वे आदमी आपको ले जायंगे।" नौजवान ने कुछ जवाब न देकर सिर्फ सर हिला दिया। उधर के आदमियों ने रस्सी खींचना शुरू किया और वह भूला फिसलता हुआ नौजवान को लिये इस पार से उस पार चला। जब वह गार के बीचोबीच में पहुंचा तो नौजवान को उसकी अथाह गहराई की तह में बहते हुए पानी की एक चमक और उसकी आवाज की एक आहट सुनाई पड़ी और उसने गुमान से समझ लिया कि यहां से गिरने वाले की एक हड्डी का भी पता न लगेगा, मगर वह नौजवान भी बेहद कड़े कलेजे का था। यद्यपि उस अथाह गार के ऊपर से उसको ले जाने वाला भूला हवा के सबब से बेतरह पेंगें ले रहा था मगर उसके दिल में जरा भी डर न था बल्कि वह गौर से चारो तरफ और नीचे ऊपर देखता हुआ सोच रहा था कि अगर कभी यहां लड़ाई होने की नौबत आवे तो किस तरह यह जगह फतह की जा सकती है। इसी समय वह भूला उस पार पहुँच गया, दो आदमियों ने सहारा देकर नौजवान को उस पर से उतार लिया, और एक आदमी ने जो उनका सरदार मालूम होता था नौजवान से कहा, "आप मेरे साथ आवें।" नौजवान उसके साथ हो लिया और दोनों तेजी के साथ उस जंगल के बिचले हिस्से की तरफ बढ़े, मगर थोड़ी देर के बाद नौजवान ने जब पीछे की तरफ घूम कर देखा तो उसे न तो वह रस्से का पुल ही दिखाई पड़ा और न वे आदमी ही। सब के सब इस तरह गायब हो गये थे मानों यह सब कोई भूत-लीला हो।

(२)

उस जंगली और पहाड़ी मैदान में आध कोस तक वे लोग बराबर चले गये और अब दूर से एक ऊँची दीवार दिखाई पड़ने लगी जो शायद किसी मकान की थी पर हजारों बरस के पुराने और आकाश से बातें करने वाले पेड़ों में यह इस तरह से छिपी और हरियाली से दबी हुई थी कि दूर से या अगल बगल के पहाड़ों की चोटियों में इसका दिखाई पड़ना बहुत ही

कठिन था। यहां तक तो किसी गैर की सूरत दिखाई नहीं पड़ी थी पर अब उस नौजवान को विश्वास करना पड़ा कि यहां बहुत से पहरेदार चारो तरफ मौजूद हैं क्योंकि थोड़ी थोड़ी देर पर किसी न किसी पेड़ या पहाड़ी ढोंके की आड़ से कोई आदमी बन्दूक लिये निकल आता था मगर नौजवान के साथी के एक इशारे पर फिर पीछे हट कर गायब हो जाता था। ज्यों ज्यों ये लोग उस दीवार के पास पहुंचते जाते थे इन संतरियों की बहुतायत होती जाती थी और ऐसा मालूम होता था मानों हर एक पेड़ और ढोंके के पीछे कोई न कोई छिपा हुआ है।

आखिर ये लोग उस दीवार के पास जा पहुँचे और अब नौजवान ने देखा कि यह ऊंची दीवार एक हलका गोल घेरा बनाती हुई बहुत दूर तक दोनों तरफ बढ़ती चली गई है और मालूम होता है कि किसी किले की दीवार है जो सैकड़ों बरस की हो जाने पर भी अभी हजारों गोले सहने लायक है। नौजवान ने यह भी देखा कि इस दीवार के ऊपर भी बहुत से पेड़ लगे हुए हैं जिनके सबब से यह दूर से दिखाई नहीं पड़ सकती।

नौजवान के साथी ने उसकी तरफ देखा और कहा, "अब हमें किले के अन्दर जाना होगा।" नौजवान ने जवाब में मंजूरी की गरदन हिला दी जिसे देख उसने सीटी बजाई। देखते देखते लगभग बीस आदमी वहां आ कर जमा हो गये जो पोशाक और हर्बों से सिपाही या पहरेदार ही नहीं मालूम होते थे बल्कि बहुत ही होशियार लड़ाके और ताकतवर भी नजर आते थे। उस आदमी ने उनकी तरफ कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वे सब वहां से हट गये और कुछ ही देर बाद जमीन खोदने के औजार फावड़े कुदाली आदि लेकर वहाँ आ पहुँचे और दीवार से लगभग पचीस कदम के फासले पर एक जगह उन्होंने खोदना शुरू किया। लगभग आध घड़ी में वहाँ कमर भर गड़हा तैयार हो गया। इस गड़हे की तह में एक पत्थर की पटिया दिखाई पड़ी और उतरने के लिये सीढ़ियाँ भी दिखीं। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "यही किले में जाने का दरवाजा

है।" उसने जवाब में आगे बढ़ने का इशारा किया। आगे आगे वह आदमी और पीछे पीछे वह नौजवान सीढ़ियों की राह गड़हे में उतरे जहाँ पटिया हटाने पर एक तहखाना नजर पड़ा। दोनों इस तहखाने में चले गये तथा उनके भीतर जाते ही इन आदमियों ने पुनः तहखाने के मुँह पर सिल्ली रख गड़हे को फिर ज्यों का त्यों पाट दिया, जमीन बराबर कर दी, और इसके बाद वे सब के सब इधर उधर हट कर गायब हो गये।

तहखाने के अन्दर एक अँधेरी और तंग सुरंग मिली जिसमें नौजवान को बहुत दूर तक जाना पड़ा और तब एक दरवाजा मिला। ठोकरें मारने पर उस दरवाजे की एक छोटी खिड़की खुल गई और उसमें से किसी आदमी ने खास बोली में कोई सवाल किया। नौजवान के साथी ने उसी बोली में कुछ जवाब दिया जिसके साथ ही दरवाजा खुल गया। ऊपर चढ़ने के लिये कई सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं जिनकी राह वे दोनों ऊपर चढ़ गये।

यह जगह जहाँ अब वे दोनों थे एक तंग सहन की तरह थी क्योंकि बीच में लगभग दस गज की जगह छोड़ कर चारो ही तरफ ऊँची ऊँची मजबूत संगीन दीवारें थीं पर ऊपर की तरफ छत न थी और इसी कारण वहाँ चांदना बखूबी था। एक तरफ की दीवार में पतली पतली और बहुत ही तंग सीढ़ियाँ दिखाई पड़ रही थीं जो ऊपर की तरफ चली गई थीं और इन्हीं के पास एक सिपाही खड़ा था जिसने नौजवान के साथी से विचित्र भाषा में कुछ बातें कीं, उसने उसी भाषा में कुछ जवाब दिया और तब नौजवान की तरफ घूम कर कहा, "आप इन्हीं सीढ़ियों की राह पर ऊपर चढ़ जाइये, मैं और आगे नहीं जा सकता।"

नौजवान "अच्छा" कह कर बेधड़क उन सीढ़ियों पर चढ़ गया जो इतनी तंग थीं कि सिर्फ एक ही आदमी और सो भी मुश्किल से उन पर से जा सकता था। पचीस या तीस सीढ़ियों के बाद एक कमरा मिला और उसी जगह सीढ़ियों के मुहाने पर खड़े एक नौजवान की सूरत दिखाई पड़ी जो फौजी वर्दी में था। एक दूसरे को देखते ही दोनों झपट पड़े और आपस

में चिपट गये और दोनों की आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे। बड़ी देर के बाद दोनों अलग हुए और दो कुरसियों पर जा बैठे जो वहाँ मौजूद थीं।

फौजी जवान ने नौजवान से कहा, "भाई नरेन्द्र, आज कितने बरसों बाद तुमसे मुलाकात हुई है ! हमारा तुम्हारा साथ छूटे कम से कम पांच बरस हो गये होंगे।

नरेन्द्र०। जरूर हुए होंगे, मैं तो एक तरह पर तुम्हारे मिलने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुका था, मगर भाई नरेन्द्र, तुम्हारी सूरत में इन पाँच वर्षों ने बहुत अन्तर डाल दिया है ! ऐसा मालूम होता है मानों तुम्हारी जिन्दगी का यह हिस्सा सुख और शान्ति से नहीं बीता।

नगेन्द्र०। नहीं बिल्कुल नहीं, मैं बड़े बड़े तरद्दुदों में पड़ा और बहुत बड़ी बड़ी आफतें मुझे झेलनी पड़ीं मगर फिर भी मैं यह कहूंगा कि ये वर्ष घटनाओं से इस तरह भरे हुए थे कि उनका बीतना कुछ मालूम ही न हुआ, वे सचमुच जिन्दगी के बहार के वर्ष थे।

नरेन्द्र०। अब क्या हाल है, क्या अब शान्ति मिली है ?

नगेन्द्र०। कहां से, शान्ति तो मुझसे मानों कोसों दूर है !

नरेन्द्र०। सो क्या ?

नगेन्द्र०। अब वही सब हाल सुनाने को तो मैंने तुम्हें बुलाया ही है। जरा ठहरो सुस्ताओ और दम लो, सभी कुछ तुम्हें बताऊंगा। तुम्हें रास्ते में तकलीफ तो जरूर हुई होगी ?

नरेन्द्र०। नहीं कुछ नहीं, और अगर कुछ हुई भी तो तुम्हें देख कर बिल्कुल भूल गई।

नगेन्द्र०। (हंस कर) जरूर! खैर फिर भी स्नान-ध्यान की तो जरूरत होहीगी।

इतना कह नगेन्द्र ने ताली बजाई जिसके साथ ही एक सिपाही उस कमरे में आ मौजूद हुआ और फौजी सलाम कर खड़ा हो गया। नगेन्द्र-नरसिंह ने उससे कहा, "आपके लिये स्नान इत्यादि का प्रबन्ध करो और

जो कुछ चीजों की इन्हें जरूरत हो उसका इन्तजाम करो। ये फारिग हो जायं तो मैं इनके साथ ही उस कमरे में भोजन करूंगा।"

सिपाही ने "जो हुक्म" कहा और तब नगेन्द्रनरसिंह ने नरेन्द्रसिंह से कहा, "लो उठो, पहिले सब तरह से निश्चिन्त हो जाओ तब आराम से बातें होंगी।"

नरेन्द्रसिंह को वहाँ सब तरह का आराम मिला और बहुत जल्दी ही उन्होंने जरूरी कामों से निपट कर स्नान किया। नहाने के लिए गरम पानी मौजूद था जिसने उनके सफर की हरारत बिल्कुल दूर कर दी, उन्होंने खूब अच्छी तरह स्नान किया और तब संध्या पूजा से भी छुट्टी पाई। इसके बाद वह सिपाही उन्हें भोजन के कमरे में ले गया जहाँ संगमरमर की चौकियों पर तरह तरह के भोजन के पदार्थ परोसे हुए थे और नगेन्द्रनरसिंह पहिले ही से बैठे इनकी राह देख रहे थे। दोनों आदमी भोजन और साथ ही साथ बातचीत करने लगे। सब नौकर नगेन्द्र का इशारा पा कर वहाँ से चले गये थे और उस कमरे में सिवाय इनके और कोई भी न था।

नगेन्द्र०। राजधानी का क्या हाल है? कोई नयी बात हुई हो तो सुनाओ। मेरा तो महीनों से उधर जाना ही नहीं हुआ।

नरेन्द्र०। नई बात तो कोई भी नहीं है सब कुछ साबिक दस्तूर है, हाँ इतना है कि आजकल अंगरेज रेजीडेन्ट प्रायः रोज ही महाराज से मिलने आया करता है और घन्टों तक न जानें क्या क्या बातें किया करता है। क्या मामला है इसका पता अभी तक नहीं लगा है।

नगेन्द्र०। (हंस कर) उसका पता मैं बता सकता हूं! खैर तुम्हारी बहिन का क्या हाल है?

नरेन्द्र०। किसका, कामिनी का? वही हाल है, जब से आई है चेहरे पर हरदम मुर्दनी छाई रहती है, न किसी से बोलना न चालना, न हँसी न खुशी, बराबर उदास रहा करती है, कोई सबब पूछे तो रो देती है मगर कुछ बताती नहीं। कोई बीमारी भी नहीं मालूम होती, कई वैद्यों

को दिखलाया, सब यही कहतें हैं कि बीमारी कोई नहीं है दिल पर कोई धड़का बैठ गया है या किसी तरह की फिक्र सता रही है, बस वह चिन्ता दूर हो जाय तो यह अच्छी हो जाय, मगर चिन्ता क्या है सो भी तो नहीं न कहती! हम लोग तो सब तरह से हार गये हैं। अगर यही हाल रहा तो वह कुछ दिनों में खाट पकड़ लेगी।

नगेन्द्र०। (अफसोस के साथ) यह तो बहुत बुरी खबर सुनाई, तुम लोग कोशिश कर के उसके दिल को थाह क्यों नहीं लेते?

नरेन्द्र०। क्या थाह लें, खाक! वह कुछ बतावे भी तो!

नगेन्द्र०। कोशिश करो तो जरूर ही कुछ मालूम होगा।

नरेन्द्र०। हम लोग तो सब तरह से कोशिश करके हार चुके, ऐसा ही है तो तुम्हीं कुछ कर देखो।

नगेन्द्र०। (गम्भीरता से) जरूर मैं उससे मिलूंगा और मुझे उम्मीद है कि मुझसे वह कोई बात न छिपावेगी।

नरेन्द्र०। तब तो तुम्हें एक जान के बचाने का पुण्य होगा। तुम जरूर आओ बल्कि मेरे साथ ही चलो।

नगेन्द्र०। (सिर हिला कर) नहीं, अभी कुछ दिनों तक मैं इस जगह को एक पल के लिये भी नहीं छोड़ सकता, पर हां मौका मिलते ही जरूर आऊंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं।

नरेन्द्र०। अच्छा तो अब तुम अपना हाल कुछ सुनाओ, इतने दिनों तक कहां रहे क्या करते रहे तथा इस पुराने उजाड़ किले में अब कैसे दिखाई पड़ रहे हो?

नगेन्द्र०। वही बताने और तुमसे मदद लेने को तो मैंने तुम्हें बुलाया ही है। अब खा लो तो आराम से बैठ कर बातें करें।

भोजन समाप्त हुआ और दोनों दोस्त हाथ मुँह धोकर बाहर के कमरे में जा बैठे। पान लायची से मेहमान की खातिर करने बाद नगेन्द्रनरसिंह ने फिर बातों का सिलसिला छेड़ा। इस कमरे में भी इन दोनों के इलावे

कोई तीसरा आदमी न था।

नगेन्द्र०। अब उम्मीद है कि तुम्हारी सफर की हरारत बिल्कुल दूर हो गई होगी और तुम यह जानने के लिये तैयार होगे कि मैंने किस लिये तुम्हें यकायक इतनी दूर इस भयानक स्थान पर बुलाया है। लेकिन यह बात कहने के पहिले मैं इस बात की तुमसे प्रतिज्ञा ले लिया चाहता हूं कि इस समय मेरी जुबानी जो कुछ भी तुम्हें मालूम पड़े और जो कुछ भी प्रस्ताव मैं तुमसे करूं उससे तुम चाहे सहमत हो या न हो पर अपनी जुबान से उसका हाल किसी तीसरे से न कहोगे।

नरेन्द्र०। (ताज्जुब से) मैं समझता हूं कि मैंने अभी तक कभी इस बात की शिकायत का मौका तुम्हें नहीं दिया है कि तुम्हारा कोई मामूली सा भेद भी मेरे जरिये किसी गैर पर प्रगट हो गया हो। लेकिन तुम यह प्रतिज्ञा चाहते ही हो तो लो मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि तुम्हारी कोई बात किसी तीसरे से न कहूंगा।

नगेन्द्र०। (प्रेम से नरेन्द्र का हाथ दबा कर) नहीं नहीं, मैं शिकायत नहीं करता लेकिन जब मेरी बात सुनोगे तो तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा कि वे कितनी गम्भीर हैं और किस तरह मेरे एक एक शब्द पर सैकड़ों जानें टंगी हुई हैं।

नरेन्द्र०। सैकड़ों जानें! आखिर बात क्या है कुछ कहो भी तो!!

नगेन्द्र०। जिस समय मैं आगरे में था और वहाँ की पुलिस से मेरी मुठभेड़ होती थी उस समय का हाल तो तुम जानते ही होगे?

नरेन्द्र०। हाँ बहुत कुछ। लाल-पंजे * के नाम से मशहूर हो कर तुमने जो कुछ किया वह मैं अच्छी तरह जानता हूं, परन्तु यह मैं अभी तक न जान पाया कि नगेन्द्रनरसिंह को जो घर का काफी धनी और रियासत नैपाल का इज्जतदार सरदार है डाकू और लुटेरा बनने की क्या जरूरत पड़ी

* इस भयानक शब्द का पूरा हाल जानने के लिये 'लाल-पंजा' नाम का उपन्यास देखिये।

और 'लाल-पंजा' के करतूतों की बदौलत जो कुछ धन मिला वह क्या हुआ या किस काम में खर्च किया गया।

नगेन्द्र०। वह अब मैं तुमको बताता हूं। आज बहुत दिनों की बात हुई कि कुछ नवयुवकों ने रक्त-मंडल नाम की एक संस्था खोली। उसका पूरा पूरा हाल तो यहां बताने का समय नहीं है फिर कभी सुनाऊँगा मगर उसका उद्देश्य यही था कि देश को गुलामी से छुटकारा दिलाना। इस काम के लिये ही वह सँस्था खुली थी और उसने बहुत कुछ काम भी किया, यहाँ तक कि एक बार तो उसने दुश्मन को हिला दिया, मगर बड़ी ही बेदर्दी और कड़ाई से उसको दबाया गया और उसके मुख्य कार्यकर्ता जीते जला दिये गये † जिससे वह टूटसी गई, मगर इसके कुछ ही दिन बाद न जाने किस तरह उसके बचे खुचे सदस्यों को मेरा पता लगा। वे सब मेरे पास आए, आपनी सभा का सब हाल मुझसे कहा, और मेरी मदद चाही। मैंने जवाब दिया, "मैं क्षत्रिय हूं, खुले आम शत्रु को ललकार मैदान में तलवार बजाना मेरा धर्म है और उसके लिये मैं तैयार हूं पर तुम्हारी तरह छिपी लुकी कार्रवाई करने और धोखे में वार करने को मेरी तबीयत नहीं करती। तुम लोग अगर सशस्त्र विद्रोह करने को खड़े हो जाओ और एक राष्ट्रीय सेना बना कर दुश्मनों से मोरचा लेने को तैयार हो तो मैं उसका सेनापति क्या एक मामूली सिपाही बन कर भी लड़ने को अपना सौभाग्य समझूंगा, मगर अचानक में वार करने को मैं कायरता समझता हूं और वह मैं कभी करूँगा नहीं।" मेरी बात सुन वे सब बोले कि 'खैर तब आप और किसी तरह से हम लोगों की मदद कीजिये!' मैंने पूछा, "और किस तरह से मैं मदद कर सकता हूं?" वे बोले, "रुपये से, हम लोगों को अपने काम के लिये करोड़ों रुपयों की जरूरत है!" मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि 'दो करोड़ रुपया जिस तरह होगा तुम लोगों को दूंगा। तुम उसे जैसे चाहो खर्च करो,

† इस सँस्था का पूरा हाल जानने के लिये 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास देखिये।

मगर शर्त यह होगी कि किसी गरीब या दुखिया को कभी सताना न होगा और किसी बेकसूर की जान न लेनी होगी।' उन्होंने इसे मंजूर किया और मैंने भी दो करोड़ रुपया देना स्वीकार किया। उसी वादे को पूरा करने के लिये मैंने लाल-पंजे का रूप धरा और ईश्वर की दया से अपना वादा पूरा भी कर सका।

नरेन्द्र०। यानी दो करोड़ रुपया इकट्ठा कर के उन्हें दे दिया ?

नगेन्द्र०। हाँ, एक तरह पर, यानी एक करोड़ तो मैंने उन्हें दे दिया और एक करोड़ इस शर्त पर अपने पास रक्खा कि उस पहिली रकम के खर्च हो जाने और किस तरह पर वह खर्च हुई यह जान लेने पर उन्हें दिया जायगा।

नरेन्द्र०। अच्छा तब ?

नगेन्द्र०। इस बात को कितने ही दिन बीत गये और उन्होंने अपनी कोई खोज खबर मुझे न दी पर मैं इतना जानता रहा कि वे सब गुप्त रूप से कुछ न कुछ कर जरूर रहे हैं। इधर थोड़े दिन हुए कि वे सब फिर मुझसे आ कर मिले और बाकी के एक करोड़ की ख्वाहिश की। मेरे सब हाल पूछने पर उन्होंने पहिले करोड़ के खर्चे का कुछ विवरण सुनाया और यह भी बताया कि उनकी सँस्था ने जिसमें कई श्रेष्ठ वैज्ञानिक भी हैं शत्रुओं से युद्ध करने के कई भयानक अस्त्र आविष्कार किये हैं जिनकी पूर्ति के लिये और उन्हें काम लायक बनाने को एक करोड़ रुपया और चाहिये

नरेन्द्र०। वे अस्त्र कैसे थे ?

नगेन्द्र०। मैं सब बताता हूँ। उनकी बातें सुन मुझे बड़ा कौतूहल हुआ और मैंने वह अस्त्र शस्त्र देखना चाहा। वे मुझे अपने गुप्त स्थान पर ले गये और वहां पर मैंने कई अद्भुत चीजें देखीं, एक विचित्र यंत्र को भी देखा जो बहुत ही छोटा था और इसी से उसकी शक्ति भी बहुत ही कम तथा सीमा बहुत परिमित थी पर तो भी उसमें गजब की ताकत थी। मुझे विश्वास हो गया कि उस तरह का यदि काफी बड़ा यन्त्र तैयार हो सके तो एक दो

मुल्क क्या समूचा संसार बस में किया जा सकता है। मैंने उन्हें बाकी का एक करोड़ रुपया दे दिया और उस यन्त्र का बड़ा माडेल बनाने को कहा। कुछ दिन बाद बड़ा माडेल भी बन कर तैयार हो गया पर उसको खड़ा करने लायक और सब तरह से सुरक्षित कोई स्थान उन्हें नहीं मिलता था। तब मैंने इस किले का पता उन्हें दिया, उन्होंने यहां आकर वह यन्त्र खड़ा किया और तब मुझे यहाँ बुला कर उसको दिखलाया। उसे देख और उसकी शक्ति की जांच कर मुझे विश्वास हो गया कि जिसके पास यह यन्त्र और इससे बने अस्त्र हैं उसको दुनिया का मालिक बनते कुछ भी देर नहीं लग सकती।

नरेन्द्र०। (ताज्जुब से) वह यन्त्र कैसा है, क्या करता है, और कैसे काम करता है?

नगेन्द्र०। सो मैं तुम्हें पूरा पूरा बताता हूं बल्कि तुम्हें ले चल कर उसे दिखला ही देता हूं, उठो और मेरे साथ चलो।

नगेन्द्रनरसिंह उठ खड़े हुए और नरेन्द्रसिंह उनके साथ हुए। दोनों आदमी बाहर के कमरे में आए और वहाँ से सीढ़ियों की राह उतर कर उस आँगन जैसी जगह में पहुँचे जहाँ तहखाने की राह किले के बाहर से नरेन्द्रसिंह भीतर आये थे। यहाँ से एक दूसरे दर्वाजे को लांघ कर नगेन्द्रनरसिंह एक दूसरे मैदान में निकले और पूरब की तरफ रवाना हुए।

लगभग पांच सौ गज जाने के बाद नरेन्द्रसिंह को ऐसा मालूम हुआ मानों उनके पैर के नीचे की धरती कांप रही हो। किसी बहुत बड़ी मशीन के चलने से उसके आस पास की जमीन में जिस प्रकार का कंपन होता है यह कंपन भी वैसा ही था पर बहुत गौर से चारो तरफ देखने पर भी नरेन्द्रसिंह को कहीं कोई मशीन या दूसरी चीज दिखाई न पड़ी और न कोई मकान या इमारत ही ऐसी दिखी जिसके भीतर किसी प्रकार के यन्त्रों के होने का गुमान किया जा सके। उन्होंने नगेन्द्रनरसिंह से इसके बारे में पूछना चाहा पर कुछ सोच कर चुप रहे।

ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे जमीन का कांपना बढ़ता जाता था परन्तु

आश्चर्य इस बात का था। कि किसी तरह की कोई भी आवाज कान में बिल्कुल नहीं पड़ रही थी। पर नगेन्द्रनरसिंह को इसका कुछ ख्याल न था। ऐसा मालूम होता था मानों नित्य का साथ होने के कारण उन्हें इसकी विशेषता जान नहीं पड़ रही है। वे नरेन्द्र को लिये ऊँचे ऊँचे पेड़ों के एक झुरमुट की तरफ सीधे बढ़े जा रहे थे जो उनके सामने नजर आ रहा था।

झुरमुट के पास इन दोनों के पहुँचते ही फौजी वर्दी पहिने और हथियारों से लैस कई सिपाही निकल आये पर नगेन्द्रनरसिंह को देखते ही सलाम कर पीछे हट कहीं गायब हो गये और वे नरेन्द्र को लिये इस झुरमुट के अन्दर घुसे और कुछ ही देर में उस छोटे जंगल के बीचोबीच में जा पहुँचे। इस जगह ऊपर के पेड़ों की डालें इस कदर एक दूसरे से गुथी हुई थीं कि आसमान दिखाई नहीं पड़ता था और चारो तरफ ऊँची ऊँची झाड़ियों ने सब तरफ का दृश्य रोका हुआ था, जिससे यहाँ दिन का समय होने पर भी अन्धेरा था।

थोड़ा आगे बढ़ने पर नरेन्द्र को अपने सामने एक गुफा का मुहाना दिखाई पड़ा जो ठीक ऐसी मालूम होती थी मानों किसी शेर की माँद हो। वह नीचे की तरफ झुकती हुई जमीन के एकदम अन्दर घुस गई थी और उसके भीतर घोर अन्धकार था। इन दोनों के उस जगह पहुंचते ही किसी जगह से कई सिपाही वहाँ आ गये और नगेन्द्र को देख सलाम कर अदब से खड़े हो गये। किसी विचित्र भाषा में नगेन्द्र ने उनसे कुछ कहा जिसे सुन दो आदमी वहाँ से चले गये और कुछ ही देर में एक लालटेन लिये हुए लौट आये, तथा बाकी के सब आदमी पुनः जहाँ से आये थे वहीं गायब हो गये। लालटेन लिये दोनों सिपाही इस गुफा में घुसे और उनके पीछे पीछे नगेन्द्र और नरेन्द्र जाने लगे।

विचित्र तरह से घूमती और चक्कर खाती हुई वह गुफा बराबर जमीन के अन्दर ही घूमती जा रही थी और अगल बगल की दीवार और छत को देखने से मालूम होता था कि शुरू का हिस्सा चाहे स्वाभाविक ही

हो मगर अब यह मनुष्य के उद्योग द्वारा बनाई हुई है। ज्यों ज्यों नीचे उतरते जाते थे जमीन की थरथराहट बढ़ती जाती थी तथा कुछ और नीचे उतरने पर मशीनों के चलने की भी हलकी हलकी आहट मिलने लगी। नरेन्द्र ताज्जुब कर रहे थे कि कब यह गुफा समाप्त होगी और किस तरह के यन्त्र वे देखेंगे।

काफी दूर तक इन लोगों को उस गुफा में जाना पड़ा और तब एक मोड़ लेकर गुफा समाप्त हो गई। नरेन्द्रसिंह को अपने सामने लोहे का एक मजबूत दर्वाजा दिखाई पड़ा जो भीतर से बन्द था और जिसके सामने दो मजबूत कद्दावर सिपाही खड़े थे। नगेन्द्र को देखते ही उन लोगों ने फौजी सलाम किया और उनके कुछ कह देने पर एक ने एक रस्सी खींची जिसका दूसरा सिरा दर्वाजे के दूसरी तरफ गया हुआ था। थोड़ी ही देर बाद दर्वाजे के बीच की एक छोटी खिड़की खुली और किसी ने झाँक कर देखा। सिपाहियों ने उससे कुछ बातें कीं जिसे सुन उसने सिर भीतर कर लिया। इसके थोड़ी देर बाद घड़घड़ करता हुआ यह भारी दर्वाजा खुल गया। दोनों सिपाही तो बाहर ही रह गये और नरेन्द्र को साथ लिये नगेन्द्र भीतर घुस गये। इनके भीतर होते ही दर्वाजा फिर बन्द हो गया।

यहां पहुंचते ही नरेन्द्र को मालूम हुआ मानों उनके पास ही कहीं कोई बहुत बड़ी मशीन चल रही है, मगर वह सकरी कोठरी जिसमें वे लोग इस समय थे, बिल्कुल खाली थी। हां सामने की तरफ एक बन्द दर्वाजा दिखाई पड़ रहा था और उसके पास एक आदमी खड़ा था जिसने नगेन्द्र का इशारा पाते ही वह दर्वाजा खोल दिया। एक दूसरा दर्वाजा मिला और उसके बाद तीन और दर्वाजे लांघने पड़े।

अब ये लोग एक बहुत ही बड़े कमरे में पहुँचे जहाँ बहुत से आदमी चलते फिरते और काम करते दिखाई पड़ रहे थे। कमरे के चारो तरफ तरह तरह की बहुत सी मशीनें चल रही थीं जिनके शोरगुल के मारे कान के पर्दे फटे जा रहे थे। यहां गर्मी भी बहुत थी मगर बहुत से बिजली

के पंखों के कारण, जो तेजी से घूम कर गंदी हवा को बाहर निकाले जा रहे थे, बहुत तकलीफ नहीं होती थी। बिजली की रोशनी के कारण यहां दिन की तरह उजाला था और अपने पीछे जिन कोठरियों को लांघते हुए वे यहां तक आये थे उनमें भी बिजली की रोशनी हो रही थी।

इन दोनों को देखते ही सुफेद बालों वाला एक बूढ़ा आदमी आगे बढ़ आया जिसकी उम्र साठ वर्ष से कम न होगी, मगर फिर भी फुर्ती और तेजी उसमें अभी तक मौजूद थी तथा ऊँचा माथा बुद्धिमानी का परिचय दे रहा था। इनको देख नगेन्द्र ने कहा, "देखिये इन्जीनियर साहब, ये मेरे एक बड़े पुराने मित्र आए हैं जो नैपाल सरकार के एक सेनापति भी हैं। ये आपके अविष्कार का कुछ हाल जानना चाहते हैं और मुझे उम्मीद है कि आगे चल कर इनसे हम लोगों को बहुत कुछ मदद मिलेगी।"

सौजन्यता के साथ उस वृद्ध ने नरेन्द्रसिंह को हाथ जोड़ा और तब कहा, "यहाँ तो मशीनों के शोर के मारे कान देना मुश्किल है, मेरे आफिस में चलिये तो बातें हों।" वह उन्हें लिये हुए बगल के दर्वाजे से होता एक छोटे से कमरे में पहुँचा जो आफिस के ढंग पर सजा हुआ था और यहाँ दीवारों पर चमड़े के गद्दे मढ़े रहने तथा दर्वाजों में शीशों के दोहरे पल्लों के कारण शोरगुल बहुत कम था। यहां पहुँच सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये और बातें होने लगीं।

नगेन्द्र०। (बूढ़े से) केशवजी, मैं चाहता हूं कि आप इनको अपने आविष्कार का कुछ हाल बतायें क्योंकि अगर मैं भूलता नहीं हूं तो मेरे मित्र को अपनी पढ़ाई के दिनों में विज्ञान से बड़ा प्रेम था और ये उसमें काफी गति भी रखते थे।

केशव०। बहुत अच्छा। (नरेन्द्र की तरफ देख कर) मैं समझता हूं आपको प्रसिद्ध एक्स-रेज का हाल जरूर मालूम होगा!

नरेन्द्र०। जी हाँ, मैं एक्स-किरणों का हाल अच्छी तरह जानता हूं। अभी हाल ही में उनकी सहायता से मेरे एक मित्र ने अपने फेफड़ों का चित्र

उतरवाया और इलाज करवाया था।

केशव०। करीब करीब उसी तरह की मगर उससे कई हज़ार गुना अधिक ताकत रखने वाली 'डेथ-रेज' अर्थात् 'मृत्यु-किरण' का मैंने आविष्कार किया है। इस किरण में अनन्त शक्ति है। यह जिस चीज पर पड़ती है उसे जला डालती है। संसार का कोई भी पदार्थ इसकी शक्ति के प्रभाव से बाहर नहीं है, यहां तक कि अभी उस दिन मैं एक छोटी पहाड़ी को इन किरणों की सहायता से भस्म कर देने में समर्थ हुआ हूं।

नरेन्द्र०। पहाड़ी को भस्म कर सके हैं !!

केशव०। जी हां।

नरेन्द्र०। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है! अच्छा इन किरणों की उत्पत्ति किस प्रकार से होती है ?

केशव०। इनकी उत्पत्ति का मूल तो वही बिजली है। बिजली की असंख्य शक्तियों में से एक यह भी है कि वह गर्मी पैदा कर सकती है। मेरे यंत्र उस गर्मी को इच्छानुसार कम-बेश करते और जहाँ चाहते वहां भेजते हैं। आप जानते हैं कि सूर्य की किरणों में गर्मी है। साधारण रूप से जितनी गर्मी उससे यहाँ पहुंचती है वह नुकसान पहुंचाने योग्य नहीं पर किसी आतशी शीशे की मदद से अगर ज्यादा जगह की धूप एक बिन्दु पर इकट्ठी कर दी जाय तो उतनी दूर की गर्मी भी उस जगह इकट्ठी हो जाती है और वहाँ असह्य गर्मी हो जाती है। इसी सिद्धान्त पर मैं भी अपने यंत्रों द्वारा बहुत सी बिजली की गर्मी एक बिन्दु पर इकट्ठी करता हूं और इससे वह चीज जिस पर मैं यह बिन्दु फेंकूं चाहे कुछ भी क्यों न हो तुरत भस्म हो जाती है। ये सब यंत्र जो आप देख रहे हैं सिर्फ बिजली पैदा करते हैं, इसके बगल के कमरे में वे यन्त्र लगे हैं जो उस बिजली की शक्ति में से उसकी गर्मी पैदा करने वाली शक्ति को छांट कर अलग करते हैं और उसके बाद के कमरे में वे यन्त्र हैं जो उस गर्मी को संग्रह करके इच्छानुसार 'मृत्यु-किरणों' के रूप में जहां चाहे भेजते अथवा इकट्ठी करके रख लेते हैं।

नरेन्द्र० । मगर इतने यंत्रों को चलाने लायक कोयला आपको इस बीहड़ जगह में कैसे मिलता है ?

केशव० । मेरे यंत्र कोयले या तेल से नहीं चलते । आपको मालूम है कि यह पृथ्वी अन्दर से बड़ी गर्म है, साथ ही इसके अन्दर बिजली भी भरी हुई है। मैं उस गर्मी और बिजली से काम लेता हूं । इस जगह बहुत से पाइप दो दो और तीन तीन मील नीचे तक जमीन के अन्दर गाड़ दिये गये हैं जो उस बिजली और गर्मी को इकट्ठा करके ऊपर भेजते हैं और उन्हीं की सहायता से मेरे ये यन्त्र चलते हैं । आइये उठिये तो मैं सब चीजें आपको दिखाऊँ ।

इतना कह केशवजी उठ खड़े हुए और ये दोनों आदमी भी उनके साथ हुए । भिन्न भिन्न कमरों में ले जा कर केशवजी ने अपनी मृत्यु-किरण का सब हाल अच्छी तरह समझाया और अद्भुत तथा विचित्र यन्त्र भी दिखलाए जिनसे वे किरणें उत्पन्न होती थीं । इन सब चीजों का विवरण इतना कठिन और ऊँचे दर्जे के वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण था कि उसका बयान यहाँ करना हमारे पाठकों का केवल समय नष्ट करना होगा । उनमें से बहुतों को तो स्वयम नरेन्द्रसिंह भी समझ न सके पर इतना जान गये कि इन यत्रों के बनाने और उन्हें इस स्थान में खड़ा करने में करोड़ों ही रुपये लगे होंगे ।

सब तरफ दिखाते और हाल सुनाते हुए केशवजी नगेन्द्रनरसिंह और नरेन्द्रसिंह को उस कमरे में लाए जो सब का केन्द्र था अर्थात् जहां वे किरणें इकट्ठी होती थीं और जहां से इच्छानुसार चलाई जा सकती थीं । इस बड़े कमरे के बीचोबीच में कई गोल टेबुल रक्खे हुए थे जिनके ऊपर लोहे के मोटे मोटे पाइप लगे हुए थे जो छत तक चले गए थे । इन टेबुलों के ऊपर घिसे हुए शीशे लगे हुए थे और उन पाइपों की राह कहीं से आती हुई रोशनी उन शीशों पर पड़ रही थी । केशवजी ने उनमें से एक टेबुल के पास जा कर कहा, "यह कमरा जमीन से पांच सौ फुट नीचे है अस्तु हमें ऊपर का हाल देखने के लिये उस तरह के पेरिस्कोप लगाने पड़े हैं जैसे कि

पनडुब्बी नावों में लगे रहते हैं और जिसके द्वारा वे समुद्र के नीचे रह कर भी ऊपर का हाल देख सकती हैं। मेरे पेरिस्कोपों में एक विशेषता यह भी है कि इनमें आंख लगा कर देखना नहीं पड़ता बल्कि मेरे ईजाद किये हुए एक खास शीशे की मदद से ऊपर आकाश तथा चारो तरफ की तस्वीर इस टेबुल पर बनती रहती है जिससे अगर चाहें तो उसकी फोटो भी ले सकते हैं—अच्छा अब देखिये।"

इतना कह केशवजी ने हाथ बढ़ा कर ऊपर के नलके में लगे एक पहिये को घुमाया जिसके साथ ही नलके से निकलने वाली रोशनी तेज हो गई और तब टेबुल के शीशे पर (जो घिसा हुआ यानी उस तरह का था जैसा फोटो उतारने के केमरे के पीछे लगा रहता है) ऊपर के आकाश मैदान और पहाड़ों का एक चित्र बन गया। सब लोग कौतूहल के साथ झुक कर देखने लगे।

जैसा दृश्य नरेन्द्रसिंह ऊपर देख आये थे ठीक वही इस समय छोटे रूप में उन्हें उस शीशे पर बना हुआ दिखाई पड़ा। आकाश पर धूप पड़ने से चाँदी की तरह चमकने वाले दौड़ते हुए बादल, चारों तरफ की ऊँची ऊँची पहाड़ी चोटियों के भीतर दबा हुआ यह किला, और दूर की बर्फ से ढंकी हिमालय की चोटियाँ सब साफ दिखाई पड़ रही थीं। खूब गौर करने पर नरेन्द्रसिंह को अपना वह घोड़ा भी दिखाई पड़ गया जिसे वे यहाँ आती समय पहाड़ पर ही छोड़ आये थे और जो टापों से जमीन खोदता हुआ गरदन हिला रहा था। उन्होंने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वाह, यह शीशा तो बहुत दूर दूर तक की चीजें साफ बता रहा है! यह देखिये मेरा घोड़ा खड़ा है, वापस जाने को उतावला मालूम होता है!" साथ के लोगों ने झुक कर उसे देखा और तब केशवजी कहने लगे, "जो नलका आपको यह दृश्य दिखा रहा है वह अभी सिर्फ पेड़ों की चोटियों तक ही निकला हुआ है ताकि दुश्मन दूर से उसे देख कर संदेह न कर सकें लेकिन जरूरत पड़ने पर वह इससे कई गुना ऊंचा किया जा सकता है और तब

पचासों कोस तक की चीजें उसकी मदद से साफ मालूम पड़ती हैं।"

इतना कह कर केशवजी ने एक दूसरे पहिये को हाथ लगाया और उसे घुमाना शुरू किया। ज्यों ज्यों पहिया घूमता था त्यों त्यों टेबुल के शीशे पर बनती हुई तस्वीर में भी ऐसा अन्तर पड़ता जाता था मानों देखने वाला ऊँचे चढ़ता जा रहा है। पास की चीजें तो कुछ धुंधली परन्तु दूर की चीजें स्पष्ट होती जा रही थीं। यकायक नगेन्द्र ने कुछ देख कर कहा, "प्रोफेसर साहब, ठहरिये! देखिये यह क्या है?"

केशवजी ने पेंच घुमाना बन्द कर दिया और सब कोई नीचे पड़ती तस्वीर पर उस जगह देखने लगे जहाँ नगेन्द्रनरसिंह ने इशारा किया था। ऐसा मालूम होता था मानों बहुत दूर कहीं पर एक काफिला चला आ रहा है जिसमें पचासों आदमी और बोझ ढोने के जानवर हैं। नगेन्द्र इसी को देख कर चौंके थे। केशवजी ने बहुत गौर से उस काफिले को देखा और तब कहा, "ये लोग अभी यहाँ से पचास साठ मील से ज्यादा दूर हैं, मगर कौन हैं यह साफ पता नहीं लगता। अच्छा देखिये मैं कुछ बन्दोबस्त करता हूं।"

केशवजी ने उस नलके के साथ लगे कई पेंचों को किसी क्रम से घुमाना शुरू किया। अब उस तस्वीर का और सब भाग तो अस्पष्ट होने लगा सिर्फ वह जगह जहाँ काफिला था साफ और नजदीक मालूम होने लगी। पहिले से वह तस्वीर बड़ी भी हो गई। सब कोई पुनः उस जगह झुके और देखने लगे।

ऐसा मालूम होता था मानो पचास साठ आदमियों का एक झुण्ड इसी किले की तरफ चला आ रहा है। आगे आगे बहुत से 'याक' थे जिन पर डेरे खेमे आदि लदे हुए थे। बहुत से कुलियों की पीठ पर अन्य सामान थे तथा कई हथियारबंद सिपाही भी साथ थे और उनसे कुछ पीछे हट कर तीन चार आदमी घोड़ों पर चढ़े चले आ रहे थे। इन घुड़सवारों के हाथों में दूरबीनें थीं और वे उनके जरिये से बार बार इसी किले की तरफ देखते और आपुस में कुछ बातें करते आ रहे थे।

सब लोग कुछ देर तक गौर से इन लोगों की तरफ देखते रहे और

इसके बाद केशवजी ने कहा, "ये लोग न जाने कौन हैं ? मगर इसमें संदेह नहीं कि इनका लक्ष्य यही किला है !"

नगेन्द्र ने यह सुन नरेन्द्र की तरफ घूम कर कहा, "नैपाल सरकार की तरफ से तो ये लोग नहीं आ रहे हैं ?" नरेन्द्र ने जवाब दिया, "नहीं, ये लोग हमारे आदमी नहीं हैं, ये सिपाही जो पौशाक पहिने हैं वह हमारी वर्दी नहीं है। मैं जब वहां से चला था तब तक इस तरह की कोई खबर भी नहीं सुनी थी कि इस किले की तरफ आने की कोई बातचीत हो रही हो।"

नगेन्द्र ने यह सुन कुछ सोच कर कहा, "तब ऐसी हालत में यह जरूर सरकार की भेजी हुई वही पार्टी है जिसकी खबर हम लोगों को लगी थी।"

इसी समय दर्वाजे पर थपकी की आवाज सुनाई दी और केशवजी के "कौन है, भीतर आओ !" कहने पर एक फौजी वर्दी वाला सिपाही अन्दर आया जिसके हाथ में एक कागज था। सलाम कर उसने वह कागज केशवजी के हाथ में दे दिया। केशवजी ने पढ़ा, यह लिखा था, "बेतार के टेलीफोन से अभी यह समाचार आया है—सरकार की भेजी पार्टी कई दिन हुआ किले का पता लगाने के लिये बड़ी गुप्त रीति से रवाना हो गई। अभी मुझे यह खबर लगी है। वे लोग अब किले के पास पहुँचते ही होंगे— "बी. एस. ९९।"

केशवजी ने वह कागज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ बढ़ा दिया जिन्होंने उसे बड़े गौर से पढ़ा और तब कहा, "आप बी० एस० ९९ से पूछिये कि क्या गोपालशंकर भी उस पार्टी में हैं ?" केशवजी ने यह सुन कर "बहुत अच्छा" कह एक कागज पर कुछ लिखा और उसी सिपाही के हाथ में दे दिया जो सलाम करके चला गया, ये लोग फिर उसी शीशे पर झुके और उस आने वाले गरोह की चालढाल देखने लगे।

सन्ध्या होने में कुछ ही देर थी अस्तु ये आने वाले एक मुनासिब जगह देख कर पड़ाव डालने का प्रबन्ध कर रहे थे। जमीन के एक समथर टुकड़े पर काफिला रुक गया था और सब असबाब जमीन पर उतार कर बोझ

के जानवर अलग कर दिये गये थे। कुछ लोग तो जानवरों के मलने दलने और चराने में लग गये थे और कुछ डेरा खेमा खड़ा करने की फिक्र में थे मगर वे कई घुड़सवार जो सब के पीछे थे एक ऊँचे टीले पर चढ़ गये थे और वहाँ पर कुछ कर रहे थे। थोड़ी देर तक बड़े गौर से उनकी कार्रवाई देखने बाद केशवजी बोल उठे—"ओ हो ! ये लोग तो बेतार की मशीन बैठा रहे हैं। ये देखिये दोनों खम्भे खड़े हो चुके हैं और उनके बीच का जाल खींचा जा रहा है।" गौर से देखने पर और लोगों को भी मालूम हो गया कि बेशक यही बात है और अब ये लोग और भी दिलचस्पी तथा गौर के साथ उन लोगों की कार्रवाई देखने लगे।

इसी समय फिर दर्वाजे पर से आहट आई और केशवजी के हुक्म देने पर वही सिपाही पुनः भीतर आया। इस समय उसके हाथ में दूसरा कागज था जिसे केशवजी ने ले लिया और पढ़ा, यह लिखा था, "गोपालशंकर कई दिनों से आगरे में बीमार पड़े हुए हैं यह अभी मैंने सुना है इससे सम्भव नहीं मालूम होता कि वे भी इस पार्टी में हों—बी०एस० ९९।" केशवजी ने वह पुर्जा नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दे दिया और कुछ पूछना ही चाहते थे कि इसी समय एक दूसरा सिपाही एक और कागज लिये हुए आ पहुंचा। इस पुर्जे को पढ़ने पर केशवजी ने यह लिखा पाया, "गोपालशंकर की बीमारी की खबर बिल्कुल गलत है। अभी मालूम हुआ कि वे अपनी जगह पर अपने किसी दोस्त को बीमारी की नकल करने के लिये छोड़ कर आज ग्यारह दिन हुए कहीं चले गये हैं—ए०जी० ६७।"

यह कागज भी नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दिया गया और वे उसे पढ़ कर कुछ गौर करने के बाद बोले, "तब जरूर गोपालशंकर इसी गरोह में हैं। मामला बेढब मालूम होता है। आप इन दोनों जासूसों को कहला दें कि बहुत होशियार रहें और कोई नई खबर मालूम होते ही फौरन सूचना दें और खुद आप भी अब खूब होशियार हो जायं। ताज्जुब नहीं कि ये लोग लड़ाई के सामान से लैस होकर आए हों। उस समय मोरचा लेने की

जरूरत पड़ेगी। आपकी मशीनों को पूरी तेजी से काम करना पड़ेगा और आपको भी बहुत होशियार रहना पड़ेगा। न मालूम कब ये आने वाले बादल फट पड़ें !"

केशवजी के वृद्ध चेहरे पर लाली दौड़ गई और आँखों में चमक दिखाई पड़ने लगी। उन्होंने तन कर कहा, "मेरे पास इस समय इतनी बिजली तैयार है कि सामने का समूचा इलाका तीन मिनट के अन्दर गारत कर सकता हूं ! आप सब तरफ से निश्चिन्त रहें। ये थोड़े से आदमी तो क्या इनके सौ गुने भी यहाँ आकर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते !!"

नगेन्द्रनरसिंह नें यह सुन प्रसन्नता से कहा, "मुझे भी आपकी मृत्यु-किरण से ऐसी ही आशा है" और तब नरेन्द्रसिंह से बोले, "अब लौटना चाहिये, मुझे बहुत कुछ इन्तजाम करना पड़ेगा।" दोनों आदमी बातें करते हुए पीछे की तरफ लौटे और जिस रास्ते यहाँ तक आये थे उसी राह से होते हुए यहां के बाहर हो गये।

(२)

पौ फटने का समय है। गिरिराज की बर्फीली चोटियों पर अरुणोदय के समय की लाली कुछ विचित्र सुनहली छटा दिखा रही है। मन्द मन्द किन्तु अत्यन्त ठंडी हवा चल रही है और चारो तरफ एक विचित्र प्रकार की सुगन्ध फैल रही है जो उस जंगल के कुदरती फूलों के पौधों से आ रही है जिसके पास ही वह पड़ाव पड़ा हुआ है जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

यह पड़ाव जिसमें लगभग पचास आदमियों के होंगे एक गोल घेरा ले कर बना हुआ है। डेरे खेमे यद्यपि बहुत ज्यादा तो नहीं हैं मगर उतने आदमियों और जानवरों का मौसिम से बचाव करने को काफी हैं जो इनके साथ हैं। बाकी की सब छोलदारियां और डेरे तो गोल घेरा बांध कर बाहर लगे हुए हैं मगर बीचोबीच में कुछ मैदान छोड़ कर एक सूफियाना छोटा और सुन्दर खेमा है जिसके चारो कोनों पर चार सिपाही

बैठे नींद में मस्त हो रहे हैं और जिसके दर्वाजे पर का मोटा पर्दा हवा के कारण हिल रहा है।

ऐसे समय में हम एक घुड़सवार को इस डेरे की तरफ आते देखते हैं जो उसी तरफ से आ रहा है जिधर वह पहाड़ी किला था जिसका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। सुबह का समय और ठंढ का वक्त होने पर भी इसका घोड़ा पसीने से लथपथ है जिससे मालूम होता है कि यह बहुत दूर से तेजी के साथ चला आ रहा है और वास्तव में बात भी यही थी।

पड़ाव के पास पहुंच कर इस आदमी ने घोड़े की बाग खींची और जमीन पर उतर पड़ा। दूर ही से देख कर इसने निश्चय कर लिया था कि अभी तक इस लश्कर का कोई आदमी जागा नहीं है और यह भी उसे विश्वास हो गया कि इस समय की ठंढी हवा अभी घंटे आध घंटे तक किसी को रजाई के बाहर मुँह निकालने की इजाजत न देगी, अस्तु वह कुछ बेखटके था। घोड़े से उतर वह कई कदम पड़ाव की तरफ बढ़ आया और तब चारो तरफ फिर गौर की निगाह डाल और इस बात का निश्चय कर के कि कोई उसे देख नहीं रहा है उसने एक गठड़ी खोली जो उसकी पीठ से लटक रही थी। इस गठड़ी में से कोई चीज निकली जिसे उसने जमीन पर रख दिया और तब जेब से एक लिफाफा निकाला, इसके बाद अपना नेजा जमीन में गाड़ कर खड़ा किया और उस चीज को उसी नेजे की नोक पर जमा दिया। मालूम होता है कि सिर्फ इतना ही करने वह आया था क्योंकि इसके बाद ही वह पुनः अपने घोड़े पर जा चढ़ा और रवाना हो गया, उस तरफ नहीं जिधर से आया था बल्कि उस तरफ जिधर वह जा रहा था अर्थात् नैपाल राजधानी काठमान्डू की तरफ।

उस घुड़सवार को गुमान था कि उसका इस तरह आना और वह चीज रख कर चले जाना किसी डेरे वाले ने नहीं देखा मगर वास्तव में यह बात न थी। बीच वाले खेमे के दर्वाजे का पर्दा जरा हटा हुआ था और उसके अन्दर से किसी आदमी की तेज निगाहें उसकी सब कार्रवाई

देख रही थीं । सवार के कुछ आगे जा कर एक टीले की ओट में होते ही यह आदमी पर्दा हटा कर खेमे के बाहर आ गया और सीधा उस तरफ चला जहाँ नेजा और वह चीज रक्खी गई थी। दूर से वह नहीं जान सका था कि यह क्या चीज है पर जब नजदीक आया तो उसके मुँह से एक चीख निकल गई क्योंकि उसने देखा कि नेजे पर की चीज एक आदमी का कटा हुआ सर है जो ताजा ही मालूम होता है क्योंकि उसकी गरदन की तरफ से अभी तक कभी कभी खून की बूंदें निकल निकल कर जमीन पर गिर रही थीं। उसकी भयानक आंखें डरावनी तरह पर फैली हुई थीं और उसके खुले हुए मुँह में एक लिफाफा खोंसा हुआ था।

यह विचित्र और डरावनी चीज देख कर एक दफे तो वह आदमी हिचका मगर फिर हिम्मत करके आगे बढ़ा। सिर के पास पहुँच कर उसने खून से तर बालों को अलग किया और सूरत पर तेज निगाह डालते ही दुःख भरे स्वर में कहा, "हाय हाय! रघुनन्दन, तुम्हारी यह दशा!" एक सायत के लिये उस आदमी की कुछ विचित्र हालत हो गई मगर बड़ी कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और तब वह लिफाफा निकाला जो उस सिर के मुँह में खोंसा हुआ था। लाल लिफाफा देख कर उसे कुछ ख्याल आ गया क्योंकि उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं और उसके माथे पर आई सिकुड़नें गवाही देने लगीं कि वह कोई गंभीर बात सोच रहा है मगर फिर तुरत ही उसने वह लिफाफा खोल डाला और भीतर की चीठी के मजमून पर गौर किया। यद्यपि सूर्यदेव के निकलने में देर थी फिर भी पल पल भर में बढ़ती जाने वाली रोशनी इतनी हो गई थी कि वह चीठी पढ़ी जा सके। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा हुआ था—

"जिसको तुमने भेद लेने भेजा था उसी का सिर तुम्हें खबरदार करता है कि होशियार हो जाओ और आगे बढ़ने का खयाल छोड़ कर यहीं से वापस जाओ नहीं तो एक एक की वही गत होगी जो इस जासूस की हुई है। होशियार! होशियार!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था मगर एक लाल निशान इस तरह का जरूर पड़ा हुआ था मानों खून की एक बहुत बड़ी बूंद वहाँ पर गिर पड़ी हो।

पढ़ने वाले ने उस मजमून को खतम करके पुनः पढ़ने के लिये निगाह ऊँची की ही थी कि पीछे से कुछ आहट आई और उसने तेजी से घूम कर देखा। एक नौजवान अङ्गरेज खड़ा हुआ था जिसे देखते ही वह बोला, "आह एडवर्ड! यह देखो मेरे शागिर्द रघुनन्दन की दशा! बेचारा इतनी हिम्मत करके दुश्मनों में घुस तो गया मगर अपनी जान इन नरपिशाचों से बचा न सका और मारा गया। यह देखो यह चीठी हम लोगों को भी लट जाने को कह रही है।" कह कर उसने वह चीठी एडवर्ड के हाथ पर रख दी और आप इधर उधर देखने लगा क्योंकि उसकी आँखें डबडबा आई थीं और रघुनन्दन की याद करके कलेजा भर आया था।

एडवर्ड बड़े गौर से उस चीठी को पढ़ गया और तब सिर हिला कर बोला, "तब तो इस बात में कोई भी शक नहीं रह गया कि रक्त-मंडल का सदर इसी जगह कहीं है। अगर ऐसा न होता तो रघुनन्दन मारा न जाता और हम लोगों को भी इस तरह बार बार भागने को कहा न जाता। मेरी समझ में तो पंडितजी अब बहुत होशियारी के साथ ही आगे बढ़ना चाहिये!"

जिसे एडवर्ड ने 'पंडितजी' कह कर सम्बोधन किया इन्हें हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि ये वे ही पंडित गोपालशंकर हैं जिनका बहुत कुछ जिक्र पहिले आ चुका है। एडवर्ड की बात सुन कर गोपालशंकर बोले, "इसमें कोई भी शक नहीं है, मगर इसके साथ यह बात भी है कि रघुनन्दन के इस तरह मारे जाने का हाल हमें किसी से कहना न चाहिये क्योंकि अगर इन डरपोक पहाड़ियों को यह हाल मालूम हुआ तो ये एक दम ही घबड़ा जायंगे बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ छोड़ कर भाग खड़े हों। यों ही ये सब भूत प्रेत और पिशाचों के डर के मारे आगे बढ़ने में आनाकानी

कर रहे हैं, यह हाल सुन कर एक दम ही इनकार कर देंगे !"

एडवर्ड ने कहा, "बेशक आपका कहना बहुत ठीक है और ऐसी हालत में इस सर को इसी जगह कहीं गाड़ देना ही मुनासिब होगा।" गोपालशंकर की भी यही राय हुई और दोनों ने मिल उसी जगह एक गड़हा खोद उस सिर को गाड़ दिया। मिट्टी से गड़हा भर कर उसके ऊपर निशान और जानवरों से बचाने के खयाल से पत्थर के कई भारी भारी ढोंके रख दिये गए और तब वे दोनों आदमी पुनः अपने खेमे में चले आये।

खेमे में एक तरफ तो दो सफरी खाट पड़े हुए थे और दूसरी तरफ छोटा टेबुल तथा तीन कुरसियाँ रक्खी हुई थीं। एडवर्ड और गोपालशंकर उन कुरसियों पर जा बैठे और वह लम्प तेज कर दिया गया जो टेबुल पर रक्खा बल रहा था। बगल का सन्दूक खोल कर गोपालशंकर ने कागज का एक लम्बा पुलिन्दा निकाला जो वास्तव में नक्शा था और उसे टेबुल पर फैला कर एक जगह उँगली रखते हुए बोले, "हम लोग इस समय यहाँ पर हैं और यह हिस्सा वह है जो इस तरफ के लोगों में 'भूतों का घर' के नाम से मशहूर है और जहां कोई भी पहाड़ी किसी भी काम के लिये अपनी मर्जी से जाना कभी मंजूर नहीं करता। वह किला जो हमारा लक्ष्य है यहां से पचास साठ मील पर है और नैपाल की राजधानी इस तरफ लगभग उतने ही फासले पर पड़ती है। अगर हम लोग कोशिश करें तो कल शाम अथवा परसों दोपहर तक किसी समय उस किले के पास पहुंच जा सकते हैं, मगर अब सवाल यह है कि क्या वहाँ तक बेधड़क चले जाना मुनासिब होगा ?"

एडवर्ड ने कहा, "यही तो मैं भी सोच रहा हूं। यद्यपि हम लोगों के साथ लगभग पैंतीस के मजबूत पहाड़ी, पन्द्रह सिपाही, और दस गोरखे हैं मगर फिर भी दुश्मन की ताकत जाने बगैर यह नहीं कहा जा सकता कि यह काफी होगा।"

गोपाल०। यही मेरा भी खयाल है। जैसा कि रंग ढंग से मालूम होता है रक्त-मंडल वाले सब तरह से चौकन्ने हैं और कोई ताज्जुब नहीं

कि लड़ाई भिड़ाई के लिये भी तैयार हों, ऐसी हालत में बहुत सोच समझ के ही आगे बढ़ना ठीक होगा।

एडवर्ड०। मगर इस तरह एक मामूली धमकी पर बिना कुछ काम किये पीछे लौट जाना भी तो बड़ी हँसी की बात होगी। मेरी तो यह राय है पंडितजी कि हम लोग उस ऊँची पहाड़ी की चोटी तक तो बढ़े ही चले जायँ जहां से इस किले में जाने की राह निकलती है और तब वहीं पड़ाव डाल कर आगे का काम हवाई जहाज से लें।

गोपाल०। ठीक बात है, यही राय मेरी भी है। आज शाम तक हम लोग उस पहाड़ी तक पहुँच ही जांयगे। वहीं डेरा गिरा दिया जाय और कल खूब सवेरे ही बल्कि कुछ रात रहते ही 'श्यामा' पर उड़ चला जाय। मुझे विश्वास है कि वे लोग कितना भी छिप कर क्यों न रहते हों मगर आस्मान से हम लोग उनका पता जरूर लगा लेंगे।

एडवर्ड०। जरूर, मगर साथ ही मेरा यह भी कहना है कि 'श्यामा' पर मैं अकेला ही जाऊँगा। हम दोनों का एक साथ जाना ठीक नहीं, क्या जाने किसी तरह का खतरा हो जाय तो दोनों के दोनों एक साथ ही दुश्मन के मुंह में चले जा सकते हैं।

गोपाल०। (हंस कर) तुम्हारी सभी रायें ठीक होती हैं! अच्छा यही सही, मगर फिर तुम्हें भी बहुत होशियार रहना होगा, कहीं ऐसा न हो कि लड़कपन करके खामखाह अपने को किसी आफत में फंसा लो!

इन दोनों में इसी तरह और भी कुछ देर तक बातें होती रहीं और तब तक पूरी तरह सवेरा भी हो गया। लश्कर के लोग जाग गये और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में पड़े। एडवर्ड और गोपालशंकर भी खेमे के बाहर निकल आए। पड़ाव को खबर दे दी गई कि एक घंटे के भीतर ही कूच हो जायगा। सब लोग तरह तरह की तैयारी में लग गये और चारो तरफ दौड़ धूप मच गई। इसके घंटे ही डेढ़ घंटे के बाद यह पड़ाव उठ गया और आगे की तरफ रवाना हो गया।

(४)

संध्या होने से कुछ पहिले ही पंडित गोपालशंकर का लश्कर उस पहाड़ी के करीब जा पहुंचा जिसके ऊपर पड़ाव डालने का वे आज सुबह विचार कर चुके थे। पड़ाव पर पहुँचने के काफी पहिले ही गोपालशंकर और एडवर्ड अपने अपने घोड़ों पर सवार उस जगह पहुंच गये थे और दूरबीनें ले ले कर अपने चारो तरफ के पहाड़ों और खास कर उस बीच की नीची जमीन की तरफ गौर से देख रहे थे जहां वह विचित्र जमींदोज किला था।

इन दोनों को गुमान था कि अगर रक्त-मंडल का सदर यहीं है तो वे जरूर कहीं न कहीं कुछ आदमियों को चलते फिरते देखेंगे, मगर ऐसा न था। अपने सामने नीचे और ऊपर तथा अगल बगल कोसों तक देर तक देखने पर भी उन्हें सिवाय जंगल और पहाड़ों के कहीं कुछ भी दिखाई न पड़ा मगर हाँ पीछे की तरफ निगाह करने से उन्हें पहाड़ी रास्ते की पतली पगडंडी से आते और साँप की तरह दूर तक फैले हुए अपने लश्कर के वे आदमी जरूर दिखाई पड़ रहे थे जो सन्ध्या हो जाने के खयाल से तेजी के साथ बढ़े आ रहे थे। इन आदमियों के सिवाय आस पास और किसी मनुष्य की सूरत दिखाई नहीं पड़ रही थी।

एडवर्ड ने पीछे की तरफ से आते हुए अपने आदमियों को दूरबीन से देख कर कहा, "आधे घन्टे के अन्दर हमारे आदमी यहाँ आ पहुँचेंगे। अब कल क्या करना होगा इसे सोचना चाहिये।"

गोपाल०। वही जो आज सुबह हम लोगों ने सोच लिया है। तुम अपना वायुयान रात भर में ठीक कर सकते हो?

एडवर्ड०। मैं उम्मीद तो करता हूं कि वह ठीक हो जा सकता है, पर इतनी दूर के इस लम्बे सफर में यदि कोई पुर्जा टूट फूट गया होगा तो मुश्किल होगी।

गोपाल० । खैर उस हालत में तो लाचारी है मगर......(रुक कर) वह कौन आ रहा है ?

एडवर्ड ने भी दूरबीन उठाई और गौर से उस तरफ देखा । एक सवार तेजी से घोड़ा दौड़ाता इन्हीं दोनों की तरफ चला आ रहा था । कुछ ही मिनटों में वह पास आ पहुँचा और तब घोड़े से उतर कर इन लोगों की तरफ बढ़ा । सवार कोई फौजी जवान मालूम होता था बल्कि उसके नैपाली फौज का कोई अफसर होने का गुमान होता था । नजदीक आ कर उसने फौजी सलाम की और अदब के साथ एक चीठी इन लोगों की तरफ बढ़ाई । गोपालशंकर ने चीठी ले ली और खोल कर पढ़ा । यह नैपाल सरकार की तरफ से आई थी और इसमें यह लिखा हुआ था :—

"जनाब पंडितजी साहेब,

हम लोगों को एक नई और बड़े ताज्जुब की बात का पता लगा है जिससे आपको आगाह कर देना बहत जरूरी है । मेहरबानी करके इस खत को देखते ही आप और मिस्टर एडवर्ड केमिल इस सवार के साथ यहाँ चले आयें । आपका लश्कर जहाँ हो वहीं रोक दीजिये क्योंकि इस नई बात की छानबीन किये बिना एक कदम भी आगे बढ़ना खतरनाक होगा । मैं यहां से कुछ ही दूर पर हूं ।

(द:) कप्तान किशनसिंह

मुहर

आफिसर कमांडिग ११ वीं ब्रिगेड,

बहुक्म

श्रीमान महाराजा बहादुर ।

गोपालशंकर ने ताज्जुब के साथ चीठी को दोबारा पढ़ा और तब एडवर्ड के हाथ में देते हुए उस नौजवान से पूछा, "कप्तान साहब कहाँ पर हैं ?" उस आदमी ने जवाब में पश्चिम की तरफ हाथ उठा कर कहा,

"उस तरफ लगभग डेढ़ दो कोस पर उनका डेरा पड़ा हुआ है और उन्होंने इस चीठी के इलावे जुबानी भी कहला भेजा है कि इस खत को पाते ही मेरे पास चले आवें और अपने लश्कर को जहाँ वह हो उसी जगह रोक दें, एक कदम भी आगे न बढ़ने दें, नहीं तो बड़ी आफत हो जायगी।"

गोपाल०। (ताज्जुब से) मगर मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि यकायक ऐसी कौन सी नई बात पैदा हो गई। अभी तीन चार दिन हुए मैं महाराजा साहब से खुद रेजीडेन्ट साहब के सामने सब बातें तय कर चुका हूं तो अब यह क्या नई बात पैदा हो गई है?

सवार०। (लाचारी दिखाता हुआ) अफसोस कि मैं इसके सिवाय और कुछ नहीं कह सकता कि आज कोई डाकू पकड़ा गया है और उसी की जुबानी कोई ऐसी बात कप्तान साहब को मालूम हुई है कि उन्होंने तुरत ही मुझे आपकी तरफ दौड़ा दिया है।

गोपाल०। कोई डाकू पकड़ा गया है !!

सवार०। जी हाँ।

गोपाल०। तब तो कहीं........?

गोपालशंकर ने कुछ सोचा और तब एडवर्ड से धीरे धीरे कुछ बातें कीं, इसके बाद वे उस सवार से बोले, "हम दोनों तुम्हारे साथ चलने को तैयार हैं मगर मुश्किल यह है कि अपने लश्कर को मैं यहाँ तक आने का हुक्म दे चुका हूं, अब उसके यहां पहुँचने की राह देखनी पड़ेगी।"

सवार०। अगर आप हुक्म दें तो मैं अभी उसके पास चला जाऊँ और आपका सन्देशा सुना दूं। आप यह भी कर सकते हैं कि उसी तरफ से होते हुए कप्तान साहब के पास चलें, रास्ते में उन्हें जो कुछ मुनासिब समझें हुक्म देते चलें। यद्यपि कुछ फेर इस तरह जरूर पड़ जायगा मगर कोई हर्ज नहीं, हम लोग चांदना रहते अपने ठिकाने पहुंच जायंगे।

गोपालशंकर ने यह राय पसन्द की और तीनों आदमी पीछे की तरफ लौटे। इस बीच में उनका लश्कर बहुत कुछ नजदीक आ चुका था अस्तु

थोड़ी ही देर में वे उसके पास जा पहुंचे और तब अपने आदमियों को उसी जगह पहुँच कर जहां से ये अभी अभी आये डेरा गिराने का हुक्म दे तथा और भी कई जरूरी बातें समझा गोपालशंकर एडवर्ड को लिये उस सिपाही के साथ कप्तान किशनसिंह से मिलने रवाना हो गये। इस समय सूर्य डूबने में लगभग एक घन्टे की देर थी।

गोपालशंकर के चले जाने बाद उनका लश्कर भी आगे बढ़ा और कुछ ही देर में ठिकाने पहुंच कर डेरा खेमा गाड़ने के प्रबन्ध में लगा।

(५)

मशीन-रूम के भीतर के उस कमरे में जहां पेरिस्कोप के शीशे लगे हुए हैं केशवजी और नगेन्द्रनरसिंह खड़े गौर से कुछ देख रहे हैं। उनके सामने वाले शीशे पर ऊपर के मैदानों का दूर दूर तक का दृश्य बना हुआ है और वे गौर से उन दो सवारों की तरफ देख रहे हैं जो किसी पहाड़ी पर खड़े दूरबीनें लिये चारो तरफ नजर दौड़ा रहे हैं।

यकायक एक तीसरा सवार उन दोनों की तरफ आता दिखाई पड़ा। उसे देखते ही नगेन्द्र ने चौंक कर कहा, "देखिये नम्बर सत्तावन इन दोनों के पास जा पहुँचा। मुझे विश्वास है कि वह जरूर इन दोनों को बहका कर ले जायगा।"

केशवजी ने कुछ जवाब न दिया बल्कि और गौर से उस तस्वीर को देखने लगे। इस नये सवार से उन दोनों की कुछ देर तक बातें होती रहीं और तब वे तीनों ही पीछे की तरफ मुड़ कर उधर को चल पड़े जिधर से आदमियों और जानवरों की एक लम्बी कतार इधर ही को आती दिखाई पड़ रही थी। नगेन्द्र ने खुश होकर कहा, "हम लोगों की चाल खूब सच्ची बैठी, अब आप भी तैयार हो जाइये।"

केशवजी यह सुन कर अपनी जगह से हटे और एक आलमारी के पास पहुँचे जिसमें लोहे के पल्ले लगे हुए थे और एक बहुत मजबूत ताला बन्द था। अपने पास की ताली से केशवजी ने उस ताले को खोला और तब

पल्ला खोलने पर उस आलमारी के अन्दर सजे बहुत से छोटे छोटे शीशे के गोले दिखाई पड़े जिनके अन्दर न जाने क्या भरा था कि वे एक विचित्र तरह की बहुत ही हल्की हरी रोशनी से चमक रहे थे। केशवजी ने बड़ी सावधानी से उनमें से दो गोले उठा लिये और उन्हें लिये हुए कमरे के कोने में खड़ी एक अद्भुत मशीन के पास पहुँचे जिसके विचित्र कल पुर्जे न जाने किस शक्ति की सहायता से तेजी के साथ चल रहे थे। उस मशीन के भीतर के किसी हिस्से में केशवजी ने वे दोनों शीशे के गोले डाल दिये और तब पुनः आलमारी के पास लौट गये। इस कमरे के चार कोनों में उस तरह की चार मशीनें थीं जिनमें से हर एक में केशवजी ने दो दो गोले डाल दिये और तब आलमारी बन्द कर ताला लगा कमरे के बाहर निकल गये। उनके बाहर होते ही मशीन-रूम में से शोर गुल की आवाज बढ़ने लगी और कुछ ही देर में इतनी बढ़ी कि ऐसा मालूम होने लगा मानों कान के पर्दे फट जायँगे। लगभग पन्द्रह मिनट तक यही हालत रही और तब धीरे धीरे वह तेजी कम होने लगी। आधे घंटे के बाद फिर सब पूर्ववत् हो गया और गड़-गड़ाहट की आवाज भी धीरे धीरे वैसी ही धीमी हो गई जैसी पहिले आ रही थी। इसी समय केशवजी ने पुनः कमरे में पैर रक्खा।

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "लीजिये अब लश्कर ठिकाने आ पहुँचा है" जिसे सुन केशवजी बोले, "कोई हर्ज की बात नहीं, मेरे इन आठ गोलों में इस वक्त इतनी ताकत भर गई है कि इन पचास साठ आदमियों की तो बात ही क्या उस समूचे पहाड़ को मैं उड़ा दे सकता हूं जिस पर वे लोग हैं।"

दोनों आदमी पुनः उस शीशे पर झुक कर देखने लगे। वह पड़ाव अब उसी पहाड़ी पर पड़ गया था और चारो तरफ लोग दौड़ धूप कर रहे थे, कोई खेमे खड़ा कर रहा था, कोई जानवरों के दाने घास का प्रबन्ध कर रहा था, और कोई बरतन लिये पानी की खोज में इधर उधर घूम रहा था। केशवजी कुछ देर तक इस दृश्य को देखते रहे और तब बोले, "कहिये अब क्या हुक्म होता है? क्या इस लश्कर को मैं ऐसा साफ कर दूँ कि

इनको धूल तक का पता न रहे ?"

नागेन्द्रनरसिंह ने यह सुन कहा, "एक नई बात मेरे ख्याल में आई है, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि ये सब के सब आदमी मरें नहीं बल्कि बेहोश हो जायँ ? क्या आप अपनी मृत्यु-किरणों की शक्ति कुछ कम करके उसका प्रयोग इस लश्कर पर नहीं कर सकते ?"

केशवजी ने कुछ सोचते हुए अपना सिर खुजलाया और तब कहा, "क्या आप चाहते हैं कि समूचा लश्कर का लश्कर बेहोश हो जाय मगर कोई आदमी मरे नहीं ?"

नगेन्द्र० । हाँ मैं यही चाहता हूं, क्या ऐसा हो सकता है ?

केशवजी देर तक कुछ सोचते रहे, इसके बाद उन्होंने जेब से कागज पेन्सिल निकाली और कुछ हिसाब करने लगे । इसके बाद यकायक खुश होकर बोले, "हाँ शायद मैं ऐसा कर सकूँ !"

नगेन्द्र० । (खुश होकर) वाह ऐसा हो सके तो फिर बात ही क्या है ! बस तो देर करने की जरूरत नहीं आप ऐसा ही करिये जिसमें ये सब के सब कम से कम तीन चार घन्टे के लिये एक दम बेसुध हो जायँ !

केशवजी कोने की एक मशीन के पास गये और उसके किसी पुर्जे को घुमा कर फिर बीच वाले शीशे के पास आ गये । हम ऊपर लिख आए हैं कि शीशे के ऊपर लोहे के नलके लगे हुए थे जिनके साथ बहुत से पेंच थे । अब केशवजी ने उन पेंचों को किसी खास क्रम से घुमाना शुरू किया ।

नगेन्द्रनरसिंह शीशे के ऊपर झुके गौर के साथ उस लश्कर की तरफ देख रहे थे । यकायक उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों एक तरह की हरी बिजली उस लश्कर पर चमक गई हो ! इसके साथ ही उस लश्कर में एक विचित्र तरह की बेचैनी और घबराहट दिखाई पड़ने लगी । सब लोग घबराहट के साथ इधर उधर देखने और कई इधर उधर दौड़ने लगे । सवारी और बोझ के जानवर भी बंधे होने पर भी इधर से उधर अपने अपने रस्सों की पहुंच तक दौड़ने भागने लगे ।

इसी समय वह हरी बिजली पुनः चमकी। अब सभों की बेचैनी बहुत ही बढ़ गई। बहुतों ने तो अपने कपड़े उतार उतार कर फेंकने शुरू कर दिये मानों वे पागल हो गये हों या उन्हें बहुत गर्मी मालूम हो रही हो, और बहुत से लोग जमीन पर गिर कर हाँफने लगे।

यकायक केशवजी वहाँ से हटे और एक दूसरी मशीन के पास जा उसके किसी पुर्जे को छेड़ पुनः अपने ठिकाने आ गये अब पहिले से भी ज्यादा तेजी से और पुनः पुनः वह हरी बिजली चमकने लगी और उस लश्कर के लोगों की बेचैनी पहिले से सौगुनी ज्यादा हो गई। देखते देखते वहाँ के लोग एक एक करके जमीन पर गिरने लगे। आधी घड़ी के अन्दर उस लश्कर का हर एक आदमी और जानवर बेहोश हो गया था।

नगेन्द्रनरसिंह ने खुश होकर कहा, "वाह केशवजी, आपने तो कमाल किया! अब यह बताइये कि इन लोगों की बेहोशी कब दूर होगी?"

केशवजी बोले, "अगर मैं और कोई कार्रवाई न करूं तो सुबह की बर्फीली हवा लगने के बाद ही इन्हें होश आ सकता है, क्या यह काफी होगा?"

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "बहुत काफी! आप बस यह ख्याल रक्खें कि तीन चार घंटे तक इनमें से कोई होश में आने न पावे, बस मेरा काम हो जायगा।"

केशवजी के मुँह से "ऐसा ही होगा, आप बेफिक्री से अपना काम करें!" सुनते ही नगेन्द्रनरसिंह तेजी के साथ उस कमरे के बाहर निकल गये। इस समय तक सूरज डूब गया था और अन्धेरी चारो तरफ से झुकी आ रही थी।

(६)

पेचीले और तंग पहाड़ी रास्तों पर से घूमता हुआ वह फौजी जवान गोपालशंकर और एडवर्ड को कुछ दक्खिन झुकते हुए पश्चिम की तरफ ले चला।

सूर्यास्त का समय होने से दृश्य बड़ा ही सुहावना हो रहा था। बर्फ से ढंकी हुई चोटियाँ खून की तरह लाल हो रही थीं और अपने अपने घोसलों में आ कर आराम लेने वाले परिन्दों की आवाज से जंगल गूंज रहे थे। मस्ती लाने वाली संध्या की हवा बह रही थी और हर तरफ नई बहार दिखा रही थी जिसका आनन्द लेते हुए प्रकृति-प्रेमी गोपालशंकर अपने तन-मन की सुध भूले हुए थे। उन्हें कुछ भी खयाल न था कि किधर जा रहे हैं या किस काम के लिये जा रहे हैं, केवल एडवर्ड के साथ जंगल में उस सवार के पीछे पीछे चले जा रहे हैं इतनी ही उन्हें होश थी। वे कितनी देर से चल रहे हैं या अपने मुकाम से कितनी दूर आ गये हैं इसकी भी उन्हें सुध न थी।

परन्तु इसी समय यकायक उस सवार के मुंह से कुछ सुन कर उनकी मोह-निद्रा टूटी। वह सवार चलता चलता रुक गया था और कह रहा था, "गजब हो गया ! मालूम होता है मैं रास्ता भूल गया !!" अब गोपालशंकर भी चौंके और अपने चारो तरफ गौर से देखने बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे कैसे बीहड़ स्थान में आ पहुंचे हैं।

दो तरफ ऊँचे पहाड़ और सामने की तरफ गहरा गड्ढा था जिसकी खड़ी दीवार एक दम नीचे उतर गई थी। दोनों तरफ के पहाड़ों पर चढ़ना असम्भव था और पीछे वह घोर जंगल था जिसमें से होते हुए वे यहाँ तक पहुँचे थे। वह नौजवान सवार उस गड्ढे के पास खड़ा कह रहा था, "जरूर मैं रास्ता भूल गया, उस जगह से दाईं तरफ नहीं बल्कि बाईं तरफ मुड़ना चाहिये था। अब क्या होगा ? इस घोर जंगल में से हो कर रात के वक्त वापस जाना भी खतरे से खाली नहीं है। अब मैं बेमौत मरा। कप्तान साहब मेरी गलती की खबर सुनेंगे तो तुरत मुझे जेल भेजवा देंगे बल्कि गोली मार देने का हुक्म दे दें तो भी ताज्जुब नहीं। हाय, अब मैं क्या करूँ ?"

अब एडवर्ड और गोपालशंकर को भी अपनी भयानक स्थिति का पता लगा। हिमालय की पेचीली पगडण्डियों और उसके भयानक जंगलों का

हाल वे बखूबी जानते थे और यह भी अच्छी तरह समझते थे कि एक बार रास्ता भूल जाने पर बिना घंटों भटके ठीक राह पर आना बड़ा ही मुश्किल है, खास कर ऐसे मौके पर जब रात की अंधियारी चारो तरफ से झुकी आ रही हो और सामने खड्ड और पीछे वह भयानक जंगल हो जिसमें तराई के प्रसिद्ध शेर चक्कर लगा रहे हों। दोनों तरफ खड़े ऊँचे पहाड़ किसी तरफ जाने का मौका नहीं देते थे और न उन पर चढ़ना ही सहज था। इस समय की अपनी हालत देख बहादुर एडवर्ड और दूरदर्शी गोपालशंकर भी कुछ घबड़ा गये और खड़े होकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

आखिर वह नौजवान कुछ सोच विचार कर बोला, "इस समय अन्धेरी रात में उस जंगल से होकर लौटने की राय तो मैं नहीं दे सकता, यदि दिन का वक्त या चाँदनी रात भी होती तो एक बात थी मगर यों जाना एकदम खतरनाक है! ईश्वर न करे अगर किसी मुसीबत में पड़ गये तो बड़ा ही बुरा होगा। मगर मुझे खयाल पड़ता है कि यहाँ कहीं करीब ही में महाराज का एक शिकारगाह है और एक छोटा बंगला सब तरह के सामानों से लैस वहाँ मौजूद है, अगर आप लोग कुछ देर यहीं रुकने की तकलीफ करें तो मैं जाऊँ और उसका पता लगाऊँ।

गोपाल०। वह शिकारगाह किस तरफ है?

नौजवान०। इसी बाईं तरफ वाले पहाड़ पर कहीं है। इसके ऊपर चढ़ने से मुझे विश्वास होता है कि उसका पता लगेगा।

गोपाल०। (ऊपर की तरफ देख कर) मुझे गुमान होता है कि अगर हम लोग अपने घोड़े इसी जगह छोड़ दें और पैदल चढ़ना शुरू करें तो इस पहाड़ पर चढ़ सकते हैं।

एडवर्ड०। मुझे भी यही उम्मीद होती है। कम से कम एक दफे कोशिश करके तो देखना ही चाहिये।

नौजवान०। मेरी राय तो यह है कि आप जल्दी न करें। एक दफे मुझे कोशिश कर लेने दें, मैं उधर से होकर इस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश

करता हूं। अगर मेरा ख्याल ठीक है और वह शिकारगाह इसी पहाड़ पर है तो रास्ते का पता लगाना कोई मुश्किल न होगा।

गोपाल०। खैर जाओ मगर बहुत देर न लगाना क्योंकि अंधेरी बढ़ती आ रही है।

"नहीं मैं बहुत जल्द आऊँगा" कह कर नौजवान ने घोड़े का मुँह फेरा और देखते देखते आँखों की ओट हो गया। एडवर्ड और गोपालशंकर वहीं खड़े अपने ऐसा बेमौके फँसने पर चिन्ता करते रहे।

नौजवान को गये घड़ी बीती, दो घड़ी बीती, तीन घड़ी बीती, मगर वह न लौटा। धीरे धीरे अन्धेरा बढ़ने लगा और जंगल के दरिन्दे जानवरों की बोलियां सुनाई पड़ने लगीं। अब इन लोगों की घबराहट बढ़ी और वहां रुके रहना खतरनाक मालूम होने लगा। आखिर एडवर्ड ने बेचैन हो कर कहा, "मालूम होता है वह नौजवान खुद भी कहीं भटक गया, अब क्या करना चाहिये ?"

गोपालशंकर बोले, "एक बार इस घाटी के दूसरे सिरे तक चल कर देखना चाहिये और अगर कुछ पता न लगे तो फिर इस पहाड़ पर चढ़ कर उस बंगले की खोज करेंगे जिसका वह जिक्र करता था।"

दोनों आदमी पीछे लौटे। लगभग सौ कदम के जाने बाद ये लोग ऐसी जगह पहुंचे जहाँ एक पतली पगडंडी बीच वाली घाटी को काटती हुई एक तरफ से दूसरी तरफ को निकल गई थी और जिस पर इस तरफ आती समय इन दोनों में से किसी ने भी खयाल न किया था। इसी जगह जमीन पर एक लाल लिफाफा पड़ा हुआ था जिस पर गोपालशंकर की निगाह पड़ी और उन्होंने घोड़े से उतर कर उसे उठा लिया। लिफाफा खुला हुआ था और उसके भीतर लाल रंग का कागज था जिसे निकालने पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ पाया गया। यद्यपि रोशनी बहुत ही कम हो गई थी फिर भी गोपालशंकर ने वह मजमून पढ़ ही लिया, यह लिखा हुआ था :—

"गोपालशंकर,

"हम लोगों के मना करने पर भी तुम आगे बढ़ ही आए। और एक मौका तुम्हें और दिया जाता है। अब भी सम्हल जाओ और पीछे को लौटो। यदि हमारी बात मान कर पीछे लौट गये तो ठीक ही है, नहीं तो याद रक्खो कि और आगे बढ़ने का ख्याल करते ही तुम्हारा और तुम्हारे लश्कर की धूल का भी पता न रह जायगा।

"अगर इसी समय अपने लश्कर में जाना चाहो तो बाईं तरफ जाओ और रात भर रह कर सुबह जाने का विचार हो तो दाहिनी तरफ घूमो, मगर खबरदार, हमारी बात मत भूलो !!"

इसके नीचे 'रक्त-मंडल' का खूनी निशान, खून की बड़ी बूंद के बीच में चार अंगुलियों का दाग, बना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सब मामला समझ गये और चीठी एडवर्ड की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "जिसका मुझे संदेह था वही हुआ ! हम लोगों को धोखा दिया गया और यह सब रक्त-मंडल की कार्रवाई थी !!"

एडवर्ड ने भी उस चीठी को पढ़ा और तब दोनों में सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिये। आखिर सोच विचार कर यही निश्चय किया गया कि अन्धेरी रात के समय अनजान जंगल में से हो कर जाना ठीक नहीं है, रात भर आराम किया जाय और सुबह होते ही अपने लश्कर को चले चला जाय। यह निश्चय कर दोनों आदमी दाहिनी तरफ घूमे और उस पगडंडी पर चलने लगे जो चक्कर खाती हुई पहाड़ के ऊपर चढ़ गई थी।

लगभग आधा कोस जाने बाद ये लोग उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये और वहां इन्हें एक छोटा सा बंगला दिखाई पड़ा जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। ये दोनों बेधड़क उस बंगले के अन्दर घुसे। बंगला छोटा ही था मगर सब तरह के जरूरी सामानों से लैस था और बगल की कोठड़ी में नहाने धोने वगैरह का भी इन्तजाम था, पीछे को तरफ एक अस्तबल सा भी बना हुआ था।

इन लोगों ने अपने अपने घोड़ों को मल दल कर उस अस्तबल में बांधा और कुछ घास जो वहीं पड़ी हुई थी उनके आगे डाल कर अपने नहाने धोने की फिक्र में पड़े। जलपान का कुछ सामान भी वहां एक आलमारी में था परन्तु दोनों ने खाना मंजूर न किया और यों ही जाकर उन दो कोचों पर लेट गये जो बंगले में रक्खे हुए थे। बातचीत करते करते रात हो गई और धीरे धीरे ये लोग नींद में गाफिल हो गये। सोने के पहिले गोपालशंकर ने बँगले के सब खिड़की दरवाजे मजबूती से बन्द कर लिये थे और अपनी पिस्तौल दुरुस्त कर के सिरहाने रख ली थी।

× × × ×

सुबह होते ही गोपालशंकर और एडवर्ड उठे और जरूरी कामों से छुट्टी पा अपने लश्कर को तरफ लौटे। लगभग दो घंटे के सफर के बाद ये लोग उस जगह के पास पहुँचे जहां उनका लश्कर पड़ा हुआ था। दूर ही से देख कर गोपालशंकर ने कहा, "हमारे लश्कर के सब आदमी या तो मारे गये और या फिर बेहोश पड़े हैं।"

दोनों ने घोड़े तेज किये और थोड़ी ही देर में लश्कर में जा पहुंचे। लश्कर की विचित्र हालत थी, चारो तरफ लोग जमीन पर पड़े हुए थे, कहीं कोई भी होश में न था, दूर से ऐसा मालूम होता था मानों सब मुर्दे हों मगर पास जाने पर मालूम हुआ कि वे लोग मरे नहीं हैं किन्तु बेहोश हैं। ताज्जुब की बात यह थी कि रात की भयानक सर्दी में बाहर की ओस में पड़े रहने पर भी वे सब जीते क्योंकर बच रहे थे और जंगली जानवरों ने उन्हें क्यों छोड़ दिया था। बेहोशी चाहे जिस चीज की भी हो पर इतनी कड़ी और ऐसा गहरा असर करने वाली थी कि लश्कर के जानवरों में से भी बहुतेरे अपनी अपनी जगहों पर बेहोश पड़े हुए थे। गोपालशंकर और एडवर्ड परेशान थे क्योंकि उनकी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह हो क्या गया।

अब एक और बात की तरफ भी इन लोगों का ध्यान गया। इन लोगों

ने अपने साथ एक छोटा हवाई जहाज ले लिया था जो पैक कर के बहुत थोड़ी जगह में आ सकता था और जिसके कल पुर्जे और सामान छोटे बड़े कई सन्दूकों में बन्द थे। गोपालशंकर की तेज निगाहों ने देख लिया कि वे सभो बक्स गायब हैं।

जाँच करने से यह बात ठीक मालूम हुई और साथ ही इस बात का भी पता लगा कि इन लोगों के साथ रसद का जो कुछ सामान था उसका भी बहुत सा हिस्सा गायब हो गया है और सिर्फ इतना ही बच गया है जिससे लश्कर का दो दिन का काम चल सके। वे बहुत से यन्त्र आदि जो इनके साथ थे वे भी गायब हो गये थे। अब गोपालशंकर बिल्कुल घबड़ा गये और कुछ बदहवासी के साथ उनके मुंह से निकला, "हवाई जहाज गया, वे यन्त्र जिन्हें बरसों की मेहनत में मैंने तैयार किया था गये, और रसद भी गई! अब सिवाय इसके और क्या चारा रह गया कि यहाँ से पीछे लौट जाऊं!!"

गोपालशंकर ने पत्थर की एक चट्टान पर बैठ कर सिर झुका लिया और एडवर्ड उनके बगल में खड़ा अफसोस की मुद्रा से चारो तरफ देखने लगा।

———

दुश्मन के किले में

(१)

अपनी मुहिम पर इस प्रकार असफल होने से पंडित गोपालशंकर को बड़ा ही अफसोस हुआ। सब से बड़ा अफसोस उन्हें उस हवाई जहाज और उन यन्त्रों के जाने का हुआ जिन्हें बड़ी मुश्किल से उन्होंने बरसों में तैयार किया था और जिनकी मदद से वे बहुत कुछ करने की उम्मीद रखते थे। फिर भी वे सहज ही में हिम्मत बारने वाले आदमी न थे। एडवर्ड की सलाह थी कि इस समय लौट चला जाय और फिर दूसरी दफे इससे मजबूत दल बल के साथ वापस आया जाय मगर गोपालशंकर ने कुछ और ही सोच रहे थे। उन्होंने एडवर्ड को हुक्म दिया कि वह सभों को ले कर वापस जाय और खुद अकेले ही कहीं जाने की तैयारी करने लगे। कुछ खास खास जरूरी सामानों की उन्होंने एक छोटी सी गठड़ी बनाई और दो तमंचे तथा बहुत से कारतूस भी साथ ले लिये। इसके बाद जो दो चार लोग होश में आ चुके थे उन्हें बुला कर उनसे बेहोश होने के बारे में उन्होंने कई तरह के सवाल किये पर सिवाय इसके और कुछ न जान सके कि यकायक उन लोगों को बहुत गर्मी मालूम पड़ी जो दम के दम में इतनी बढ़ो कि बरदाश्त के बाहर हो गई और उसी के असर से वे बेहोश हो गये थे।

इतनी बात से कुछ भी मतलब निकलना सम्भव न था अस्तु उन लोगों को बिदा करके उन्होंने एडवर्ड को ताकीद कर दी कि जहाँ तक हो उनके चले जाने का हाल लश्कर वालों को मालूम न होने पावे। कुछ और भी गुप्त बातें बताने और समझाने के बाद वे पैदल ही एक तरफ को रवाने हो गये।

लगभग दो कोस जाने बाद गोपालशंकर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ दो पहाड़ों की जड़ें मिली थीं और उसके बीच में एक छोटा झरना बह रहा था। दोनों तरफ साल और दूसरे कई तरह के बड़े बड़े जंगली पेड़ों ने घनी छाया की हुई थी जिससे वह स्थान ऐसा हो गया था कि धर उधर से जाने वाले इक्के दुक्के मुसाफिर की भी आँख उन पर नहीं पड़ सकती थी। यह जगह अपने काम की समझ गोपालशंकर यहीं ठहर गये और अपना सब सामान उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर रखने बाद कपड़े भी उतार डाले। यद्यपि हिमालय की बर्फीली हवा शरीर को कँपा रही थी फिर भी उन्होंने अपना बदन एक दम नंगा कर डाला और तब अपने साथ लाए हुए सामानों में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का तेल था। यह तेल उन्होंने अपने तमाम बदन मुँह हाथ पाँव और एक कपड़े की सहायता से अपनी पीठ में भी अच्छी तरह मला और तब पेड़ों की आड़ में से निकल कर बाहर आ गये जहाँ एक ऊँची चोटी की आड़ छोड़ कर निकलते हुए सूर्यदेव की किरणें अभी अभी आ कर गिरी थीं। ताज्जुब की बात थी कि ज्यों ज्यों धूप उनके बदन में लगती थी वह काला होता जा रहा था यहां तक कि देखते देखते ही उनका तमाम बदन इस तरह काला हो गया मानों वे अफ़्रिका के कोई हबशी हों। केवल रंग बदल कर ही नहीं रह गया बल्कि उनके बदन का चमड़ा भी जगह जगह से एक विचित्र प्रकार से सिकुड़ने लगा और थोड़ी ही देर में उनके तमाम बदन में इस प्रकार की झुर्रियें पड़ गईं मानों वे नौजवान न हो कर पचास साठ वर्ष के कोई अधेड़ या बूढ़े आदमी हों। अब उनको देख कर उनका बड़े से बड़ा दोस्त भी अचानक उन्हें पहिचान नहीं सकता था। तेल लगाने के घन्टे

भर बाद जब उनकी हालत एक दम बदल गई तब उन्होंने एक मोटा कपड़ा लेकर समूचे बदन को खूब रगड़ रगड़ कर पोंछ डाला और तब कपड़े पहिन लिये, वे कपड़े नहीं जिन्हें पहिन वे लश्कर के बाहर हुए थे बल्कि एक दूसरे ही ढङ्ग के कपड़े जो उन पहाड़ियों के कपड़ों से बहुत कुछ मिलते जुलते थे जो अकसर इस प्रान्त में आते जाते दिखाई पड़ते थे और जिनका निवास स्थान तिब्बत या भूटान की सरहद होता था। न जाने उन्होंने ये कपड़े कहाँ से पाये थे या अपने साथ किस लिये रख लिये थे।

इन कपड़ों को पहिनने के बाद उन्होंने एक छोटा सा शीशा निकाला और उसमें अपना मुँह अच्छी तरह देखा। खूब गौर से देखने बाद उन्होंने सिर हिलाया, मानों उन्हें इस रूप-परिवर्तन पर प्रसन्नता नहीं हुई थी। अब उन्होंने एक अस्तूरा निकाला और अपनी मोंछ और सिर को एक दम सफा कर डाला। इन स्थानों पर भी वही तेल मला जिससे ये भी काले हो गये और तब कपड़े से पोंछ कर उस तरह की गोल टोपी सिर पर पहनी जैसी इधर के पहाड़ी लोग पहिनते हैं। अब ये ठीक कोई पहाड़ी मालूम होने लगे थे।

एक बार फिर शीशा लेकर गोपालशंकर ने अपनी शकल देखी। इस समय उन्हें देख कर उनका सगा भाई भी उन्हें पहिचान न सकता था मगर गोपालशंकर को अब भी पूरा संतोष न हुआ। उन्होंने अपने सामान से ढूंढ़ कर लम्बे और मैले तथा पोले बनावटी दांतों की दो पंक्तियाँ निकालीं जो बड़ी कारीगरी से पतली कमानियों के साथ लगे हुए थे और इन्हें अपने दाँतों पर लगाया। ये बनावटी दांत कुछ इस तरह बने हुए थे कि उनके असली दांतों के साथ एक दम चिपक कर कुछ इस तरह बैठ गये कि नजदीक से देख कर भी यह जानना कठिन था कि ये असली नहीं नकली हैं। इन दाँतों ने उनकी शकल इतनी बदल दी कि उनकी माँ भी अब उन्हें देख कर पहिचान नहीं सकती थी। अब फिर उन्होंने शीशा उठाया और बड़े गौर से अपना चेहरा देख कर प्रसन्नता के साथ गरदन हिला कर बोले,

"अब रक्त-मंडल का होशियार से होशियार जासूस भी मुझे पहिचान नहीं सकता. मैं बेखटके........।" पर यकायक वे रुक गये। उन्हें ख्याल आया कि उनकी आवाज अब भी बदली नहीं है।

गोपालशंकर कच्ची गोलियाँ नहीं खेलते थे। वे जिस काम में भी हाथ डालते उसे पूरी तरह से करते थे और यही उनकी विशेषता थी। उन्होंने पुनः अपना सामान उलटा पुलटा और उसमें से एक दूसरी शोशी निकाली जिसमें छोटी छोटी बहुत सो चमकीली गोलियां थीं। इसमें से कई गोलियां निकाल कर उन्होंने मुँह में रख लीं और तव दूसरे काम में लगे। अपने सामान से कागज और कलम निकाल कर खूब सोच सोच कर वे एक चीठी लिखने लगे।

इस चीठी का मजमून क्या था यह तो हम नहीं कह सकते पर इतना जानते हैं कि इसके लिखने में गोपालशंकर ने बड़ी मेहनत की और कई तरह की कलमों और स्याहियों का प्रयोग किया तथा बराबर कई कागज भी बदले। लगभग घन्टे भर में जब वह चीठी खतम हुई तो उन्होंने उसे कई बार पढ़ा और तब इस प्रकार सिर हिलाया मानों अब वे सब तरह से सन्तुष्ट हो गये हों।

इन सब कामों में उन्हें कई घन्टे से ऊपर लग गये और सूर्य अब ऊँचे हो कर मध्याह्न की तरफ आ रहे हैं यह देख उन्होंने जल्दी करनी शुरू की। अपने सामानों में से कुछ बहुत ही जरूरी चीजें तो उन्होंने कमर में खोंसीं और बाकी की चीजें कपड़े की एक गठड़ी में बांधीं जिसे दो चट्टानों के बीच की एक दरार में छिपा कर उसका मुँह पत्थर के छोटे छोटे ढोंकों से वन्द कर दिया, वह चीठी जो अभी लिखी थी अपनी जेब में डाली और तब एक डंडा हाथ में ले उठ खड़े हुए। पहाड़ियों की तरह लम्बे लम्बे डग भरते हुए शीघ्र ही वे पुनः अपने रास्ते पर आ पहुंचे और तब तेजी के साथ उधर को रवाना हुए जिधर वह जमींदोज किला था जो इनकी उस विफल मुहिम का लक्ष्य था।

(२)

संध्या का समय है। सूर्यदेव अस्ताचलगामी हुआ ही चाहते हैं और उनकी लाल किरणें हिमालय की वर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ कर उन्हें खून से नहला रही हैं। ऐसे समय में उस जमींदोज किले की एक सफील के ऊपर हम एक नौजवान को कुछ चिन्तित भाव से सर झुकाये टहलते हुए देख रहे हैं। पाठक इस नौजवान को बखूबी पहिचानते हैं क्योंकि ऊपर वे इससे मिल चुके हैं। इनका नाम नगेन्द्रनरसिंह है और इस किले के इस समय ये ही सब से बड़े अफसर हैं। इस समय ये किसी गहरे तरद्दुद में पड़े हुए मालूम होते हैं क्योंकि इनके माथे पर की सिकुड़नें यह बतला रही हैं कि इन्होंने कोई फिक्र पैदा करने वाली खबर सुनी है।

यकायक एक लम्बी सांस लेकर उन्होंने सिर उठाया और गरदन घुमा कर किसी को बुलाना या कुछ कहना ही चाहते थे कि अचानक उनकी निगाह सामने के मैदान पर पड़ी। उनकी तेज निगाहों को कोई नई बात दिखाई पड़ी और उन्होंने तुरत बगल से लटकती हुई दूरबीन को उठा कर आंख से लगाया।

उन्होंने देखा कि कुछ दूर के एक मैदान मे एक लांबे कद का पहाड़ी अकेला चला आ रहा है जिसकी चाल और आकृति से मालूम होता था कि वह बेतरह थक गया है। थोड़ी थोड़ी दूर चल चल कर वह रुकता और किसी चट्टान का ढासना लेकर खड़ा हो जाता था, पर इसके बाद फिर एक निगाह इस किले की तरफ डाल कर आगे बढ़ना शुरू कर देता था। कुछ देर तक गौर के साथ देखते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि वह पहाड़ी न केवल थकावट ही से चूर हो रहा है बल्कि कुछ चुटीला या बीमार भी है, और यह बात ठीक भी निकली क्योंकि यकायक उस पहाड़ी को एक चक्कर आया जिससे वह लड़खड़ा गया और तब दोनों हाथ फैला कर अपने को सम्हालने की चेष्टा करते करते ही जमीन पर गिर पड़ा।

नगेन्द्रनरसिंह कुछ देर तक उस तरफ देखते रहे, इसके बाद न जाने

उनके मन में क्या आया कि वे घूमे और उन्होंने जोर से ताली बजाई। ताली की आवाज के साथ ही एक फौजी जवान उनके सामने आ खड़ा हुआ, नगेन्द्र ने उससे कहा, "वह देखो वहाँ पर एक पहाड़ी पड़ा हुआ है, उसे जल्दी उठा कर मेरे पास लाओ।"

"जो हुक्म" कह उसने फौजी सलाम किया और वहां से चला गया। नगेन्द्रनरसिंह और थोड़ी देर तक उस जगह टहलते रहे इसके बाद वहां से हटे और अपने बैठने के कमरे में चले आये जहां एक बड़े टेबुल के ऊपर इधर के प्रान्तों का बहुत बड़ा नक्शा फैला हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह उसी नकशे के पास खड़े हो कर उसमें कुछ देखने लगे। कुछ देर तक देख भाल कर वह नक्शा लपेट कर एक तरफ रख दिया और तब कुरसी पर बैठ सिर पर हाथ रख कुछ सोचने लगे।

न जाने कितनी देर तक वे इसी तरह बैठे रहे। सन्ध्या हो गई और नौकरों ने वहां आकर रोशनी कर दी। समूचा किला अन्धकार से ढक गया क्योंकि सिवाय इनके कमरे के और उस मशीन-रूम के जो जमीन के अन्दर बना हुआ था या जहाँ वह भयानक मृत्यु-किरण तैयार की जाती थी, उस किले भर में और कहीं भी रोशनी करने की इजाजत न थी। चारों तरफ निस्तब्धता का साम्राज्य छा गया जिसके वीच में कभी कभी सन्तरियों या पहरा देने वालों की आहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं पड़ती।

यकायक दर्वाजे पर से ताली बजने की आवाज सुन कर नगेन्द्रनरसिंह चौंके और बोले, "कौन है, भीतर आओ।" जिसके साथ ही दर्वाजा खुला और दो सिपाही उसी बेहोश पहाड़ी को उठाये हुए अन्दर आए जिसे नगेन्द्रनरसिंह ने दूर से देखा था। नगेन्द्र का इशारा पा कर सिपाहियों ने उस पहाड़ी को उस जगह जमीन पर लेटा दिया। नगेन्द्र उठ कर उस पहाड़ी के पास आए। सूरत शक्ल का वह एकदम काला और चालढाल से भूटानी या तिब्बती पहाड़ी मालूम होता था। नगेन्द्र कुछ देर तक बड़े गौर से

देखते रहे इसके बाद उन सिपाहियों से बोले, "यह क्या बिल्कुल बेहोश है?" सिपाहियों ने जवाब दिया, "जी नहीं, मगर रह रह कर इसे गश आ जाता है, मालूम होता है कहीं बहुत दूर से चला आ रहा है और साथ ही गिर कर चुटीला भी हो गया है।"

इसी समय उस पहाड़ी ने करवट बदली और उसके मुंह से कुछ अस्पष्ट बातें निकलीं। नगेन्द्र के इशारे से एक सिपाही ने उसे सहारा दे कर उठाया और दूसरे ने उसके मुंह पर पानी के छींटे दिये। पानी पड़ते ही उसने आंखें खोल दीं और तब अपने चारो तरफ विचित्र निगाह से देख कर पहाड़ी बोली और भारी आवाज में न जाने क्या क्या कह गया जो नगेन्द्रनरसिंह की समझ में कुछ भी न आया। उन्होंने उससे पूछा, "तुम कहां से आ रहे हो और यहां तुम्हारा क्या काम है?"

न मालूम उस पहाड़ीने नगेन्द्र की बात समझी या नहीं मगर वह फिर पहिले की तरह किसी विचित्र जंगली भाषा में कुछ कह गया। एक सिपाही ने यह देख नगेन्द्रनरसिंह से कहा, "इसकी बात कुछ समझ में नहीं आती, रास्ते में भी इसी तरह न जाने क्या क्या रह रह कर बक उठता था।"

नगेन्द्र ने उस पहाड़ी से कहा, "तुम न जाने क्या कहते हो, हमारी समझ में नहीं आता। क्या तुम हमारी भाषा नहीं बोल सकते हो?"

यह सुन उस पहाड़ी ने बड़े गौर से नगेन्द्रनरसिंह की तरफ देखा और तब मानों उनका मतलब समझ गया हो इस तरह पर हंसा जिससे उसके मैले पीले दाँत दिखाई पड़ने लगे, इसके बाद उसने अपने जेब से एक चीठी निकाली और दूसरे हाथ से एक अशर्फी दिखाता हुआ फिर उसी तरह अस्पष्ट भाषा में कुछ कह गया, मगर इस वार उसकी वात कुछ कुछ समझ में आती थी। मालूम होता था कि वह अपना आशय समझाने के लिये यहां की बोली बोलने की कोशिश कर रहा है मगर भाषा न जानने के कारण कृतकार्य नहीं हो रहा है।

आखिर बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद नगेन्द्रनरसिंह ने उसकी बातों का मतलब निकाल ही लिया और समझ गये कि यह पहाड़ी घर जा रहा था जब किसी ने इसे वह अशर्फी और यह चीठी देकर कहा कि इस चीठी को यहाँ पहुँचा दो तो यह अशर्फी ले सकते हो। इतना समझ कर नगेन्द्र ने हाथ बढ़ा कर पहाड़ी से वह चीठी ले ली और उसे खोल कर पढ़ने लगे। उधर वह चीठी नगेन्द्र के हाथ में देते ही वह पहाड़ी फिर गश में आकर गिर पड़ा।

न जाने उस चीठो में क्या लिखा था कि पढ़ते ही नगेन्द्रनरसिंह चौंक पड़े। उनके माथे पर चिन्ता की रेखाएँ पड़ गईं और कुछ सायत के लिये वे किसी गहरे सोच में डूब गये। इसके बाद वे कुछ पूछने के लिये फिर उस पहाड़ी की तरफ झुके मगर देखा कि वह गश में पड़ा हुआ है और दोनों सिपाही उसे होश में लाने का उद्योग कर रहे हैं। यह देख कर उन्होंने कहा, "इसे यहाँ से ले जाओ, होश में ला कर ताकत देने वाली कोई चीज दो। अगर इसे कहीं चोट चपेट लगी हो तो इलाज करो और खाने को दो। जब इसकी तबीयत ठीक हो जाय तो इसे फिर हमारे पास लाना। देखो इसे किसी तरह की तकलीफ न होने पावे, और होशियार, यह यहाँ से भागने भी न पावे। अभी इससे मैंने बहुत कुछ पूछना है।"

हुक्म सुन दोनों सिपाहियों ने उस पहाड़ी को उठाया और बाहर ले चले। यह क्या केवल हमारा भ्रम है या सचमुच इस समय पहाड़ी के होठों पर एक हँसी की रेखा दिखाई पड़ कर तुरत गायब हो गई?

(३)

लगभग घन्टे भर के दिन चढ़ चुका होगा। नगेन्द्रनरसिंह स्नान ध्यान आदि से छुट्टी पाकर अपने कमरे में बैठे हुए कुछ जरूरी कागजात देख रहे हैं। इसी समय पहरेदार ने उनके हाथ में एक बन्द लिफाफा लाकर दिया।

उन्होंने खोला, भीतर एक कागज निकला जिस पर यह लिखा हुआ था—

"एक— किला— नं०—

नई घटनाएँ—मुलाकात जरूरी—पूरा मंडल—कमेटी—आज रात—इन्तजाम—

'—चार'

कागज पढ़ते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि यह किले की बेतार की तार द्वारा मिला हुआ एक संदेसा है जिसे रक्त-मंडल के भयानक-चार ने उनके पास भेजा है और कहा है कि कुछ नई घटनाओं के सबब से उनका इनसे मिलना जरूरी हो गया है और इस लिये आज रात को पूरे मण्डल की एक कमेटी होगी जिसके लिये वे मुनासिब इन्तजाम करें।

तार पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह के माथे पर सिकुड़नें पड़ गईं। देर तक वे न जाने क्या सोचते रहे और इसके बाद एक कागज पर कुछ लिख कर उन्होंने उस आदमी को दिया जो चीठी लाया था। जब वह कागज ले सलाम कर जाने लगा तो उन्होंने कहा, "बाहर से किसी सिपाही को भेजते जाओ।" वह आदमी चला गया और उसी समय एक सिपाही ने कमरे में पैर रक्खा। नगेन्द्रनरसिंह ने उससे कहा, "कल जो पहाड़ो मिला है उसे मेरे पास लाओ।"

वह सिपाही चला गया मगर थोड़ी ही देर बाद लौट आ कर बोला, 'उस पहाड़ी की हालत तो बहुत खराब है, उसे रात भर बेहोशी रही और आज सुबह से बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ है जिसमें वह बकझक कर रहा है, कभी कभी उठ कर दौड़ता भागता भी है। उसके साथ बातचीत करना एक दम असम्भव है।"

सुन कर नगेन्द्रनरसिंह ने अफसोस के साथ कहा, "खैर उसकी पूरी खबरदारी की जाय और इलाज में किसी तरह की त्रुटि न होने पावे। जैसे ही उसकी हालत ठीक हो मुझे खबर दी जाय।"

"जो हुक्म" कह सलाम करता हुआ वह सिपाही चला गया। उसके

जाने के बाद कुछ देर तक नगेन्द्रनरसिंह वहीं बैठे रहे और तब उठ खड़े हुए। अपने कमरे से बाहर आकर सीढ़ियां उतरते हुए बीच वाले आँगन में पहुँचे और वहाँ से उस तरफ रवाना हुए जहाँ जमीन के अन्दर बना हुआ मशीन-रूम था। यह कैसे गुप्त स्थान में था और यहाँ का रास्ता कैसा सुरक्षित था यह सब हम पहिले लिख आये हैं अस्तु यहाँ वह सब पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मशीन-रूम के दर्वाजे पर ही इन्हें केशवजी मिले जो इनके आने की खबर पा कर इन्हें लेने आ गये थे। नगेन्द्रनरसिंह केशवजी को लिये उनके प्राइवेट आफिस में चले गये और दोनों में बातें होने लगीं।

नगेन्द्र०। मैंने जो सन्देसा भेजवाया था वह आपने रवाना करवा दिया ?

केशव०। जी हाँ, मगर अभी तक उसका कोई जवाब नहीं आया है।

नगेन्द्र०। आज 'भयानक-चार' की बैठक होगी।

केशव०। जी हां, यह तो सांकेतिक शब्दों के अनुवाद के समय ही मुझे मालूम हो गया। जान पड़ता है कोई बहुत जरूरी बात है जो सब के सब ही आ रहे हैं।

नगेन्द्र०। जरूर कोई ऐसी ही बात है, परन्तु मेरा विचार तो अब यहां का प्रबन्ध उस 'भयानक-चार' पर डाल कुछ दिनों के लिये नैपाल जाने का हो रहा है।

केशव०। (चौंक कर) सो क्यों ? आपके जाने से तो सभी गड़बड़ हो जायगा !

नगेन्द्र०। आखिर यह बोझा तो 'भयानक-चार' का ही है !

केशव०। मगर एक तरह पर वे आपकी शरण में आ गये हैं और आपने उनकी सहायता करना स्वीकार कर लिया है।

नगेन्द्र०। हाँ सो भी ठीक है, मगर इधर मैंने कुछ समाचार ऐसे सुने हैं जिनसे मेरा मन एकदम व्यग्र हो गया है। फिर यहाँ फिलहाल कोई ऐसा

जरूरी काम नहीं है। जितने रुपयों की जरूरत थी वह इकट्ठा हो गया है, गोपालशंकर वाला लश्कर लौट गया है, नैपाल का खतरा कम से कम कुछ समय के लिये टल गया है, और अंग्रेजी सरकार के किसी नये हमले की खबर नहीं है, अस्तु कुछ समय के लिये चले जाने से कुछ हानि की भी सम्भावना नहीं है।

केशव०। आप बुद्धिमान हैं जो कुछ भी करेंगे समझ बूझ कर ही करेंगे, परन्तु मेरी समझ में यह शान्ति तूफान आने के पहिले की शान्ति है और उतनी ही खतरनाक भी जितना कि तूफान स्वयम् होता है। हमें युद्धारम्भ के पहिले के इस थोड़े से मौके का पूरा लाभ उठा कर अपने को इतना मजबूत कर लेना चाहिये कि बड़ी से बड़ी शक्ति भी हमारा कुछ बिगाड़ न सके।

नगेन्द्र०। हाँ सो तो आप ठीक कहते हैं.......मगर.......

केशव०। क्या मैं जान सकता हूं कि वह मामला क्या है जिसने आपको इतना व्यग्र कर दिया है?

नगेन्द्र०। कई बाते हैं, एक तो.......आप शायद उन नरेन्द्रसिंह को भूले न होंगें जिन्हें मैं उस दिन यहां लाया था?

केशव०। हां हां, वही नैपाली फौज के अफसर।

नगेन्द्र०। हां वे ही, उनकी एक चीठी आई है कि उनकी बहिन अचानक बहुत सख्त बीमार हो गई है, बचने की उम्मीद नहीं है, उसको देखना हो तो आ जाओ, दूसरे........

इसी समय सामने की दीवार पर लगी एक घन्टी बज उठी जिसे सुनते ही केशवजी उठ खड़े हुए और कमरे का दोहरा दरवाजा खोल बाहर चले गये। थोड़ी देर बाद जब वे लौटे तो उनके हाथ में एक कागज था जिसे उन्होंने नगेन्द्रनरसिंह को दिखाते हुए कहा, "मालूम होता है आपके सन्देशे का जवाब आया है। इसे भयानक-चार ने ही भेजा है। मैं अभी इसे साफ करता हूं तो ठीक पता लगेगा।"

बेतार से आया हुआ वह तार सांकेतिक भाषा में था। केशवजी ने अपने पास की ताली से लोहे की मजबूत आलमारी खोली जो कमरे की दीवार में बनी हुई थी और उसमें से एक मोटी किताब निकाल कर उसकी सहायता से उन सांकेतिक शब्दों का अर्थ निकालना शुरू किया। थोड़ी देर में यह काम समाप्त हो गया और एक दूसरे कागज पर उसका आशय लिख कर केशवजी ने नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दिया। उन्होंने सरसरी निगाह उस पर डाली और साथ ही चौंक कर पुनः गौर से पढ़ने लगे, इसके बाद केशवजी की तरफ देखा और बोले, "यह मामला तो बड़ा गहरा होता दिखाई पड़ता है !"

केशवजी ने कहा, "बेशक !" और तब दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं।

(४)

आधी रात का समय है, इस किले में सब तरफ सन्नाटा है, कहीं कोई चलता फिरता दिखाई नहीं देता, न कहीं से किसी तरह की आहट ही आ रही है।

एक छोटे कमरे में जो किले के किसी बड़े ही गुप्त स्थान में है, हम एक छोटी कुमेटी होते हुए देख रहे हैं। कमरा जो मुश्किल से दस हाथ चौड़ा और लम्बा होगा सिर्फ एक दीवारगीर की रोशनी पा रहा है जिसके शीशे के चारो तरफ पतला लाल कपड़ा लपेट कर रोशनी और भी कम कर दी गई है जिससे वहाँ एक प्रकार से अन्धकार ही है और बैठे हुए आदमियों की सूरत शक्ल देखना कठिन हो रहा है। बीच में एक गोल टेबुल है जिसके ऊपर लाल कपड़ा बिछा है। टेबुल पर एक मनुष्य की खोपड़ी का ढाँचा रक्खा हुआ है जिसके नीचे हाथ की दो हड्डियां रक्खी हुई हैं और दोनों तरफ दो भैंसों के ताजे कटे और खून से सने सिर रक्खे हुए हैं। सब कुर्सियों पर भी लाल कपड़ा बिछा हुआ है और उन पर लाल ही कपड़ा पहिने तथा लाल नकाब से अपना चेहरा ढांके हुए चार आदमी बैठे हुए

हैं। कमरे में आने का सिर्फ एक ही दर्वाजा है जो इस समय बन्द है और उसके आगे भी लाल पर्दा पड़ा हुआ है। सन्नाटे और अन्धेरे में वे भीषण महिष-मुन्ड और नर-कपाल बड़े ही भयानक मालूम हो रहे हैं और उनके चारो तरफ बैठे हुए वे चारो निस्तब्ध आदमी भी पिशाचों की तरह दिखाई पड़ते हैं।

यकायक दूर से किसी जगह शंख बजने की हलकी आवाज उस कोठड़ी में पहुँची। आवाज आते ही वे आदमी उठ खड़े हुए, किसी अज्ञात शक्ति को उन सभों ने माथा नवाया, और तब पुनः सब के सब बैठ गये। इसके साथ ही कमरे का दर्वाजा खुला और नगेन्द्रनरसिंह भीतर आते दिखाई पड़े। दर्वाजा बन्द कर वे एक खाली कुर्सी पर आ बैठे। उन चारो में से एक आदमी खड़ा हुआ और उसने धीमी मगर गम्भीर आवाज में कहना शुरू किया :—

"आज बहुत दिनों के बाद हम लोग पुनः इकट्ठे हुए हैं।

"बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस समय वे महोदय भी हमारे बीच में मौजूद हैं जिनके हाथ में हम लोगों ने एक तरह से अपने मंडल की बाग-डोर दे दी है। उन्होंने पिछले दिनों में जिस प्रकार हमें सहायता पहुँचाई और आज भी पहुंचा रहे हैं उससे हम किसी प्रकार उऋण नहीं हो सकते, पर उसका वर्णन करने को यह समय और स्थान उपयुक्त नहीं है। हमारा केवल यही कहना है कि वे अब भी इस भयानक-चार के परिचालक बने रहें और इसका काम चलाते रहें।

"पिछली बैठक में जो आज से साल भर पहिले हुई थी यह तय हुआ था कि हम चारों में से एक तो यहाँ रह कर सब यन्त्रों और आविष्कारों को पूर्ण करे और बाकी के तीन समूचे देश में घूम घूम कर उस आग को फिर से जलाने की कोशिश करें जो कई बरस पहिले बुझ चुकी थी। वैसा ही किया गया और उस महाशक्ति को धन्यवाद देना चाहिये कि इसमें पूरी सफलता मिली। यद्यपि ऊपर से वह आग बुझी दिखती थी पर भीतर

इतनी गर्मी मौजूद थी और इतनी चिनगारियाँ उठ रही थीं कि हम लोगों के जरा सा हवा देते ही राख उड़ गई और भयानक अग्नि पुनः जलने लग गई। छः महीने से कम के ही उद्योग में दस हजार से अधिक व्यक्ति हमारे झंडे के नीचे आ गये जिनमें से प्रत्येक ने हमारी शपथ खाई है और जिनमें से हर एक देश के लिये जान दे देना आपना सौभाग्य समझेगा।

"अवश्य ही इतने बड़े दल में कुछ काली भेड़ों का भी आ मिलना स्वाभाविक था, बल्कि उसे हम लोग रोक ही नहीं सकते थे। सरकार को हमारे उद्योग का पता लग गया और हमें पुनः चूर्ण करने की तैयारी होने लगी। और सब जगहों में तो जो कुछ हुआ सो हुआ ही, हमारे दुश्मन को किसी तरह यह पता लग गया कि हमारा केन्द्र यह किला है और इस पर हमला करने को तैयारी की गई। एक तरफ से नैपाल राज्य पर दबाव डाला गया, दूसरी तरफ से एक दल यहां की खुली तरह से जाँच करने वास्ते भेजा गया और तीसरी तरफ से एक बड़ी पल्टन यहां से दो तीन दिन की मुहिम के फासले पर इकट्ठी की गई जिसका उद्देश्य इस किले पर हमला करना ही है। एक बड़े अंग्रेज अधिकारी और नैपाल मन्त्री के बीच में मुलाकात का भी प्रबन्ध किया गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ ही समय के बाद अवश्य ही ये बादल फट पड़ेंगे। आज की बैठक इसी लिये की गई है जिसमें यह निश्चय हो जाय कि अब क्या करना चाहिए।

"यहाँ आने के पहिले हम लोगों ने प्रान्तीय मुखियाओं के साथ मिल कर जो कुछ तय किया है उसका सार भी बैठने के पहिले मैं बता देना चाहता हूं। इस समय यहाँ के दो बड़े और स्वतन्त्र देशी राज्यों से सरकार की जिस प्रकार चखचख चल रही है वह सभी जानते हैं और एक विदशी राज्य के हमले का मुकाबिला करने के लिए जो फौजी तैयारी हो रही है उससे भी सब परिचित हैं। इसके सिवाय देश में गुप्त रीति से जो कुछ आन्दोलन हम लोग कर सके हैं उसका भी प्रभाव आशाजनक हुआ है, अस्तु इस समय हम लोगों की राय में खुला विद्रोह कर देने का बड़ा

सुन्दर मौका आ गया है जिसे हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। जैसा कि सूचनाओं से मालूम हुआ है, जो शक्ति हमारे हाथ में 'मृत्यु-किरण' के आविष्कार ने दे दी है वह अमोघ है और उससे हम इस देश क्या संसार भर पर विजय पा सकते हैं अस्तु हम लोगों की राय में यह ऐसा मौका है जब कम से कम खूनखराबा कर के हम यहां का शासन-सूत्र अपने हाथ में ले सकते हैं अस्तु इस समय हमें चोट कर देनी चाहिये यही हम लोगों की राय है। हम अपनी यह राय उन महोदय के सामने पेश करते हैं जिन्होंने बड़े आड़े हमारी सहायता की, कर रहे हैं, और करते रहेंगे। उनके हाथ में हमने अपने को पूरी तरह पर दे दिया है, अब वे जैसी आज्ञा दें हम लोग वही करें।"

इतना कह वह आदमी बैठ गया और कमरे में सन्नाटा छा गया।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद नगेन्द्रनरसिंह खड़े हो धीमी मगर मजबूत आवाज में कहने लगे :—

"जिस समय, आज से बहुत दिन पहिले, आप लोग, या आप में से कुछ क्योंकि समय और आद्या-शक्ति ने कुछ को आपसे अलग कर दिया है, मेरे पास आये थे और मैंने काफी रुपया आपको देना स्वीकार किया था। उस समय आपकी मदद करने का कारण यह नहीं था कि आप उसी भूमि के रहने वाले थे जिसके एक कोने में मेरा भी देश है। मैंने जो आपकी सहायता की वह केवल इसी लिये कि आप एक दुःखी और पददलित जाति के उत्थान का प्रयत्न कर रहे थे। आज जो जाति आपको अपने नीचे दबाये हुए है वही यदि कल उस अवस्था में हो जाय जिसमें आज आप हैं तो मैं वैसी ही प्रसन्नता के साथ उसकी भी सहायता करूंगा। मेरा मतलब यह कि संसार की प्रत्येक पददलित पराधीन जाति से मेरी सहानुभूति है और मैं सभी जातियों को स्वतन्त्र और बराबरी के दर्जे पर देखना चाहता हूं, इसी से मैंने आपकी सहायता करना स्वीकार किया। आपको किसी प्रकार, जिस प्रकार भी मुझसे हो सका बटोर बटार या लूट मार

कर, मैंने एक करोड़ रुपया दिया और आपने उसे खर्च भी कर दिया— यद्यपि कहना पड़ेगा कि उसका कोई सुफल देखने में नहीं आया बल्कि एक ऐसी घौल खानी पड़ी कि इतने दिनों का किया कराया सभी कुछ चौपट हो गया।

"मैं उसी समय इस बात को जानता था और शायद आपको याद हो या न हो मैंने रुपया देती समय ही अपना सन्देह प्रगट कर दिया था कि आप जिस रीति का अवलम्बन कर रहे हैं उससे मुझे सहानुभूति नहीं है और वह शायद सफलता का मार्ग भी नहीं है। छिपी हत्याओं और पीछे से किये हुए हमलों ने आज तक किसी देश को स्वतन्त्र नहीं किया और न एकान्त निरीहता और शान्तिप्रियता ही किसी जाति को पराधीनता से छुड़ा सकती है। पाशविक शक्ति का सामना पाशविक शक्ति हो कर सकती है। आग के भयंकर उत्ताप को चिनगारियां नहीं रोक सकती, उसके लिये पत्थर की दीवार या पानी की मोटी धाराएं चाहियें। जिस जाति ने पाशविक बल की सहायता से आपको दबा रक्खा है उसको हटाने के लिये उतनी ही बड़ी पाशविक शक्ति की ही आवश्यकता है यह मेरा विश्वास था और आज भी है। अस्तु उस समय जब आपकी असफलता का हाल मैंने सुना तो दुःख होते हुए भी मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि आपके पीछे कोई मजबूत पाशविक शक्ति नहीं थी।

"यही सबब है कि दूसरी बार जब एक दूसरे प्रकार का प्रस्ताव ले कर आप लोग मेरे पास आए तो मैंने उसे खुशी के साथ सुना। आपने अपने ही एक प्रख्यात वैज्ञानिक द्वारा आविष्कृत 'मृत्यु-किरण' का हाल मुझसे कहा और मेरे दिल ने उसी समय मुझसे कह दिया कि हाँ यह सफलता का मार्ग हो सकता है। मैंने खुशी से उस आविष्कार का पूरा अनुसन्धान करने और उसका काम करने लायक माडल बनाने के लिये एक करोड़ रुपया दिया। महामाया की कृपा से आपका आविष्कार सफल हुआ। मैंने भी उसकी जाँच की और उसकी शक्ति की सम्भावना ही से मैं मुग्ध

हो गया। उसे खड़ा करने के लिये मैंने आपको अपना यह किला दिया जो यद्यपि अब नैपाल राज्य का कहलाता है परन्तु वास्तव में मेरे पूर्वजों की ही संपत्ति है। आपने अपने यन्त्र आदि यहाँ खड़े किये और उनकी अपार शक्ति देख कर मैं इतना प्रसन्न हुआ कि तब से मैं अकसर ही यहाँ आता रहता हूं।

"अब काम करने का वक्त आ गया ऐसा आप लोग कहते हैं, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता क्योंकि मुझे आपके देश की भीतरी हालत की कुछ अधिक जानकारी नहीं है और न उसकी गतिविधि पर ही मैंने अधिक लक्ष्य ही रक्खा है, अस्तु इसके सब से उत्तम परीक्षक तो आप ही हो सकते हैं। मैं तो सिर्फ एक सिपाही हूं। मेरा जन्म जिस वंश में हुआ वह मशहूर लड़ाका वंश था और मेरी शिक्षा दीक्षा भी वैसी ही हुई। परिस्थितियों से अब तक बराबर मैं लड़ता ही आया हूं, अस्तु लड़ाई के नाम से ही मुझे प्रसन्नता होती है। अगर आप समझते हैं कि इस समय शत्रु के विरुद्ध खुला विद्रोह करने का समय आ गया है तो बहुत अच्छा है, जरूर युद्ध आरम्भ कर दीजिये, मेरा दिल आपके साथ है, मेरी तलवार आपके साथ रहेगी। हां यह आपको अच्छी तरह सोच लेना चाहिये कि लड़ाई शुरू करने का वक्त आ गया कि नहीं, इसके बारे में मैं आपको कोई सलाह नहीं दे सकता।"

नगेन्द्रनरसिंह बैठ गये। उनके बैठते ही एक तीसरा आदमी उठा और बोला, "इस सम्बन्ध में मैं आपको यह कह देना चाहता हूं कि 'भयानक-चार' की राय में युद्ध छेड़ने का मुनासिब मौका आ गया है। अगर केवल इतने ही से आपका मतलब हो तो यह कहने की जिम्मेदारी हम लोग अपने ऊपर लेने को तैयार हैं कि जैसा मौका इस समय है वैसा पिछले डेढ़ सौ वर्षों में कभी नहीं आया था।"

नगेन्द्रनरसिंह यह सुन बोले, "यह आप लोग जानिये, युद्ध-घोषणा करना आपका काम है।"

जो आदमी सब से पहिले बोला था उसने नगेन्द्रनरसिंह की बात सुन कहा, "युद्ध-घोषणा करने को हम लोग तैयार हैं और हमारे पास अब सेना भी मौजूद है, परन्तु हमें अफसोस यही है कि हमारे पास सेनापति कोई नहीं। युद्ध-संचालन एक वास्तविक कला है जिसका प्रयोग योद्धा ही कर भी सकता है। हमारे देश में इस समय नेता हजारों हैं और फिलासफर लाखों परन्तु योद्धा एक भी नहीं है। शताब्दियों की हमारी पराधीनता का वह परिणाम है। इसी अभाव के कारण हम लोग युद्ध-घोषणा करते डरते हैं। आज मुख्यतः हम आपसे यही प्रार्थना करने आये थे कि आप हमारे सेनापति का काम सम्हालिये।"

नगेन्द्रनरसिंह यह सुन कुछ सोच में पड़ गये, थोड़ी देर के लिये उनकी आँखें बन्द हो गईं, तब इसके बाद वे बोले, "मैं आप लोगों की जरूरत समझता हूं इस लिये और विशेष कर इस लिये कि युद्ध का नाम ही सुन के मेरी भुजाएं फड़कने लगी हैं, मैं आपका सेनापतित्व ग्रहण करने को तैयार हूं, परन्तु एक शर्त पर।"

सब बोल उठे—"क्या? क्या?" नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "वह शर्त यह होगी कि आप लोगों को बिल्कुल मेरी इच्छानुसार चलना पड़ेगा। अवश्य ही मैं आपसे सलाह लिया करूँगा पर जहाँ आपकी सलाह और मेरी इच्छा में विरोध पड़ेगा वहाँ मेरी राय ही बलवती मानी जायगी।" चारो एक साथ बोल उठे, "यह तो मानी हुई बात है। युद्ध-संचालन में तो एक राय को सर्वोपरि मानना ही होगा। आप इधर से एक दम बेफिक्र रहें, हम लोग बिल्कुल आपकी आज्ञानुसार चलने को तैयार हैं और बराबर रहेंगे।" नगेन्द्रनरसिंह इस पर बोले, "एक बात और, मैं तभी तक आपका संचालक रहूंगा जब तक युद्ध में सफलता मिलती जायगी। जैसे ही मैं देखूंगा कि मेरी बुद्धि इतने बड़े भार को सहने योग्य नहीं है और मेरा इस पद पर रहना आपकी हानि करेगा मैं उसी समय सेनापति का पद छोड़ दूंगा और आपको मेरा इस्तीफा स्वीकार कर यह भार खुद लेना पड़ेगा या किसी

दूसरे को अपना सेनापति बनाना पड़ेगा। उस समय आप इन्कार न कर सकेंगे। मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं अपनी शक्ति भर युद्ध नहीं करूँगा, नहीं, मैं अपनी पूरी बुद्धि और अन्तिम बल लगा दूंगा पर जैसे ही यह देखूंगा कि मैं इस कार्य के अयोग्य हूं वैसे ही बागडोर छोड़ दूंगा। उस समय आप लोग मुझ पर यह दोष न लगा सकेंगे कि मैं आपको गड़हे में डाल कर जा रहा हूं। यह आप समझ लीजिये और इसे स्वीकार कीजिये तभी मैं आपका सेनापतित्व ले सकता हूं।"

भयानक-चार एक स्वर से बोले, "हमें बिल्कुल मंजूर है और इसी क्षण से आप हमारे सेनापति हुए। अब आप इस बात को सोचिये कि युद्ध के लिये पहिले बहुत कुछ तैयारी करनी पड़ती है, अपनी सेना रसद और गोला बारूद के डिपो बनाने पड़ते हैं, और साधारण कार्य-संचालन का एक क्रम तैयार कर लेना पड़ता है। आप अब वही करिये और हम लोगों के सुपुर्द भिन्न भिन्न काम करके युद्ध का एक कार्यक्रम भी तैयार कर लीजिये।"

नगेन्द्रनरसिंह हंस पड़े पर फिर तुरन्त ही गम्भीर हो कर बोले, "सच तो यह है कि मैं आज कई दिनों से यही सोच रहा था कि यदि कभी युद्ध आरम्भ हो ही गया तो किस किस तरह से क्या क्या करना पड़ेगा और कैसी लड़ाई लड़नी होगी और मेरे दिमाग में एक नक्शा बन भी गया है। यदि आप चाहें तो मैं अभी अपना इरादा आप पर जाहिर कर सकता हूं।"

'भयानक-चार' की इच्छा जान नगेन्द्रनरसिंह उठ खड़े हुए और एक आलमारी खोल एक बड़ा सा नक्शा निकाल लाए। नक्शा दीवार पर एक तरफ टांग दिया और रोशनी कुछ तेज कर दी। नगेन्द्रनरसिंह अपना युद्ध का कार्यक्रम 'भयानक-चार' को समझाने लगे जो उनके आस पास आ खड़े हुए।

लगभग घंटे भर के इस काम में लग गया और उसके बाद सब लोग पुनः उस टेबुल पर लौट आए। नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "मैंने अपना विचार आप पर प्रगट कर दिया, अगर आप लोगों को यह स्वीकार हो तो इसके

अनुसार काम कल ही से शुरू कर दिया जा सकता है।'

सब बोल उठे, "हाँ यह हमें स्वीकार है और वर्तमान स्थिति में इससे अच्छा युद्ध-क्रम हो ही नहीं सकता। अब आप इसी समय हम लोगों के सुपुर्द काम कर दीजिये जिसमें कल ही से कार्रवाई जारी हो जाय।"

"बहुत अच्छा" कह कर नगेन्द्रनरसिंह ने कुछ देर के लिए आँखें वन्द कीं और तब पुनः कहना आरम्भ किया। इस समय उनकी आवाज पहिले से अधिक गंभीर हो गई थी और उसमें एक विचित्र मजबूती भी आ गई थी।

नगेन्द्र०। मेरी इच्छा है कि इस युद्ध में जहां तक कम खून खराबा हो उतना ही अच्छा है क्योंकि आखिर इसमें हमारे ही देश के अधिक मनुष्यों की जानें जायेंगी। युद्ध के दो बहुत बड़े अस्त्र हैं—अपने केन्द्र को मजबूत रखना और दुश्मन का नैतिक अधःपतन कर देना। इस युद्ध का केन्द्र यह किला ही रहेगा। इस समय यहां जो बेतार की तार का यन्त्र मौजूद है वह इस देश क्या आधो दुनिया की खबरें लेने और देने के योग्य है, 'मृत्यु-किरण' का यह उत्पत्ति-स्थान हो ठहरा, और स्वाभाविक रक्षा भी यहाँ खूब है। यहां से हमारी पीठ और दोनों बगल सुरक्षित हैं या रहेंगी। अगर हम नैपाल का प्रबन्ध रख सकें—और मुझे विश्वास है कि वह मैं रख सकूंगा——तो दुश्मन हमारे सिर्फ एक दिशा में रहेगा और उस पर हम बखूबी वार कर सकेंगे। पहाड़ी स्थान और चारो तरफ से ऊंचे पहाड़ों से घिरा होने से फौजें भो जल्दी और सफलतापूर्वक इस किले पर हमला नहीं कर सकतीं, अस्तु केन्द्र बनाने के लिये यही किला सब से उपयुक्त है।

"अब दूसरी बात रही दुश्मन का नैतिक अधःपतन। इसके लिये मैं यह सोचता हूं कि आपके एजेन्ट या आप लोग स्वयं ऐसा प्रबन्ध करें कि जहाँ जहां दुश्मन की फौज रहने के अड्डे अर्थात् कैन्टोनमेन्ट्स हैं वहां वहाँ आपके भी आदमी रहें जो उनको इस प्रकार सन्त्रस्त रखें कि वे न तो दूसरी जगह कहीं मदद को ही जा सकें और न अपना ही सिर उठा सकें

और जब ऐसा करने का प्रबन्ध पूरा हो जाय तो सरकारी केन्द्रों पर हमला शुरू कर दिया जाय।

"हमारे केशवजी ने मेरी राय से अपनी मृत्यु-किरण के बड़े ही सुन्दर फल-प्रद गोले बनाये हैं। यद्यपि वे साधारण बमों की तरह ही हैं परन्तु उनमें उनसे कहीं ज्यादा ताकत है और इसका परिचय आपको मिल भी चुका है। ये गोले जहां फूटें उसके दस बीस गज के भीतर कोई भी चीज रहने नहीं पाती, उसका अस्तित्व ही लोप हो जाता है। मैंने इम्तिहान के लिए सिर्फ थोड़े गोले बनवाए थे पर जाँच से वे बड़े ही अच्छे सिद्ध हुए अस्तु उनमें के बहुत से तैयार करके दल दल में बांट दिये जांय और वे ही युद्ध के हमारे मुख्य शस्त्र हों। अवश्य ही उनका उचित प्रयोग और अपने दल का उचित संचालन मेरी आज्ञानुसार एक दम ठीक और फौजी कड़ाई के साथ हो इसका प्रबन्ध आपको रखना होगा।

"आप लोग चारो आदमियों के सुपुर्द मैं चार काम कर देना चाहता हूं। नम्बर एक केशवजी का तो यहां रहना जरूरी ही है। नम्बर दो को मैं इस किले के चारो तरफ दो दो सौ मील का क्षेत्र सुपुर्द कर देना चाहता हूं। नम्बर तीन के सुपुर्द देश का उत्तरी समूचा भाग और नम्बर चार के जिम्मे सारा दक्षिणी भाग रहेगा। अपने मातहत अफसर आप लोग स्वयम् चुन लें। आपके कर्तव्य और मेरी आज्ञाएं किस प्रकार आपके पास पहुंचेंगी और कैसे उन्हें पालन करना होगा यह मैं कल आप लोगों को बताऊंगा, आज सिर्फ एक बात और कह के मैं यह बैठक समाप्त करना चाहता हूँ।

"सरकार के भेजे हुए जिस दल के नष्ट-भ्रष्ट होने का हाल आप लोग जान चुके हैं उसके सामानों में से दो चीजें बहुत काम की हमारे हाथ लगी हैं। एक तो एक वायुयान और दूसरा बेतार की तार लेने और भेजने का एक बहुत ही छोटा परन्तु बड़ा ही शक्तिशाली यन्त्र। ये दोनों ही चीजें मुझे प्रसिद्ध वैज्ञानिक पंडित गोपालशंकर की कृति मालूम होती हैं जो

दुनिया में अकेले आदमी हैं जिनसे मैं भी भय खाता हूं। उस वायुवान की विशेषता यह है कि उसके चलने में आवाज बिल्कुल नहीं होती—आप जानते ही हैं कि वायुयान का सब से भारी शत्रु उसकी भयानक आवाज है जो उसके आने की सूचना दूर से ही देती रहती है—और उस बेतार के यन्त्र की विशेषता यह है कि एक ही यन्त्र भेजने और लेने दोनों का काम करता है और एक हजार मील तक की शक्ति रखता हुआ भी इतना छोटा है कि उसे दो घोड़ों पर पूरे सामान सहित खुशी से लादा जा सकता है। एक तारीफ़ उसकी यह भी है कि उससे काम लेने के लिए बिजली के बड़े यन्त्रों की आवश्यकता नहीं है बल्कि मामूली कुछ बैटरियों से ही वह बहुत ठीक काम कर सकता है। वैसे वैसे और उसी माडल के बल्कि उससे भी छोटे और अधिक कार्य-क्षम यन्त्र तैयार करने के लिये केशवजी तैयार हैं और उनका कहना है कि एक महीने के बाद वे ये दोनों ही चीजें—वायुयान और बेतार का यन्त्र, अवश्य ही परिमित संख्या में—दे सकेंगे। इन दोनों चीजों की सहायता से हमें अपने युद्ध में कितनी सहायता मिल सकती है यह आप लोग खुद सोच सकते हैं।"

नगेन्द्रनरसिंह की इस बात ने 'भयानक-चार' को एक दम प्रसन्न कर दिया और वे लोग इन दोनों चीजों के बारे में तरह तरह के सवाल करने लगे। नगेन्द्रनरसिंह में और उन में लगभग एक घन्टे तक और भी बातें होती रहीं जिनमें बहुत कुछ तय हुआ और तब यह बैठक बर्खास्त हुई।

× × × ×

जिस समय ये लोग उस कमरे के बाहर हो रहे थे उसी समय मैले और फटे कपड़ों वाला लंबे कद का एक काला पहाड़ी उस कमरे की छत से उतर कर एक तरफ को जा रहा था। रात के तीन बज चुके थे और चारो तरफ की निस्तब्धतापूर्ण शान्ति और पिछली रात की सर्दी ने पहरेदारों की भी आंखें झपकानी शुरू कर दी थीं जिससे उस पहाड़ी को अपने ठिकाने पहुंच जाने में कुछ भी तरद्दुद न हुआ और वह बेरोक टोक अपनी

जगह पहुंच कर लेट गया। दो ही मिनट के बाद उसकी नाक इस तरह बजने लगी मानों वह कई रात का जगा हुआ हो।

(५)

दूसरे दिन सुबह ही से उस जमींदोज किले में कुछ विचित्र प्रकार की हलचल दिखाई पड़ने लगी। सिपाही और अफसर इधर उधर घूमने और मोरचे कायम करने लगे और इंजिनियर लोग चारो तरफ दूर दूर तक घूम घूम कर जहां जहां से इस किले पर हमला हो सकता था अथवा जहां जहां से इसको घेर रखने वाले जंगलों और मैदानों में आने का रास्ता बनाया जा सकता था उन जगहों को मजबूत करने की फिक्र करने लगे। यों तो वैसे ही यह स्थान बड़ा ही सुरक्षित था लेकिन उस पर भी जहाँ जहां कमजोरी की सम्भावना थी वहां मजबूती करने की पूरी चेष्टा होने लगी। किले के एक कोने में एक छोटा मैदान पेड़ पौधों से साफ किया जाने लगा और अन्दाज से मालूम पड़ा कि यह वायुयान के उतरने चढ़ने के लिये बनाया जा रहा है। उसी जगह एक तरफ ऊँचे पेड़ों की झुरमुट के अन्दर वह वायुयान भी खड़ा दिखाई पड़ने से यह सन्देह और भी पुष्ट होता था।

इन सब इन्तजामों और तरद्दुदों में पड़े हुए नगेन्द्रनरसिंह और भयानक चार का वह समूचा दिन दौड़ धूप में ही बीत गया और शाम को जब करीब करीब सभी बातों का सिलसिला दुरुस्त हो गया तो भयानक-चार में से तीन व्यक्ति तो नगेन्द्रनरसिंह से आखिरी हुक्म लेकर वहाँ से चले गये, और एक अर्थात् केशवजी अपने मशीन-रूम में चले गये। उस समय नगेन्द्रनरसिंह को इतनी मोहलत मिली कि अपने कमरे में जा कर थोड़ी देर विश्राम कर सकें। उसी समय उस पहाड़ी की भी याद आई और उन्होंने उसे तलब किया।

थोड़ी ही देर बाद वह पहाड़ी उनके सामने लाया गया। अब उसका बुखार छूट गया था और चोटों के दर्द में भी बहुत कुछ कमी हो गई थी

फिर भी वह बड़ा ही दुर्बल और घबड़ाया हुआ सा मालूम होता था। जो लोग उसे लाये थे उन्हीं की जुबानी मालूम हुआ कि वह अपने घर जाने के लिये घबड़ा रहा है बल्कि उठ उठ कर भागता है और बड़ी मुश्किल से घर पकड़ कर वे लोग उसे रोके हुए हैं। नगेन्द्र ने यह सुन सिर हिलाया और इशारे से सिपाहियों को वहाँ से चले जाने को कहा। जब निराला हो गया तो वे उस पहाड़ी से बातें करने लगे।

दो तीन दिन तक यहां रहने और सिपाहियों के लगातार उनसे कुछ न कुछ बातें करते ही रहने के कारण वह हिन्दी में कुछ कुछ बातें करने के लायक हो गया था, फिर भी वह इतना बड़ा उजड्ड और बेवकूफ था कि बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद ही उसकी कोई बात समझ में आती थी। जो कुछ टूटे फूटे शब्दों में और बड़ी खींचातानी के बाद नगेन्द्र-नरसिंह को मालूम हो सका उसका सारांश यही था कि "वह काठमान्डू से अपने देश को जा रहा था जब एक दिन एक औरत ने उसे वह चीठी और एक अशर्फी दे कर इस किले का पता बताया और कहा कि अगर यह चीठी वहाँ के अफसर को देकर इसका जवाब ला सको तो दो अशर्फी और इनाम में मिलेंगी। इन्हीं अशर्फियों की लालच में वह अपने देश जाना छोड़ जंगल पहाड़ छानता गिरता पड़ता वहां तक पहुँचा है। रास्ते में वह एक जगह गार में गिर कर बहुत चुटीला भी हो गया था बारे किसी तरह जीता जागता पहुंच गया। अगर वह चीठी यहां की ही हो तो उसका जवाब उसे मिले ताकि वह दो अशर्फी और पा जाय और अगर यहां की न हो तो वह चीठी ही वापस मिले।"

बड़ी माथापच्ची के बाद उस बेवकूफ की बातों से ऊपर कहा हुआ मतलब नगेन्द्रनरसिंह निकाल सके, मगर इससे उनका काम बखूबी बन गया। उन्होंने उसी समय उस चीठी के जवाब में एक चीठी लिखी और उसे लिफाफे में बन्द कर मुहर करने के बाद उस पहाड़ी को दे कर कहा, "यह उस चीठी का जवाब है, इसे उसी को दे देना जिसने तुम्हें यह चीठी

दी थी और यह लो इसका इनाम !" कह कर उन्होंने चार अशर्फी उस जंगली के हाथ पर रख दी।

चार अशर्फी पाते ही तो वह जंगली खुशी के मारे नाचने लग गया। अपनी विचित्र भाषा में न जाने क्या कहते हुए उसने नगेन्द्रनरसिंह को कई दर्जन सलाम बजा दिये और उनके पैरों की धूल माथे से लगाई। इसके बाद वह जाने को तैयार हुआ और शायद उसी समय रात के वक्त और रास्ते की भीषणता का कुछ भी खयाल न करके चल पड़ता मगर नगेन्द्रनरसिंह ने उसे समझाया कि रास्ता बहुत खतरनाक है और आज सिपाहियों का पहरा दूर दूर तक पड़ रहा है जो जरा भी शक होते ही उसे गोली मार देंगे, अस्तु वह सुबह अपनी मुहिम पर रवाना हो। नगेन्द्रनरसिंह की बात से वह देहाती खुश नहीं हुआ फिर भी उसने उनका कहा मान लिया। नगेन्द्र ने उसी समय एक सिपाही बुला कर उसके सुपुर्द उस जंगली को कर दिया और कह दिया कि कल खूब सबेरे ही इसे खुद साथ ले कर अपनी हद के बाहर कर देना और ख्याल रखना कि कोई इसके साथ रास्ते में छेड़ छाड़ न करे और न कोई आज रात को ही किसी तरह पर इसे तंग करे।

× × × ×

सुबह होने में अभी देर थी। नगेन्द्रनरसिंह अपने कमरे में पलंग पर सोए कोई सुन्दर स्वप्न देख रहे थे क्योंकि उनके होठों पर हंसी थी, कि यकायक किसी ने उन्हें जोर जोर से झोंके दे दे कर जगाना शुरू किया। वे चौंक कर उठे और आँखें मलते हुए बोले, "कौन है ? हैं, केशवजी ! आप इतनी सुबह सुबह यहां कहां ?"

केशवजी बोले, "उठिये उठिये, बड़ा गजब हो गया !! रात को कोई मेरे प्राइवेट आफिस में घुसा और बहुत से कागज-पत्र, मृत्यु-किरण सम्बन्धी मेरे आविष्कार के बहुत से नोट, उसके बनाने वाले यन्त्र का छोटा माडल और बहुत सी और चीजें निकाल ले गया !!"

नगेन्द्रनरसिंह केशवजी की बात सुन एक दम उछल पड़े और बोले,

"हैं, आपके आफिस में और चोरी ! उस जमींदोज और इतनी मजबूत तथा सुरक्षित जगह में चोरी !!" केशवजी बोले, "जी हां, वहीं चोरी ! किसी बड़े जिगरे वाले चोर का यह काम मालूम होता है !"

नगेन्द्रनरसिंह खिड़की खोल कर जोर से सीटी बजाते हुए बोले, "चोरी हुई किस तरह ? आपका मशीन-रूम जमीन से कई सौ फीट नीचे है, और वहां जाने के रास्तों में कई लोहे के दर्वाजे हैं जो सब भीतर से बन्द होते हैं, तब यह किसने किया ? क्या हमारे ही किसी आदमी का यह काम है ?"

केशव० । नहीं, वहाँ के हमारे सब आदमो तो अब तक बेहोश पड़े हुए हैं । चोर, चाहे वह कोई भी हो, बड़ा चालाक और जीवट का आदमी मालूम होता है । वह उस बड़े नलके (दूर की चीज देखने वाले चोंगे) की राह भीतर घुसा जो मैंने हाल ही में एक नया पेरिस्कोप बनाने के लिये खड़ा किया है । आपको मालूम ही होगा कि ट्यूब की सब से तंग जगह की मोटाई भी अढ़ाई फीट है । मैं गुमान करता हूं कि चोर उसी रास्ते सब चीजें लेकर निकल भी गया, साथ ही साथ कुछ ऐसी भी कार्रवाई कर गया जिससे वहां के सब आदमी और पहरेदार बेहोश भी हो गये ।

नगेन्द्रनरसिंह की सीटी के साथ ही किले भर में चारो तरफ पचासों आदमी दिखाई पड़ने लगे । कई सिपाही इस कमरे में भी आ गये जिन्हें देख नगेन्द्र ने कहा, "कोई आदमी केशवजी के कमरे में से कई जरूरी चीजें ले कर भागा है, चारो तरफ के पहरेदारों को खबर कर दो कि कोई भी आदमी किले के बाहर न जाने पावे, दूर पर भी अगर कोई आदमी जाता दिखाई पड़े तो उसे फौरन गिरफ्तार कर लो, और दस दस आदमियों की चार टुकड़ी चारो तरफ पता लगाने को भेजो कि वह चोर किधर गया ।"

देखते देखते लोग चारो तरफ फैल गये । नगेन्द्रनरसिंह ने केशवजी से कहा, "आप जा कर उस हवाई जहाज को ठीक करें जो गोपालशंकर के लश्कर में से पाया गया है । उसमें पूरा पेट्रोल भरवाइये और कुछ 'मृत्यु-

'किरण' के बम भी रखवा दीजिये, उस पर चढ़ कर हम लोग जल्दी ही चोर का पता लगा सकेंगे। वह अभी बहुत दूर नहीं गया होगा।"

केशवजी बोले, "उसमें सब सामान तैयार है, मैंने आज स्वयम् उसमें उड़ने का विचार किया था और इस लिये कल ही उसे सब तरह से जाँच कर दुरुस्त कर डाला था।" नगेन्द्रनरसिंह यह सुन उनका हाथ पकड़ कमरे के बाहर निकलते हुए बोले, "तब चलिये, अभी हम लोग उस पर उड़ चलें।"

दस मिनट में ये दोनों उस जगह पहुँच गये जहां वह वायुयान रक्खा गया था, मगर यह देख दोनों के ही पैर के नीचे की मिट्टी खसक गई कि वह वायुयान यहाँ नहीं है और उसके दोनों पहरेदार बेहोश पड़े हुए हैं! यह बात देख नगेन्द्रनरसिंह के सिर में चक्कर आ गया और वे अपना माथा थाम कर खड़े रह गये।

कुछ देर बाद यकायक उन्हें कुछ याद आया और वे उठ कर लपकते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ वह पहाड़ी आदमी रक्खा गया था। आस पास के लोगों से उन्होंने पूछा, "वह पहाड़ी कहाँ गया?" लोगों ने जवाब दिया, "हम लोग खुद ही बहुत देर से उसे ढूँढ़ रहे हैं कि आपके हुक्म के मुताबिक उसे किले के बाहर पहुँचा दें मगर उसका कहीं पता ही नहीं लग रहा। जिस बिछौने पर वह सोया था वह खाली पड़ा है, केवल यह चीठी उस जगह मिली।"

नगेन्द्रनरसिंह ने कांपते हाथों से वह लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढ़ी। यह लिखा हुआ था :—

"नगेन्द्रनरसिंह,

"जिसने पहिले एक बार तुम्हें परास्त किया था वही फिर तुम्हारी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ! होशियार हो जाओ और अपनी कुशल चाहते हो तो यह सब बखेड़ा छोड़ अपने देश को चले जाओ। अपने दोस्त उस 'भयानक-चार' को भी समझा दो कि सरकार के विरुद्ध हथियार उठाना हँसी खेल नहीं है। अब भी यदि वे सम्हल जायँ और फजूल का खून खराबा

न करें तो मैं वचन देता हूं कि उनका पिछला सब कसूर माफ कर दिया जायगा, नहीं तो वे कहीं के भी न रहेंगे और उनकी लाशों का भी पता न लगेगा। बस, खबरदार !!

तुम्हें होशियार करने वाला—

गो० शं०"

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह ने दांत पीसा और उसको केशवजी की तरफ बढ़ाते हुए गुस्से से भरे स्वर में कहा, "अफसोस, मेरा जानी दुश्मन और मेरे ही किले में आ कर अछूता निकल जाय ! खैर कोई हर्ज नहीं, समझ लूंगा ! वह बन का गीदड़ जायगा किधर !!"

इसी समय दौड़ते हुए दो आदमी उस जगह आ पहुँचे । नगेन्द्रनरसिंह और केशवजी ने पहिचाना कि ये उनके मातहत इन्जिनियर थे । इन्होंने घबड़ाहट भरे स्वर में कहा, 'मृत्यु-किरण' के बम बनाने के लिये जो नई मशीन बनाई गई थी उसे न जाने किसने इस तरह तोड़ दिया है कि वह बिल्कुल बेकार हो गई है और वह नया पाया गया हुआ बेतार की तार का यंत्र भी जिसकी नकल का एक दूसरा तैयार करने का हुक्म हुआ था टूटा फूटा पड़ा है !

नगेन्द्रनरसिंह ने केशवजी की तरफ देखा और केशवजी ने नगेन्द्रनरसिंह की तरफ ! दोनों के चेहरों पर निराशा की कालिमा दौड़ गई थी।

———

दांव-पेंच

(१)

अपने आलीशान बंगले की लेबोरेटरी में पंडित गोपालशंकर टेबुल के सामने खड़े हैं जिस पर किसी मशीन का एक छोटा सा माडल रक्खा हुआ है जिसके पचासों छोटे छोटे कल पुर्जे और पहिये बड़ी तेजी से घूम रहे हैं। मशीन के बाईं तरफ से दो काले रंग के डंडे ऊपर को उठे हुए हैं जिनके सिरों पर दो गोले हैं जो एक दूसरे से लगभग तीन इंच के फासले पर हैं। इन दोनों गोलों के बीच में बिजली की अविराम धारा बह रही है और रह रह कर चटचट पटपट शब्द के साथ बिजली की किरणें दोनों गोलों के बीच में चमक उठती हैं पर आश्चर्य की बात है कि इन किरणों का रंग लाल या सुफेद नहीं है बल्कि हरा है। गोपालशंकर बड़े गौर से इन डंडों पर झुके हुए बिजली की इन लपटों को देख रहे हैं और साथ ही साथ कुछ सोचते भी जा रहे हैं।

इसी समय उनके नौकर ने कमरे का दर्वाजा खटखटाया और उनकी आज्ञा पर भीतर आया। उसके हाथ में दो विजिटिंग कार्ड थे जिन्हें उसने पंडितजी के सामने बढ़ा दिया। बिना उन्हें हाथ लगाए ही गोपालशंकर ने

दूर से उन पर के नामों को पढ़ा। एक पर लिखा था—'मैकडोनल्ड स्लाई' और दूसरे पर लिखा था—'वाहिद अली खां।'

वाहिद अली खाँ इस प्रान्त के खूफिया विभाग के सब से बड़े अफसर थे और इधर के थोड़े ही दिनों में गोपालशंकर से इनकी गहरी जान पहिचान हो गई थी, मगर वे दूसरे महाशय इनसे बहुत बड़े और ऊँचे दर्जे के थे अर्थात् स्वयम् इस प्रान्त के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर ब्रूहम मैकडोनल्ड स्लाई फर्गूसन थे। जब ये गुप्त रूप से अकेले कहीं जाते थे और अपना सरकारीपन दूर रखना चाहते थे तो केवल 'मैकडोनल्ड' के नाम से अपना परिचय देते थे और इस बात को गोपालशंकर अच्छी तरह जानते थे।

यकायक छोटे लाट साहब के इस प्रकार आने ने गोपालशंकर को कुछ ताज्जुब में डाल दिया परन्तु उन्होंने नौकर से कहा, "कुरसियें यहाँ लाकर रक्खो।" नौकर 'जो हुक्म' कह चला गया और गोपालशंकर बाहर जाकर अपने सम्मानित मेहमान से मिले। आदर के साथ दोनों से हाथ मिलाने और मिजाजपुर्सी करने के बाद छोटे लाट और वाहिद अली खाँ को लिये हुए गोपालशंकर फिर अपनी लेबोरेटरी में चले आये। तीनों आदमी कुर्सियों पर बैठ गये और सभों में अंगरेजी में बातचीत होने लगी।

गोपाल०। (छोटे लाट से) आपके इस तरह आने से मैं बड़ा कृतज्ञ हुआ मगर साथ ही आश्चर्य कर रहा हूं कि आपके स्वयम् कष्ट करने की क्या जरूरत पड़ी। आपकी आज्ञा पाते ही मैं स्वयम् सेवा में उपस्थित हो जाता।

लाट साहब०। आपने नैपाल के सफर और वहाँ से वापस आने का कुछ हाल लिख कर जो खलीता भेजा था वह मुझे दिल्ली में मिला जहाँ इसी 'भयानक-चार' वाले मामले के सम्बन्ध में कुछ बात करने को बड़े लाट ने मुझे बुलाया था। उस खलीते में आपने उनकी 'मृत्यु-किरण' के बारे में जो हाल लिखा था उसे पढ़ मैं एक दम घबड़ा गया। अगर आपका कहना सही है तो दुनिया का सब से भयानक हथियार उन लोगों के कब्जे में आ गया

है जिसका मुकाबला हमारा वर्तमान विज्ञान किसी प्रकार भी नहीं कर सकता और जिसकी मदद से वे लोग जो चाहें कर सकते हैं। मैंने यह हाल बड़े लाट साहब को सुनाया जिसे सुन उन्हें भी बहुत अन्देशा हुआ और उन्होंने इसके बारे में पूरा हाल जानना चाहा। वे तो आपको बुलाने के लिये अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को भेजना चाहते थे पर फिर यह सोच कर रुक गये कि आपने अपने पत्र के अन्तिम अंश में लिखा था कि 'मैं उस मशीन का एक छोटा माडल और तत्सम्बन्धी अन्य कागजात भी लेता आया हूं जिनकी सहायता से मैं स्वयम् जाँच कर देखना चाहता हूँ कि 'मृत्यु-किरण' वास्तव में क्या बला है। वह मशीन अपनी लेबोरेटरी में मैं खड़ी कर रहा हूँ और उसकी अच्छी तरह जांच करने के बाद ही किसी से मिलने का समय पाऊँगा।' इन शब्दों ने उन्हें रोक दिया और उन्होंने मुझसे कहा कि बेहतर होगा कि आगरे जाने पर तुम पंडितजी से मिलो और सब बातों का ठीक ठीक हाल जान कर मुझे लिखो। यहाँ लौटने के बाद से ही मैं वह मशीन देखने को व्याकुल हो रहा था और आखिर कौतूहल ने यहां तक दबाया कि खाँ साहब को साथ लेकर मुझे खुद ही आज आना पड़ा।

गोपाल०। आपके आने से मैं बड़ा अनुगृहीत हुआ। अगर पहिले से पता लगता तो मैं आपकी अगवानी का उचित प्रबन्ध कर रखता और इस तरह बे-सरो-सामान आपकी......

छोटे लाट०। (हंस कर) पंडितजी! आप शायद यह बात भूल गये कि आप प्रान्त के छोटे लाट से बातें नहीं कर रहे हैं बल्कि 'मैकडोनल्ड स्लाई' से बातें कर रहे हैं जो आपकी अद्भुत प्रतिभा का हाल सुन आपसे मिलने आया है!

गोपालशंकर ने भी यह सुन हंस दिया और तब कहा, "अच्छी बात है, परन्तु इस समय हम दोनों ही का समय बड़ा बहुमूल्य है अस्तु मैं सीधा मतलब पर आ जाता हूं। यह देखिये इस टेबुल वाली मशीन को, यही वह माडल है जो मैं भयानक-चार के किले से लाया हूं। कितनी छोटी चीज

है और कोई खिलौना ही मालूम होती है मगर इसकी भयानक ताकत को देख कर मैं भी डर गया हूं। यह देखिये एसबेस्टस की यह एक रस्सी है। आप जानते ही होंगे कि एसबेस्टस तेज से तेज आंच में भी नहीं जलता, मगर 'मृत्यु-किरण' में पड़ते ही देखिये उसकी क्या दशा होती है।"

छत के साथ रबर और रेशम से बनी एक रस्सी टंगी हुई थी जो उन डंडों के ठीक ऊपर थी जिनमें से मृत्यु-किरण की भयानक लपटें निकल रही थीं। गोपालशंकर ने इस रस्सी से बांध कर वह एसबेस्टस की रस्सी इस तरह लटका दी कि वह ठीक उन दोनों गोलों के बीच में लटकने लगी। गोलों के बीच दौड़ती हुई हरी किरणों ने उसे लपेट लिया और दूसरे ही क्षण में वह एक मामूली रस्सी की तरह जल उठी, केवल उसमें से लपट किसी तरह की नहीं निकली। बात की बात में उसका उतना अंश जो मृत्यु-किरण में पड़ा जल कर राख हो गया।

सब लोग ताज्जुब करने लगे। गोपालशंकर ने कहा, "इन नीचे पड़ी राखों से पता लगेगा कि करीब करीब संसार की सभी चीजें इस किरण में पड़ कर भस्म हो जाती हैं। मैंने लोहा बालू अबरक आदि सभी पर इसका प्रयोग किया और सभी भस्म हो गये। न जाने इन किरणों में कितनी शक्ति है!"

लाट साहब ने कहा, "अगर ऐसा है तो सचमुच यह भयानक चीज है! अभी तक इतनी गर्म आँच मैंने कहीं देखी न थी जो एसबेस्टस या अबरक को भी जला दे पर इन मृत्यु-किरणों ने वह भी कर दिया। मगर यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि इन किरणों से युद्ध का काम कैसे लिया जा सकता है?"

गोपाल०। इस मशीन के साथ जो कागजात मैं लाया हूं उनसे मालूम होता है कि इन मशीनों के तीन भाग होते हैं, अभाग्यवश मैं सिर्फ पहिले भाग का ही माडल ला सका। यह अंश केवल मृत्यु-किरणों को पैदा करता है, दूसरी मशीन (जैसा कि कागजों से प्रगट होता है) उन्हें इकट्ठा कर के

किसी विशेष प्रकार के बरतनों में संग्रह करती है,श्रौर श्रौर तीसरी मशीन उन किरणों को इच्छानुसार जहां पर जिस परिमाण में चाहा जाय भेजती है। वही सब से भयानक है। उससे एक ही जगह बैठ कर सैकड़ों कोस की चीजें छार की जा सकती हैं।

लाट०। श्रौर श्रापका कहना है कि इन्हीं किरणों के उन लोगों ने बम भी बना डाले हैं ?

गोपाल०। जी हाँ, यह बात मैंने खास उन भयानक-चार के मुखिया के मुंह से सुनी है जिसका इरादा है कि वैसे वैसे कितने ही बम तैयार करके मुल्क के दूर दूर के हिस्सों में भेजे जायं श्रौर उनके खयाल से भी मेरा कलेजा दहल उठता है, क्योंकि दुनिया की कोई भी शक्ति उन्हें रोक नहीं सकती।

लाट०। (चौंक कर) वैसे वैसे बम मुल्क भर में सब तरफ भेजे जाने वाले हैं !! श्राप ठीक जानते हैं ?

गोपाल०। हां मैं बहुत श्रच्छी तरह जानता हूं।

लाट०। तब तो इस किले श्रौर इन यंत्रों का जहाँ तक जल्दी हो नामोनिशान मिटा देना चाहिये। देर होने से न जाने वे सब क्या कर गुजरें !

गोपाल०। (हँस कर) मगर क्या श्राप इसको मामूली बात समझते हैं ! श्रगर मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो इस समय उस किले के चारो तरफ सौ सौ कोस तक उनका एकछत्र साम्राज्य है जिसके श्रन्दर वे जो चाहें सो कर सकते हैं। एक परिन्दे की भी मजाल नहीं कि बिना उनकी मरजी के वहाँ पर भी मार सके। क्या श्राप भूल गये कि हमारा लश्कर किले से पचास साठ मील दूर था जब वह नाश कर दिया गया ! वहाँ उन लोगों ने जो यंत्र खड़े किये हैं वे इस माडल से सैकड़ों गुना बड़े श्रौर भयानक हैं श्रौर उनका मुकाबला दुनिया की कोई ताकत नहीं कर सकती, वे श्रगर चाहें तो पहाड़ों के टुकड़े उड़ा सकते हैं ?

लाट० । क्या हम आसमान से बम गिरा कर उस जगह को बर्बाद नहीं कर सकते ?

गोपाल० । हरगिज नहीं ! एक तो जिस जगह उन्होंने इन मशीनों को खड़ा किया है वह जमीन की सतह से पांच सौ फीट से भी अधिक नीचे है और आपके बड़े से बड़े बम भी उतना नीचे कुछ नुकसान पहुँचा नहीं सकते, दूसरे आपके किसी हवाई जहाज की भी यह ताब नहीं है कि उनके किले के ऊपर से बिना उनकी मर्जी के उड़ जा सके । मृत्यु-किरण की एक हलकी सी लपट हवाई जहाज को मय उड़ाकों के इस तरह जला देगी कि जमीन पर गिरने के लिए भी कुछ न बच जायगा !

लाट० । यह तो आप विचित्र बात कह रहे हैं । क्या आपका मतलब है कि ये थोड़े से शैतान इतने मजबूत हो गये हैं कि गवर्नमेन्ट उनका कुछ बिगाड़ ही नहीं सकती ?

लाट साहब के चेहरे पर व्याकुलता और क्रोध के साथ अविश्वास भी झलक मार रहा था जिससे उनके दिल के भाव का पता लगता था। वास्तव में यह अनुमान करना भी कि थोड़े से आदमियों का एक दल अपने सामने सरकार की पूरी ताकत को बेकार कर देगा असंभव मालूम होता था पर चतुर और दूरदर्शी वैज्ञानिक गोपालशंकर 'मृत्यु-किरणों' की शक्ति जान गये थे और समझ गये थे कि उसका मुकाबला करना हंसी खेल नहीं है, अस्तु लाट साहब की बात के जवाब में उन्होंने शान्ति और गम्भीरता के साथ सिर्फ इतना ही कहा, "बेशक ! आपकी सरकार का सेना-बल उन्हें पराजित नहीं कर सकता !!"

(२)

कुछ देर तक सन्नाटा रहा । लाट साहब की सूरत से जान पड़ता था कि वे समझ नहीं पा रहे थे कि गोपालशंकर को पागल समझें या अपने को ! आखिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "तब क्या किसी तरह भी वे दुष्ट हराए नहीं जा सकते ?"

गोपालशंकर चुप रहे। मालूम पड़ता था मानों वे कोई बड़ी ही गंभीर बात सोच रहे हैं। लाट साहब इस तरह उनका मुंह देख रहे थे जैसे कोई रोगी वैद्य का मुंह देखता हो। अन्त में कुछ देर बाद गोपालशंकर ने कहा, "विज्ञान का जवाब विज्ञान ही दे सकता है। मृत्यु-किरण को मृत्यु-किरण ही दबा सकती है। अगर आप लोग कोशिश करके इसी माडल के आधार पर मृत्यु-किरण पैदा करने वाले कुछ बहुत ही बड़े और शक्तिशाली यंत्र बना सकें तो सम्भव है कि वे दुष्ट बस में किये जा सकें। जब तक ये यन्त्र बन न जांय तब तक इन लोगों की कार्रवाई को रोकना (खां साहब की तरफ देख कर) आपके जासूस विभाग का काम होना चाहिये और उतने समय तक इस बात का खयाल करना कि उस किले में नया सामान मशीन या रसद अथवा सिपाही न पहुँच सकें यह आपकी फौज का काम होना चाहिये जो उस किले की मृत्यु-किरणों को मार के बाहर बाहर रहती हुई ऐसा घेरा डाले रहे कि किले में न तो कोई जा सके और न कोई वहां से आ सके। इस काम में आपके हवाई जहाज भी बहुत मदद दे सकते हैं।"

लाट०। हाँ यह तो आपका कहना ठीक है मगर आपने खुद ही कहा है कि मृत्यु-किरणों से काम लेने के लिये तीन प्रकार के यन्त्र चाहियें जिनमें से केवल एक ही का माडल आपके पास है। तब बाकी दोनों मशीनों के बने बिना कैसे काम चल सकता है?

गोपाल०। उन्हें यदि सम्भव हो तो उन कागजों की मदद से बनाना पड़ेगा जिन्हें मैं किले से ले आया हूं।

लाट०। उसमें क्या पूरा हाल दिया है?

गोपाल०। मैंने अभी सभों को पढ़ा तो नहीं मगर सरसरी निगाह से देखा जरूर था जिससे उम्मीद होती है कि उनकी मदद से बाकी दोनों मशीनें शायद बन सकें तथापि मैं मेकैनिक या इञ्जीनियर नहीं हूं और इस विषय में सब से पक्की राय आपके इञ्जीनियर लोग ही दे सकेंगे।

लाट०। ठीक है, अच्छा तो मेरी यह राय है कि कल किसी समय

आप मेरे यहां आने का कष्ट करें। मैं और मेरे सेक्रेटरी तो मौजूद रहे-हींगे इसके इलावा खां साहब, कैप्टेन रूबी, मि० टेम्पेस्ट और गवर्नमेन्ट इञ्जीनियर भी रहेंगे। आप यह माडल और वे कागजात लेते आवें और वहीं सब कुछ अच्छी तरह तय कर लिया जाय। अगर आपकी राय हो तो मैं गवर्नमेन्ट आर्म्स फैक्टरी के सुपरिंटेंडेंट को भी बुला लूंगा।

गोपाल०। अच्छी बात है, मैं आने को तैयार हूं। आप वक्त ठीक कर के मुझे इत्तिला दें।

लाट०। रात को रखिये।

गोपाल०। अच्छी बात है। तो आप दोपहर को किसी को भेज दें जो यह माडल और अन्य कागजात ले जावे क्योंकि वहां मौजूद सभी आदमी इन चीजों को पहिले से ही देख लें तो उत्तम होगा।

लाट साहब०। हां यह ठीक है। (पीछे घूम कर) खां साहब, आप कल इन चीजों को पंडितजी के यहां से मेरी कोठी पर भेजने का प्रबन्ध कीजियेगा।

खां साहब ने —"जो हुक्म !!" कहा और मुलाकात खतम हुई। छोटे लाट और वाहिद अली खाँ को गोपालशंकर बँगले के फाटक तक छोड़ आए और जब उनकी मोटर चली गई तो कुछ सोचते हुए पुनः अपनी लेबोरेटरी को लौट गये।

(३)

दोपहर का समय है। पं० गोपालशंकर ने आज सुबह ही से अपनी लेबोरेटरी में किसी वैज्ञानिक प्रयोग में व्यस्त रहने के कारण देर से भोजन किया है और अभी अभी आ कर आराम-कुर्सी पर बैठे हैं। सामने के टेबुल पर कई अखबार पड़े हैं जिनमें से एक उनके हाथ में है।

समाचारों के शीर्षकों पर सरसरी निगाह डालते हुए एक जगह आकर अचानक गोपालशंकर रुक गये। समाचार यह था:—

"सिकन्दराबाद छावनी में धड़ाका !

मेगजीन में आग !

पचासों सिपाहियों की मौत ! कारण अज्ञात !!

दक्षिण हैदराबाद शहर के पास की सिकन्दराबाद की छावनी में कल यकायक एक धड़ाका होने से भयानक आग लग गई जिससे छावनी तथा मेगजीन का बहुत बड़ा अंश उड़ गया और बहुत से सिपाही भी साथ साथ ही उड़ गये। घायलों की संख्या कई सौ बताई जाती है। धड़ाके का कारण अज्ञात है।"

गोपालशंकर ने इस समाचार को पढ़ा और तब अखबार हाथ से रख कर कुछ सोचने लगे। कुछ देर बाद उनके मुँह से निकला, "मालूम होता है रक्त-मंडल की कार्रवाई शुरू हो गई। यह उन्हीं के आदमियों की कर-तूत मालूम होती है। मृत्यु-किरण के बमों की बदौलत ऐसी आग तो कहीं भी बात की बात में लगाई जा सकती है। अगर इन दुष्टों को अभी ही नहीं रोका गया तो थोड़े दिन बाद तो ये सब न जाने क्या कर डालेंगे।"

इस समय टेबुल पर रक्खे टेलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। गोपालशंकर कुर्सी से आगे झुके और चोंगा कान से लगा सुनने लगे। किसी ने पूछा, "क्या आप पंडित गोपालशंकर साहेब हैं ?" गोपालशंकर ने कहा, "हाँ, आप कौन हैं ?" जवाब मिला, "मैं हूं—वाहिद अली खाँ। आज शाम की मीटिंग के लिये आप तैयार हैं तो !" गोपालशंकर ने कहा, "क्यों क्या कोई गड़बड़ी है !" जवाब आया, "नहीं कुछ नहीं, मैंने इस-लिये दरियाफ्त किया कि क्या उस मशीन और कागजों के लिये मैं अपने आदमी भेजूं ?" गोपालशंकर ने कहा, "जी हां, भेजिये, मगर आदमी विश्वासी हों। वे चीजें अगर हाथ से निकल गईं तो दुश्मनों का मुकाबला करना और भी मुश्किल हो जायगा।" तार पर जवाब आया, "इस बात को मैं बखूबी समझता हूं। वे लोग मेरे खास आदमी होंगे। आप तैयारी करिये, वे लोग कुछ ही देर में पहुंच जायंगे।"

आवाज बन्द हो गई, गोपालशंकर ने चोंगा टाँग दिया। जरा देर वे कुछ सोचते रहे, इसके बाद उठे और अपनी लेबेरेटरी में चले गये जहां उन्होंने मृत्यु-किरण का माडल और उसके सम्बन्धी सब कागजात तथा अपने कुछ नोट्स भी काठ के एक मजबूत बक्स में बन्द कर दिये, इसके बाद लेबोरेटरी के बाहर निकले, मगर तभी कुछ और बात उनके खयाल में आई जिससे वे पुनः अन्दर चले गये और दरवाजा भीतर से बन्द कर कुछ करने लगे। लगभग आधे घंटे के बाद वे बाहर आए और अपने बैठक वाले कमरे में जा कर कुछ लिखने लगे।

इसी समय बाहर बरसाती में मोटर की आवाज सुनाई पड़ी और नौकर ने आ कर कहा, "दो आदमी आए हैं जो अपने को खाँ बहादुर वाहिदअली खां साहब के आदमी बताते हैं, उनके साथ चार कांस्टेबल भी हैं, यह चीठी लाये हैं और कहते हैं कि जो चीज लाट साहब के यहां जायगी वह उन्हें दे दी जाय।"

गोपालशंकर ने वह चीठी खोल कर पढ़ी, सिर्फ इतना ही लिखा था, "आदमी भेजता हूं, माडल और कागज भेज दीजिये -- वाहिद अली खां।" उन्होंने अपने नौकर से कहा, "उन दोनों आदमियों को यहाँ बुला लाओ।"

थोड़ी ही देर में दो आदमियों ने उस कमरे में पैर रक्खा जिन्होंने गोपालशंकर को अदब से सलाम किया और खड़े हो गये। गोपालशंकर ने पूछा, "तुम लोगों को खाँ साहेब ने भेजा है?" उन्होंने कहा, "जी हां।" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "जो चीज लेने आए हो कुछ मालूम है वह क्या चीज है?" एक ने जवाब दिया, "जी यह तो नहीं मालूम मगर सुना है कि कोई बड़ी ही कीमती चीज है, इसी लिये हिफाजत के खयाल से कांस्टेबल भी साथ कर दिये गये हैं।" गोपालशंकर ने पूछा, "उसे ले कर कहाँ जाओगे? खां साहब के घर न?" उन्होंने कहा, "जी हां।"

जवाब सुन कर गोपालशंकर ने एक तेज निगाह उन पर डाली मगर तुरत ही हटा ली और तब बोले, "अच्छा तुम लोग बाहर चलो मैं वह

चीज भेजता हूं, मगर देखना बहुत ही होशियारी से ले जाना, क्योंकि बड़ी ही कीमती चीज है। अगर खो गई तो तुम लोग बड़ी आफत में पड़ जाओगे।" "जी नहीं, आप बिल्कुल बेखतर रहें, उस चीज पर जरा भी आँच न आवेगी।" कहते हुए वे दोनों सलाम कर बाहर चले गये।

उनके जाने बाद गोपालशंकर ने अपने विश्वासी नौकर मुरारी को बुलाया और उसे ताली दे कर कहा, "लेबोरेटरी में बड़े टेबुल पर जो लाल रंग का बक्स रक्खा हुआ है वह लाकर इन लोगों को दे दो, यह चीठी जो मैं लिख रहा हूं इसे भी ले जा कर उन्हें ही दे देना।" मुरारी चला गया और थोड़ी देर में लौटा, इस बीच गोपालशंकर ने चीठी खतम कर ली थी जिसे एक सादे लिफाफे में बन्द कर मुहर लगा दी और दे कर कहा, "यह चीठी भी दे देना और कह देना कि जिसने तुम्हें भेजा है उसे दे दें।" नौकर जाने लगा तो वे बोले, "चीठी और बक्स दे कर तुम फिर मेरे पास आओ।"

थोड़ी देर बाद मोटर की आवाज आई और उसी समय उनका नौकर भी वहाँ लौट आया। गोपालशंकर ने उससे पूछा, "वे लोग गये?" उसने जवाब दिया, "जी हां।" गोपालशंकर ने उसे इशारे से नजदीक बुलाया और कान में कहा, "तुम अपनी शकल कुछ बदल लो और मोटर साइकिल पर चढ़ कर उनका पीछा करो, देखो वे लोग कहाँ जाते हैं मगर काफी पीछे पीछे रहना ताकि उन्हें पता न लगे।" मुरारी "जो हुक्म" कह चला गया और कुछ ही देर बाद रवाना हो गया।

इन लोगों को गये मुश्किल से पन्द्रह मिनट गुजरे होंगे कि बाहर पुनः किसी मोटर की आवाज आई। मोटर बरसाती में रुकी और उस पर से कई आदमी उतर कर बरामदे में आये। गोपालशंकर के कान में वाहिद-अली खाँ के बोलने की आवाज आई जिसे सुन इसके पहिले कि नौकर उनके आने की इत्तिला करे ये स्वयम् ही बाहर निकल आये। वाहिदअली खाँ और शहर के कोतवाल कई सिपाहियों के साथ खड़े हुए थे। मामूली

साहब सलामत के बाद वाहिदअ्रली खाँ ने कहा, "मैंने सोचा कि ग्रादमियों के जरिये वे चीजें मंगाने में शायद कोई खतरा हो जाय इससे मैं खुद ही वह माडल लेने ग्रा गया।" गोपालशंकर ने यह सुन ताज्जुब से कहा, "हैं! क्या ग्राप वह माडल लेने ग्राये हैं?"

वाहिद०। जी हाँ, मगर क्यों, ग्रापको ताज्जुब किस लिये हुग्रा?

गोपाल०। इस लिये कि ग्रभी थोड़ी ही देर हुई ग्रापके ग्रादमी ग्राकर मुझसे वे सब चीजें ले गये।

वाहिदग्रली यह सुनते ही चौंक कर उछल पड़े ग्रौर बोले, "पंडितजी! यह ग्राप क्या कह रहे हैं, मैंने तो किसी को नहीं भेजा!!"

गोपाल०। यह ग्राप बड़े ताज्जुब की बात कह रहे हैं। ग्रभी ग्राधा घंटा भी नहीं हुग्रा कि ग्रापकी चीठी लेकर कुछ पुलिस काँस्टेबलों के साथ दो ग्रादमी ग्राये ग्रौर सब चीजें ले गये।

वाहिदग्रली का चेहरा उड़ गया ग्रौर वे कांपती ग्रावाज से बोले, "नहीं नहीं, मैंने तो कोई खत नहीं भेजा, मालूम होता है ग्रापको धोखा हुग्रा।"

वाहिदग्रली की घबराहट देख कर गोपालशंकर के चेहरे पर मुस्कुराहट ग्रा गई। वे कुछ हँस कर बोले, "मुझे तो शायद धोखा नहीं हुग्रा मगर ग्राप ग्रपनी चीठी पहिले देख लीजिये।" कह कर उन्होंने उन सभों को बैठाया ग्रौर कमरे से जा कर वह खत ले ग्राये जो उन दोनों ग्रादमियों ने उन्हें दिया था। लिफाफे में से चीठी निकाल कर वाहिदग्रली खाँ के हाथ में दी ग्रौर कहा, "लीजिये देखिये ग्रापही की लिखावट ग्रौर ग्राप ही का दस्तखत है या नहीं!"

चीठी का मजमून पढ़ कर वाहिदग्रली के माथे पर पसीना ग्रा गया। उन्होंने कांपती ग्रावाज में कहा, "हरूफ तो हूबहू मेरे ही जैसे हैं ग्रौर दस्तखत भी ठीक वैसा ही है जैसा मैं करता हूं, मगर मैं कसम खा कर कह सकता हूं पंडितजी कि वह चीठी मेरी लिखी कभी नहीं है! ग्रफसोस,

दुश्मन बड़ी चालाकी खेल गये !!"

वाहिदअली खां ने सिर झुका लिया और लम्बी लम्बी सांसें लेने लगे। गोपालशंकर ने यह देख कहा, "खां साहब, अगर आपकी यह चीठी पाकर मैंने चीजें उन लोगों के हवाले कर दीं तो बताइये मेरी क्या गलती है ?"

वाहिदअली बोले, "जी बेशक आपकी कोई गलती नहीं है, मगर मैं गरीब बेमौत मारा गया, लाट साहब के कान में जब बात पहुँचेगी तो मेरे बारे में वे क्या सोचेंगे ! मालूम नहीं मेरी नौकरी भी रहेगी या जायगी !!"

वाहिदअली खां माथे पर हाथ रख कर बैठ गये और उनके साथी भी अफसोस करते हुए उन्हें घेर कर खड़े हो गये। कमरे में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया।

थोड़ी देर बाद गोपालशंकर ने कहा, "खां साहब ! अब आपको मालूम हो गया होगा कि आपके दुश्मन कितने निडर साहसी और भयानक आदमी हैं और उनकी पहुँच कहां तक है !।"

(४)

आगरे के बाहर शहर से लगभग दो कोस निकल जाने बाद आम की एक घनी बारी मिलती है जो कई बिगहे में फैली हुई और जिसके एक तरफ तो सड़क है और दूसरी तरफ सांप की तरह बल खाती हुई जाने वाली जमुना बह रही हैं। यह बारी इतनी घनी और गुंजान है कि इस दोपहर के समय भी इसमें धूप का नाम निशान नहीं है और यहां बहुत ही ठंढा और निर्जन है। कई जगहें तो ऐसी भी हैं जहां छोटी मोटी झाड़ियों ने घेर कर कुंज सा बना रक्खा है जिसमें बहुत से आदमी इस प्रकार छिप कर बैठ सकते हैं कि किसी को जरा भी पता नहीं लग सकता।

इसी तरह के एक कुंज में हम एक नौजवान को टहलते हुए देख रहे हैं। नौजवान की उम्र लगभग तीस वर्ष के होगी। गोरा रंग, लांबा कद, चौड़ा माथा, सीधी नाक और मजबूत कलाइयाँ उसे किसी ऊँचे खानदान का होनहार बता रही हैं। उसके माथे पर हलके रंग का साफा है और

पौशाक उस तरह की है जैसी ऊंचे दर्जे के अंगरेज फौजी अफसर पहिनते हैं। पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल कर हम बता देते हैं कि ये उनके पूर्व-परिचित और 'भयानक-चार' के मुखिया राणा नगेन्द्रनरसिंह हैं।

नगेन्द्रनरसिंह घबड़ाहट के साथ इधर से उधर टहल रहे हैं। उनके चेहरे से परेशानी और बेचैनी जाहिर हो रही है और बार बार उनके अपनी कलाई घड़ी देखने से यह भी प्रगट होता है कि वे किसी जल्दी में हैं। उनके मन में तरह तरह की बातें घूम रही हैं जिनका पता उन टूटे फूटे शब्दों से बखूबी लगता है जो कभी कभी अनजाने में उनके मुँह से निकल पड़ते हैं—"अफसोस...कम्बख्त गोपालशंकर...सब चौपट कर गया... देख कर मृत्यु-किरण का भेद....सरकार पर अगर प्रगट हो गया... वैसी ही मशीनें बना कर मुकावला किया तो हम लोग...कम्बख्त माडल तो ले ही गया साथ में प्लैन्स भी लेता गया...बम बनाने की मशीन टूटने से बड़ा नुकसान हुआ...अगर वे चीजें वापस न मिलीं तो हम लोगों की सब आशाएँ नष्ट हो जांयगी...न जाने ये लोग अभी तक क्यों नहीं आए !!"

नगेन्द्रनरसिंह ने पुनः घड़ी देखी और झाड़ी के बाहर निकल कर उस तरफ देखने लगे जिधर से इस बारी के एक कोने को छूती हुई सड़क निकल गई थी। अचानक उनके कानों में तेजी के साथ आती हुई एक मोटर का शब्द पड़ा जिसे सुनते ही वे चैतन्य हो गये और गौर से देखने लगे। कुछ ही देर बाद लाल रंग की एक बड़ी सी मोटर उन्हें दिखाई पड़ी जो बेतहाशा तेजी से चली आ रही थी। मोटर देखते ही नगेन्द्रनरसिंह के चेहरे पर आशा की झलक दिखाई पड़ी और वे सड़क की तरफ बढ़े।

मोटर यकायक रुक गई। दो आदमी उसमें से उतरे और एक बक्स उठाए हुए इस आम की बारी में घुसे। नगेन्द्रनरसिंह के चेहरे पर यह देखते ही खुशी की झलक दौड़ गई। उन्होंने जेब से सीटी निकाली और किसी खास ढंग के इशारे के साथ धीरे से बजाई। सुनते ही वे लोग इनकी तरफ घूमे और बात की बात में पास पहुंच गये। नगेन्द्रनरसिंह को देख

कर दोनों ने सलाम किया और बक्स जमीन पर रख दिया। नगेन्द्र ने पूछा, "क्या वह चीज मिल गई ?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हाँ, इसी बक्स में है। नगेन्द्रनरसिंह ने खुश हो कर कहा, "एक आदमी कोई औजार लगा इसे खोले और दूसरा जा कर ड्राइवर से कहे कि मोटर को बारी के भीतर ले आवे। इसके बाद सब कोई मिल कर उसका रंग बदल डालो।"

एक आदमी हथौड़ी और रुखानी लेकर बक्स खोलने लगा तथा दूसरे ने जाकर मोटर को बारी के अन्दर ले आने को कहा। जब वह आ गई तो कई आदमी मिल कर रंग के डब्बे और कूँचिएँ ले ले कर उसके लाल रंग पर खाकी रंग चढ़ाने लगे। काम इतनी फुर्ती फुर्ती हुआ कि लगभग पन्द्रह ही मिनट में समूची मोटर का लाल रंग बदल के खाकी रंग हो गया। अब कोई भी आदमी इसे देख कर नहीं कह सकता था कि यह वही मोटर है जो आध घंटे पहिले पंडित गोपालशंकर के बंगले की बरसाती में खड़ी थी।

हथौड़ी और रुखानी की मदद से इधर वह बक्स शीघ्र ही खोल डाला गया। उतावली के मारे नगेन्द्रनरसिंह ने खुद ही वे सब रद्दी कागज आदि हटाने शुरू कर दिये जिनसे उसका ऊपरी हिस्सा भरा हुआ था। जब वह सब हट गया तो भीतर साफ कपड़े में लपेटी कोई चीज रक्खी दिखाई पड़ी। दोनों ने मिल कर उसे बाहर निकाला और जल्दी जल्दी कपड़ा हटाया, मगर यह क्या? मृत्यु-किरण पैदा करने वाले यंत्र की जगह यह क्या चीज निकल पड़ी?

लगभग हाथ भर के लम्बा और इससे कुछ कम ऊँचा सफेद मिट्टी का बना हुआ एक सुन्दर गधा उस कपड़े में बंधा हुआ था!

देख कर नगेन्द्रनरसिंह की आंखों में खून उतर आया। उन्होंने कड़ी निगाह से उस आदमी की तरफ देखा और कहा, "यही चीज लाने तुम गये थे !!"

आदमी कांप गया और डरती आवाज में बोला, "हुजूर, यही बक्स

पंडित गोपालशंकर ने मुझे दिया !! मुझे कुछ नहीं मालूम कि इसके भीतर क्या चीज है, मैं तो यही समझता था कि वह माडल ही लिये आ रहा हूं! मेरा कोई कसूर नहीं है। (जेब से एक चीठी निकाल कर) यह चीठी भी उन्होंने दी और कहा था कि जिसने तुम्हें भेजा है उसी को दे देना, शायद इसके पढ़ने से कुछ मालूम हो !!"

गुस्से से कांपते हुए नगेन्द्रनरसिंह ने वह लिफाफा ले लिया। लिफाफे पर किसी का नाम या पता लिखा हुआ न था मगर जोड़ पर मुहर जरूर की हुई थी। बेचैनी के साथ नगेन्द्रनरसिंह ने लिफाफा फाड़ डाला। भीतर से एक कागज निकला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह पढ़ने लगे—

"जो लोग देश को विद्रोह और विप्लव के गढ़े में ढकेल देना चाहते हैं और यह नहीं सोच पाते कि ऐसा करने का आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक फल क्या होगा उनकी बुद्धि को सहायता देने के लिये मैं यह उपहार भेज रहा हूं— गो० शं०।"

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह का चेहरा लाल हो गया। उन्होंने इस जोर की एक लात उस गधे को मारी कि वह चूर चूर हो गया। चीठी को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और गुस्से से दांव पेंच खाते हुए मोटर की तरफ बढ़े। डर से कांपता हुआ वह आदमी भी उनके पीछे पीछे चला। थोड़ी ही देर बाद वह खाकी मोटर एक तरफ को तेजी से रवाना हो गई।

× × × ×

न जाने कब से एक आदमी पेड़ों की आड़ में छिपा हुआ यह सब दृश्य देख रहा था। उन लोगों के जाते ही वह भी उस आम की बारी के बाहर हुआ। बारी से दूर सड़क के किनारे ही एक ढोंके की आड़ में एक मोटर साइकिल रक्खी हुई थी जिसे उसने उठा लिया और सड़क पर ला सवार हो तेजी से शहर की तरफ रवाना हो गया। बताना नहीं होगा कि यह गोपालशंकर का विश्वासी नौकर मुरारी था जिसे उन्होंने उस मोटर का

पीछा करने को भेजा था—मगर यह मोटर साइकिल कैसी है ! इसके इंजिन में कोई आवाज क्यों नहीं है !!

(५)

यकायक गोपालशंकर हंस पड़े, वाहिदअली की बेचैनी और घबराहट देख उन्हें दया आ गई, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "खाँ साहब ! आप इतना बेचैन न होइये । आपकी चीज गई नहीं है, सुरक्षित है !!"

खाँ साहब पर से मानो मनों बोझ उतर गया, वे खुश होकर बोले, "हाँ सचमुच ? क्या वह माडल और वे कागजात आपके पास अभी तक मौजूद हैं ?"

गोपालशंकर ने कहा, "जी हाँ, मुझे उन आदमियों की बातों से कुछ शक हो गया जिससे मैंने असल चीजें उन लोगों के हवाले न करके कुछ दूसरी ही चीजें दे दीं जिन्हें जब वे लोग देखेंगे तो जरूर खुश होंगे ।"

वाहिदअली खाँ के चेहरे से अफसोस और रंज एक दम दूर हो गया । वे खुशी खुशी बोले, "वाह पंडितजी, आपने तो कमाल किया ! बेशक आपकी जो तारीफ मैं सुनता था बिल्कुल वाजिब थी । अगर आपने उन शैतानों के फेर में पड़ कर वे चीजें दे दी होतीं तो गजब हो जाता !"

गोपालशंकर बोले, "ईश्वर की कृपा थी कि मुझे समय पर बात सूझ गई नहीं तो जरूर मुश्किल हो जाती, खैर अब आप उन चीजों को ले जाकर लाट साहब तक पहुंचाइये, मैं भी ठीक समय पर आ जाऊँगा ।"

गोपालशंकर उठ कर लेबोरेटरी में गये और थोड़ी ही देर में काठ का एक बक्स लिये हुए वापस आये । ढकना खोल कर उन्होंने खाँ साहब को उसके भीतर रक्खा हुआ वह यंत्र और साथ के कागज-पत्र दिखला दिये और कहा, "लीजिये यह अपनी धरोहर सम्हालिये, अब अगर ये हाथ से गुम हुई तो आप जिम्मेदार होंगे ।"

वाहिदअली बोले, "आप खातिर जमा रखिये, अब ये चीजें कहीं जा नहीं सकतीं ।"

वह बक्स मोटर पर रख दिया गया और सब लोग गोपालशंकर से विदा हुए। उसी समय मुरारी भी मोटर साइकिल पर आ मौजूद हुआ। आँख के इशारे से गोपालशंकर ने उसे अन्दर कमरे में जाने को कहा और जब इन लोगों की मोटर रवाना हो गई तो खुद भी भीतर चले गये। मुरारी ने सब हाल खुलासा कह सुनाया। जो हुलिया उसने बताया उससे गोपालशंकर समझ गये कि स्वयम् राणा नगेन्द्रनरसिंह ही इस माडल को वापस लेने आये हैं। इससे उन्हें कुछ चिन्ता भी हुई क्योंकि मन ही मन वे नगेन्द्रनरसिंह की चालाकी होशियारी और हिम्मत का लोहा मानते थे, पर जब सन्दूक के अन्दर से गधा पाने पर उभड़ने वाले उनके गुस्से का हाल सुना तो वे खिलखिला कर हँस पड़े। मुरारी से उन्होंने और भी कई सवाल किये और तब उसे विदा किया। घड़ी की तरफ देखा तो तीन नहीं बजा था। छोटे लाट साहब के यहां जाने में अभी देर थी। वे पुनः अपनी लेबोरेटरी में चले गये और दरवाजा बन्द कर कुछ करने लगे।

कपास का फूल

(१)

आगरे शहर के उस बाहरी हिस्से में जिधर सरकारी अफसरों के बंगले हैं तथा वह आलीशान इमारत भी है जिसमें इस प्रान्त के छोटे लाट यहां आने पर ठहरते हैं, एक बड़ी मोटर तेजी से जा रही है।

इस मोटर में पीछे की तरफ शहर के कोतवाल और डिप्टी पुलिस सुपरिंटेंडेंट कमाल हुसैन तथा उनके बगल में प्रान्त के खूफिया विभाग के सब से बड़े अफसर वाहिदअली खां बैठे हैं, और आगे की तरफ ड्राइवर के इलावे दो हथियारबन्द पुलिस के सिपाही हैं। वाहिदअली खां और कमाल-हुसैन के बीच में लकड़ी का एक मजबूत बक्स रक्खा हुआ है जिस पर वाहिदअली खां एक हाथ इस तरह पर रक्खे हुए हैं मानों वह कोई बड़ी ही कीमती चीज है। मोटर तेजी से लाट साहब की कोठी की तरफ जा रही है जो यहाँ से बहुत दूर नहीं है।

इनकी मोटर के आगे आगे खाकी रंग की एक दूसरी मोटर जा रही है जिसमें कई आदमी बैठे हुए हैं। रंग ढंग और पौशाक से ये लोग फौजी अफसर मालूम होते हैं मगर किसी तरह के हथियार जाहिरा इनके पास

दिखाई नहीं पड़ते । पीछे की तरफ वाली सीट पर बैठे एक नौजवान के हाथ में बहुत ही छोटी एक दूरबीन है जिससे वह पीठ वाली खिड़की की राह पीछे का हाल देखता हुआ जा रहा है । यकायक उसने अपने साथी को इशारा करके कहा, "देखो तो क्या यही वाहिदअली की मोटर है!" उसने पीछे देखा और तब कहा, "जी हाँ, यही है ।"

ड्राइवर को कुछ इशारा किया गया और मोटर की चाल कम हो गई । पीछे वाली मोटर धीरे धीरे पास आने लगी और कुछ ही देर में दोनों मोटरों के बीच का फासला दस गज के लगभग रह गया । जिस स्थान पर इस समय ये दोनों मोटरें थीं वह निराला था । दोनों तरफ बड़े बड़े बागीचों की चारदीवारियों के सिवाय किसी तरह के मकान दिखाई नहीं पड़ते थे और न इस ढलती दोपहरिया की गर्मी में कोई मुसाफिर ही सड़क पर दिखाई पड़ रहा था ।

यकायक एक आदमी ने झुक कर नीचे से काठ का एक छोटा बक्स उठाया और उसमें से शीशे का एक गोला बाहर निकाला, मगर उसी समय उस नौजवान ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "ठहरो, अभी इसकी जरूरत नहीं है ।" वह आदमी रुक गया मगर बोला, "यह जगह निराली है, फिर ऐसा मौका शायद न मिले !" नौजवान ने कहा, "तो क्या तुम इन सभों को मोटर सहित उड़ा देना चाहते हो ? ऐसा करने से वह माडल और वे कागजात भी तो नष्ट हो जायँगे !" वह आदमी बोला, "दुश्मन के हाथ पड़ जाने से उनका नष्ट हो जाना ही अच्छा है, फिर भी अगर आपने कोई और तर्कीब सोची हो तो कहिये ।" नौजवान ने कहा, "हां मुझे सूझी है, बम रख दो और मेरी बात सुनो ।"

(२)

पंडित गोपालशंकर कपड़े पहिन कर कहीं जाने को तैयार थे कि उसी समय तार-प्यून ने एक तार ला कर उनके हाथ में दिया। उन्होंने खोल कर उसे पढ़ा, तार काशीजी से आया था और भेजने वाले वहाँ के सुप-

रिंटेंडेंट मिस्टर केमिल थे। तार का मजमून यह था :—

"रोज गायब है, कहीं पता नहीं लगता। उसकी जान का खतरा मालूम होता है। कृपा कर तार देखते ही आइये और मदद कीजिये—

—केमिल।"

तार पढ़ते ही गोपालशंकर बेचैन हो गये। मिस्टर केमिल की लड़की मिस रोज से उनकी बहुत अधिक घनिष्टता थी और कुछ दिनों से वह घनिष्टता प्रेम के रूप में परिणत हो रही थी। पर यह प्रेम अभी तक दोनों दिलों के अत्यन्त गहरे पर्दे के भीतर ही छिपा हुआ था और किसी पर, यहां तक कि एक दूसरे पर भी प्रगट नहीं किया गया था। फिर भी प्रेम एक ऐसा पदार्थ है कि चाहे कितना ही गुप्त और कितने ही प्रयत्न से छिपा कर रक्खा गया क्यों न हो परन्तु प्रेमी पर आने वाली मुसीबत को सुन कर लगने वाला जबर्दस्त धक्का उसे प्रगट कर ही देता है। तार वाला तो तार दे कर चला गया मगर गोपालशंकर तार का मजमून पढ़ कर उसी जगह एक कुर्सी पर बैठ गये और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

न जाने कब तक वह इसी तरह बैठे रहते मगर घड़ी के बजने ने उन्हें चैतन्य किया और उन्हें ख्याल हुआ कि लाट साहब से मिलने जाने का समय हो गया बल्कि बीत रहा है उन्होंने कोशिश करके अपने को चिन्ता-सागर से निकाला और मुरारी को आवाज दी।

थोड़ी ही देर में मुरारी वहां आ मौजूद हुआ। गोपालशंकर ने कहा, "मैं लाट साहब से मिलने जा रहा हूं और वहां से आते ही काशीजी के लिये रवाना हो जाऊंगा। तुम मेरा सन्दूक तैयार कर रक्खो और बाकी भी सब सामान दुरुस्त कर डालो। शायद तुम्हें भी मेरे साथ चलना पड़ेगा।"

कुछ जरूरी चीजें जो वे अपने साथ ले जाना चाहते थे मुरारी को बता कर गोपालशंकर उठे और जाने को तैयार हुए। उसी समय टेली-फोन की घंटी बजी और सुनने पर मालूम हुआ कि लाट साहब के प्राइ-वेट सेक्रेटरी दरियाफ्त कर रहे हैं कि 'क्या पंडित गोपालशंकर घर से रवाना

हो चुके हैं ?' गोपालशंकर ने जवाब दिया, "एक जरूरी तार आ जाने के सबब से मुझे कुछ मिनटों की देर हो गई, मैं अभी आता हूं।" जवाब आया, "जहां तक हो जल्दी आइये, यहां एक विचित्र घटना हो गई है।"

गोपालशंकर ने उत्सुकता से पूछा, "क्या हुआ ?" सेक्रेटरी ने जवाब दिया, "मिस्टर वाहिदअली और कोतवाल अभी यहां पहुंचे हैं। आपसे वह माडल लेकर रवाना होने बाद वे लोग अब तक कहां रहे या क्या करते रहे यह इन सभों को खुछ भी याद नहीं है और न वह माडल ही इनके साथ है।'

सुन कर गोपालशंकर ने जोर से एक हाथ टेबुल पर मारा और कहा, "ओफ, ये मूर्ख पुलिस अफसर !" पर यकायक रुक गये। सेक्रेटरी से फिर कुछ बातें कीं और तब चोंगा टांग दिया, इसके बाद अपनी लेबोरेटरी में गये और वहां से कोई सामान लेकर बाहर आ गये। दरवाजे में दोहरा ताला बन्द किया और अपनी मोटर साइकिल पर सवार होकर रवाना हो गये।

(३)

रात के कोई पौने दस बजे होंगे। गोपालशंकर अभी तक लौट कर नहीं आए हैं अस्तु मुरारी ड्राइंग-रूम के सामने वाले बरामदे में बैठा उनकी राह देख रहा है। सिर्फ दो चार नौकर इधर उधर काम पर दिखाई पड़ रहे हैं बाकी के सब काम समाप्त कर बाग की चहारदीवारी के साथ बनी हुई उस इमारत में चले गये हैं जो खास कर नौकरों के लिये ही गोपालशंकर ने बनवा दी है। बाग के फाटक पर दो पहरेदार मौजूद हैं और चार आदमी उस बड़े बाग और इमारत में इधर उधर घूम कर चौकसी कर रहे हैं। जब से रक्त-मंडल का उत्पात शुरू हुआ है गोपालशंकर ने पहरेदार बढ़ा दिये हैं और अपने बंगले की हिफाजत का बहुत ख्याल रखने लगे हैं।

मुरारी गोपालशंकर का सिर्फ नौकर ही नहीं हैं बल्कि बहुत से कामों

में उनका चालाक और होशियार जासूस भी है। विज्ञान से भी इसे बहुत शौक है और यह गोपालशंकर के वैज्ञानिक आविष्कारों से पूरी दिलचस्पी रखता है तथा उनसे काम लेना भी बखूबी जानता है। गोपालशंकर भी इससे बहुत प्रेम रखते हैं। यह लड़कपन से उनके साथ है और जब कभी वे हिन्दुस्तान के बाहर के मुल्कों की सैर करने जाते हैं ता इसे जरूर अपने साथ रखते हैं। थोड़ा बहुत कई भाषाओं में मुरारी को दखल भी है।

इस समय मुरारी के हाथ में कोई उपन्यास या क़िस्से की किताब नहीं है जिसे वह बड़े शौक से बिजली की रोशनी में दीवार के साथ उठंगा हुआ पढ़ रहा है। यह एक वैज्ञानिक पुस्तक है जिसमें बिजली द्वारा होने वाले आश्चर्य-जनक कामों और उनके अद्भुत यन्त्रों का हाल दिया गया है।

अचानक मुरारी के तेज कानों को किसी प्रकार की आहट मिली। आवाज किस प्रकार की थी इसे तो वह समझ न सका पर रुख पर ध्यान देने से इतना जाना गया कि ऊपर की मंजिल से आ रही है। पहिले तो उसने समझा कि कोई नौकर उठा होगा और कुछ कर रहा होगा पर फिर उसका मन न माना और वह जांच करने के लिये उठ खड़ा हुआ। हाथ की किताब उसी जगह रख दी और धीरे धीरे पांव दबाता हुआ सीढ़ियाँ तय कर ऊपर की मंजिल पर पहुंचा। सीढ़ी के मुहाने पर पहुंच वह रुक गया। यहाँ भी नीचे की मंजिल की तरह सामने बरामदा और इसके बाद कई कमरे थे। साधारण रीति से रात को दस बजे के बाद इस बरामदे में सिर्फ एक बिजली की बत्ती बलती रहा करती थी परन्तु इस समय वह भी बुझी हुई थी और वहां घोर अन्धकार था। इस बात ने मुरारी को आश्चर्य में डाल दिया और वह वहीं रुक गया। जो आहट मुरारी के कानों तक पहुँची थी वह इस समय बन्द हो गई थी और वहाँ एक दम सन्नाटा था, मगर कुछ ही देर बाद वह आवाज फिर शुरू हुई और इस बार मुरारी को मालूम हो गया कि यह उस तरफ से आ रही है जिधर लेबोरेटरी है। यह जानते ही मुरारी चौकन्ना हो गया, उसे दुश्मनों का खयाल आया और

सन्देह हो गया कि शायद बदमाश लोग उसके मालिक की लेबोरेटरी में घुस कर कुछ कर रहे हैं। अब वह एक सायत भी वहाँ रुक न सका, दबे पांव आगे की तरफ बढ़ा और उस तरफ चला जिधर लेबोरेटरी थी।

इस तरफ भी अन्धेरा था मगर नित्य का परिचित होने के कारण मुरारी को यहां तक आने में कोई तरद्दुद न हुआ। कुछ ही देर में वह लेबोरेटरी के दर्वाजे के पास जा पहुँचा और कपड़ा टांगने के एक स्टैन्ड की आड़ में खड़ा हो गौर से चारो तरफ देखने लगा। पहिले तो अन्धेरे के सबब कुछ मालूम न हुआ पर जब निगाह जमी तो थोड़ा थोड़ा दिखने लगा और मालूम हो गया कि लेबोरेटरी के दर्वाजे के सामने घुटना टेके हुए बैठा कोई आदमी कुछ कर रहा है। मुरारी यद्यपि बहुत ही पाँव दबा कर और आहिस्ते से आया था फिर भी इस आदमी को कुछ आहट लग ही गई थी और वह अपना हाथ रोक पीछे की तरफ मुंह कर चारो तरफ देख रहा था। या तो उसने मुरारी को आते देख लिया था या उसे किसी और बात का शक हो गया था जिससे उसने अपना काम छोड़ दिया और जमीन पर से कोई चीज उठा जो शायद एक बेग था मकान के पिछली तरफ लपका।

मुरारी ने देखा कि शिकार भागा जा रहा है, उसके सिर के पीछे ही बिजली की बत्ती का बटन था। उसने हाथ बढ़ा कर उसे दबाया जिसके साथ ही बरामदे में तेज रोशनी फैल गई और तब उसने आड़ से निकल कड़क कर कहा, "कौन जा रहा है, खड़ा रह!"

जाने वाले ने एक दफे पीछे घूम कर देखा और तब अपनी चाल तेज की। एक क्षण के लिये उसका हाथ कपड़ों के अन्दर गया और तब एक चमकदार चीज उस हाथ में दिखाई देने लगी जिसे देखते ही मुरारी ने समझ लिया कि कोई हथियार है, पर वह ऐसा कमहिम्मत न था कि कोई मामूली हथियार दिखा कर उसे डरा लेता। वह अपनी जगह से झपटा और दौड़ कर उसके पास पहुंचा, साथ ही उसने जेब से एक सीटी निकाल

कर जोर से बजाई। भागने वाले ने दौड़ कर निकल जाना चाहा पर फिर न जाने क्या सोच कर वह रुका और घूम गया। उसके हाथ में एक खुखड़ी थी जिसे दिखा कर उसने कहा, "बस खबरदार जो एक कदम भी आगे बढ़े!"

इस आदमी के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और आवाज पर गौर करने से मालूम पड़ता था मानों वह आवाज बदल कर बातें कर रहा हो। उसके हाथ का शस्त्र भयानक था मगर मुरारी ने उसे कुछ करने का मौका देना उचित न समझा और एक दम झपट कर उससे गुथ गया। एक हाथ से उसने वह कलाई पकड़ ली जिसनें खुखड़ी थी और दूसरा कमर में डाल दिया। वह आदमी भी उससे गुथ गया और दोनों में जबर्दस्त कुश्ती होने लगी।

मुरारी का बदन मजबूत था और उसे अपनी ताकत पर घमंड भी था, मगर उसने अपने प्रतिद्वन्दी को अपने से बहुत मजबूत पाया। दो ही चार मिनट के बाद मुरारी जमीन पर गिरा दिया गया और उसके दुश्मन का खुखड़ी वाला हाथ ऊंचा हुआ। करीब ही था कि वह भयानक हथियार मुरारी की गरदन अलग कर देता या वह उसकी छाती में खुप जाता कि उसकी ऊपर उठी हुई कलाई को पीछे से किसी मजबूत हाथ ने पकड़ लिया। चौंक कर उस आदमी ने सिर घुमा कर देखा और गोपालशंकर को खड़ा पाया जो न जाने कब और किधर से उसके पीछे आ पहुंचे थे। उसने झटका देकर हाथ छुड़ा लेना चाहा मगर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों किसी लोहे के पंजे ने उसका हाथ पकड़ लिया हो जो जरा भी दबना या मुड़ना नहीं जानता था। अब गोपालशंकर ने धीरे धीरे उस हाथ को ऐंठना शुरू किया, यहां तक कि वह दर्द के मारे चिल्ला कर मुरारी पर से उठ खड़ा हुआ। उसी समय मुरारी भी उठ खड़ा हुआ और दोनों ने मिल कर बहुत जल्दी ही उसे बेकाबू कर दिया। मुरारी कहीं से एक रस्सी ले आया जिससे उसके हाथ पैर कस कर बाँध दिये गये।

नकाब उठा कर गोपालशंकर ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी पर

उसे पहिचान न सके, आखिर बोले, "तुम कौन हो और मेरे घर में क्या करने आये थे?" उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं चोर हूं और चोरी करने आया था।" गोपालशंकर ने यह सुन सिर हिलाया और कहा, "तुम मामूली चोर नहीं मालूम होते! सच सच बताओ तुम कौन हो?" वह बोला, 'आपको अख्तियार है जो चाहें समझें।"

उसी समय गोपालशंकर की निगाह चमड़े के एक बेग पर पड़ी जो उसी जगह पड़ा हुआ था। उन्होंने उसे उठा लिया और खोला। तरह तरह के ताले खोलने, सेफ तोड़ने, शीशा और लोहा काटने तथा छेद करने के औजार उसमें पड़े हुए थे जिनमें से कई बिजली से काम करने वाले थे। उन्हीं के साथ एक पुर्जा भी पड़ा था जिसे गोपालशंकर ने निकाल लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

'६७ ए जी.—गोपालशंकर की लेबोरेटरी के सेफ में कुछ फोटो के प्लेट हैं। उन्हें आज ही लाना होगा। आज बारह बजे रात के पहिले वे घर न लौटेंगे। उसके पहिले ही उन प्लेटों को कब्जे में करो और ठिकाने पहुंचाओ।"

इसके नीचे रक्त-मंडल का प्रसिद्ध निशान खून का लाल दाग और उसके बीच में चार उंगलियों का निशान बना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सब मामला समझ गये। जेब से तालियों का एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने मुरारी को दिया और कहा, 'इसे तेंतीस नम्बर की कोठड़ी में बन्द कर दो और एक पहरेदार वहाँ मुकर्रर कर दो जिसमें भागने न पावे, बिजली का कनेक्शन लोहे के छड़ोंकेसाथ कर देना, यह बहुत भयानक आदमी है!"

मुरारी ताली का गुच्छा और उस आदमी को साथ लिये नीचे चला गया और गोपालशंकर अपनी लेबोरेटरी के पास पहुंचे। उस समय उन्हें मालूम हुआ कि किसी तेज औजार से दर्वाजे का वह हिस्सा जिसमें दोहरा ताला बन्द किया जाता था काट डाला गया है। तीन तरफ से कट चुका था। और सिर्फ एक जगह थोड़ा सा लगा था जिसके कटते ही दर्वाजा

खुल जाता। वे समझ गये कि वह आदमी इसी काम मे लगा था जब मुरारी ने उसके काम में बाधा डाली थी। उन्होंने इसी समय काशीजी जाने का विचार छोड़ अपनी लेबोरेटरी की मजबूती का इन्तजाम किया बल्कि रात उसी कमरे में काटी और दूसरे दिन सवेरे ही कारीगरों को बुला कर लेबोरेटरी के सब दर्वाजों और खिड़कियों में लोहे के मोटे छड़ों वाले दोहरे दर्वाजों का इन्तजाम किया।

(४)

सूर्योदय में अभी एक घंटे का विलंब है। सरकार के मेकैनिकल एडवाइजर और बेतार की तार के एक्सपर्ट कप्तान रूबी गहरी नींद में मस्त हैं और उनकी नाक से खुर्राटों की बारीक आवाज निकल रही है। न जाने कब तक वे पड़े रहते मगर एक खानसामा ने डरते डरते उनके पलंग के पास जा कर उन्हें जगाया और कहा, "हुजूर, हुजूर! उठिये, जरूरी टेलीफोन आया है!"

एक करवट बदल कर कप्तान रूबी ने आँखें खोलीं और पूछा, "क्या बात है?" खानसामा ने फिर कहा "जरूरी टेलीफोन आया है।" उन्होंने पूछा, "कौन बुला रहा है?" खानसामा बोला, "पंडित गोपालशंकर।" गोपालशंकर का नाम सुनते ही वे चौंक पड़े और उठ बैठे। रात का कपड़ा बदलने की परवाह किये बिना ही वे उस कमरे में पहुँचे जिसमें टेलीफोन था। खानसामा दरवाजे पर खड़ा हो गया जिसे इशारे से दूर जाने को कहा और तब टेलीफोन में बोले, "कौन है?" जवाब आया, "मैं हूं गोपालशंकर, आप क्या कप्तान रूबी हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हां, कहिये क्या है?" दोनों में टेलीफोन पर बात होने लगी।

गोपाल०। कल जो शक मैंने किया था वह ठीक निकला!

रूबी०। क्या?

गोपाल०। रक्त-मंडल को पता लग गया कि मैंने उस माडल और

उन कागजों के फोटो उतार कर रख लिये हैं जिन्हें वाहिदअलीखां को धोखा दे के वे ले गये हैं।

रूबी०। (चौंक कर) हैं, मालूम हो गया ! क्या उन्होंने कोई कार्रवाई की ?

गोपाल०। हां, उनका एक आदमी मेरी लेबोरेटरी का दर्वाजा काटता हुआ पकड़ा गया जिसके पास एक कागज भी था जिसमें इस बात का जिक्र था।

रूबी०। वह आदमी कहां है ?

गोपाल०। मेरे कब्जे में है।

रूबी०। उसे मार पीट कर उससे कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिए !

गोपाल०। क्या आप समझते हैं कि रक्त-मंडल के जासूस मार पीट धमकी या सजा से डर कर कुछ भेद बतावेंगे ? कभी नहीं। मगर मैंने इसके लिए एक दूसरी तर्कीब सोची है।

रूबी०। सो क्या ?

गोपाल०। आपसे कल मैंने अपने उस यंत्र का जिक्र किया था जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतारता है। मैं उसी को काम में लाना और देखना चाहता हूं कि इसमें कहां तक सफलता होती है।

रूबी० हाँ ठीक, मुझे खयाल आ गया। तो आप जिस समय उस यंत्र का इम्तिहान इस आदमी पर करें उस समय मुझे भी जरूर बुला लें। मुझे आपकी बात सुन कर बड़ा कौतूहल हुआ है और मैं देखना चाहता हूं कि आपका यंत्र क्या कर सकता है।

गोपाल०। यही नहीं बल्कि मैं चाहता हूं कि आप खुद ही उस यंत्र का इम्तिहान लें। मुझे दो घंटे के भीतर ही बनारस के लिये रवाना हो जाना है जहाँ मेरे दोस्त मिस्टर केमिल बड़े तरद्दुद में पड़ गये हैं। इसलिये मुझे उस यंत्र से काम लेने का मौका नहीं मिलेगा और इस बात का भी कुछ ठीक नहीं है कि मैं कब तक लौटूं। देर होने से न जाने क्या हो जाय, अस्तु मैं चाहता हूं कि मेरी गैरहाजिरी में आप ही उस यंत्र से

काम लें और देखें कि कहाँ तक सफलता मिलती है।

रूबी०। मैं खुशी से यह काम करने को तैयार हूँ मगर यह आपने क्या कहा कि मिस्टर केमिल बड़े तरद्दुद में पड़ गये! उन पर क्या मुसीबत आई है?

गोपाल०। उनकी लड़की रोज कहीं गायब हो गई है। उसकी जान का अंदेशा किया जाता है। मुझे तो यह रक्त-मंडल की कार्रवाई जान पड़ती है! मिस्टर केमिल का कल एक तार मुझे मिला जिसमें उन्होंने मुझसे तुरत आने को कहा है और मैं आज थोड़ी देर में बनारस के लिये रवाना होने वाला हूँ।

रूबी०। तो फिर जरूर जाइये, मुझे भी यह समाचार सुन बहुत अफसोस हुआ, अगर कोई मदद देने लायक होता तो मैं भी जरूर आपके साथ ही चलता। खैर वहाँ का हाल मुझे बराबर लिखते रहियेगा। अच्छा उस यन्त्र के बारे में—क्या मैं उससे काम ले सकूँगा?

गोपाल०। हाँ यह कुछ भी मुश्किल नहीं होगा, मैं उसके सब भेद आधे घंटे में आपको समझा दूंगा। आप अगर इसी समय आ सकें तो बहुत ठीक है।

रूबी०। मैं आधे घंटे के अन्दर आपके बँगले पर पहुँचता हूँ।

गोपाल०। अच्छी बात है, आती समय रास्ते में मिस्टर डगलस से मिल कर इस आदमी के पकड़े जाने का हाल कह यह भी निश्चय कर लीजियेगा कि वे इस कैदी को आपके पास रहने दें अथवा इस बात का प्रबन्ध कर दें कि वह जेल में बहुत ही होशियारी के साथ रक्खा जाय और आप जब चाहें तब उस पर प्रयोग कर सकें।

रूबी०। अच्छा, मैं कलेक्टर से मिल कर इस बात को भी तय करता आऊँगा।

बातचीत खतम हुई और टेलीफोन का चोंगा टांग कर कप्तान रूबी उठ खड़े हुए, पर इस बात की उन्हें कुछ खबर न हुई कि उस जगह के

पास की एक खिड़की के बाहर खड़े होकर उनके खानसामा ने उनकी सब बातें अच्छी तरह सुन ली हैं।

जैसा कि उन्होंने वादा किया था, आधे घंटे के अन्दर ही कप्तान रूबी गोपालशंकर के बँगले पर पहुंच गये। गोपालशंकर अपनी लेबोरेटरी के दरवाजे और खिड़कियां मजबूत करने का प्रबन्ध कर रहे थे जब इनके आने की उन्हें खबर मिली। वे नीचे आकर आदर के साथ उनसे मिले और तब उन्हें अपनी लेबोरेटरी में ले गये जहाँ टेबुल के ऊपर विचित्र तरह का एक यन्त्र रक्खा हुआ था। यही मनोभावों का चित्र उतारने वाला गोपालशंकर द्वारा आविष्कृत वह यन्त्र था जिसका उन्होंने जिक्र किया था। गोपालशंकर उस यन्त्र का भेद कप्तान रूबी को समझाने लगे।

लगभग पौन घंटे तक दोनों वैज्ञानिकों में बातचीत होती रही। सच तो यह है कि गुणी की कदर गुणी ही कर सकता है। जब कप्तान रूबी उस यन्त्र के सब कल पुर्जों को अच्छी तरह समझ गये तो उन्होंने प्रेम के साथ गोपालशंकर का हाथ दबाया और कहा, "पंडितजी, मैं नहीं समझता था कि आपके दिमाग में इतनी विद्या और बुद्धि भरी हुई है। मैं करीब करीब सब मुल्कों में घूमा हूं, यूरोप और अमेरिका के प्राय: सभी प्रसिद्ध विद्वानों और वैज्ञानिकों से मेरा परिचय है, पर मैं सच कहता हूं कि आप के जैसी योग्यता मैंने कहीं नहीं देखा। मैं आपकी बुद्धि की तारीफ नहीं कर सकता। आपका यह यन्त्र ही बताता है कि आप वैज्ञानिक जगत में कितना ऊँचा स्थान ग्रहण किये हुए हैं। मगर अफसोस कि आप ऐसे देश में पैदा हुए हैं जो पराधीन होने के साथ ही साथ अपनी मनोवृत्तियों में भी यहां तक पंगु हो गया है कि अपने गुणियों की आप ही कदर नहीं करता, नहीं तो अगर आप पश्चिम में पैदा हुए होते तो जगत के एक रत्न समझे...."

मगर गोपालशंकर ने अपना हाथ हिला कर कप्तान रूबी को रोका और मतलब की बात पर आ गएं। दोनों आदमियों में कुछ देर तक और बातचीत होती रही, इसके बाद कप्तान रूबी बिदा हुए। उनके साथ एक आदमी

वह यन्त्र लिये हुए था और दो कान्स्टेबुल हथकड़ी पहिने उस आदमी को लिये हुए जिसे कल रात गोपालशंकर ने गिरफ्तार किया था।

कप्तान रूबी के जाने बाद गोपालशंकर ने मुरारी को बुलाया और कहा, "मैं चाहता था कि तुम्हें भी अपने साथ ले जाता पर रक्त-मंडल की कार्रवाइयों को देख मुझे ख्याल होता है कि मेरे पीछे किसी होशियार आदमी का यहां रहना जरूरी है जो बंगले की पूरी हिफाजत रक्खे, अस्तु तुम्हें यहीं छोड़े जाता हूं। तुम खूब चौकसी रखना और सब जगह की, खास कर मेरी लेबोरेटरी की, खूब हिफाजत रखना! मुझे संदेह है कि मेरे पीछे दुश्मन लोग जरूर कुछ न कुछ आफत करेंगे मगर तुम होशियार हो और उनका पूरी तरह मुकाबला कर सकते हो अस्तु तुम्हारे यहाँ रहने से मैं निश्चिन्त रहूंगा। लेबोरेटरी की हिफाजत के लिये रात भर में मैंने कुछ और सामान किये हैं, उनके बारे मे मैं तुम्हें समझाए देता हूं, उनके रहते किसी की मजाल नहीं कि भीतर झाँक सके, फिर भी अगर कोई तरद्दुद पड़े तो सीधे यहां के कलेक्टर मिस्टर डगलस के पास चले जाना, वे मुनासिब इन्तजाम कर देंगे, मैंने बात करली है।"

गोपालशंकर ने मुरारी को बहुत सी बातें समझाईं और इसके बाद काशीजी जाने की तैयारी करने लगे। दो घंटे के बाद वे वहां के लिये रवाना हो गये। उनके साथ बहुत ही मुख्तसर सा सामान था और आदमी या नौकर कोई भी नहीं।

(५)

मिस्टर केमिल को हमारे पाठक कदाचित् भूले न होंगे जिनका नाम इस उपन्यास के आरम्भ में आ चुका है। ये पहिले आगरे के पुलिस सुपरिंटेंडेंट थे और अब बदल कर काशीजी आ गये हैं। इनके पहिले के सुपरिंटेंडेंट मिस्टर गिबसन के समय में बनारस में रक्त-मडल ने जो कार्रवाइयाँ कीं उनकी भीषणता और अपराधियों का कुछ भी पता न लगने के कारण ऊंचे अफसर मिस्टर गिबसन से कुछ असन्तुष्ट हो गये थे और इसी सबब से वे बनारस से

बदल कर एक छोटे और अपेक्षाकृत कम महत्व के शहर में भेज दिये गये थे। मिस्टर केमिल जब से यहां आये थे तब से ऐसी घटनाओं का होना बन्द हो गया था पर यह नहीं कहा जा सकता कि इसका कारण उनकी होशियारी और चालाकी थी या रक्त-मंडल का ध्यान दूसरी तरफ होना।

परन्तु यह शान्ति कुछ ही दिनों के लिये थी और अन्त में स्वयम् मिस्टर केमिल को ही कुचक्रियों के भीषण षड़यन्त्र में फँस जाना पड़ा।

संध्या का समय था। गर्मी की भीषणता से व्याकुल होकर मिस्टर केमिल, उनकी पत्नी, और लड़की मोटर-बोट पर चढ़ कर गंगाजी में सैर करने निकली थीं। पूर्णमासी का दिन था और जल पर पूर्ण चन्द की शोभा देखने की सभी की इच्छा थी अस्तु बोट तेजी के साथ छोड़ दिया गया और इस समय वह रामनगर को पीछे छोड़ता हुआ चुनार की ओर बढ़ रहा था।

रोज के हाथ में एक दूरबीन थी जिससे वह चारो तरफ का दृश्य देखती और उन पर तरह तरह की टिप्पणियां करती जा रही थी। यकायक उसने कहा, "मां, देखिये हमारे आगे एक और मोटर-बोट जा रही है। वह चाल में हमारी नाव से तेज मालूम पड़ती है।" रोज ने मां के हाथ में दूरबीन दी और उसने देख कर कहा, "हां, बहुत सुन्दर और तेज जाने वाली बोट है, मगर उसकी चाल कम हो रही है, जान पड़ता है उसके इन्जिन में कुछ खराबी आ गई है।"

घूमती हुई दूरबीन मिस्टर केमिल के हाथ में गई और उन्होंने भी उस बोट को देखा जिसका इन्जिन अब बन्द हो गया था पर जो फिर भी तेजी से पानी को काटती हुई आगे बढ़ी जा रही थी। यकायक केमिल ने देखा कि बोट के पिछले हिस्से में तीन चार बरस का एक सुन्दर लड़का आ खड़ा हुआ और इनकी नाव की तरफ देखने लगा। उसी समय तेजी से अचानक उस बोट का इन्जिन जो न जाने क्यों रुक गया था चल पड़ा और बोट तेजी में आगे बढ़ी। एक कड़ा झटका लगा और झोंके को वर्दाश्त न कर सकने के कारण वह छोटा लड़का पानी में गिर पड़ा। मिस्टर केमिल के

मुंह से यकायक—"अरे ! लड़का गिरा !!" निकल गया, और उन्होंने दूर-बीन रख के जोर जोर से अपनी बोट का भोंपू बजाना शुरू किया जिसमें बोट वालों का ध्यान आकर्षित हो, पर वे बोट वाले न जाने किस काम में मग्न थे कि उन्होंने कुछ भी ख्याल न किया और लड़के को उसी तरह पानी में छोड़ उनकी नाव आगे बढ़ गई।

मिस्टर केमिल की नाव उस नाव से लगभग पांच या छः फरलांग दूर होगी जब यह घटना हुई। इस घटना को देखते ही उन्होंने अपना इन्जिन तेज किया और उस तरफ बढ़े जहां वह लड़का पानी में गिरा था। उनकी स्त्री दूरबीन हाथ में लिये उस लड़के पर निगाह जमाये हुए थीं।जो एक वार डूब कर अब फिर उतरा आया था और पानी पर हाथ पैर मार रहा था।

अब उस अगली नाव वालों का ध्यान भी इस दुर्घटना की तरफ गया। एक आदमी पीछे की तरफ आया और झांक कर देखने लगा। नाव का मुंह घूमा और एक सायत के लिये ऐसा मालूम हुआ मानो वह लौटेगी और उस बेचारे लड़के को उठावेगी परन्तु ऐसा न हुआ। क्या जाने केमिल साहब की बोट देख कर या न जाने किस कारण से उस नाव ने अपना मुंह फिर सीधा कर लिया और पहिले से भी ज्यादा तेजी से आगे की तरफ बढ़ी। लड़का पीछे छूट गया। पर इसी समय मिस्टर केमिल की नाव उस लड़के के पास पहुंच गई, केमिल जल में कूद पड़े और तेजी के साथ उस लड़के के पास पहुँच कर उन्होंने उसे उठा लिया जो अबकी शायद आखिरी दफे पानी के अन्दर जा रहा था। उनकी स्त्री मोटर-बोट घुमा कर पास ले आई और सभों ने लड़के को पकड़ा और फिर मिस्टर केमिल को सहारा दे नाव पर चढ़ा लिया।

लड़का यद्यपि पानी पी गया था पर फिर भी होश में था। मिसेज केमिल ने उसके कपड़े बदल कर अपना कोई कपड़ा उसे उढ़ाया और हाथ पांव मल कर बदन गर्म किया और केमिल साहब ने भी गीले कपड़े उतारे। इस बीच में उस अगले बोट पर से इन सभों का ध्यान हट गया था पर

अब जो देखा तो वह दूर जा पहुंचा था और फिर भी बढ़ा ही जा रहा था। रोज यह देख बोली, 'वे लोग कौन हैं जो लड़के को पानी में छोड़ इस तरह भागे जा रहे हैं। कैसी निष्ठुरता है !!" केमिल बोले, "मुझे भी इस पर ताज्जुब हो रहा है। उस आदमी ने आ कर देखा था इससे यह भी नहीं कहा जा सकता कि उन लोगों को इस दुर्घटना की खबर नहीं।' मिसेज केमिल बोलीं, "शायद उस आदमी की निगाह लड़के पर न पड़ी हो और उसने इसे डूब गया समझा हो !' इस पर रोज बोली, 'तौ भी रुक कर पता लगाना उनका फर्ज था, वे तो इस तरह भागे मानों लड़का चोरी का हो !"

अब तक दोनों नावों के बीच में कोई आध मील का फासला पड़ चुका था। मिस्टर केमिल ने अपनी नाव की चाल तेज की और चाहा कि उस नाव के पास पहुँच लड़का उन लोगों के हवाले कर दें और यह भी दरियाफ्त करें कि उसे इस बेदर्दी के साथ पानी में छोड़ भागने का क्या सबब था, पर उनकी यह इच्छा भी पूरी न हुई। उनकी नाव की चाल तेज होने के साथ ही अगली नाव की चाल भी तेज होती दिखाई पड़ी और वह पहिले से भी ज्यादा तेजी से पानी काटने लगी। मिस्टर केमिल ने यह देख कहा, "जरूर यह कुछ भेद की बात है। वे लोग या तो इस लड़के को नहीं चाहते और या हम लोगों से डरते हैं !!' यह बात मुँह से निकलने के साथ ही उनको कुछ और खयाल हुआ और वे एक दूसरी ही बात सोचने लगे। कुछ ही देर बाद उन्होंने बोट का मुंह घुमाया और घर की तरफ लौटे, मगर अब हम थोड़ी देर के लिये इनका साथ छोड़ते हैं और उस अगली मोटर-बोट के साथ चलते हैं।

इस बोट में सिर्फ दो आदमी हैं जिनमें एक तो इंजिन के पास है और दूसरा आगे के हिस्से में खड़ा चिन्ताकुल आंखों से कुछ देख रहा है। नाव में तरह तरह के सामान भरे हुए हैं। बहुत सी छोटी बड़ी गठड़ियाँ, कुछ चमड़े के बेग, कई ट्रंक और इसी तरह की और चीजें बतला रही हैं मानों किसी रईस का सामान जा रहा हो। इंजिन अपनी पूरी तेजी से चल रहा

है और नाव पानी को काटती हुई तीर की तरह जा रही है।

काफी देर बाद आगे वाले आदमी ने यह कह कर सन्नाटे को तोड़ा—"मुकुन्द ! अब क्या हो ? सरदार जब लड़के का हाल सुनेंगे तो क्या कहेंगे?'

इंजिन के पास खड़ा आदमी बोला, "कहेंगे क्या पूरी दुर्दशा होगी ! न जाने क्या समझ सोच कर उन्होंने यह सब सामान और उस लड़के को अपने पास मंगवाया था। लड़के के चले जाने से उनकी कार्रवाई में कितना बड़ा विघ्न पड़ जायगा कौन कह सकता है ? असल में रामू तुमने गलती की जो लौट कर उसे उठा नहीं लिया।

रामू०। गलती क्या की ? केमिल की बोट सिर पर आ पहुंची थी। हम लोग लड़का उठाने को लौटते तो जरूर उनसे बातें होतीं, सवाल जवाब होते, किसका लड़का है यह पूछने पर हम क्या बताते ? उनसे और बटुकचन्द से सुनते हैं जान पहिचान भी है। अगर उन्होंने पहिचान लिया कि बटुकचन्द ही का खोया हुआ लड़का यह है तो क्या होता सोचो !

मुकुन्द ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया क्योंकि इस जगह गंगाजी का रुख घूम गया था और तरखा बहुत तेज था जिससे वह नाव सम्हालने में लग गया था। यकायक सामने की तरफ आकाश में हरे रंग की ऐसी चमक दिखाई पड़ी मानों कोई आकाश-बान छोड़ा गया हो। देखते ही रामू चौंक पड़ा और बोला, "देखो, शायद सरदार बुला रहे हैं।" मुकुन्द ने कहा, "ऐसा ही मालूम होता है, तुम भी एक बान छोड़ो।"

जवाब में रामू ने एक बान छोड़ा और थोड़ी देर बाद सामने से दो बान छूटते दिखाई पड़े। बोट की चाल और तेज की गई और थोड़ी देर बाद बीच गंगा में खड़े एक बड़े बजड़े की धुंधली शकल दिखाई देने लगी। कुछ ही देर में बोट इस बजड़े के पास पहुंच गया और उसके साथ जा लगा। बजड़े पर बहुत से मल्लाह दिखाई पड़ रहे थे जिन्होंने बोट को रस्सों से बांध दिया और कुछ इस बोट पर भी चले गये। रामू और मुकुन्द बजड़े पर चढ़े और कुछ ही देर बाद भीतर बुला लिये गये।

यह बजड़ा जितना बड़ा ऊँचा लम्बा और आरामदेह था उतना ही तेज जाने वाला भी मालूम होता था, और इस पर तीन पालों के लगने के मस्तूल दिखाई पड़ रहे थे। अगला हिस्सा तो इस प्रकार का था कि लगभग चालीस मल्लाह वहां बैठ कर खे सकते थे और पीछे की तरफ वक्त पर मदद करने के लिये पंखी और एक छोटा इंजिन भी लगा हुआ था। इसके भीतर मल्लाहों के रहने की जगह के इलावा छोटे बड़े कई कमरे थे जो भिन्न भिन्न कामों में लाये जाते थे और इन्हीं में से एक में बिछे पलंग पर गाव-तकिये के सहारे लेटे और सिर्हाने के टेबुल पर रक्खे लम्प की रोशनी में कुछ पढ़ते हुए एक नौजवान के सामने रामू और मुकुन्द पहुँचाये गये जो उसे सलाम कर अदब से खड़े हो गये।

नौजवान ने इन लोगों की तरफ सिर उठा कर देखा और पूछा, "तुम लोग आ गये?" मुकुन्द ने जवाब दिया, "जी हाँ, मगर....!"

नौजवान०। मगर क्या?

मुकुन्द ने यह सुन रास्ते में जो कुछ हुआ था सब पूरा पूरा कह सुनाया और अन्त में यह भी कहा, "केमिल साहब ने थोड़ी देर तक हम लोगों का पीछा किया मगर फिर वापस लौट गये।"

मुकुन्द की बात सुन नौजवान कुछ देर के लिये चिन्ता में पड़ गया। मुकुन्द और रामू धड़कते कलेजे के साथ सोच रहे थे कि देखें अब उन्हें क्या सजा मिलती है मगर ऐसा कुछ न हुआ और थोड़ी देर बाद नौजवान ने कहा, "तुम लोगों से गलती तो बड़ी भारी हो गई कि उसी समय लौट कर लड़के को उठा न लिया पर खैर अब जो हो गया सो हो गया। जो कुछ सामान उस मकान से लाये हो उसे इस बजड़े पर पहुँचा दो और इसके बाद इसी समय उस बोट को बीच गंगा में डुबा दो। बजड़े को हुक्म दो कि ऊपर की तरफ चले, घण्टा भर दिन चढ़ने से पहिले अड्डे पर पहुंच जाना चाहिये। अब मैं सोता हूं, रात को कोई मुझे तंग न करे।"

"जो हुक्म" कह दोनों आदमी सामने से हट गये। नौजवान के हुक्म

की पूरी तामील की गई। मोटर-बोट का सब सामान बजड़े पर पहुंचाया गया और तब वह डुबा दी गई। इसके बाद बजड़ा खुल गया और दो बड़ी पालों की सहायता से तेजी के साथ ऊपर की तरफ चढ़ने लगा। नौज-वान कुछ देर तक खिड़की से चाँदनी रात की छटा देखता रहा, इसके बाद उसने लम्प बुझा दिया और सो गया।

(६)

दूसरे ही रोज, शायद केमिल साहब के इशारे से ही, यह बात सारे शहर में फैल गई कि गंगाजी में बहता हुआ एक लड़का पाया गया है जो बड़ा ही सुन्दर है और शायद किसी बहुत ऊँचे खानदान का है। कई लोग उस लड़के को देखने के लिये आने लगे और बहुतों ने उसे ले कर पालने की भी दर्खास्त की मगर केमिल साहब को विश्वास था कि इस लड़के के साथ किसी विचित्र घटना का कोई सम्बन्ध अवश्य है अस्तु उन्होंने किसी को भी वह लड़का देना स्वीकर न किया। रोज को उस लड़के से मुहब्बत हो गई थी और वह भी उसे रखना चाहती थी। इधर केमिल साहब इस तरफ से भी बेफिक्र नहीं थे कि जो लोग इस तरह से उस लड़के को जल में छोड़ कर चले गये वे कौन थे इसका पता लगावें। उन्होंने पुलिस और जासूसों की मदद से इसकी कुछ छानबीन की और कुछ पता भी लगाया जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

घूमती फिरती यह खबर पुत्र-शोक से व्याकुल रायसाहब बटुकचन्द के कानों में भी पहुंची कि केमिल साहब को कहीं से तीन चार बरस का एक बहुत सुन्दर लड़का मिला है। यह सुनते ही उनके मन में कुछ अजीब तरह की धड़कन पैदा हो गई और वे किसी तरह अपने को रोक न सके। उन्होंने उसी समय अपनी मोटर मँगवाई और उस पर चढ़ केमिल साहब के बँगले पहुंचे। इत्तिफाक से रोज उस समय उस लड़के को लिये बँगले के सामने के छोटे नजरबाग में टहल रही थी। फाटक के अन्दर घुसते ही बटुकचन्द की निगाह उस लड़के पर पड़ी। अपने दिल के टुकड़े को उसी

छम उन्होंने पहिचान लिया। वे झपट कर उसके पास पहुँचे और उसे उठा कर छाती से लगा लिया, तथा वह लड़का भी 'बाबूजी !' कह कर उनके गले से चिपक गया।

रोज ताज्जुब से यह हाल देख रही थी। वह असल मामला तुरत समझ गई क्योंकि उसे रक्त-मंडल द्वारा बटुकचन्द के लड़के के छीने जाने का हाल मालूम था। वह दौड़ी हुई जा कर केमिल साहब को बुला लाई। केमिल साहब से बटुकचन्द का पहिले का कुछ परिचय था। इस समय उन्होंने उनसे बातचीत कर जब निश्चय कर लिया कि यह लड़का उन्हीं का है तो वहुत प्रसन्नता प्रगट की और लड़का सही सलामत पा जाने पर उन्हें मुवारकबाद दी। बातचीत करते वे उन्हें बँगले में ले आये और चाय लाने का हुक्म किया।

सब लोग चाय पानी के साथ साथ हँसी खुशी की बातें कर रहे थे कि चपरासी ने लाकर दो लिफाफे टेबुल पर रख दिये। लाल रंग के एक ही नाप के दोनों लिफाफों में से एक पर केमिल साहब का नाम लिखा हुआ था और दूसरे पर राय बटुकचन्द का। केमिल साहब के पूछने पर चपरासी ने जवाब दिया कि, लाल कपड़ा पहिने एक आदमी ये दोनों चीठियां दे गया है और कह गया है कि 'बहुत जरूरी हैं अभी जा कर दे दो।' केमिल ने यह सुन बटुकचन्द की चीठी उनकी तरफ बढ़ा दी और अपनी लेकर लिफाफा खोला। लाल रंग का एक कागज निकला जिस पर लाल ही स्याही में यह लिखा था :—

"मिस्टर केमिल,

"हम आपको सूचना देते हैं कि जो लड़का परसों आपको मिला है वह हमारा है और कल सुबह हम उसे लेने आवेंगे। अगर आप हमारी मर्जी के खिलाफ उसे किसी गैर के हवाले कर देंगे तो तकलीफ उठावेंगे। कल सुबह या तो उसे लेकर अपने फाटक पर तैयार हमें मिलिये या अपने किसी रिश्तेदार का वियोग सहने के लिये तैयार हो जाइये।"

इस चीठी के नीचे रक्त-मंडल का मशहूर निशान—खून के दाग के बीच में चार उँगलियें, बना हुआ था।

चीठी पढ़ कर केमिल साहब चौंक गये। उसी समय उन्होंने बटुकचन्द की तरफ निगाह उठाई तो देखा कि उनका चेहरा पीला पड़ गया है। उनके हाथ में भी लाल कागज देख वे समझ गये कि उन्हें भी रक्त-मंडल ने ही कोई सन्देशा भेजा है। बिना कुछ कहे उन्होंने अपनी चीठी उनकी तरफ बढ़ा दी और उनको आप लेकर पढ़ना शुरू किया। इस चीठी का मजमून यह था :—

"बटुकचन्द,

"हमारे आदमियों की गफलत से यह लड़का हमारे हाथ से निकल गया मगर फिर भी इतना समझ रक्खो कि जब तक हमारा दो लाख रुपया हमें मिल न जायगा तुम इसे अपने पास कदापि रख न सकोगे। अगर तुम इसे रखना चाहते हो तो आज ही रात को दो लाख रुपये राजघाट के पुराने किले के उत्तर वाले कूएँ में डाल दो, वरना याद रक्खो कि तुम किसी तरह जीते नहीं बचोगे और तुम्हारे बाद यह लड़का भी जिसे तुम अपना कहते हो उसी के पास पहुँचा दिया जायगा जिसका नाम लेने की भी हिम्मत तुम्हारी नहीं है।

"'कपास के फूल' की बात याद करो और जो हम कहते हैं बिना सोचे विचारे कर डालो, नहीं तो अच्छा न होगा।"

इस चीठी के नीचे भी रक्त-मंडल का खूनी निशान बना हुआ था!

केमिल साहब और बटुकचन्द एक दूसरे की तरफ कुछ देर तक एकटक देखते रहे। बटुकचन्द की आँखों से भय और लाचारी प्रगट हो रही थी, केमिल साहब की आँखें क्रोध और दृढ़ता बता रही थीं। कुछ देर बाद बटुकचन्द ने प्रश्न की निगाह केमिल साहब पर डाली और अपने लड़के की तरफ देखा। केमिल ने लापरवाही के साथ गरदन हिलाई और कहा, "राय साहब, आप अपने लड़के को ले जा सकते हैं मगर मैं राय दूंगा कि

इसकी और अपनी जान की या तो खूब हिफाजत कीजिये और या फिर इन शैतानों को दो लाख का घूस देने को तैयार रहिये।"

बटुकचन्द ने दीनता के साथ कहा, "आप जैसा हुक्म करें वैसा ही करने को मैं तैयार हूं। मैं कोई बहुत बड़ा अमीर आदमी नहीं, दो लाख रुपया कहाँ से पाऊँगा जो इन्हें दूँगा, मगर यह लड़का भी मेरे जिगर का टुकड़ा है, इसे भी किसी तरह छोड़ नहीं सकता!"

केमिल साहब सिर हिला कर बोले, "अगर मैं आपकी जगह होता तो अपनी जान दे देता मगर इस तरह दब के रुपया तो न देता!!"

बटुकचन्द लाचारी और उदासी से रुकते रुकते बोले, "यही तो मेरी भी राय है, अगर....आप मेरी मदद करने को...मगर...!"

केमिल बोले, "मैं सब तरह से पूरी मदद करने को तैयार हूं। मैं तो आपको यह राय दूँगा कि कुछ दिनों के लिये इस लड़के को ले कर अपने किसी गाँव या दूर के किसी शहर में चले जाइये, तब तक मैं इन शैतानों को ठीक करता हूं।

बटुक०। (खुश होकर) हाँ यह बात तो आपने ठीक कही। मैं ऐसा ही करूँगा, मेरा लखनऊ में एक गाँव है, अगर आप कहिये तो मैं वहीं चला जाऊँ।

केमिल०। हां आप ऐसा ही करें, लखनऊ के पुलिस सुपरिंटेंडेंट और कलेक्टर भी मेरे बहुत बड़े दोस्त हैं, मैं उनके नाम का चीठियें दे दूँगा और कई दूसरे उपाय भी बताऊँगा जिनसे आप बहुत सुरक्षित रह कर वेफिक्री के साथ कुछ वक्त काट सकेंगे।

केमिल साहब और बटुकचन्द में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। आधे घंटे के बाद जब बातों का सिलसिला टूटा तो बटुकचन्द उठ कर टेलीफोन के पास गये और चोंगा उठा अपने मकान पर फोन किया। उनके खास नौकर ने जवाब दिया जिससे वे बोले, "मुझे एक बहुत ही जरूरी काम से इसी समय लखनऊ के लिये रवाना होना है। मैं यहाँ से सीधा स्टेशन

जा रहा हूं। तुम मेरा सूटकेस और सफर का जरूरी सामान ले तुरत वहीं मुझसे मिलो।"

केमिल और बटुकचन्द में कुछ और बातें हुईं, इसके बाद मिस्टर केमिल ने अपने हाथ से लिख कर दो चीठियें बटुकचन्द को दीं और इस बारे में और भी कई बातें समझा कर उन्हें बिदा किया। अपने प्यारे लड़के को लिये हुए बटुकचन्द अपनी मोटर में जा बैठे और ड्राइवर को स्टेशन चलने का हुक्म दिया, मगर उनका दिल धड़क रहा था और वे डरे हुओं की तरह चारो तरफ देख रहे थे कि कहीं रक्त-मंडल का कोई आदमी उन्हें भागते हुए देख तो नहीं रहा है।

यकायक उनकी निगाह की छत की तरफ चली गई। उन्होंने देखा कि कपास का एक फूल लाल धागे से बंधा छत से लटक रहा है। न जाने क्यों इस सुन्दर फूल को देख वे कांप गये। उनके मुंह से आह निकल गई और उन्होंने दोनों हाथ से अपने प्यारे लड़के को छाती से दबा लिया।

× × × ×

दूसरा दिन केमिल साहब का तरह तरह का इन्तजाम करने में बीत गया। कहना नहीं होगा कि रक्त-मंडल की चीठी के अनुसार वे सुबह फाटक पर बटुकचन्द के लड़के को लिए हुए मौजूद नहीं थे, उस चीठी की धमकी को तो उन्होंने एक दम ही अग्राह्य किया था। उस दिन आधी रात गये तक वह पुलिस के अफसरों और जासूसों के साथ न जाने क्या क्या सलाह मशविरा करते रहे।

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही उनके नौकर ने उन्हें जगाया और जब वे आंख मलते हुए उठे तो एक तार और एक चीठी उन्हें दी। चौंक कर धड़कते हुए दिल से उन्होंने तार खोला, यह लिखा था :—

"राय बटुकचन्द को रात को कोई जान से मार गया। उनका लड़का गायब है।"

तार छूट कर उनके हाथ से गिर गया और वे यह भी देखने लायक न रहे कि उसको भेजने वाला कौन है। कांपते हाथों से उन्होंने दूसरा लिफाफा खोला, लाल कागज पर लाल स्याही से सिर्फ इतना लिखा हुआ था :—

"आखिर अपनी बेवकूफी, झूठे घमंड, औद जिद्द के कारण तुमने बटुकचन्द की जान ली, अब अपनी जान बचाने की फिक्र करो। तुम्हारी लड़की को ले कर हम लोग जाते हैं।"

इसके नीचे रक्त-मंडल का खूनी निशान था जिसे देखते ही मिस्टर केमिल चौंक कर उठ खड़े हुए और बोले, "रोज! रोज! रोज कहां है? देखो और उसे अभी मेरे पास लाओ!"

मगर रोज का कहाँ पता लगना था! नौकर चाकर बंगले के कमरों कोठरियों और बाग का पत्ता पत्ता छान आये मगर वह कहीं न थी।

केमिल साहब ने सिर पर जोर से हाथ मारा और अपनी खाट पर गिर गये।

— – —

मुठभेड़

(१)

अब हम कुछ पीछे की तरफ हटते और थोड़े दिन पहिले की एक घटना का एक हाल लिखते हैं।

अंधेरे और डरावने जंगल के बीच में छोटा सा मैदान है जिसमें इस समय हम सौ सवा सौ आदमियों की एक भीड़ देख रहे हैं।

बीच में एक गोल टेबुल है जिसके ऊपर लाल कपड़ा बिछा हुआ है। उसके ऊपर मनुष्य की खोपड़ी का एक पूरा ढांचा रक्खा हुआ है और उसके दोनों तरफ भैंसे के दो कटे हुए सिर रक्खे हैं जिनमें से ताजा खून अभी भी कभी कभी निकल पड़ता है और बूंद बूंद करके लाल कपड़े को तर करता हुआ नीचे जमीन पर गिर जाता है। भैंसों के सिरों के दोनों तरफ खून से सने दो खांड़े रक्खे हुए हैं और उनके बगल में मनुष्य के हाथ की दो हड्डियां रक्खी हुई हैं।

टेबुल की सजावट तो यह है। उसके पीछे तीन कुरसियां रक्खी हुई हैं जिन पर लाल कपड़ा उढ़ाया हुआ है। इस कपड़े पर भी सुफेद रेशम के काम से मनुष्य की खोपड़ी बनी हुई है जिसके नीचे मनुष्य के हाथ की दो

हड्डियाँ एक दूसरे को काटती हुई बनी हैं। ये कुरसियाँ खाली हैं अर्थात् इन पर अभी तक कोई बैठा हुआ नहीं है।

सामने और टेबुल के चारो तरफ की भीड़ में जो सौ सवा सौ आदमियों से अधिक की नहीं होगी कोई विशेषता नहीं है सिवाय इसके कि ये सब के सब लाल रंग का कपड़ा पहिने हुए और अधिकांश नवयुवक हैं। इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बातें हो रही हैं जिससे एक तरह की गूंज फैल रही है। साधारण रूप से यह भी जान पड़ता है कि एक तरह की उत्तेजना भीतर ही भीतर काम कर रही है और ये सभी उपस्थित लोग किसी के आने की उत्कंठा-पूर्वक राह देख रहे हैं।

यकायक कहीं से शंख की आवाज आई जिसे सुनते ही उपस्थित भीड़ की उत्तेजना बढ़ गई और सभी इधर उधर देखने लगे। अचानक फिर शंख की आवाज आई और साथ ही सामने की तरफ से तीन आदमी आते हुए दिखाई पड़े जिनकी पौशाक लाल रंग की थी और चेहरे भी लाल कपड़ों से ढंके थे। इनके देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और साथ ही 'भारत-माता की जय' शब्द से वह जंगल गूंज उठा। धीरे धीरे चलते हुए वे तीनों आदमी आकर उन कुरसियों पर बैठ गये और एक बार फिर वही रव गूंज उठा।

फिर शंख की आवाज हुई और इन नये आए हुओं में से एक आदमी उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ के इशारे से सभों को बैठने के लिये कहा और जब सब बैठ गये तो गम्भीर स्वर में कहना आरम्भ किया :—

"भाई हिन्दियो,

"आज बरसों ही बाद हम लोग फिर यहां इकट्ठे हुए हैं। हम लोगों ने पहिले कहां तक काम किया था और किस प्रकार हम लोग दबा दिये गये—ये दोनों ही बातें कहनी अब बेकार हैं और हमें तो केवल इसी बात के लिये परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिये कि आज इतने दिनों के बाद और इस प्रकार बदल गये हुए वायुमंडल में भी हम लोग इतने आदमी

ऐसे इकट्ठे हो सके जो अपना पहिला उद्देश्य भूले नहीं हैं और जो आज भी कुछ कर सकने की हिम्मत रखते हैं। और कुछ नहीं तो देश के लिए प्राण त्याग करना तो आज भी हमारे हाथ में है और वहां तक करने को हम तैयार हैं--यही बहुत है।

"आज आप लोगों को इतने दिनों के बाद हम लोगों ने जो बुलाया इसका एक विशेष कारण है। आप सब लोग पिछले इतिहास को पूरी तरह जानते हैं और आपको यह बतलाना व्यर्थ है कि पहिली बार हम लोगों की पराजय केवल इसी लिए हुई कि हमारे हाथ में कोई ऐसा अस्त्र नहीं था जिससे हम उस विशाल शक्ति का ठीक तरह से मुकबला कर सकते जिसने इस देश का शासन-सूत्र पकड़ा हुआ है। परन्तु आज अवस्था बदल गई है। आज हमें एक ऐसा अस्त्र मिल गया है जिसकी सहायता से यदि हम चाहें तो घड़ी भर में इस सरकार क्या इस समूची दुनिया का नाश कर दे सकते हैं। आज हम इस योग्य हो गये हैं कि संसार को बड़ी पे बड़ी शक्ति का मुकाबला कर सकें।

"आप पूछेंगे कि वह शक्ति क्या है? वह और कुछ नहीं, वैज्ञानिक संसार का एक आविष्कार है। आपको भुलावे में न रख कर मैं आपको उस शक्ति का एक छोटा सा नमूना दिखलाए देता हूं।"

इतना कह उस आदमी ने टेबुल के नीचे से काठ का एक बक्स निकाला। इसके भीतर किसी मसाले में रक्खा हुआ अन्य एक छोटा बक्स था जो इसमें से बाहर निकाला गया और उसके भी अन्दर से रूई की तहों में बड़ी हिफाजत से रक्खा हुआ शीशे का एक गोला निकला जो कद में बड़े अंडे के बराबर होगा। इस गोले को हाथ में ले और सिर के ऊपर उठा कर लोगों को दिखाते हुए उसने फिर कहना शुरू किया :—

"आप लीग इस शीशे के गोले को देखते हैं। यह कितना छोटा और साधारण मालूम होता है पर इसके अन्दर वही सब से भयानक शक्ति छिपी हुई है जिसकी सहायता से हम अपने देश को स्वाधीन करना चाहते हैं।

आप लोग इस छोटे से गोले की शक्ति देखें।"

उस आदमी ने बड़े जोर से उस गोले को एक तरफ फेंका। वह सनसनता हुआ एक बड़े भारी पेड़ के तने से जाकर लड़ा और फूट कर टुकड़े टुकड़े हो गया। लोगों को यकायक मालूम हुआ मानों एक प्रकार की हरी बिजली वहाँ पर चमक गई हो। उसी क्षण में वह पेड़ यकायक जल उठा और शीघ्र ही इस प्रकार सुलगने लग गया मानों वह बरसों का सूखा काठ हो या उस पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया गया हो। लगभग पांच मिनट के अन्दर ही वह समूचा पेड़ धाँय धांय कर के जलने लग गया। कुशल यही थी कि वह पेड़ उस जंगल के और पेड़ों से एक दम अलग था और उसके सबब से अन्य पेड़ों में आग लगने की संभावना नहीं थी, नहीं तो शायद शीघ्र ही वहां एक भयानक दृश्य उपस्थित हो जाता, फिर भी बिना समुचित कारण के अंडे के बराबर के एक छोटे गोले से एक विशाल हरे भरे पेड़ का इस तरह जलने लग जाना भी कोई कम भय पैदा करने वाली बात न थी। सब लोग डर के साथ उस तरफ देख रहे थे कि अचानक उस बोलने वाले की आवाज ने पुनः सब का ध्यान अपनी तरफ खींचा वह कह रहा था—

"आप लोगों ने एक छोटे से गोले की करामात देखी! इस तरह के और इससे कई गुना बड़े गोले सैकड़ों और हजारों की तायदाद में हम तैयार कर सकते हैं और उनकी मदद से क्या किया जा सकता है यह आप खुद हो सोच सकते हैं।"

सुनने वालों के उत्साह का पारावार न था, लोग मतवाले से हो गये थे मगर बोलने वाले के एक इशारे ने उन्हें शान्त किया। वह कहने लगा—

"ऐसे ऐसे गोले तैयार करने के लिये हम लोगों ने इसी देश में एक कारखाना बना लिया है जहाँ ये अनगिनत तैयार हो सकते हैं। अब हमें जरूरत है ऐसे कार्यकर्ताओं की जो जान का डर छोड़ कर इन गोलों को इस्तेमाल करने को तैयार हो जायँ। क्या आप लोग इसके लिये तैयार हैं?"

"तैयार हैं ! तैयार हैं !!" की आवाज से जंगल गूंज उठा। उसने पुनः कहा—

"मुझे आप लोगों का उत्साह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई, मगर इस काम के लिये बहुत ज्यादा आदमियों की जरूरत है। कम से कम दस हजार आदमी हुए बिना संगठित रूप से कोई अच्छा काम नहीं हो सकता। आज आप लोगों को बुला कर मैं यही आदेश देना चाहता हूं कि आप खूब ढेर से कार्यकर्ता तैयार कीजिए। मैं खूब जानता हूं कि इस समय देश में लाख लाख नवयुवकों का खून जोश मार रहा है मगर वे इस जोश के निकालने का कोई रास्ता नहीं पा रहे हैं। रास्ता मैंने दिखा दिया, ऐसे नवयुवकों को खोज लाना अब आप लोगों का काम है। जिस दिन दस हजार ऐसे नवयुवक हमें मिल जायंगे जो देश के लिये सहर्ष अपना प्राण देने को तैयार हों उसी दिन हम संसार की सबसे बड़ी शक्ति को पैरों के नीचे रौंदने लायक हो जायंगे। क्या मैं उम्मीद करूं कि देश ऐसे दस हजार नवयुवक दे सकेगा ?"

जंगल की छाती को फाड़ती हुई—"जरूर ! जरूर !!" की आवाज गूंज उठी। उस आदमी ने फिर कहा, "मैं भी यही समझता हूं। आज मैंने आपको दिखा दिया कि अब हम वैसे कमजोर नहीं रहे जैसे कुछ बरस पहिले थे अस्तु अब आपको अधिक हिम्मत और आत्म-विश्वास के साथ काम करना चाहिये। आज के ठीक एक महीने बाद अर्थात् अगली अमावस को पुनः इसी जगह आप लोग इकट्ठे हों। जो नये और विश्वासी साथी आपको मिल सकें उन्हें भी लेते आवें। उस दिन मैं कुछ और वैज्ञानिक अस्त्रों शस्त्रों का नमूना आप लोगों को दिखाऊंगा और साथ ही आप से एक नई प्रतिज्ञा करा कर आपको नये युद्ध का सैनिक बनाऊंगा। आज बस इतने ही के लिये आप लोग बुलाए गये थे।"

कहने वाला चुप हो गया, 'भारत माता की जय' का घोर शब्द एक बार फिर गूंज उठा, और तब शान्ति हो गई। वक्ता के एक इशारे पर सब लोग उठ खड़े हुए और एक एक दो दो करके अलग अलग पगडंडियों की

राह जंगल के बाहर होने लगे । वह टेबुल खोपड़ी महिष-मुन्ड आदि न जाने कहां गायब हो गये । वे तीनों नकाबपोश भी न जाने किधर गुम हो गये । कुछ देर के बाद ऐसा मालूम होने लगा मानों वहां कभी कोई रहा ही नहीं या बरसों से उस जंगल ने किसी मनुष्य की शकल भी नहीं देखी थी, हां केवल वह सुलगता हुआ पेड़ अपनी कहानी अब भी कह रहा था ।

(२)

एक सुनसान सड़क पर से जो नैपाल और अंगरेजी भारत की सीमा पर पड़ती है, एक अंगरेजी रिसाला जा रहा है ।

रिसाला न कह कर इसे एक छोटी टुकड़ी कहना ठीक होगा । इसमें आगे आगे लगभग दो सौ पैदल सिपाही, उनके पीछे चार तोपों का एक तोपखाना, और उसके पीछे लगभग एक सौ के घुड़सवार हैं । अफसर इत्यादि कायदे के साथ हैं और पूरे मिलिटरी ढंग से कूच हो रहा है । नैपाल के महाराज किसी कारण से भारत की सीमा पर आ रहे हैं, उन्हीं की अगवानी के लिये यह टुकड़ी जा रही और आज सन्ध्या से पहिले ही अपने ठिकाने पर पहुंच जायगी जिसमें कल महाराज के आने के वक्त से तैयार रहे । कई अन्य छोटे बड़े सरकारी अफसर दूसरे रास्ते से वहाँ पहुंच चुके हैं और स्वयम् प्रान्त के लाट साहब आज शाम को पहुंच जायँगे ।

इतनी शान शौकत दिखाने या इस प्रकार नैपाल के महाराज और प्रान्तीय लाट की भेंट होने का वास्तविक कारण क्या है यह तो हम कुछ भी नहीं जानते परन्तु कोई गूढ़ बात अवश्य है इसमें सन्देह नहीं । इस पलटन के आगे जाने वाले कैप्टन मोरलैंड और उनके मातहत अफसर सैंडरसन में इसी सम्बन्ध में धीरे धीरे कुछ बातें होती जा रही हैं । इन्हें पाँच ही सात मील और जाना है इससे कोई विशेष जल्दी न होने के कारण इनके घोड़ों की चाल तेज नहीं है और पलटन मन्द गति से ही चल रही है।

यकायक बातें करना छोड़ कैप्टेन मोरलैंड ने गौर से सामने की तरफ देखा और कहा, "वह क्या है !" सैंडरसन ने भी गौर से सामने देखा और

कहा, "एक गाड़ी और कुछ सवार मालूम होते हैं।" मोरलैंड ने अपनी दूरबीन उठाई और उस तरफ देखने लगे।

जहाँ पर ये लोग थे वहाँ से सड़क आगे की तरफ कुछ ढालुईं थी और काफी दूर तक नीचे ही की तरफ झुकती चली गई थी। दोनों तरफ पेड़ों के भी न होने के कारण यहाँ से बहुत दूर तक का रास्ता साफ दिखाई पड़ रहा था। मोरलैंड ने बड़े गौर से देख कर कहा, "सरकारी खजाने की गाड़ी है और साथ में छः सवार और एक अफसर है, मगर न जाने क्यों ये लोग वहीं रुके हुए हैं।"

मोरलैंड ने सैंडरसन के हाथ में दूरबीन दे दी और उसने भी बहुत गौर से देखा, तब कहा, "जी हाँ, यही बात है, मगर वहां आगे की तरफ जहाँ सड़क पहाड़ के बगल से घूमती है दो सवार और हैं जो इसी तरफ देख रहे हैं बल्कि उनमें से एक के हाथ में दूरबीन भी है। उन पर शायद आपने गौर नहीं किया?" "नहीं तो" कह मोरलैंड ने फिर दूरबीन पकड़ी और देख कर कहा, "हाँ, ठीक तो है, मगर वे लोग हमारी तरफ के नहीं हैं। यद्यपि उनकी पोशाक फौजी ही मालूम पड़ती है फिर भी वे किसी दूसरी जगह के जान पड़ते हैं। मगर हम लोगों को देख कर तो वे जंगल में घुस चले!"

ये लोग बातें भी करते जाते थे और चलते भी जाते थे। लगभग एक घड़ी के बाद उस जगह पहुँच गये जहाँ वह गाड़ी और सवार खड़े थे। सचमुच सरकारी खजाने की एक गाड़ी और उसके साथ सात सवार थे। इस पलटन को आते देख उन छहों सिपाहियों का अफसर इधर ही बढ़ आया और मोरलैंड को सलाम कर के बोला, "आप लोग बड़े मौके पर आ गये नहीं तो आज सरकारी खजाना जरूर लुट जाता!!"

मोरलैंड०। क्यों सो क्यों और बात क्या है? आप लोग कहाँ जा रहे थे, और देर से इसी जगह क्यों खड़े हैं?

अफसर०। मैं यह खजाना लेकर 'त्रिपन-कूट' के सरकारी खजाने में

दाखिल करने जा रहा था। यहां से जब लगभग आध मील ऊपर पहुंचा हूंगा, मेरे घोड़े के सामने एक तीर आकर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बंधा हुआ था। मैंने तीर से खोल कर उस पुर्जे को पढ़ा तो उसमें यह लिखा पाया, "खजाने की गाड़ी यहीं छोड़ कर तुम लोग फौरन पीछे लौट जाओ नहीं तो एक आदमी भी जीता बचने न पायेगा।' मैं इस धमकी की कोई परवाह न कर बराबर बढ़ता चला गया मगर जब यहाँ पहुँचा तो दूसरा पुर्जा उसी तरह का मिला जिसमें लिखा था—"यह न समझो कि तुम लोग सात आदमी हो और इस तरह हमारे हुक्म को काट कर जा सकते हो ! हम पुनः हुक्म देते हैं कि अभी जहां हो वहीं खजाना छोड़ कर फौरन पीछे लौट जाओ अगर अब एक कदम भी आगे रखा तो तुम लोगों की बोटी बोटी का पता न लगेगा।" यह पुर्जा पा कर और यह सोच कर कि शायद हमला करने वाले बहुत ज्यादा आदमी हैं और आगे बढ़ने से सरकारी खजाने पर जोखिम आ जाय, मैं रुक कर सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये कि आपकी टुकड़ी दिखाई पड़ी और मैं इस लिये रुका रह गया कि आप-लोग भी पहुंच जांय तो आपके साथ ही आगे बढ़ें।"

कप्तान मोरलैंड के मुँह पर हँसी दिखाई पड़ गई, मानों उनके मन में यह बात दौड़ गई कि हिन्दुस्तानी भी कैसे डरपोक होते हैं ! एक जरा से पुरजे पर डर कर ये सात सात जवान खड़े हैं और यह हिम्मत नहीं पड़ती कि आगे बढ़ें !—मगर उन्होंने तुरत ही अपने भाव को छिपा कर पूछा, "क्या आपको मालूम है कि इस गाड़ी में कितना रुपया है ?" अफसर ने जवाब दिया, "मैं ठीक ठीक तो नहीं कह सकता पर सुनता हूं कि सोलह लाख रुपए की अशर्फियां हैं।"

"सोलह लाख !!" ताज्जुब के साथ यह कहते हुए मोरलैंड के चेहरे पर बल पड़ गये। उन्होंने गौर के साथ कुछ सोचा और तब कहा, "अच्छा आप मेरी फौज के पीछे पीछे चले आवें, मैं आपको 'त्रिपन-कूट' छोड़ दूंगा।"

फौजी सलाम कर उस अफसर ने गाड़ी एक बगल कर दी और मोर-

लैंड अपने सिपाहियों को लिये आगे बढ़ा। जब सब फौज आगे हो गई तो खजाने की गाड़ी उसके पीछे पीछे चलने लगी और पुनः सफर शुरू हुआ।

मगर मुश्किल से ये लोग सौ गज आगे गये होंगे कि यकायक मोरलैंड के घोड़े के सामने एक तीर आकर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बंधा हुआ था। उन्होंने चिहुंक कर घोड़ा रोका और एक सिपाही को इशारा किया जो वह तीर उठा कर उनके पास लाया। उन्होंने पुर्जा खोला और पढ़ा, लाल रंग के कागज पर लाल ही स्याही में यह लिखा हुआ था—

"इस खजाने पर हमारी आँख लग चुकी है और इसे हम लोग किसी तरह नहीं छोड़ेंगे, अगर अपनी जान की खैर चाहते हो तो खजाने की गाड़ी छोड़ कर तुम लोग आगे बढ़ जाओ नहीं फजूल ही सबके सब मारे जाओगे।"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था केवल लाल रंग की एक बड़ी बूंद का सा निशान बना हुआ था जिसके बीचोबीच में चार उंगलियों का सुफेद निशान दिख रहा था।

पुर्जा पढ़ कर मोरलैंड ने गुस्से से उस तीर को जमीन पर पटक दिया और पुर्जे को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। इसके बाद क्रोध से मोछें चबाते हुए उस फौजी जवान ने अपनी पिस्तौल कमर से निकाली और हवा में छोड़ी, मानों उस अदृश्य व्यक्ति को जिसने यह संवाद भेजा था खबर कर दी कि वे मोर्चा लेने को तैयार हैं और खजाना कभी न देंगे। कड़कती हुई आवाज में मोरलैंड ने कोई हुक्म दिया जिसके साथ ही सब पैदल और घुड़सवार फौज ने बन्दूकें सीधी कीं और उनमें टोटे भर लिये। दूसरा हुक्म हुआ और पुनः डबल मार्च से कूच शुरू हो गया। भला एक फौजी अफसर जिसके साथ तीन सौ पैदल और घुड़सवार फौज के साथ साथ एक तोपखाना भी हो ऐसी मामूली धमकियों की क्या परवाह कर सकता था!!

यकायक दूर से बन्दूक छूटने की भारी आवाज मोरलैंड के कान में आई। वे उस पर गौर कर ही रहे थे कि सनसनाता हुआ एक तीर कहीं से आया और उनके घोड़े के पास ही के एक पेड़ के तने में घुस कर कांपता

हुआ रुक गया। एक सिपाही ने उसे निकाल कर मोरलैंड के हाथ में दिया मगर उन्होंने गुस्से से उस सवार को अपनी जगह जाने का हुक्म दिया और पुर्जे को बिना पढ़े तीर को तोड़ कर सड़क पर फेंक दिया, इसके बाद घोड़ा बढ़ाया।

मगर अभी मारलैंड के घोड़े ने मुश्किल से दो कदम आगे रक्खे होंगे कि यकायक कहीं से आकर शीशे का एक गोला बीच सड़क पर गिरा और गिरते ही फूट गया। एक हरी बिजली सी लोगों की निगाहों के सामने चमक गई और दूसरे ही क्षण में डरे हुए सिपाहियों ने देखा कि कैप्टन मोरलैंड और उनके घोड़े का कहीं पता भी नहीं है सिर्फ कुछ अधजली हड्डियों के टुकड़े सड़क पर पड़े हैं और अजीब तरह की चिरायन्ध सी उठ रही है।

सिपाहियों के कलेजे कांप गये और पैर मन मन भर के हो गये। बमों और तोप के गोलों से तो वे लोग अच्छी तरह परिचित थे मगर इस तरह के गजब ढहाने वाले शीशे के गोले का ख्याल स्वप्न में भी नहीं हो सकता था। मगर उन्हें कुछ सोचने का भी मौका न मिला और सैंडरसन ने आगे बढ़ कर कप्तान मोरलैंड की जगह लेते हुए कड़क कर कहा, "फायर!"

एक साथ दो सौ बन्दूकों की आवाज से कानों के परदे फट गये। घोड़े चिग्घाड़ उठे, जंगल के परिन्दे और दरिन्दे जानवर एक दम चौंक पड़े। कितने ही पेड़ों के तने चलनी हो गये और धूएँ से आसमान भर गया। थोड़ी देर में धूँआ साफ हो गया और सैंडरसन ने 'मार्च' का हुक्म दिया, साथ ही सिपाहियों ने पुनः बन्दूकें भर लीं।

मुश्किल से फौज ने चार पांच कदम आगे रक्खे होंगे कि कहीं से उसी तरह का एक दूसरा गोला आया और सैन्डरसन के घोड़े के पीछे जमीन पर गिर कर फटा। यह पहिले से दूना बड़ा और शायद आठगुना भयानक था। इसकी हरी चमक से चौंधियाए हुए सिपाहियों की आँखें जब खुलीं तो देखा गया कि सैंडरसन के साथ ही साथ आगे की चार पंक्ति सिपाहियों की भी गायब है। केवल अधजले हड्डियों और कपड़ों के कुछ टुकड़े

जमीन पर इधर उधर पड़े हुए हैं।

डर के मारे सिपाहियों की बुरी हालत थी। अगर दुश्मन सामने होता और बन्दूक तलवार वगैरह मामूली हथियारों से लड़ता तो वे वार का बदला वार से चुकाते, पर इस अदृश्य दुश्मन और भयानक गोलों का क्या जवाब दिया जाय! फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी और पैदल तथा घुड़-सवार फौज ने दनादन ऊपर नीचे अगल बगल चारो तरफ फायर करने शुरू कर दिये। तोपखाने के अफसर ने भी हुकूमत अपने हाथ में ली और तोपों में गोले भरे, मगर छोड़ने की नौबत न आ सकी, एक बड़ा सा शीशे का गोला चारो तोपों के बीच में आकर गिरा और दूसरे सायत में तोप और तोपखाना सभी गायब हो गया। उधर पैदल और घुड़सवार फौज में चार पांच गोले आकर गिरे जिन्होंने और भी तहलका मचा दिया और देखते देखते आधे से ऊपर सिपाही मारे गये, मारे गये कैसे कहें, एक दम दुनिया से गायब ही हो गये। बचे हुए सिपाहियों ने तो अब बिल्कुल ही हिम्मत हार दी और जिसको जिधर रास्ता मिला वह उधर ही को भाग खड़ा हुआ। कुछ ही देर बाद वहां की जमीन बिल्कुल साफ हो गई। लेकिन वह खजाने की गाड़ी और उसके चारो खच्चर अछूते बच गये थे। इस विचित्र लड़ाई की यह भी विशेषता थी कि जख्मी कोई भी न था और न कोई मुर्दा ही नजर आता था। जिस जिस को उस हरी बिजली ने छूआ वह एक दम गायब ही हो गया था तथा जिसे उसने नहीं छूआ था वह बेदाग बच गया था और इस समय अपने प्राण बचाने वास्ते कहीं भाग रहा था।

खजाने की गाड़ी के खच्चर भी भागने के लिये जोर कर रहे थे और आखिर उस भारी गाड़ी को लिये एक तरफ को तेजी से दौड़े मगर वे कहीं जा न सके। दूर से तेजी के साथ आते हुए दो घुड़सवारों ने वहां पहुंच कर उन्हें फुर्ती से रोका, एक ने उनकी लगामें पकड़ कर खींचीं और दूसरा अपने घोड़े से कूद कर हांकने वाले की जगह पर जा बैठा। गाड़ी रुक गई।

दूसरा सवार घोड़े से उतरा। उसके हाथ में लाल कागज का एक टुकड़ा था जिसे उसने एक पेड़ के तने पर रक्खा और दूसरे हाथ से पीठ पर से एक तीर निकाल कर उसके ऊपर से पेड़ में गाड़ दिया। इसके बाद उसने दूसरे सवार के घोड़ की लगाम पकड़ ली और अपने घोड़े पर सवार हो गया। खच्चरों पर चाबुक पड़ी और खजाने की गाड़ी घड़घड़ करती हुई तेजी से रवाना हुई, बगल में वह दूसरा सवार जाने लगा। कुछ ही दूर जाते जाते दोनों आंखों की ओट हो गये और उस जगह मौत का सन्नाटा छा गया।

(२)

रक्साल से लगभग पचास मील ऊपर चढ़ कर पड़ने वाले पहाड़ी मैदान में जहां से हिमगिरि की बर्फीली चोटियों की छटा बड़ी ही मनोहर मालूम होती है एक बड़ा लश्कर पड़ा हुआ है। यहाँ से नैपाल राज्य की सीमा बहुत दूर नहीं है और काठमांडू का रास्ता भी इसी तरफ से गुजरता है। यह लश्कर भारत सरकार का है जिसके कई ऊँचे अफसर इस समय यहां दिखाई पड़ रहे हैं। कई नैपाली सरदार और फौजी अफसर भी इन्हीं में मिले जुले दिखलाई पड़ रहे हैं।

एक बड़े खेमे के आगे पेड़ों की छाया के नीचे एक बड़ा टेबुल और बहुत सी कुरसियां रक्खी हैं जिन पर कई अंगरेज और नैपाली अफसर बैठे हैं। इन्हीं में लाट साहब के सेक्रेटरी मिस्टर फर्गूसन भी हैं। आइये हम लोग इन्हीं के पास चलें और सुनें ये लोग क्या बातें कर रहे हैं।

फर्गूसन०। कप्तान बर्न, ताज्जुब की बात है कि हमारी फौजी टुकड़ी अभी तक यहां नहीं पहुंची, उसे दोपहर तक ही पहुंच जाना चाहिये था!

बर्न०। मैं खुद इसी बात पर ताज्जुब कर रहा हूं। न मालूम क्या बात है। मोरलैंड तो वक्त का बड़ा पाबन्द अफसर है, उसका इस तरह देर करना ताज्जुब में डालता है।

फर्गूसन०। (घड़ी देख कर) दो बज रहा है, ढाई घन्टे में लाट साहब

आ पहुँचेंगे। महाराजा साहेब भी शायद आते ही होंगे। ये सिपाही नहीं आये तो बड़ा बुरा होगा। (एक नैपाली सरदार की तरफ देख कर) कहिये किशनसिंहजी साहब ! आपकी भी तो कुछ फौज आने वाली थी ?

किशनसिंह०। जी हां और मैं भी ताज्जुब कर रहा हूं कि वह क्यों अब तक नहीं आई ? महाराजा बहादुर ने पाँच बजे आने का वक्त दिया था, उनके आने के पहिले अगर फौज नहीं पहुँची तो मैं कहीं का न रहूंगा !

फर्गूसन०। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या मामला है ?

किशनसिंह०। (अपने पीछे बैठे एक अफसर की तरफ देख कर) रामसिंह, दो सवार दौड़ाओ, जा कर खबर लावें कि हमारी फौज कहां है ? जहां भी वह हो वहाँ से दौड़ा दौड़ आये !

रामसिंह उठा और सलाम कर चला गया। फर्गूसन ने यह देख अपने पीछे खड़े एक अफसर की तरफ देखा और वह भी मतलब समझ तुरत उठ कर चलता हुआ। इधर ये लोग आपस में फिर बातें करने लगे।

यकायक दूर कुछ आदमियों के एक छोटे गिरोह पर इन लोगों की निगाह पड़ी जो इधर ही को आ रहा था। पहिले तो इन्हें खयाल हुआ कि यह इन्हीं की फौज है मगर फिर तुरत ही विश्वास करना पड़ा कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं। थोड़ी देर में वे पास आ गये और इस लश्कर के बाहरी हिस्से पर पहुँच कर रुक गये। केवल एक सवार जो कोई अंग्रेज मालूम होता था आगे बढ़ा और कुछ ही देर में जहां ये लोग बैठे हुए थे वहां आकर घोड़े से उतर पड़ा। अब मिस्टर फर्गूसन ने पहिचाना कि यह उनके दोस्त मिस्टर केमिल का भतीजा एडवर्ड है। उसे पहिचानते ही उन्होंने कहा, "हलो एडवर्ड ! तुम यहां कहां !!"

सभों ने एडवर्ड से हाथ मिलाया और वह थके हुओं की तरह एक कुर्सी पर गिर गया। उसके चेहरे से इतनी गहरी परेशानी और उदासी टपक रही थी कि सभों को विश्वास हो गया कि उस पर जरूर कोई दुर्घटना

घटी है। सब लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखने लगे। आखिर फर्ग़ूसन ने पूछा--

फर्ग़ूसन०। एडवर्ड, तुम बड़े ही सुस्त और उदास मालूम हो रहे हो! आखिर मामला क्या है? तुम तो किसी मुहिम पर न गये थे?

एडवर्ड०। जी हां, मगर हमें कोई सफलता न मिली और हम लोगों को बुरी तरह जक खा कर लौटना पड़ा।

फर्ग़ूसन०। जक खा कर लौटना पड़ा! सो क्या? तुम्हारे साथ तो सब तरह का सामान और एक एरोप्लेन भी था?

एडवर्ड०। वह सब लुट गया।

फर्ग़ूसन०। लुट गया! सो कैसे? सब हाल मुझसे खुलासा कहो और यह भी बताओ कि पंडित गोपालशंकर कहां हैं?

एडवर्ड०। वे वापस नहीं लौटे, मैंने बहुत कुछ समझाया परन्तु वे किसी तरह नहीं माने, मुझे सब लश्कर को ले पीछे लौटने का हुक्म दिया और आप पैदल ही कहीं चले गये।

फर्ग़ूसन०। अकेले ही! खैर तुम सब हाल मुझे पूरा सुनाओ।

एडवर्ड ने वह सब हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं पूरा इन सभों को कह सुनाया और अन्त में कहा, "मेरे पास सिर्फ दो दिन की रसद रह गई थी जिससे बड़ी मुश्किल से काम चलाता हुआ आज चौथे दिन यहां पहुँचा हूं। सारा लश्कर अधमूआ हो रहा है। बारे किसी की जान नहीं गई, मगर पंडित गोपालशंकर का कहीं पता नहीं है। उनको मदद पहुँचाने की शीघ्र ही कोशिश होनी चाहिये नहीं तो वे बड़े खतरे में पड़ेंगे।"

फर्ग़ूसन०। सो तो हुई है मगर मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी कौन सी कार्रवाई की गई जिससे तुम्हारा पूरा लश्कर बेहोश हो गया और किसी को तनोबदन की सुध न रही! इसमें तो शक ही नहीं कि यह रक्त-मंडल वालों की कार्रवाई है मगर उन्होंने कौन सी तर्कीब की यह कुछ मालूम नहीं होता।

एडवर्ड०। हम लोगों ने भी बहुत सोचा विचारा मगर कुछ समझ में न आया और इसी का पता लगाने पंडितजी गये भी हैं।

फर्गूसन कुछ कहना चाहते थे कि यकायक बहुत से घोड़ों के टापों की आवाजों ने उन्हें चौंका दिया और वे उधर की तरफ देखने लगे जिधर से लगभग पचास साठ सवार तेजी से इन्हीं की तरफ आ रहे थे! पोशाक और रंग ढंग से अंगरेजी फौज के ही सिपाही मालूम होते थे मगर इस समय ये सब इस तरह बेतरतीब दौड़े चले आ रहे थे मानों कहीं लड़ाई से भाग कर आ रहे हों। थोड़ी ही देर में यह गरोह भी पास आकर रुक गया और उनमें से दो आदमी जिनमें से एक वह नौजवान अफसर था जो फर्गूसन के हुक्म पर अपनी फौज का पता लगाने गया था, आगे बढ़ कर इन लोगों के पास पहुंचे।

फर्गूसन ने ताज्जुब की निगाह उनकी तरफ उठाई। नौजवान ने घबड़ाए हुए स्वर में कहा, "गजब हो गया! हमारी फौज तो तहस नहस हो गई!! किसी दुश्मन ने उस पर हमला करके आधे से ज्यादा आदमियों को मार डाला, बाकी जो बचे वे भाग गये। उनमें से कुछ मिले जिहें मैं साथ ले आया हूं। चारो तोपें भी बरबाद हो गईं और वह खजाने की गाड़ी भी लुट गई जो त्रिपन-कूट ले जाई जा रही थी!!"

यह सुन कर फर्गूसन इस प्रकार चौंक पड़े मानों उन्हें किसी ने तीर मार दिया हो। वे एकक़दम उठ कर खड़े हो गये और चिल्ला कर बोले, "हैं, सरकारी खजाना लूट लिया गया और अंगरेजी फौज बर्बाद हो गई! यह क्या मैं ठीक सुन रहा हूं!!"

नौजवान बोला, "मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि यह बिल्कुल ठीक है। जो कुछ मैं इन सिपाहियों की बातों से मतलब लगा सका हूं, वह यह है कि हमारी फौज इधर चली आ रही थी कि रास्ते मे वह खजाने की गाड़ी उन्हें मिली जो रुकी हुई थी। उसके साथ जो सिपाही थे उनके अफसर ने कप्तान मोरलैंड से कहा कि किसी ने उन्हें खजाना वहीं छोड़

कर चले जाने को कहा था इसी से वे वहाँ रुक कर सोच रहे थे कि अब क्या करना चाहिये। मोरलैंड ने उन लोगों को अपने साथ ले लिया मगर थोड़ा ही आगे बढ़ने पर उन्हें तीर में बंधा एक पुर्जा मिला जिसमें शायद वही बात फिर लिखी हुई थी। उन्होंने अवश्य ही उस पर कोई खयाल नहीं किया और आगे बढ़े मगर उसी समय कुछ शीशे के गोले आ कर उस फौज पर गिरे जिनके गिरते ही आग लग गई और हमारी आधी फौज और पूरा तोपखाना देखते देखते उड़ गया। बस इतनी ही तो बात है।"

यह विचित्र समाचार सुन फर्गूसन का तो वह हाल हो गया कि वे यह भी भूल गये कि जागते हैं कि सो रहे हैं। उन्होंने गुस्से से टेबुल पर हाथ पटक कर कहा, "ये झूठी बातें! कूड़े का ढेर! यह क्या कभी मुमकिन है! दो चार शीशे के गोलों से हमारी आर्मी क्या नष्ट हो सकती है! ऐसा कहने वाला पागल है!"

वहाँ मौजूद बाकी लोगों को भी इस बात पर विश्वास नहीं होता था पर जब उस फौजी टुकड़ी में के कई आदमियों को बुला कर पूछा गया और सभी के मुंह से एक ही बात निकली तो सभों को विश्वास करना ही पड़ा।

इस ताज्जुब की बात पर बड़ी ही गुरचूं गुरचूं मची और सभों में बड़ी तेजी से बहस होने लगी कि आखिर यह क्या बात है। यह बहस न जाने कब तक चलती रहती अगर एक सवार तेजी से आकर वहां न पहुंचता। वह सवार नैपाल राज्य का था जिसने सलाम कर किशनसिंह के हाथ में एक चीठी दी और पीछे हट गया। किशनसिंह ने चीठी खोल कर पढ़ी और तब फर्गूसन से कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि महाराज साहब की तबीयत यकायक खराब हो गई है और वे तशरीफ नहीं ला रहे हैं। डाक्टरों ने एक हफ्ते तक उन्हें किसी प्रकार की भी मेहनत करने से मना किया है।"

फर्गूसन ने यह सुन तेजी से पूछा, "सो क्या? महाराजा साहब को

क्या हो गया ? खैर तो है ?" किशनसिंह ने जवाब दिया, "कोई डर की बात तो नहीं कही गई है मगर खुलासा कोई हाल भी नहीं दिया है। कोई दूसरा खत आवे तो मालूम हो।"

इतने ही में वह सवार पुनः आगे बढ़ा और एक लाल कागज का टुकड़ा आगे बढ़ता हुआ बोला, "मैं आ रहा था तो रास्ते में एक जगह सड़क पर ऐसा मालूम पड़ा मानों कुछ लड़ाई झगड़ा या खून खराबा हुआ हो। उसी जगह एक पेड़ के साथ तीर से दबा हुआ यह कागज दिखा जिसे मैं उठा लाया हूं।"

किशनसिंह ने वह कागज खोल पढ़ा। पढ़ते ही वे इस तरह पर चौंक उठे मानों उन्हें बिजली लगी हो, इसके बाद वह कागज फर्गूसन की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "यह तो बड़े ताज्जुब की बात है !!"

फर्गूसन ने वह कागज देखा और पढ़ा। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा होने के कारण वह मुश्किल से पढ़ा जाता था फिर भी कोशिश करके उसे पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"रक्त-मंडल के 'भयानक-चार' का हुक्म न मानने की यही सजा होती है। आगे से लोग होशियार रहें।

"अगर मिस्टर फर्गूसन को यह कागज मिले तो वे भी होशियार हो जांय और समझ लें कि अब जल्दी ही यहां की हुकूमत दूसरे हाथों में जाने वाली है। उन्हें चाहिये कि अपना डेरा खेमा सरहद से उठा ले जांय। अब एक महीने तक महाराज और लाट लाहब में मुलाकात नहीं हो सकती। अगर वे अपना डेरा उठा नहीं लेंगे तो उन सब लोगों की भी वही हालत होगी जो इस फौजकी हुई है।"

इसके नीचे खून की एक बड़ी सी बूंद की तरह का दाग था जिसके बीचोबीच में चार उंगलियों का सुफेद दाग नजर आ रहा था।

फर्गूसन साहब के माथे पर बहुत से बल पड़ गये। वे क्रोध में आ कर कुछ कहना ही चाहते थे कि यकायक कैंप के तार-घर का पियन तार का

एक लिफाफा लिये हुए आ पहुंचा। सलाम कर उसने लिफाफा फर्गूसन के हाथ में दिया जिन्होंने आवेश से कांपते हाथों से उसे लिया और खोल कर पढ़ा, यह तार था :—

"रेलवे लाइन बहुत दूर तक टूट जाने के कारण लाट साहब की स्पेशल आ नहीं सकती। वे पीछे लौट रहे हैं। मुलाकात के लिए दूसरा दिन ठीक करके बतला दिया जायगा। कैम्प तोड़ दो।

—डगलस।"

डगलस साहब प्रांत के लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। फर्गूसन ने तार भेजे जाने का मुकाम देखा और समझ लिया कि यहां से लगभग सौ मील दूर यह घटना हुई है। उन्हें रक्त-मंडल के भयानक-चार की चीठी का वह जुमला बार बार याद आने लगा, "अब एक महीने तक महाराज और लाट साहब में मुलाकात नहीं हो सकती—"

कुछ देर तक वे चुप रहे, इसके बाद कांपते स्वर में उन्होंने अपने चारो तरफ खड़े उत्सुक अफसरों से टूटे फूटे शब्दों में कहा, "रेलवे लाइन टूट गई, लाट साहब वापस चले गये हैं, कैम्प तोड़ देने का हुक्म हुआ है।"

* पहिला भाग समाप्त *

१९७० ई०]—ग्यारहवां संस्करण—[११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥



रक्त-मंडल

दूसरा भाग

रण-ताण्डव

[१]

"खबरदार बस आगे कदम न रखना !"

"हट रास्ते से ! तू मुझे रोकने वाला कौन ?"

"मैं ? तेरा यम !!"

कहने वाले का हाथ बढ़ा और कोई ठंढी गोल चीज सामने वाले के माथे से छू गई ।

अमावस्या की काली रात को घनघोर बादलों ने और भी काला कर रक्खा है । ठंढी हवा सांय सांय चल रही है जो इस वक्त मैदान में निकलने वाले के बदन की हड्डियां तक कंपा देती है । कभी कभी पानी की कोई कोई बूंद गिर जाती है और यह बता देती है कि बहुत जल्दी ही पानी बरसने वाला है । अंधेरे में चारों तरफ फैले हुए और मरे हाथियों की तरह नजर आने वाले पत्थरों के ढोंके बता रहे हैं कि यह किसी पहाड़ी की तलहटी है जहां पर वे दोनों आदमी जिनकी छोटी मगर मतलब से भरी बात ऊपर लिखी गई खड़े हैं ।

अगर दिन का समय होता या चांदनी रात ही होती तो हम बत

एक लिफाफा लिये हुए आ पहुंचा। सलाम कर उसने लिफाफा फर्गूसन के हाथ में दिया जिन्होंने आवेश से कांपते हाथों से उसे लिया और खोल कर पढ़ा, यह तार था :—

"रेलवे लाइन बहुत दूर तक टूट जाने के कारण लाट साहब की स्पेशल आ नहीं सकती। वे पीछे लौट रहे हैं। मुलाकात के लिए दूसरा दिन ठीक करके बतला दिया जायगा। कैम्प तोड़ दो।

—डगलस।"

डगलस साहब प्रांत के लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। फर्गूसन ने तार भेजे जाने का मुकाम देखा और समझ लिया कि यहां से लगभग सौ मील दूर यह घटना हुई है। उन्हें रक्त-मंडल के भयानक-चार की चीठी का वह जुमला बार बार याद आने लगा, "अब एक महीने तक महाराज और लाट साहब में मुलाकात नहीं हो सकती—"

कुछ देर तक वे चुप रहे, इसके बाद कांपते स्वर में उन्होंने अपने चारो तरफ खड़े उत्सुक अफसरों से टूटे फूटे शब्दों में कहा, "रेलवे लाइन टूट गई, लाट साहब वापस चले गये हैं, कैम्प तोड़ देने का हुक्म हुआ है।"

*** पहिला भाग समाप्त ***

१९७० ई०]—ग्यारहवां संस्करण—[११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥



रक्त-मंडल

दूसरा भाग

रण-ताण्डव

[१]

"खबरदार बस आगे कदम न रखना !"

"हट रास्ते से ! तू मुझे रोकने वाला कौन ?"

"मैं ? तेरा यम !!"

कहने वाले का हाथ बढ़ा और कोई ठंढी गोल चीज सामने वाले के माथे से छू गई।

अमावस्या की काली रात को घनघोर बादलों ने और भी काला कर रक्खा है। ठंढी हवा सांय सांय चल रही है जो इस वक्त मैदान में निकलने वाले के बदन की हड्डियां तक कंपा देती है। कभी कभी पानी की कोई कोई बूंद गिर जाती है और यह बता देती है कि बहुत जल्दी ही पानी बरसने वाला है। अंधेरे में चारों तरफ फैले हुए और मरे हाथियों की तरह नजर आने वाले पत्थरों के ढोंके बता रहे हैं कि यह किसी पहाड़ी की तलहटी है जहां पर वे दोनों आदमी जिनकी छोटी मगर मतलब से भरी बात ऊपर लिखी गई खड़े हैं।

अगर दिन का समय होता या चांदनी रात ही होती तो हम बत

सकते थे कि इन दोनों आदमियों का नखसिख कैसा है या किस तरह की पौशाक से दोनों ने अपने को ढांका हुआ है परन्तु इस समय इतना घोर अंधकार है कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता। दोनों आदमियों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जो कुछ जाना जा सकता है वह उनकी आवाज से। पहिली बात कहने वाले की बोली बता रही थी कि वह कोई अधेड़ उम्र का आदमी है, और दूसरे आदमी की आवाज उसके नौजवान होने का परिचय दे रही थी, बस इससे ज्यादा इनके विषय में और कुछ भी कहने की इजाजत अंधकार हमें नहीं देता।

अधेड़ के हाथ की काली चीज के माथे से लगते ही नौजवान ने जान लिया कि यह पिस्तौल है। यह समझते ही उसका हाथ भी कपड़ों के अन्दर गया मगर तुरत ही अधेड़ ने कड़क कर कहा, "बस खबरदार! जरा सा भी जुम्बिश खाई तो भेजे के टुकड़े टुकड़े उड़ जाएंगे! चुपचाप खड़ा रह और बता कि तू कौन है और यहां क्यों आया है?"

नौजवान काठ के पुतले की तरह खड़ा हो गया। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा इसके बाद फिर अधेड़ ने डपट कर पूछा, "चुप क्यों है? बोलता क्यों नहीं!!"

नौजवान फिर भी चुप रहा। अधेड़ एक सायत तक उसके बोलने की राह देखने बाद बोला, "अगर अब भी नहीं बोलता है तो मैं लिबलिबी दबाता हूं!!"

नौजवान ने अब धीरे से कहा, "मैं क्या बताऊं! मैं जो कुछ कहूंगा क्या उस पर आपको विश्वास होगा?"

इस बार बोलने वाले की आवाज कुछ कांपती हुई सी और बहुत ही धीमी थी। मालूम पड़ता था कि वह या तो बहुत ही डर गया है और या फिर अपनी आवाज को जान बूझ कर बिगाड़ के बोल रहा है। अधेड ने उसकी बात सुन कर कहा, "खैर तू कुछ भी बता तो सही कि कौन है और किस लिए यहां आया है?"

नौजवान कुछ रुक कर बोला, "मैं सत्रहवीं पलटन का सिपाही हूं। इधर किसी काम से आया था।"

अधेड़०। इस आधी रात के वक्त तुझे यहां कौन काम था ?

नौजवान०। क्या सच्ची बात कह देने से आप मुझे वापस लौट जाने या आगे ही बढ़ जाने देंगे ?

अधेड़०। अगर मेरे सवालों का संतोषप्रद उत्तर मिला तो मैं तुझे पीछे लौट जाने दूंगा।

नौजवान०। अच्छा पूछिये।

अधेड़०। जब तुम हमारी ही पलटन के एक सिपाही हो तो तुम्हें आज का इशारा क्यों नहीं मालूम है ! मेरे पूछने पर तुम उसे क्यों नहीं बता सके ?

नौजवान०। मैं छुट्टी पर था, थोड़ी ही देर हुई लौटा हूं इसी से जान न सका।

अधेड़०। किसी से पूछ लेते !

नौजवान चुप रहा। अधेड़ ने फिर पूछा, "तुम जब हमारे ही सिपाही हो तो जरूर यह भी जानते होगे कि आज कल इस किले में कितना कड़ा हुक्म है कि जो अजनबी रात आठ बजे के बाद दिखाई पड़े वह फौरन गिरफ्तार कर लिया जाय और अगर भागने का इरादा करे तो उसे तुरत गोली मार दी जाय। क्या तुम इस बात को नहीं जानते थे ?"

नौजवान०। जी हां जानता था।

अधेड़०। तब तुमने बिना इशारा जाने इस आधी रात को इधर आने की हिम्मत क्यों की ?

नौजवान०। अब मैं आप से साफ ही साफ कह दूं ! मैं इतनी दफे इस रास्ते से इस किले के अन्दर बिना रोक टोक के आ चुका हूं कि इस बार भी मैंने सोचा कि कुछ न होगा।

अधेड़० । (ताज्जुब से) क्या तुम कई दफे इसी राह से और इसी तरह छिप के यहां आ चुके हो ?

नौजवान० । जी हां ।

अधेड़० । क्यों, किस काम के लिये ?

नौजवान० । (कुछ हिचकिचाता हुआ) मुझे बताते शर्म मालूम होती है ।

अधेड़० । अगर अपनी जान बचाना चाहते हो तो साफ साफ कह दो ।

नौजवान० । किलेदार की लड़की से मुलाकात करने के लिए ?

अधेड़ के मुंह से ताज्जुब भरा एक "हैं !" निकल गया और कुछ क्षण के लिये वह आत्म-विस्मृत सा हो गया । नौजवान को मौका मिल गया । झटके से उसने एक मजबूत हाथ उस पिस्तौल पर मारा जो मौत की तरह उसके माथे से सटी हुई थी । पिस्तौल छटक के दूर जा गिरी और दूसरे ही क्षण नौजवान की पिस्तौल उस अधेड़ के माथे से सट गई । नौजवान ने डपट कर कहा, "बस अब खबरदार जो जरा भी हाथ पैर हिलाया है !"

सफलता के जोश में इस बार नौजवान की आवाज मामूली से कुछ ज्यादे ज़ोर की और स्वाभाविक हो गई थी । मगर उसका यह नया स्वर कान में जाते ही अधेड़ चौंक पड़ा और बोला, "हैं ! यह मैं किसकी आवाज सुन रहा हूं ! अमरसिंह !!"

नौजवान ने दाँतों तले जीभ दबा ली । अब तक, इतनी बातें कर जाने पर भी, वह अपनी आवाज को इस तरह दबाए और बदले हुए था कि यह अधेड़ मनुष्य उसे पहिचान न सका था, मगर जरा सी ही चूक ने उसका भेद खोल दिया । वह अपनी गलती पर पछताता हुआ चुप खड़ा रहा । अधेड़ ने फिर पूछा, "अमर, तुम यहां कैसे ?"

नौजवान फिर भी चुप रहा । अधेड़ ने बेचैनी से उसका हाथ पकड़ कर कहा, "अमर, तुम चुप क्यों हो ? कुछ बोलते क्यों नहीं ? क्या तुम

समझते हो कि मेरे कलेजे के टुकड़े की आवाज मेरे कानों में जायगी और मैं उसको पहिचान न सकूंगा !!"

अबकी नौजवान को लाचार होकर अपना मुंह खोलना पड़ा उसने दबती ज़ुबान से कहा, "जी हां पिताजी, मैं ही हूं !"

[२]

बाप ने बेटे को पहिचाना, मगर कैसे मौके पर ? जब कि एक जलालाबाद के पास की बड़ी अंगरेजी छावनी सुपौल के छोटे किले के ऊंचे अफसरों की ड्यूटी पर था और दूसरा आधी रात को चोरों की तरह उसी किले में घुस रहा था । फौजी कानून कहता था कि इस चोर का सिर उतार लिया जाय, पितृ-स्नेह कहता था कि यह कलेजे का टुकड़ा जो बरसों से खोया हुआ था फिर कलेजे से लगा लिया जाय !

कुछ देर तक सन्नाटा रहा । इसके बाद सरदार रघुबीरसिंह ने अपने लड़के से कहा, "अमर, सच सच बताओ तुम इस किले में किस लिए आये हो ?"

अमर ने कुछ रुकते हुए जवाब दिया, "यह पता लगाने कि यहां का गोले बारूद का खजाना कहां है ।"

रघुबीर० । यह जान कर तुम क्या करते ?

अमर० । उसमें आग लगा देता ।

रघुबीर० । आग लगा देते !! मगर सो क्यों ?

अमर० । अपने देश की रक्षा के लिए ।

रघुबीर० । देश की रक्षा के लिये ! मेगजीन में आग लगा कर एक क़िला उड़ा देने और हजारों आदमियों की जान लेने तथा देश की रक्षा करने में भला क्या निस्बत !!

अमरसिंह चुप रहा । रघुबीरसिंह ने कुछ देर राह देख फिर पूछा, "अमर, मालूम होता है तुम्हारे सिर पर आज भी वही भूत सवार है जो बरसों पहले चढ़ा था ।"

अमर अब भी चुप रहा। रघुबीरसिंह ने फिर कहा, "अमर, अमर, वोलते क्यों नहीं ? क्या तुम्हें अपने बूढ़े बाप पर कुछ भी दया नहीं आती? क्या तुम इतने बरस के बाद भी अपने बाप को देख कर उससे दूर रहा चाहते हो ?"

अमरसिंह ने कहा, "पिताजी, मैं आप से दूर नहीं हुआ, आप ही ने मुझे दूर कर दिया। आज इतने दिनों के बाद जो आप इस तरह मुझे देख रहे हैं इसके कारण भी आप ही हैं। आप ही ने मुझे घर से निकाल दिया था। तब आज फिर उस बात का अफसोस क्यों कर रहे हैं ?"

रघुवीर०। अमर, अमर ! क्यों पुरानी बातें याद करा कर मुझे चोट पहुंचा रहे हो ! मैंने तुम्हें निकाला था या तुम खुद ही मुझसे दूर हट गये थे ? तुमने बलवाइयों का साथ दिया और ऐसे कामों को करने का मनसूबा बांधा जो हमारे मुल्क को तहस नहस कर देते और जिनके बदले में तुम्हें मौत की सजा मिलती, मगर मैंने तुम्हें बचाया। सिर्फ तुम्हारे लिये मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी और अलग हो गया कि शायद इससे तुम्हें संतोष हो मगर फिर भी वह खफ्त तुम्हारे सिर पर से नहीं उतरा। तुमने एक ऐसा काम किया कि सरकार को तुम्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ लाने वाले को एक लाख रुपया इनाम देने का इश्तिहार करना पड़ा, अर्थात् तुमने बड़े लाट पर बम फेंका। मैंने तुम्हारी हिफाजत की और इस कसूर को भी माफ कर तुम्हें मुल्क के बाहर भाग जाने की सलाह दी मगर तुम न माने और मुझसे अलग हो न जाने कहां चले गये। तुम्हारे गम में बेचारी तुम्हारी मां घुलक घुलक कर मर गई। मालूम नहीं तुम्हें इस बात की खबर लगी या नहीं पर मैंने उम्मीद की थी कि इतने पर तो तुम अपने बेचारे बूढ़े बाप पर तरस खाकर उसके पास लौट आओगे, परन्तु तुमने वह भी न किया। कितने ही बरस बीत गये और मुझे मजबूर हो फिर सरकार की नौकरी करनी पड़ी। इतने दिनों के बाद आज मैं तुम्हें देख रहा हूं मगर किस तरह पर--तुम सरकार के इस किले

में चोरों की तरह घुसते हुए पकड़े गये हो जिसका मैं ही इस समय सब से बड़ा अफसर हूं और आज भी तुम उसी मर्ज के मरीज बने हुए हो ! क्या तुम जानते हो कि इस समय तुम्हारे साथ क्या होना चाहिये ?

अमर० । जानता हूँ, मुझे सुबह होते ही गोली मार दी जानी चाहिए।

रघुबीर० । ठीक है, ओर क्या तुम इसके लिये तैयार हो ?

अमर० । (कलेजे पर हाथ रख कर) पूरी तरह से, खुशी से, भला वह दिन भी तो आवे कि मैं जननो-जन्मभूमि के लिये अपनी जान दे सकूं !

रघुबीर० । तुम्हें अपनी जान देने का कुछ भी अफसोस न होगा ?

अमर० । सिर्फ इतना ही कि अब दूसरा जन्म लेने तक मुझे उसकी सेवा से विरत रहना पड़ेगा !

रघुबीर० । पागल, पागल लड़के ! क्या तुझे अपने बूढ़े बाप पर कुछ भी तरस नहीं आता ।

अमर० । मैंने अपनी जन्म-भूमि को अपनी माता और 'रक्त-मंडल' को अपना पिता बना लिया । अब सांसारिक माता पिता भाई बहनों से मेरा कोई भी रिश्ता नहीं ।

रघुवोर० । (गुस्से से) ऐसा ! अच्छा तो फिर मेरा भी अब तुझसे कोई रिश्ता नहीं । मैं अपने हाथ से तुझे गोली मारूंगा ? दुश्मन के जासूस, मरने के लिए तैयार हो जा !!

रघुबीरसिंह ने अपनी पिस्तौल जो जमीन पर गिर पड़ो थी उठाने के लिए झुकना चाहा मगर अमरसिंह ने कड़क कर कहा, "खबरदार दुश्मन के सिपहसालार, अपनी जगह से जरा भी हिले तो भेजा टुकड़े टुकड़े कर दूंगा !" रघुवीरसिंह चुपचाप खड़े हो गये मगर ताज्जुब से बोले, 'अमर, तुम अपने बाप पर गोली चलाओगे ! क्या तुम्हारा कलेजा इतना कड़ा हो सकेगा !!"

अमर० । वेशक ।

रघुबीर०। क्या इसलिए कि वह बाप तुम पर गोली चलाने वाला था !

अमर०। नहीं, बल्कि इसलिए कि मातृ-भूमि का कल्याण इस समय इसी में है। मेरे मंडल का हुक्म है कि इस देश में जितनी भी फौजी छावनियां हैं सब उड़ा दी जांय। मैं उसी काम के लिये आया हूं। मेरा पिता मेरे काम में बाधा देता है, मैं उसे अपने रास्ते से हटा कर अपना काम करूंगा।

रघुबीर०। चाहे इसके लिये तुम्हें अपने बाप को मारना ही पड़े!

अमर०। भले ही।

रघुबीर०। और अगर मैं इस समय तुम्हें छोड़ दूं तो तुम क्या करोगे।

अमर०। इस समय आपके हाथ में मेरा छोड़ना न छोड़ना नहीं है बल्कि मेरे हाथ में आपका छोड़ना न छोड़ना है क्योंकि इस समय मेरी पिस्तौल आपको अपना निशाना बनाये हुई है।

रघुबीर०। तो तुम अब मेरा क्या करोगे?

अमर०। अगर आप मेरे कहने से मान जायंगे तो आपका हाथ पैर बांध कर रख दूंगा और आगे बढ़ कर वह काम करूंगा जिसके लिये आया हूँ।

रघुबीर०। अर्थात् इस किले की मेगजीन में आग लगा कर इसे उड़ा दोगे?

अमर०। हां।

[३]

रघुबीरसिंह के दिमाग में तेजी के साथ बहुत सी बातें दौड़ गईं। यह सच था कि आज कितने ही बरसों के बाद अपने इकलौते बेटे को सामने पा उनका पितृ-स्नेह उमड़ आया था और वह पुनः उसे अपने कलेजे के साथ लगा लेने के लिए उतने ही उत्सुक हो उठे थे जितना इस बात के कि उनके जरिये उनके लड़के का कोई अनिष्ट न होने पावे, परन्तु साथ ही वे एक फौजी अफसर भी थे और उनका कर्तव्य उन्हें बता रहा था कि उनके किले में दुश्मन का जो भेदिया घुस आया है उसे वापस न जाना

चाहिये, मगर इसके साथ ही साथ अपनो वेबसी—दोनों तरह की वेबसी—को भी वे अच्छी तरह समझ रहे थे। अगर वे अमर के रास्ते को रोकते थे तो उसकी पिस्तौल उन्हें रास्ते से हटाने को तैयार थी, और अगर वे खुद अमर के रास्ते से हट जाते थे तो अमरसिंह उन्हें, अपने को, और साथ ही इस समूचे किले को, उड़ा देने पर तुला हुआ था। दोनों तरह से दोनों की मौत थी। उनकी गति सांप और छछुन्दर की सी हो रही थी।

उधर अमर भी कुछ कम चिन्ता में न था। अगर वह जानता कि इस किले में आने पर उसके बाप से उसकी भेंट हो जायगी तो कदाचित् वह यहां आता ही नहीं। अब यहां आ जाने और उनसे सामना हो जाने पर उसकी समझ में नहीं आता था कि किस तरह अपने को उस जंजाल से छुड़ावे जिसमें वह आ फंसा है। अगर वह आज विना कुछ काम किये यहां से लौट जाता है तो ताज्जुब नहीं कि फिर उसे कभी यहां घुसने का मौका ही न मिले और वह काम जिसके करने के लिए 'रक्त-मंडल' की आज्ञानुसार वह अपनी जान पर खेल कर यहां तक आया था अधूरा ही रह जाय, और अगर वह इस काम को करने ही का निश्चय करता है तो इसके लिये उसे अपने बाप का खून करना पड़ता है जिसके माथे से उसकी पिस्तौल इस समय भी सटी हुई है।

कुछ देर तक दोनों आदमी चुपचाप रहे। आखिर बहुत कुछ सोच विचार कर रघुबीरसिंह ने कहा, "अमर, मेरा कर्तव्य तो यह कहता है कि चाहे तुम मुझे मार ही डालो मगर मैं इसी समय सीटी बजा कर पहरेदारों को होशियार कर दूं और तुम्हें गिरफ्तार करा दूं, मगर वैसा होने से कल ही तुम्हें इस दुनिया को छोड़ देना पड़ेगा जो मेरा दिल किसी तरह कुबूल कर नहीं सकता। इसके सिवाय तुम्हारा एक वहुत बड़ा अहसान भी मेरी गरदन पर है। तुमने एक दिन वलवाइयों के हाथ से मेरी जान बचाई थी, उस समय मैंने वादा किया था कि इसके बदले

* श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास देखिये।

एक दफे तुम्हारी जान भी बचा दूंगा। आज मैं अपना वह वादा पूरा करता हूँ और तुम्हें सरकार के पंजे से निकल जाने देता हूं। तुम्हें पन्द्रह मिनट का समय दिया जाता है, इसके बीच में तुम इस किले के बाहर हो जाओ। तुम यह न समझो कि मैं तुम्हारी पिस्तौल से डर कर तुम्हें जाने दे रहा हूं। नहीं, मैं बखूबी जानता हूँ, और शायद तुम भी समझते होगे, कि मेरी जान लेकर न तो तुम इस किले से जिन्दा ही निकल सकते हो और न आगे कुछ कर ही सकते हो। तम्हारी पिस्तौल की आवाज सुनते ही तुरत पचासों सिपाही यहां इकट्ठे हो जायंगे और तुम्हें अपनी गोली का निशाना बनावेंगे। अस्तु इस समय तुम चुपचाप यहां से निकल जाओ, मैंने तुम्हें पन्द्रह मिनट का अवसर दिया।"

इतना कहते ही रघुबीरसिंह घूम गये और दूसरी तरफ चलते हुए शीघ्र ही पेड़ों की आड़ में हो गये। अमरसिंह ने भी बहुत कुछ सोच विचार कर हाथ की पिस्तौल जेब में डाल ली और पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाता हुआ किले के बाहर की तरफ चल पड़ा।

धीरे धीरे चलता हुआ जब अमरसिंह अंधेरे में मिल गया और उसकी आहट आनी भी बन्द हो गई तो सरदार रघुबीरसिंह भी जहां थे वहीं खड़े हो गये। उनके मुंह से एक लम्बी सांस निकली जो उनके दिल की आग को सुलगाती हुई बाहर आयी थी। कुछ देर तक तो वे उसी तरफ देखते रहे जिधर अमर गया था और तब पूरब तरफ जाने के लिये घूमे, मगर उसी समय पीछे से कई मजबूत हाथों ने उन्हें कस कर पकड़ लिया। इसके पहिले कि ताज्जुब भरी कोई चीख उनके गले से निकले एक कपड़ा उनके मुंह में ठूंस दिया गया और कई आदमियों ने उन्हें हाथों हाथ जमीन से ऊपर उठा लिया।

यह सब काम कुछ ऐसी सफाई और आहिस्तगी के साथ हो गया कि उस सन्तरी को इसकी कुछ भी आहट न लगी जो वहां से पचास कदम से भी कम के फासले पर एक पेड़ के तने से लग कर खड़ा ऊंघ रहा था।

[४]

अमरसिंह करीव करीब किले के बाहर पहुंच चुका था जब उसके कान में कुछ आहट पहुंची। उसका हाथ चट अपनी पिस्तौल पर गया और साथ ही उसने घूम कर देखा तो एक काली शकल को अपने पीछे खड़ा पाया। वह पिस्तौल निकाल कर उसे अपना निशाना बनाया ही चाहता था कि उस शक्ल ने कहा, "सत्तावन !" अमरसिंह की पिस्तौल चट नोची हो गई और उसके मुंह से निकला, "अट्ठासो।"

काली शक्ल ने अमरसिंह को अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया और दोनों आदमी एक घनी झाड़ी की आड़ में हो गए जहां दोनों में इस तरह वातचीत होने लगी :—

काली श०। लौटे क्यों जा रहे हौ ?

अमर०। एक आदमी ने मुझे देख लिया इसी से लौटना पड़ा।

काली श०। मगर देख लेने पर भी तुम्हें गिरफ्तार क्यों नहीं किया ?

अमर०। (कुछ रुकता हुआ) वे मेरे पिता सरदार रघुबीरसिंह थे !

काली श०। (चौंक कर) क्या सरदार रघुबीरसिंह यहां है !

अमर०। जी हां, इस समय वे ही इस किले के सबसे बड़े अधिकारी हैं।

काली श०। और वे तुम्हारे पिता हैं ?

अमर०। जी हां।

काली शक्ल कुछ देर के लिए चुप हो गई, इसके बाद उसने कहा, "तुम्हारे पास 'बम' है ?"

अमर०। जी हां।

काली श०। तुम्हें पता है कि यहां मेगजीन किस जगह है ?

अमर०। जी नहीं।

काली श०। अगर मैं उसका ठिकाना तुम्हें वता दूं तो क्या अब भी उसे उड़ा देने के लिए तैयार हौ ?

अमर०। हां हां, बेशक ! क्यों नहीं !

कालो०। मगर उसमें तुम्हारी जान भी जायगी।

अमर०। सो मुझे मालूम है।

कालो०। और शायद तुम्हारे पिता की भी चली जाय ?

अमर०। सो भी समझता हूं, पर खैर यह उनकी किस्मत !

काली०। तुम्हें इन बातों की कोई परवाह नहीं है ?

अमर०। अपनी जन्मभूमि पर मैं अपने को और पिता माता भाई बहिन सब को न्योछावर करके बैठा हूं।

काली०। शाबाश ! अच्छा मैं तुम्हें मेगजीन का ठिकाना बताता हूं। तुम्हें अपने पिता के बारे में भय करने की कोई जरूरत नहीं, वे हम लोगों की कैद में आ गए हैं और हमारे आदमी उन्हें लेकर किले के बाहर जा रहे हैं। (सामने उंगली उठा कर) वह देखो जो लाल तारा वह आसमान में चमक रहा है उसके ठीक नीचे एक ऊंचे बुर्ज की कालिमा दिखाई पड़ती है तुम्हें ?

अमर०। जी हां।

काली०। बस वही मेगजीन है, वहां जाओ और काम फतह करो।

अमरसिंह ने झुक कर काली शक्ल के पैर छूए और उसने प्रेम से अमर की पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "मां जन्मभूमि तुम्हारी सेवा स्वीकार करे !" अमर उस बुर्ज की ओर चला, काली शक्ल दूसरी ओर को घूम गई।

अमरसिंह उस ऊंचे बुर्ज को लक्ष्य करता हुआ आगे की तरफ बढ़ने लगा। कुछ देर तक तो उसे सन्नाटा मिलता रहा मगर इसके बाद संतरियों और पहरेदारों की आहट मिलने लगी और उसे बहुत सावधान होकर जाना पड़ा। लेकिन अमर अपने काम में बहुत होशियार था। पहरेदारों और संतरियों की आंख बचा कर इस तरह निकल जाता था कि उन्हें कुछ गुमान भी नहीं होने पाता था।

मगर इसी समय यकायक अमर के कानों में तेज सीटी की आवाज पड़ी। वह चौंका और एक पेड़ की आड़ में छिप गया। उसे संदेह हुआ कि शायद किसी ने उसे देख लिया मगर इसके बाद तुरत ही पुनः सन्नाटा हो गया जिससे

उसे धैर्य हुआ और थोड़ी देर वाद उसने फिर आगे बढ़ना शुरू किया।

रुकता रुकाता थमता ठमकता और छिपता हुआ अमर उस बुर्ज के बहुत पास पहुंच गया यहां तक कि वह बुर्ज उससे कोई दो डेढ़ सौ कदम के फासले पर रह गया। मगर अब और आगे बढ़ना उसके लिये असम्भव था क्योंकि बुर्ज के चारो तरफ बिजली की तेज रोशनी हो रही थी जिससे वहां की एक एक चप्पा जमीन दिखाई पड़ रही थी। पहरे वाले भी यहां बहुत ज्यादा थे जो चारो तरफ घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। उनकी आंख बचा कर आगे बढ़ना और मेगजीन में आग लगाना असम्भव था। एक मोटे पेड़ की आड़ में खड़ा होकर अमर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

आखिर इधर उधर देखते हुए अमर की निगाह एक कूएं पर पड़ी जिसकी ऊंची जगत जहां वह खड़ा था उस जगह से बाईं तरफ कुछ आगे को बढ़ कर वनी हुई थी। यद्यपि बिजली की तेज रोशनी इस कूएं पर भी पड़ रही थी मगर उसकी जगत के बगल में घनी छाया थी और उस जगह छिप कर खड़े होने का मौका भी था। जहां पर अमर था वहां से मेगजीन का जितना फासला था उससे कम फासला इस कूएं और मेगजीन में पड़ता था। अमर ने अपने स्कूल के दिनों को याद किया जब वह बड़ी आसानी से क्रिकेट के लाल गेंद को फील्ड के एक कोने से दूसरे कोने पर फेंक दिया करता था। उसने कूएं और मेगजीन के बीच के फासले को मन में तौला और निश्चय किया कि उसकी ऊंची जगत पर से फेंका हुआ 'मृत्यु-किरण' का बम मेगजीन पर जा के गिर सकता है। यह निश्चय करते ही उसने धीरे धीरे कूएं की तरफ घसकना शुरू किया, साथ ही अपने कपड़ों के अन्दर से वड़ी होशियारी और मुलायमियत से उसने कोई चीज भी निकाल ली जो एक छोटे गेंद के बराबर थी और रूई की तहों में लपेटी हुई थी।

उस कूएं से निकल कर आबपाशी की कई नालियां कई तरफ को

फैली हुई थीं जिनमें से एक उस जगह के पास ही से गुजरी थो जहां अमर खड़ा था और लगभग दो हाथ की ऊंचाई से धीरे धीरे नीची होती हुई दूर तक निकल गई थी। पेड़ की आड़ से निकल धीरे धीरे घसकता हुआ अमर इस नाली की आड़ में हो गया और वहां से जमीन पर रेंगता हुआ कूएं की तरफ बढ़ा। यद्यपि वह बड़ा ही हिम्मतवर जवान था मगर इस समय उसका कलेजा धक धक कर रहा था। पकड़े जाने पर मारा जायगा इस डर से नहीं, बल्कि इस आशंका से कि अगर पहरेदारों ने देख लिया तो उसे गोली मार देंगे और तब वह काम अधूरा रह जायगा जिसके लिए 'रक्त मंडल' ने उसे यहां भेजा है।

[५]

कई मजबूत हाथों ने सरदार रघुबीरसिंह को उठा लिया और किले के वाहर की तरफ ले चले।

दस ही बीस कदम ये लोग आगे बढ़े होंगे कि एक काली शक्ल ने पेड़ की आड़ से निकल कर इनका रास्ता रोका और धीमी मगर हुकूमत भरी आवाज में पूछा, "काम हो गया?" जवाब में इन लोगों ने धीर से कहा, "जी हां।" जिस पर वह बोला, "शाबाश, अच्छा खूब होशिया ी से इसे ले जाओ। बावली वाले रास्ते से निकाल ले जाना। मगर होशियार रहना क्योंकि पहरा बदलने का वक्त हो रहा है। अगर तुम लोगों पर किसी की निगाह पड़ जाय तो इसे ले जाने की फिक्र छोड़ अपने को बचाना, बस अब मैं जाता हूं?"

वह काली शकल पेड़ की आड़ में होकर आंखों की ओट हो गई और ये लोग घबड़ाते और हाथ पांव फटकार कर उनके चंगुल से छूटने की व्यर्थ चेष्टा करते हुए रघुबीरसिंह को मजबूत पकड़े हुए पश्चिम तरफ को रवाना हुए।

मगर अफ़सोस, इनके मन वाली पूरी न हुई। जैसा कि इस काली शक्ल ने कहा था, पहरा वदलने का वक्त आ पहुंचा था और चारों तरफ़

चैतन्यता का साम्राज्य हो गया था जिसका नतीजा यह निकला कि अभी इन लोगों ने आधे से ज्यादा रास्ता तय न किया होगा कि किले के चारो तरफ की कई बुर्जियों पर लगी सर्च-लाइटों में से एक, जिसने चारो तरफ घूमते फिरते किले के इस अंधेरे उजाड़ और वीरान हिस्से को भी एक पल के लिए रौशन कर दिया था, इस छोटी मंडली पर पड़ी और उसकी तेज रोशनी ने क्षण भर के लिए इन लोगों को अपना निशाना बनाया। उस तेज चमक के अपने ऊपर पड़ते ही इस मंडली के आदमी मुर्दों की तरह जमीन से चिपक कर लेट गए। बहुत संभव था कि सर्च-लाइट वालों की निगाह इन पर न पड़ती या पड़ती भी तो वे इस तरफ कुछ अधिक ध्यान न देते मगर उसी समय रघुबीरसिंह को मौका मिला और उन्होंने बहुत जोर जोर से अपने पांव फटकारना और उनसे जमीन पीटना शुरू किया। अगर दो आदमी उनके दोनों हाथ मजबूती से पकड़े हुए न होते तो सम्भव था कि वे अपने मुंह का कपड़ा निकाल कर चिल्ला भी पड़ते। मगर उनके पांव चलाने ने भी काम कर दिया। सर्च-लाइट जो एक क्षण के लिए वहां रुक कर फिर आगे को बढ़ चली थी पुनः वहां लौट आई और वह जगह रोशनी से भर गई।

इन आदमियों ने समझ लिया कि अब भण्डा फूट गया। सभों ने रघुबीरसिंह का ख्याल छोड़ दिया और सब के सब अलग अलग होकर इधर उधर फैल गये। इसके साथ ही रघुबीरसिंह ने भी अपने मुंह का कपड़ा निकाल कर फेंक दिया और एक बार बहुत जोर से चिल्लाने के बाद उठ खड़े हुए। इनके उठने के साथ साथ पचीस जवानों के सिर पर एक हवलदार वहां आ पहुंचा।

अपने अफसर को सामने देख सब सिपाहियों के साथ साथ वह हवलदार भी ताज्जुब करने लगा और कोई दुर्घटना होने का ख्याल कर उसने पुनः सीटी ओठों से लगाई मगर साथ ही रघुबीरसिंह ने हुकूमत के साथ कहा, "नहीं, इसकी जरूरत नहीं। फौरन अलग अलग हो जाओ और

बिना शोरगुल मचाये चारो तरफ फैल कर उन लोगों को गिरफ्तार करो जो मुझे पकड़े लिए जा रहे थे और अभी छोड़ कर भागे हैं। देखो एक दम सन्नाटा रहना चाहिये।"

अफसर का हुक्म सुनते ही वह छोटी टुकड़ी उसके मुताबिक काम करने लगी और फौजी सलाम कर वह हवलदार भी रघुबीरसिंह के सामने से चला गया। रघुबीरसिंह अपनी जगह से हटे और धीरे धीरे किले के बीच की तरफ बढ़े।

क्या पाठक समझे कि रघुबीरसिंह ने इस हवलदार को सीटी बजाने से क्यों रोक दिया? उन्हें शक हुआ कि अगर इसने बाकी के लोगों को होशियार कर दिया तो तुरत किले भर में जाग हो जायगी। उस हालत में सम्भव था कि वे आदमी पकड़े जाते मगर उनके साथ साथ जरूर अमर भी पकड़ा जाता। अगर ऐसा हुआ तो उन सभों के साथ अमर को भी गोली मार दी जायेगी और उनके वंश का यह टिमटिमाता हुआ चिराग भी बुझ जायगा। अच्छा है कि वे दुष्ट जिन्होंने उन्हें गिरफ्तार किया था निकल जायं मगर अमर का यहां पकड़ लिया जाना अच्छा नहीं। यही सोच कर रघुबीरसिंह ने हवलदार को दुबारा सीटी बजाने से रोक दिया था। ओफ, ममता कर्त्तव्य पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर लेती है।

धीरे धीरे रघुबीरसिंह आगे बढ़ते जा रहे थे। क्षण क्षण में, जरा जरा सी आहट पर, उनका दिल धड़क जाता था कि शायद अब अमर पकड़ा गया। मगर आह, वे नहीं जानते थे कि अमर के ऊपर यह रियायत करके वे अपनी सरकार के साथ कैसा अत्याचार कर रहे थे। उनका अमर इस समय उनके आगे आगे जाता हुआ उस समूचे किले का ही उड़ा देने की फिक्र कर रहा था। अनजानते में ही रघुबीरसिंह भी इस समय ठीक उसी ओर को बढ़ रहे थे जिधर उनकी इस विचलता और सब चिन्ताओं का मूल कारण (अमर) जा रहा था। सरदार रघुबीरसिंह का सिर जमीन की तरफ झुका हुआ था और वे मन ही मन सच

रहे थे, "ओफ, अमर कैसे बुरे रास्ते पर जा रहा है! उसकी जिन्दगी कितने दिनों की है! अपने भयानक दुष्कृत्यों के कारण एक न एक दिन वह जरूर पकड़ा जायगा। तब अवश्य उसे फांसी होगी और तब अपने साथ ही साथ वह मेरे इस पुराने और नामी खानदान को भी ले मरेगा!!"

यकायक कोई आहट पा उन्होंने सिर उठाया। अपने सामने की नाली की आड़ से निकल बिजली की सी तेजी के साथ आगे झपट कर कूएं के जगत की आड़ में छिपते हुए किसी को उनकी तेज निगाहों ने देखा। वे चौंक पड़े और साथ ही यह ख्याल भी उनके मन में दौड़ गया, "क्या यह भी कोई बलवाई ही तो नहीं, कहीं अमर ही तो नहीं है!"

उनके मन ने सोचा और साथ ही आंखों ने प्रगट भी कर दिया कि उनका सोचना सही है और वास्तव में वह आदमी अमर ही है जो अब कूएं के जगत की आड़ से निकल सीढ़ियां चढ़ता हुआ कूएं के ऊपर चढ़ रहा था। उन्होंने यह भी देख लिया कि उसके हाथ में कोई गोल चीज है।

उनका खोया हुआ कर्तव्य-ज्ञान एक झटके के साथ लौट आया। जिस अमर को घड़ी भर पहिले वह भागने का दूसरा मौका देते हुए चले आ रहे थे उसी को पकड़ लेना अब वे जरूरी समझने लगे क्योंकि उन्होंने समझ लिया कि अमर के हाथ की चीज और कुछ नहीं बम का गोला है जो अगर मेगजीन पर जाकर गिरा तो केवल मेगजीन ही को नहीं बल्कि अमर को, उनको, इस किले को, और साथ ही उन हजारों आदमियों को भी उड़ा देगा जो इस किले में चारों तरफ पड़े हुए हैं। उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाल ली और उसका घोड़ा चढ़ाते हुए ललकार कर कहा, "खबरदार अमर, जरा भी जुम्बिश खाई तो जान से हाथ धो बैठोगे!"

अमर ने जो अब तक कूएं की जगत पर चढ़ चुका था चौंक कर पीछे देखा और साथ ही अपने बाप को पिस्तौल सीधी किए खड़े देख कर

चमक पड़ा। एक सायत के लिए वह रुका मगर त्यों ही उसे ख्याल हुआ कि इस समय अगर वह रुका तो उसका सोचा विचारा सब रह जायगा और जिस काम के लिए अपनी जान पर खेल वह यहां तक पहुंचा है वह अधूरा ही रह जायगा। "अब पीछे हटने का मौका नहीं है !!" सोचता हुआ रघुबीरसिंह की चेतावनी को अग्राह्य कर वह आगे को लपका और साथ ही बम वाला हाथ उसने ऊंचा किया।

रघुबीरसिंह का हाथ एक क्षण के लिये कांपा। वे अपने हाथों अपने ही पुत्र पर गोली चलाने जा रहे थे। अपने वंश का चिराग आप ही बुझाने जा रहे थे। मगर नहीं, उनका ज्ञान, उनका कर्त्तव्य, जिनके नौकर थे उनके नमक का फर्ज, उनके विचारों की मजबूती, उन्हें आज्ञा दे रही थी कि घोड़ा दबाओ और अपने लड़के को गोली मार दो। उन्होंने एक सायत का भी विलंब न किया, सच्चा निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। रात के उस सन्नाटे में पिस्तौल की आवाज भयानक रूप से गूंज उठी।

गोली पहुँची और ठीक निशाने पर पहुंची। तड़प कर अमर पलट पड़ा, साथ ही लड़खड़ाया और दो पांव पीछे को हटा। उसका हाथ उसकी पीठ पर गया, उसके मुंह से निकला, "मां जन्मभूमि, विदा !" त्योरा कर वह कूएं के चारों तरफ लगे पत्थर के खम्भों में से एक के साथ उठंगा, मगर सम्हल न सका, फिर त्योरी आई, और एक चीख के साथ वह उस कूएं के अन्दर जा गिरा।

मगर उसका प्रयत्न असफल न गया। मातृभूमि के लिए किया गया उसका आत्म-बलिदान व्यर्थ न गया। गोली पहुंची तो जरूर और ठीक अपने निशाने पर पहुंची, परन्तु एक सायत बाद पहुंची। तब पहुंची जब अमर के हाथों से छूटा हुआ 'मृत्यु-किरण' का बम मेगजीन की तरफ रवाना किया जा चुका था।

रघुबीरसिंह भी इस बात को समझ गये। जिस समय उनके कान अमर के कूएं में गिरने का धमाका सुन रहे थे उनकी आंखें उस भयानक

बम की उड़ान देख रही थीं जिसके ऊपर कहीं से आती हुई सर्च-लाइट की एक किरण ने पड़ कर उसे अचानक चमका दिया था।

× × × ×

तीर की तरह सनसनाता हुआ वह बम मेगजीन की तरफ उड़ा। बीच का फासला उसने पलक झपकते तय किया और जोर के साथ मेगजीन की दीवार से टकराया। हरे रंग की एक बिजली सी चारो तरफ दौड़ गई, साथ ही एक भीषण चमक दिखाई पड़ी। दूसरे क्षण में ऐसा मालूम हुआ मानों पृथ्वी फट गई है या कोई ज्वालामुखी फूट पड़ा। आग की एक भयानक लपट मेगजीन से ऊपर की तरफ उठी। वह चमक इतनी भयानक थी कि मालूम होता था आकाश को गला देगी। इसके साथ ही एक गड़गड़ाहट की आवाज आई। जान पड़ा मानो जमीन का कलेजा फट गया है। सुनने वालों के कानों के पर्दे फट गये। मेगजीन के आस पास रहने वाले सैकड़ों ही आदमियों का तो नाम निशान तक मिट गया। मेगजीन के साथ साथ वह समूचा किला ही नहीं बल्कि उसको आसपास से घेरे हुई कितनी ही छावनियां भी उड़ गई।

रक्त-मंडल के एक छोटे से जासूस ने मजबूत अंगरेजी सरकार की बरसों की मेहनत को मिट्टी में मिला दिया। एक छोटे से बम ने एक किला, नहीं नहीं, एक शहर उड़ा दिया।

यमराज का पेशखेमा गड़ गया। मृत्यु का प्रलयंकारी रण-ताण्डव होने लगा। एक सायत पहिले जहां मजबूत किला, सुन्दर शहर, और दूर दूर तक फैली छावनियां थीं वहां मिट्टी पत्थरों के ढेर, अनार की तरह छूटते हुए आग के फौव्वारे, मेगजीन में रक्खे हजारों बमों के फटने के कारण टूट कर उड़ने और अब आसमान से नीचे को लौटने वाले पत्थर के ढोंके, तथा दिग्दिगान्तर को दहला देने वाली आवाजें गूंज रही थीं, जिनके साथ जख्मियों और मरते हुओं की मौत की चिल्लाहट मिली हुई थी।

———

शेर की मांद

[१]

काशी पुरी के झंडे की तरह ऊपर उठे हुए और कोसों दूर से दिखाई देने वाले माधोराव के धरहरों पर जो एक बार चढ़ चुके हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि यहां से बीसों कोस दूर तक का मैदान दिखाई पड़ता है। केवल सांप की तरह बल खाने वाली गंगा ही नहीं बल्कि आस पास के पचासों गांव भी उस पर से इस तरह दिखाई पड़ते हैं मानों थोड़ी ही दूर पर हों। यहां से रामनगर का किला बहुत साफ दिखाई देता है और दक्षिण की ओर देखने से विन्ध्य की पहाड़ियां भी आंखों से टकराती हैं।

इस समय इसके दो में से एक बुर्ज पर हम तीन चार आदमियों की एक छोटी मंडली को चढ़ा हुआ देखते हैं। यों तो दिन भर ही लोग इन धरहरों पर खड़े दिखाई दिया करते हैं पर इस समय जो लोग इस पर मौजूद हैं वे कोई मामूली आदमी या मुसाफिर नहीं हैं और न उनका इस समय यहां होना ही शुद्ध कौतूहलवश है, बल्कि एक भारी काम के लिए ये लोग यहां आये हैं।

पाठक इनमें स कई को पहिचानते हैं। इनमें दाहिनी तरफ अंगरेजी पौशाक में जो लम्बा नौजवान खड़ा हाथ के इशारे से कुछ वता रहा है वह मशहूर जासूस और वैज्ञानिक पंडित गोपालशंकर हैं, उनके वाईं तरफ खड़े दूरबीन आंखों से लगाये गौर से कुछ देखने वाले बनारस के वर्तमान पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल हैं, दाहिनी तरफ खड़े हाथ से आंखों पर की धूप बचाते हुए यहां के मजिस्ट्रेट मिस्टर शर्मा हैं, और पीछे की तरफ जो नौजवान अंगरेज खड़ा गौर से गोपालशंकर के हाथ की सीध पर निगाह दौड़ा रहा है वह मिस्टर केमिल का भतीजा एडवर्ड है। सभों के पीछे फौजी पौशाक में कुछ अदब के साथ खड़ा शख्स यहां का कोतवाल अमानुल्ला खां है। आगे बढ़ कर गौर से सुनिये तो आपको खुद ही मालूम हो जायगा कि ये इतने आदमी यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं।

गोपालशंकर कह रहे हैं—"नहीं उधर नहीं उधर नहीं, वहां देखिए जहां बहुत से ताड़ के पेड़ों का एक समूह है, उनके वाईं तरफ उस जगह जहां गंगा मानों एक पहाड़ फोड़ कर निकलती हुई सी दिखाई पड़ रही है वहां एक छोटे मकान की सफेदी नहीं दिखाई पड़ती?"

केमिल०। (गौर से दूरबीन के जरिये देख कर) हाँ हाँ, अब मैंने देखा, ठोक है, एक टीले पर छोटा सा मकान गंगा से कुछ ही हट कर है।

गोपाल०। बस बस, वही जगह है।

केमिल०। तो क्या आपका कथन है कि मेरी बेटी रोज उसी मकान में बन्द है?

गोपाल०। जी हां।

केमिल०। तो वहां से उसका छुड़ा लाना तो कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। खां साहब (कोतवाल) अगर पचास जवान लेकर चले जांय तो सहज ही में उस मकान को घेर कर उसमें रहने वालों को गिरफ्तार कर सकते और मेरी लड़की को छुड़ा ला सकते हैं।

गोपाल० । (हंस कर) यदि यह काम इतना सहज होता तो मैं रोज को खुद ही छुड़ा लाया होता और वे तीन दिन जो मैं यहां से गायब रह कर बिता चुका हूँ यों व्यर्थ न जाते । आप शायद भूल गये हैं कि आपकी बेटी को चुराने वाले 'रक्त-मंडल' के खूंखार आदमी हैं, और उस मकान को भी क्या आप मामूली समझते हैं ! उसे एक छोटा मोटा किला ही समझिये किला !

केमिल० । क्या वह इतना मजबूत है कि हम लोग सौ दो सौ आदमी ले जाकर भी वहां से रोज को छुड़ा नहीं ला सकते ?

गोपाल० । बहुत मुश्किल ! गंगाजी में चलने वाली नावों में से सब से तेज जाने वाली मोटरबोट वहां है, शायद हिन्दुस्तान भर की सबसे ताकतवर मोटरकार वहां है, और अगर एशिया भर में सबसे तेज नहीं तो भी बहुत तेज उड़ने वाला एक हवाई जहाज भी वहां मौजूद है । किसी तरफ से भी हमला हो वहाँ वाले सहज ही में निकल जा सकते हैं ।

केमिल० । (ताज्जुब से) मगर इतनी बड़ी तैयारी उन लोगों ने कर ली और हम लोगों को कुछ पता तक नहीं लगा !!

गोपाल० । (मुस्करा कर) इसके लिए तो आपको अपने जासूस विभाग को धन्यवाद देना चाहिये !

केमिल० । (अफसोस के साथ) मुझे शर्म के साथ मंजूर करना पड़ता है कि हमारा जासूस विभाग इस संबन्ध में बहुत ही कमजोर है । (कोतवाल की तरफ देख कर) मुझे उम्मीद है खां साहब कि आप इस मामले में मेरी मदद करेंगे और हिला डुला कर इस विभाग को जगावेंगे ।

कोतवाल साहब ने अस्पष्ट स्वर में कुछ कहा जिस पर केमिल साहब ने कुछ विशेष ध्यान न दिया और गोपालशंकर की तरफ मुखातिब होकर बोले, "अच्छा तो फिर आप ही बताइये कि मुझे अपनी बेटी को छुड़ाने के लिये क्या कार्रवाई करनी चाहिये ? मैं समझता हूँ कि हम लोगों को यहां लाने से जरूर आपका कोई खास मतलब है ।"

गोपाल० । वेशक ! मैंने आपकी लड़की को छुड़ाने के लिये एक तर्कीब सोची है जिसकी पेशबंदी किस तरह की जायगी सो ही बताने के लिये इस समय आप लोगों को यहां लाया हूं । हमें अपने काम में सफलता पाना है तो पानी हवा और खुश्की तीनों राहों से एक साथ दुश्मन पर हमला करना पड़ेगा । (अपनी लम्बी दूरबीन आंख से लगा कर) देखिये और मेरी वातों को गौर से सुनिये ।

गोपालशंकर कुछ कहने लगे जिसे सब आदमी खूब गौर के साथ सुनने लगे ।

[२]

जिस समय ये लोग उस मकान से 'रोज' को छुड़ा लाने की तर्कीबें सोच रहे थे ठीक उसी समय इनके लक्ष्य उस मकान में कुछ और ही कार्रवाई हो रही थी ।

एक बड़े कमरे में जो मकान की ऊपर वाली मंजिल में बना हुआ था और जहां से चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ रहा था इस समय एक नौजवान जो फौजी पौशक में था कोच के ऊपर अधलेटा सा पड़ा कुछ सोच रहा था । इस नौजवान का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे पाठक इसे बखूबी जानते हैं । यह गोपालशंकर का कट्टर दुश्मन और 'रक्त-मंडल' के कर्ताधर्ता 'भयानक-चार' का मुखिया नगेन्द्रनरसिंह है ।

नगेन्द्रनरसिंह इस समय चिन्तित से दिखाई पड़ रहे हैं । यों तो जिसके ऊपर इतने बड़े और भयानक काम की जिम्मेदारी हो उसका चिन्ता से खाली होना ही आश्चर्य की बात कही जायगी परन्तु इस समय इनकी चिन्ता 'भयानक चार' या 'रक्त-मंडल' और अंगरेज सरकार के साथ होते हुए उनके युद्ध के कारण नहीं वल्कि किसी निजी कारण से है और वह कारण एक पत्र है जो अभी उनके पास पहुंचा और अब भी उनके सामने वाले छोटे टेबुल पर पड़ा है ।

कुछ देर बाद एक ठंडी सांस लेकर नगेन्द्रनरसिंह ने उस पत्र को फिर उठा लिया और पढ़ने लगे। उसका मजमून यह था :—

"बहुत जल्दी में यह पत्र तुम्हें लिख रहा हूं। नहीं जानता यह तुम्हारे हाथ तक पहुंचेगा भी या नहीं पर यदि पहुंच जाय तो देखते साथ ही मेरे घर आओ। कामिनी की हालत बहुत खराब है और वह न जाने क्यों तुमसे मिलने को बहुत व्याकुल हो उठी है। अगर तुम्हें मेरा और मेरी बहिन का कुछ भी ख्याल हो तो पत्र देखते ही चल पड़ो।

तुम्हारा मित्र—

नरेन्द्र।"

पत्र पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह ने एक ठंढी सांस खींची और तब आप ही आप बोल उठे, "अफसोस प्यारी कामिनी, तेरी यह दशा! मगर इस समय मैं क्या कर सकता हूँ? यहां का काम छोड़ कर चले जाना असंभव है। जिस समय 'रक्त-मंडल' और सरकार में युद्ध आरंभ हो गया है ऐसे समय में एक दिन के लिये भी मेरा गैरहाजिर रहना अनर्थ कर देगा। पर तब क्या मैं कामिनी को फिर कभी भी न देख सकूंगा?"

कह कर उन्होंने फिर एक लम्बी सांस ली और उस टेबुल पर रक्खी एक घंटी की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि बाहर से चुटकी बजने की आवाज आई। उन्होंने कहा—"आओ" जिसके साथ ही एक फौजी सिपाही ने कमरे में पैर रक्खा। इस सिपाही के हाथ में एक तार और एक अखबार था जो इसने अदब के साथ आगे बढ़ा दिया और तब उनके सिर हिला कर चले जाने का इशारा करने पर फौजी सलाम कर कमरे के बाहर निकल गया।

नगेन्द्रनरसिंह ने तार खोला। भीतर गुप्त शब्दों का एक मजमून था जिसका आशय अपनी जेब की एक नोट-बुक में लिखे इशारों की सहायता से नगेन्द्रनरसिंह ने शीघ्र ही निकाल लिया। तार केशवजी का

भेजा हुआ था और उसका मजमून यह था—"सोडावाटर की मशीन ठीक हो गई, यथेष्ट संख्या में बोतलें दे सकता हूं।"

पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह का चेहरा खिल गया। उन्होंने तार को रख दिया और अखबार उठाया। पहली ही खबर जो मोटे मोटे हेडिंग में दिखाई पड़ी यह थी—

"जलालाबाद का किला उड़ गया !

मेगजीन में भयानक आग लगी !

सैकड़ों आदमियों की मृत्यु,

समूची छावनी नष्ट।

"चौवीस तारीख की रात को अचानक जलालावाद के किले की मेगजीन में आग लग गई। समूचा किला उड़ गया, साथ ही किले के वाहर की वड़ी छावनी का भी एक वड़ा अंश नष्ट-भ्रष्ट हो गया। कई सौ सिपाहियों के मरने की आशंका की जाती है। आग किस तरह लगी इसका कुछ पता नहीं लगता। इतनी बड़ी दुर्घटना भारत के सैनिक इतिहास में आज तक कभी नहीं हुई। किले की दीवारों के उड़े हुए ढोंके दो मील दूर तक गिरे पाये गये हैं। पूरा विवरण मिल नहीं रहा है फिर भी खवर है कि लार्ड गोशेन, कमांडर-इन-चीफ, खुद वहां जांच करने गये हैं। भारत सरकार के मिलिटरी सेक्रेटरी भी आज वहां पहुंच जायंगे ऐसा सुना जाता है।"

आखिरी बात पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह कुछ सोच में पड़ गये। उनकी आंखें बन्द हो गईं और माथे पर पड़े हुए कई बल प्रकट करने लगे कि वे किसी गम्भीर चिन्ता में डूब गए हैं। कुछ देर बाद उन्होंने आंखें खोलीं और कुछ बुदबुदाते हुए कहा, "बस यही ठीक है, अगर कमांडर-इन-चीफ और मिलिटरी सेक्रेटरी भी वहां के वहीं खतम कर दिये जायं

तो एक ही दफे में यहां की फौज पर 'रक्त-मंडल' का पूरा आतंक जम जायगा। अच्छा जलालाबाद में इस वक्त है कौन ?"

उन्होंने जेब से अपनी वही नोट-बुक फिर निकाली और कुछ देखने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक जगह पर रुके और बोले, "नम्बर सत्तावन वहां है। बहुत ही हिम्मती आदमी है, उसे यह खबर भी जरूर लग ही गई होगी। अगर उसे मैं कमांडर-इन-चीफ और मिलिटरी सेक्रेटरी को उड़ा देने की आज्ञा दूं तो वह जरूर अपनी जान पर खेल के भी इस काम को पूरा करेगा।"

जल्दी जल्दी नगेन्द्रनरसिंह ने एक कागज पर कुछ लिखा और घंटी बजाई। पहले वाला वही फौजी सिपाही भीतर आया और जंगी सलाम कर सामने खड़ा हो गया। उसके हाथ में कागज देते हुए नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "बेतार की तार से अभी यह पूरब तरफ भेजा जाय।" सलाम कर वह लौट रहा था जब उन्होंने फिर कहा, "नम्बर चौंतीस को मेरे पास भेजो।"

सिपाही के जाने के दो ही सायत बाद एक आदमी ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। नगेन्द्रनरसिंह ने उसे देख कर कहा, "नम्बर चौंतीस, तुम्हारा सब इन्तजाम ठीक है ?"

नंबर चौंतीस०। जी हां, आपने जो जो बातें कही थीं सब का प्रबंध हो गया है। अगर हमलोगों को अचानक यह जगह छोड़नी पड़ जाय तो पन्द्रह मिनट के अन्दर हम इस तरह यहां से निकल जा सकते हैं कि तलाशी की नियत से यहां आने वाले को कुछ भी पता न लगेगा कि यह मकान किस काम में लाया जाता था।

नगेन्द्र०। बेतार की तार के यन्त्र का क्या प्रबन्ध किया है ?

चौंतीस०। दो प्रबन्ध हैं। वह यन्त्र मोटर-ट्रक पर फिट कर दिया गया है, अगर खुश्की से निकल जाने का मौका हुआ तब तो कोई कठिनाई ही नहीं है, अगर वह मौका न हुआ तो वह ट्रक नम्बर तीन के तहखाने में पहुंचा दिया जायगा।

नगेन्द्र० । नंबर तीन के तहखाने को जलमग्न करने का पूरा इन्तजाम किया जा चुका है ?

चौंतीस० । जी हां, हम चार जगह से उसे जलमग्न कर सकते हैं । एक तो सदर फाटक पर से, दूसरा मेरे कमरे से, तीसरा आपके इस कमरे से, और चौथा स्थान यहां से एक मील दूर है ।

यह कह कर नम्बर चौंतीस दीवार के पास गया और वहां लगे एक बटन को दिखा कर बोला, "अगर आप यह बटन दबा देंगे तो तीस मिनट के भीतर वह समूचा सहखाना पानी से भर जायगा । इसके सिवाय अपनी मरजी से मैंने एक इन्तजाम और भी कर लिया है । (उसके पास ही के लाल रंग के एक दूसरे बटन को दिखा कर) अगर यह बटन दबा दिया जाय तो दबने के पांच मिनट बाद यह समूचा मकान उड़ जायगा । इसका कनेक्शन यहां की मेगजीन से कर दिया गया है । अगर ऐसी ही जरूरत पड़े तो यह आखिरी कार्रवाई यहां के सब भेदों को सदा के लिये छिपा देगी ।

नगेन्द्र० । यह तुमने बहुत अच्छा किया, हमारे भेद दुश्मन के हाथ चले जाने के बनिस्बत हमारा स्वयम् मिट जाना अच्छा होगा । मगर बेहतर तो यह हो कि कुछ ऐसा इन्तजाम हो जाय कि कहीं दूर से भी यह मकान उड़ा दिया जा सके ।

चौंतीस० । बहुत अच्छा, आज ही ऐसा भी हो जायगा ।

नगेन्द्र० । तो तुम जाओ मगर सब तरफ से चौकन्ने रहो । न जाने कब यह मकान खाली कर देना पड़े । गोपालशंकर काशीजी में आ गया है । कब उसकी वक्रदृष्टि इस मकान पर पड़ जायगी कुछ कहा नहीं जा सकता, अस्तु निकल भागने का सब इन्तजाम हर वक्त ठीक रहना चाहिये ।

चौंतीस० । हमेशा ठीक रहेगा । हवाई जहाज, मोटरकार और मोटर बोट सभी दिन रात के चौबीसों घंटे तैयार रहती हैं । मेरे इन्तजाम में कोई कमजोरी आप न पावेंगे ।

नगेन्द्र० । (उसे जाने का इशारा करते हुए) शावाश, ऐसी ही मुस्तैदी हमें विजयी बना सकती है।

फौजी सलाम कर नम्बर चौंतीस भी चला गया। अब नगेन्द्रनरसिंह पुनः अपने कोच पर आ बैठे और अखबार उठा कर उलट पुलट करने लगे। उनकी निगाह पत्र के संपादकीय स्तम्भ पर जा पड़ी और वहां के कुछ विचित्र हेडिंग को देख जरा कौतूहल के साथ वे उसे पढ़ने लगे। यह लिखा था :—

तीसरा धड़ाका !

"पहिले सिकंदराबाद, तब रक्सौल, और अब जलालाबाद का किला उड़ गया है। अब शायद जब फोर्ट-विलियम उड़ जायगा तब हमारी सरकार की आंखें खुलेंगी। अब क्या जनता से साफ साफ यह मंजूर कर लेना कि यह सब अचानक होने वाली दुर्घटनायें नहीं बल्कि षड़यंत्रकारियों के एक दल की खूब सोची विचारी हुई कार्रवाइयां हैं, शासन के लिए अधिक उचित न होगा? साथ ही यह भी मंजूर कर लेना क्या बुद्धिमानी न होगी कि यह सब काम उसी मशहूर खूनी गिरोह 'रक्त-मंडल' का है जिसने आज के कई बरस पहिले सरकार की नाक में दम कर दिया था। जो सरकार भले आदमियों को जेल में ठूंसते देर नहीं लगाती, जिस सरकार के नामी जासूस चूहों की बिलों में से साजिशें खोज निकालते हैं, जिस सरकार की प्यारी बेटी पुलिस सफेद को काला करने में पूरी सिद्धहस्त है, वही जब असल मुकाबिला आ पड़ता है तो किस तरह पीठ दिखा देती है यह ये तीन धड़ाके खूब बता रहे हैं जो विगत एक सप्ताह के भीतर तीन भिन्न भिन्न प्रान्तों में हो चुके हैं। अगर यही क्रम जारी रहा तो महीना बीतते बीतते क्या कोई भी फौजी छावनी कायम रह जाएगी?"

इसी लहजे में अखबार के गैरजिम्मेदार संपादक महोदय ने अपने दिल का गुब्बार पूरी तरह निकाला था जिन्हें इस बात की कोई खबर न

थी कि कागज पर लिखने और कर दिखाने में कितना अन्तर होता है। नगेन्द्रनरसिंह कुछ कौतूहल मिले विनोद के साथ यह लेख पढ़ रहे थे कि अचानक बाहर से ताली की आवाज आई। आज्ञा पा एक नौकर कमरे में आया जो अदब से बोला, "मिस रोज किसी से मिलने को बहुत व्याकुल हैं, कहती हैं कि जो कोई यहां सब से बड़ा अफसर मौजूद हो वह मुझ पर कृपा करके मेरे पास आवे। अपनी जान दे देने के पहिले मैं उसे कुछ संदेशा देना चाहती हूँ।"

नगेन्द्रनरसिंह के मुंह से निकलने लगा, "नम्बर चौंतीस को भेजो—" मगर उस बात को रोक कर वे बोल उठे, "अच्छा मैं खुद चलता हूँ।"

नगेन्द्रनरसिंह बाहर निकले और उस नौकर के पीछे पीछे चलते हुए सीढ़ियां उतर मकान की निचली मंजिल में पहुंचे। इस जगह की एक कोठरी के भीतर जाने पर एक तहखाना मिला जिसके नीचे उतर जाने पर एक अंधेरी कोठरी में ये लोग पहुंचे। नौकर के पास बिजली की बत्ती तैयार थी जिसकी रोशनी में ये लोग उस कोठरी के बाहर निकल कर एक दूसरी तथा कुछ बड़ी कोठरी में पहुंचे। यह तरह तरह के सामानों से भरी हुई थी और इसकी दीवारों पर कई तरह के हथियार भी लटकते हुए दिखाई पड़ रहे थे। इसके एक कोने में पहुंच कर नौकर ने जमीन पर से एक तख्ता उठाया जिससे नीचे जाने के लिये फिर पतली काठ की सीढ़ियां दिखाई पड़ीं। नगेन्द्रनरसिंह नौकर के पीछे पीछे इन सीढ़ियों के नीचे उतरे। एक बहुत बड़ी कोठरी नजर आई जो तरह तरह के सामानों से भरी हुई थी। इस जगह नमी बहुत ज्यादा थी और कहीं कहीं पर दीवार से टपकने वाली पानी की बूंदें बता रही थीं कि यह जगह नदी की सतह के नीचे है। इस बड़ी कोठरी के एक तरफ लोहे का एक कठघरा बना हुआ था जिसके अन्दर जलते हुए भद्दे दीये की मद्धिम रोशनी में एक कमसिन लड़की खाट पर बैठी हुई आंसू गिराती दिखाई पड़ी। हमारे पाठक इसको खूब पहिचानते हैं, क्योंकि यह यहां के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट

मि० केमिल की वही लड़की रोज है जिसे छुड़ाने के लिए पं० गोपालशंकर इतना उद्योग कर रहे हैं।

इन लोगों के आने की आहट पा मिस रोज ने अपना उदास चेहरा उठाया और उस तरफ देखा मगर अंधेरे के कारण कुछ पता न लगा सकी कि कौन आया है क्योंकि उस जगह पहुंचते ही नगेन्द्रनरसिंह के इशारे पर नौकर ने अपने हाथ की बिजली की बत्ती बुझा दी थी।

नगेन्द्रनरसिंह ने अपने कपड़ों में से एक नकाव निकाली और उससे चेहरे को ढांक आगे बढ़े। मिस रोज आकांक्षा और उद्वेग के कारण उठ कर खड़ी हो गई थी और जंगले के पास आकर वाहर के अंधेरे पर गौर करके यह देखने की कोशिश कर रही थी कि कौन आदमी उसके पास आया है जब नगेन्द्रनरसिंह ने उसके पास जाकर पूछा, "मिस रोज, क्या आपने मुझे बुलाया है ?"

रुंधे हुए गले से मिस रोज ने कहा, "हां अगर आप ही इस जगह के मालिक हैं, तो भगवान के लिए मुझे इस भयानक कैदखाने से बाहर निकाल दीजिये ! अगर कैद ही रखना है तो कहीं दूसरी जगह वन्द कीजिये, इस गंदी जगह में जहां सांस लेने लायक भी हवा नहीं है अब अगर और कुछ देर तक मैं बंद रहूंगी तो जरूर मर जाऊंगी।"

नगेन्द्रनरसिंह ने सिर हिला कर कहा, "मगर अफसोस है कि ऐसा नहीं किया जा सकता। अगर आपको कहीं दूसरी जगह रक्खा जायगा तो आप जरूर छूटने का उद्योग करेंगी और अगर आपके मददगार आपको देख लेंगे तो जरूर छुड़ाने का उद्योग करेंगे जिस खतरे में हम लोग पड़ना नहीं चाहते।"

मिस रोज की आंखों से आंसू की झड़ी वहने लगी। उसने बिलख कर कहा, "क्या एक औरत के साथ ऐसा जुल्म करते हुए आप लोगों को दया नहीं आती !"

नगेन्द्रनरसिंह ने गम्भीर स्वर में कहा, "मिस रोज, जिस काम को

हमलोगों ने अपने हाथ में लिया है उसके लिये सबसे पहिले दया और ममता का ही हमें खून करना पड़ा है ?"

मिस रोज० । (रो कर) फिर भी आप मर्द हैं, एक मर्द के नाते एक औरत का अगर आप कुछ भी खयाल कर सकते हैं तो मुझे इस जगह के बाहर करिये, मैं आपसे वादा करती हूँ कि आप जहां भी मुझे रक्खेंगे वहां से निकल भागने का ज़रा सा भी उद्योग मैं न करूंगी । मैं आपसे वादा करती हूँ कि अगर मैं अपनी आंखों के सामने से अपने पिता को भी गुजरते हुए देख लूंगी तो अपनी जुबान न खोलूंगी ।

नगेन्द्र० । क्या आप इस बात का वचन देती हैं ।

मिस रोज० । (अपने गले से लटकते हुए एक जड़ाऊ सलीब को छू कर) मैं सलीब की कसम खाकर कहती हूं कि मैं अपने छूटने का रत्ती भर भी उद्योग न करूंगी ।

नगेन्द्र० । बहुत अच्छा, आपकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके मैं आपकी प्रार्थना स्वीकार करता हूं । कल सुबह आप अपने को ऊपर की एक खुली और हवादार जगह में पावेंगी !

रोज ने कातर भाव से कहा, "जब आपने मुझ पर रहम किया ही है तो फिर एक दिन की देर क्यों ?" जवाब में नगेन्द्र ने कहा, "क्योंकि इस छोटे मकान में जगह की बहुत कमी है और आपके लिए कोई हवादार कोठरी खाली करने में हम लोगों को विशेष तरद्दुद करना पड़ेगा । जब आपने इतने दिन सब्र किया है तो कुछ घंटों के लिए और बर्दाश्त करें और आज का दिन किसी तरह काट दें । फिलहाल जिस किसी चीज की आपको जरूरत हो कहें वह अभी मुहैय्या कर दी जायगी ।"

नगेन्द्रनरसिंह ने उस नौकर की तरफ घूम कर कहा, "देखो मिस रोज को किसी बात की तकलीफ न हो । ऊपर की नम्बर सात वाली कोठरी खाली कर के कल सुबह ही इन्हें वहां कर दो ।"

इतना कह कर नगेन्द्रनरसिंह ऊपर चले आये ।

[३]

दोपहर के समय मिस्टर केमिल अपने आफिस में बैठे कुछ काम कर रहे थे कि गोपालशंकर वहां आकर एक कुरसी पर धम्म से बैठ गए।

इस समय गोपालशंकर के चेहरे से थकावट बरस रही थी, बदन पर सेरों धूल चढ़ी हुई थी, कपड़ मैले हुए मये और जगह जगह से फट भी गये थे।

केमिल साहब उनकी ऐसी हालत देख चौंक कर बोले, "हैं! यह आपकी क्या हालत है पंडितजी ?"

गोपालशंकर ने कहा, "मैं सुस्ता लूं तो बताऊं। मगर फिलहाल तो आप मेरे नहाने का इन्तजाम कराइये और मेरे लिए कुछ कपड़े भी मंगवाइये।"

दम के दम में मुनासिब इन्तजाम करा दिया गया और गोपालशंकर बाथरूम में चले गये। पन्द्रह बीस मिनट के बाद जब वे नहा धो और कपड़े बदल कर लौटे तो केमिल साहब ने चाय की तश्तरी उनके आगे खिसकाते हुए पूछा, "अच्छा अब बताइये कि आप कहां गये थे और कहां से चले आ रहे हैं?"

गोपालशकर ने चाय का प्याला उठा लिया और तब कुछ हंस कर कहा, "मैं शेर की मांद में गया था और वहीं से निकला चला आ रहा हूं।"

केमिल ने ताज्जुब से पूछा, "इसके माने? जरा साफ साफ कहिए!"

गोपाल०। मैं उसी मकान से आ रहा हूं जहां आपकी लड़की कैद है।

केमिल०। अरे, फिर आप अकेले ही वहां चले गये! आप जरूरत से ज्यादा हिम्मत दिखाते हैं पंडितजी, इसका नतीजा किसी दिन खराबी होगा! खैर क्या कुछ पता लगा?

गोपाल०। हां बहुत कुछ। (जेब से एक कागज निकाल कर और उसे टेबुल पर फैला कर) यह देखिये मैंने वहां का एक मोटा मोटा नक्शा तैयार कर लिया है। (नक्शे पर उंगली रख कर समझाते हुए) यह तो वह मकान है, यह बाहर वाली लकीर उसके चारो तरफ की चहारदीवारी

है। यह कोई ईंट या मिट्टी की दीवार नहीं है बल्कि लोहे के टुकड़ों का जंगला है जो अंगूठी की तरह चारों तरफ से उस मकान को घेरे हुए है और इस जंगले के साथ रात को बिजली की शक्ति लगा दी जाती है। कोई ग्रादमी धोखे से रात के वक्त या उस समय जब कि इसका कनेक्शन बिजली से हो यदि इसे छू ले तो वहीं चिपक कर मर जायगा।

केमिल०। अच्छा! तो उन लोगों के पास बिजली के डायनमो वगैरह भी हैं!

गोपाल०। डायनमो! अजी वहां ऐसी ऐसी हिफाजत और सुबोते की चीजें मौजूद हैं जो शायद लाट साहब की कोठी में भी न होंगी। और फिर यह तो सोचिए कि जिस जगह से इस वक्त 'रक्त-मंडल' का पूरा सूत्र संचालन हो रहा है वहां कैसी कैसी चीजें न होंगी!

केमिल०। यह क्या कहा आपने? क्या रक्त-मंडल के 'भयानक-चार' आजकल उसी मकान में हैं?

गोपाल०। 'भयानक-चार' नहीं उनका भी मुखिया और सिपहसालार महा-भयानक 'एक'! इस वक्त राणा नगेन्द्रनरसिंह खुद उसी मकान में है और वहीं से इस भयानक सभा की सब कार्रवाइयों को चला रहा है। यह देखिये—

कह कर गोपालशंकर ने कागज का एक टुकड़ा जो मोड़ा माड़ा बहुत गंदा और मैला हो रहा था मिस्टर केमिल के आगे रख दिया। इस पर कुछ अंक और अक्षर लिखे हुए थे जिनका मतलब बहुत गौर करने पर भी केमिल साहब की समझ में न आया। आखिर उन्होंने पूछा, "इस विचित्र लिखावट का अर्थ क्या है?" गोपालशंकर ने हंस कर एक दूसरा कागज उनके सामने रख दिया जिस पर उन्होंने पढ़ा, "सोडावाटर की मशीन ठीक हो गई। यथेष्ट संख्या में बोतलें दे सकता हूं।"

केमिल साहब उछल पड़े। इस संदेश का भयानक तात्पर्य तुरत ही उनकी भी समझ में आ गया फिर भी उन्होंने पूछा, "क्या इसका मतलब

यह है कि 'मृत्यु-किरण' के बम तैयार करने की भयानक मशीन जिसे आप तोड़ फोड़ आये थे उन लोगों ने पुनः ठीक कर ली ?"

गोपाल० । जी हां, और अब आप समझ लीजिये कि आपकी सरकार की कुशल नहीं है । अभी तो आपकी दो ही तीन छावनियां उड़ी हैं, जिस समय समूचे देश की छावनियां इसी तरह उड़ा दी जायंगी और तब लाटों की कोठियों कमांडर-इन-चीफ के बंगलों, छोटे मोटे अफसरों के मकानों और दफ्तरों तथा कचहरियों की बारी आवेगी उस समय तीन सप्ताह के भीतर यहां से शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य का नाम निशान मिट जायगा ।

केमिल साहब कांप उठे । 'मृत्यु-किरण' के प्रलयकारी बमों की शक्ति का कुछ हाल उन्हें मालूम हो चुका था । कुछ देर के लिये सकते की सी हालत में होकर वे चुपचाप बैठे रह गये । तब उन्होंने पूछा, "अब क्या करने की आपकी राय है ?"

गोपाल० । जैसे भी हो राणा नगेन्द्रनरसिंह को उसी मकान के अन्दर गिरफ्तार कर लेना चाहिये । उसके पकड़ जाने पर ही आपकी सरकार को यह मौका मिलेगा कि हिमालय पर्वत में दबे हुए उस किले पर हमला करके कुछ कामयाबी हासिल कर सके जहां ये मशीनें बैठाई गई हैं ।

केमिल० । जरूर आप ठीक कहते हैं । जैसे भी हो हमें इस शेर को उसकी मांद में ही गिरफ्तार करना पड़ेगा । मगर पंडितजी, मैं समझता हूं कि यह सहज काम न होगा ।

गोपाल० । कदापि नहीं, सबसे बढ़ कर तो इसलिये कि जिन क्रांतिकारियों का वह मुखिया है ठीक उन्हीं की तरह नगेन्द्र खुद भी अपनी जान को हमेशा हथेली पर लिये फिरता है और मौत की कुछ भी परवाह नहीं कर-ा । अगर वह जरूरत समझेगा तो अपने को, उस मकान को, और उसके आस पास के सब आदमियों को उसी लापरवाही से उड़ा देगा जिस तरह लड़के पटाका छोड़ते हैं । ऐसे आदमी को जिन्दा पकड़ना बहुत ही कठिन है ।

केमिल० । (क्रोध से) तब हम उसे मुर्दा ही पकड़ेंगे ! अब जब

वह हमारी निगाह की पकड़ में आ गया है तो उसे निकलने नहीं देना चाहिये। मगर पंडितजी, एक बात का मुझे डर है।

गोपाल०। वह क्या ?

केमिल०। जिस तरह राणा नगेन्द्रनरसिंह क्रान्तिकारियों का प्राण है उसी तरह हमारी सरकार के जीवन इस समय आप हो रहे हैं। आप ही अकेले आदमी हैं जो इन कुचक्रियों से हमारी सरकार की रक्षा कर सकते हैं, और इसीलिये हमारे लिये आपकी जान भी बड़ी बेशकीमत हो रही है। ईश्वर न करे कहीं उन सभों का कोई वार आप पर हुआ तो हम लोग कहीं के न रहेंगे।

गोपाल०। (हंस कर) ताकतवर ब्रिटिश साम्राज्य में बहादुरों की कमी नहीं है।

केमिल०। ठीक है, मगर बहादुरी के साथ जब हिम्मत, हिम्मत के साथ चालाकी, और चालाकी के साथ विज्ञान मिलेगा तब आप सा आदमी तैयार हो सकेगा। हमारे यहां जासूस भरे पड़े हैं मगर सब वही बछिया के ताऊ, बहादुर खंचियों पड़े हैं मगर वही मक्खी के लिये नाक काट लेने वाले। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप जो कुछ भी करें यह सोच समझ के करें कि आप अगर दुष्टों के फन्दे में पड़ गये या ईश्वर न करे आपकी जान पर ही कोई वार हुआ तो ये भयानक षड्यन्त्रकारी अवश्य सफल हो जायंगे और तब हमलोगों के किये कुछ न होगा।

गोपाल०। (बात को हंसी में टाल कर) खैर देखा जायगा, उसके लिये आपको फिक्र करने की जरूरत नहीं है। हर एक आदमी को अपनी जान प्यारी है और आप विश्वास रखिये कि मुझे भी अपनी जिन्दगी से प्रेम है। आप मेरी बात सुनिये,—मैंने जो कुछ कहा उसके माने यह है कि इस समय वही मकान षड्यन्त्रकारियों का केन्द्र हो रहा है और इस लिये बहुत जरूरी है कि उसमें रहने वाले सब गिरफ्तार कर लिये जायं चाहे इसके लिये कितना भी तरद्दुद तवालत मार काट या खून खराबा क्यों न करना पड़े।

केमिल०। बेशक, मैं अभी छोटे लाट को इसकी खबर देकर सब तरह का अधिकार ले लेता हूं।

गोपाल०। हां यही मेरी भी इच्छा है, क्योंकि इस समय आपको किस शस्त्र की कब जरूरत पड़ जायगी कोई कह नहीं सकता। सम्भव है फौजों से वह मकान घेरना पड़े, संभव है उस पर गोले चलाने पड़ें, संभव है हवाई जहाजों से उस पर हमला करना पड़े, यह भी सम्भव है कि उस पर घेरा ही डाल कर बैठ रहना पड़े, अस्तु जब तक सब कुछ करने का आपको या मुझको अधिकार न रहेगा, मैं कुछ भी करने की जिम्मेदारी न लूंगा। 'रक्त-मंडल' के मुखिया को गिरफ्तार करना मामूली काम नहीं है।

केमिल०। यह मुझे बताने की जरूरत नहीं। आप अपनी बात खतम कर लीजिये तो मैं अभी लाट साहब के सेक्रेटरी को फोन करके जो जो बातें आप चाहते हैं उनका आपके खातिरखाह इन्तजाम करता हूं।

गोपाल०। बहुत अच्छा तो सुनिये मैं इतनी बातें चाहता हूँ। अवश्य ही यह मैं पहले कहे देता हूँ कि सब काम ऐसी होशियारी और गुप्त रीति से होना चाहिये कि किसी को कानोकान खबर न लगे। साथ ही मैं यह भो कहे देता हूँ कि यह सब पूरा इन्तजाम आपको खुद कर लेना पड़ेगा क्योंकि मैं एक दूसरे काम में फंसा रहूंगा।

केमिल०। आप कहिये, मैं नोट करता हू।

गोपाल०। एक—महाराज काशीराज के किले रामनगर का बिजली का यंत्र बहुत शक्तिशाली है, वहां से एक तार सीधी उस मकान तक जानी चाहिये जिसमें जब चाहें तब उसकी लोहे वाली चहारदीवारी को हम लोग अपनी बिजली द्वारा ऐसा कर सकें कि अन्दर का आदमी बाहर न आ सके। वह जगह रामनगर से बहुत ज्यादा दूर भी नहीं है।

केमिल०। बहुत अच्छा, और कहिये।

गोपाल०। (हंस कर) आपने 'बहुत अच्छा' तो कह दिया मगर

इसकी मुसीबतों पर खयाल नहीं किया। कोसों तक बिजली की लाइन बैठानी है और इस तरह पर कि किसी को कानोकान खबर न मिले।

केमिल०। मैं इसे बखूबी समझता हूँ और आपको याद दिलाता हूँ कि इस समय आपके पीछे मजबूत ब्रिटिश सरकार की समूची शक्ति काम करेगी। आप कहे चलिये, जो जो काम जिस तरह पर आप कहेंगे वैसे ही होगा और इस तरह होगा कि किसी को कानोकान खबर न लगे।

गोपाल०। दूसरी वात यह कि जिस रोज हमला होगा आपको दो कम्पनी फौजों से वह जगह इस तरह घिरवा लेनी पड़ेगी कि मकान के अन्दर का कोई आदमी उस घेरे के बाहर न निकल जा सके।

केमिल०। ठीक है, और बोलिये।

गोपाल०। कम से कम दो हवाई जहाज जो खूब तेज़ चाल के हों हर दम उड़ने के लिये तैयार रखने होंगे।

केमिल०। मंजूर, और बोलिये।

गोपाल०। दो तेज मोटरें, एक मोटर बोट और हवाई जहाज़ों से लड़ने वाली कम से कम आध दर्जन तोपें तैयार रखनी होंगी। इसके सिवाय दस पांच बहादुर आदमी ऐसे जिन्हें जान का डर न हो खास मेरी मदद के लिये मुझे देने होंगे। बस इतनी चीजें मैं चाहता हूँ।

केमिल०। अच्छी बात है, यह सब आपको मिलेगा। यह बताइये कि कब आपको इनकी जरूरत पड़ेगी?

गोपाल०। आज ही रात में!!

केमिल०। (चौंक कर) आज! भला आज यह इन्तजाम सब कैसे हो सकता है?

गोपाल०। (हंस कर) जैसे हो कल सुबह नगेन्द्रनरसिंह वह जगह छोड़ देगा और क्रान्तिकारियों के गढ़ उस पहाड़ी किले की तरफ रवाना हो जायगा। अगर उसे गिरफ्तार करना है तो आज ही उस मकान पर हमला करना होगा।

केमिल० । मगर.......

गोपाल० । अब अगर मगर का वक्त नहीं रहा केमिल साहब । छोटे लाट के सेक्रेटरी को, जरूरत हो तो प्रधान सेनापति को, और उनसे भी काम न बने तो खुद बड़े लाट साहब को टेलीफोन कीजिये और जैसे हो इन बातों का प्रबन्ध कीजिये । अगर आज ही नगेन्द्रनरसिंह गिरफ्तार नहीं किया गया तो कल फिर समझ लीजिये कि आपके ताकतवर फौलादी ढांचे का कहीं पता भी नहीं रह जायगा । अब आपकी सरकार का कागजी घोड़े दौड़ाने वाले प्रस्ताववादियों से मुकाबला नहीं है, हाथ पर जान ले के कुछ कर दिखाने वाले क्रांतिकारियों से मुहिम लेनी है जिनकी मशीन के सब पुर्जे इस वक्त अपने अपने ठिकाने पर और ठीक तरह से काम कर रहे हैं ।

केमिल साहब ने एक हाथ माथे पर फेरा जिस पर कुछ पसीना आ गया था, दूसरे हाथ से उन्होंने टेलीफोन उठाया ।

[४]

रात के करीब दो बज गये होंगे । चारो तरफ घनघोर सन्नाटा छाया हुआ है । कहीं कोई चलता फिरता दिखाई नहीं पड़ता, कहीं से कोई आहट नहीं मिलती । समूचा संसार इस समय निद्रादेवी की गोद में मस्त पड़ा है ।

परन्तु नगेन्द्रनरसिंह की आंखों में इस समय भी नींद नहीं है । वे अपने कमरे में उसी कोच पर बैठे हुए हैं जिस पर सुबह हमारे पाठक उन्हें देख चुके हैं । उनके सामने एक छोटा टेबुल है जिस पर दो मोमबत्तियों का एक शमादान जल रहा है और उसके ऊपर बहुत से कागज पत्र फैले हुए हैं जिनमें से एक बड़े कागज पर इस समय नगेन्द्रनरसिंह गौर की निगाहें डाल रहे हैं । यह इस देश का एक नक्शा है जिसमें देश भर की फौजी छावनियों का नाम दर्ज है और इस समय इन्हीं के बारे में नगेन्द्रनरसिंह कुछ सोच रहे हैं ।

यकायक दर्वाजे पर चुटकी की आवाज सुन वे चौंक पड़े और बोले,

"कौन है, भीतर आओ!" साथ ही एक आदमी ने दर्वाजा खोल कर अन्दर पैर रक्खा। यह एक कम उम्र नौजवान था और सूरत शक्ल से पढ़ा लिखा भला आदमी सा जान पड़ता था मगर इस समय इसके बदन पर सेरों धूल चढ़ी हुई थी और इस तरह हांफ रहा था मानों बड़ी दूर से दौड़ता हुआ आ रहा हो। इसके पीछे हो इस छोटे मकान या किले के किलेदार अर्थात् नंबर चौंतोस ने भी भीतर प्रवेश किया और दर्वाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

नगेन्द्रनरसिंह को फौजी सलाम कर दोनों आदमी खड़े हो गये। नगेन्द्र ने आगन्तुक की ओर ताज्जुब से देखा और पूछा, "कौन है, चौवन? इस तरह! इस वक्त!!"

नंबर चौवन ने हांफते हांफते कहा, "सरदार बड़ो बुरो खबर है! इस मकान पर हमला होना ही चाहता है!!"

गंभीर स्वर में नगेन्द्रनरसिंह ने पूछा, "क्या बात है, साफ साफ थोड़े में कहो।"

चौवन०। अभा घड़ी भर नहीं हुआ होगा कि गोपालशंकर और केमिल साहब दो सौ सिपाहियों को लेकर इसी तरफ को रवाने हुए हैं, अभी अभी यहां पहुंचते ही होंगे। मैं दौड़ता दौड़ता यहां आया हूं मगर वे सब घोड़ों पर हैं। उनके साथ शहर कातवाल और फौज का एक गोरा कप्तान भी है जिसका नाम मैं नहीं जानता।

नगेन्द्रनरसिंह इस खबर को सुन कुछ सायत के लिए चिन्तानिमग्न हो ग:। उनके माथे पर कुछ सिकुड़नें पड़ गईं और आंखें बन्द हो गईं, मगर यह थोड़ी ही देर के लिए था। तुरन्त ही उन्होंने कोई बात सोच निकाली और कहा, "नंबर चौंतीस, अपने आदमियों को सब तरफ दौड़ाओ और पता लगाओ कि किस तरफ से हमला हो रहा है? आदमियों को रवाना कर के तुम पुनः आओ। और चौवन, तुमने इस वक्त बहुत तारीफ का काम किया। तुम्हारी उन्नति के लिये मैं उद्योग करूंगा।

फिलहाल यह लो और इसी वक्त यहां से निकल कहीं दूर जा के सुस्ताओ ताकि अगर हम लोग गिरफ्तार भी हो जायं तो तुम खबर पहुंचाने के लिये बचे रहो।"

अपने सामने पड़ा काठ का एक छोटा बक्स जिसमें न जाने क्या चीज थी उठा कर नगेन्द्रनरसिंह ने नम्बर चौवन को दे दिया जिसे पाते ही उसकी बाछें खिल गईं और वह खुशी से फौजी सलाम कर और उसके बाद नगेन्द्र के पैर छू वहां से निकल गया। नम्बर चौंतीस पहिले ही कमरे के बाहर जा चुका था।

नगेन्द्रनरसिंह अपनी जगह से उठे और इधर उधर घूम फिर कर कागजों और चीजों को सम्हालने, जिसे जरूरी समझा साथ रखने, और बाकी को कमरे के बीच में इकट्ठा करने लगे। उनके काम में फुर्ती थी पर घबराहट बिल्कुल न थी। मगर इसी समय नम्बर चौंतीस ने कमरे में पैर रक्खा और घबड़ाये स्वर में कहा, "सरदार, गजब हो गया! चहारदीवारी की तारों में न जाने कैसे बिजली की बड़ी तेज ताकत भर गई है जिसे टप कर बाहर निकलना असम्भव है। हमारे दो आदमी फाटक में ही चिपक गये और मर गये।"

नगेन्द्रनरसिंह ने चौंक कर कहा, "वह बिजली बाहर से आई है या तुम्हारे ही इञ्जिनों की है?" चौंतीस ने कहा, "जी नहीं बाहर की है, अपने इंजिन तो मैंने बन्द करा दिये। मालूम होता है दुश्मनों ने बाहर कहीं से तार लगा कर यह इन्तजाम किया है, और जरूर यह कार्रवाई पहिले से की गई है मगर ताज्जुब है कि हम लोगों को इसकी कोई खबर नहीं लगी।"

नगेन्द्र०। खैर कोई हर्ज नहीं, ऐसी ही किसी घटना के ख्याल से मैंने तुम्हें गुदाम में बहुत से तख्ते रखवा छोड़ने को कहा था। कई तख्ते चारदीवारी के जंगले पर फैला के रास्ता बना लो, इनश्योलेटेड कैंचे दे कर दो तीन आदमियों से कहो तारें कई जगह से काट के कनेक्शन तोड़ दें,

हवाई जहाज मोटर और मोटर-बोट को तैयार होने का हुक्म भेजो, खतरे की चीजें नम्बर तीन के तहखाने में भेजो और बेतार के तार का यन्त्र अगर निकाल ले जाने की सुविधा न हो तो उसे भी उसी तहखाने के हवाले करो मगर पहिले यह समाचार भेजवा कर।

जल्दी जल्दी नगेन्द्रनरसिंह ने एक कागज पर कुछ लिखा और उसे नम्बर चौंतीस के हवाले किया जिसे ले वह दौड़ता हुआ कमरे के बाहर निकल गया। नगेन्द्रनरसिंह अब खुब बाहर निकले और जरूरी कामों की देख रेख करने लगे। देखते देखते वही मकान जो दस मिनट पहिले शान्त और निस्तब्ध था चलते फिरते और काम करते आदमियों से भर गया। मगर सब काम फुर्ती से होते हुए भी शान्ति थी, क्रम था, विच्छृंखलता कहीं न थी, न उतावली ही थी। सब लोग इस तरह काम कर रहे थे मानों पहिले पचासों दफे यह सब कर चुके हैं।

सरसरी निगाह सब तरफ और सब के कामों पर डालते हुए नगेन्द्र-नरसिंह एक दफे उस समूचे मकान में घूम आये। जब उन्होंने देख लिया कि वे सब चीजें जिनके दुश्मन के हाथ में पड़ जाने पर नुकसान की संभावना थी नम्बर तीन के अर्थात् उस तहखाने में पहुंच गई जिसमें रोज बन्द थी तो वे मकान के बाहर निकले। दर्वाजे के पास ही नम्बर चौंतीस मिला जिसके चेहरे और आवाज से उसकी दिली घबराहट प्रगट हो रही थी। उसने नगेन्द्र को देखते ही कहा, "सरदार, हम पर सब तरफ से हमला किया गया है। जासूसों से पता लगा है कि फौज ने हमें चारो तरफ से घेर लिया है और सिमटती हुई मकान की तरफ बढ़ रही है। इसके इलावे बहुत से सवार भी तेजी के साथ इसी तरफ आ रहे हैं। दो मोटर-बोटें बहुत तेजी से बढ़ी आ रही हैं, और कई मोटरें इधर उधर खड़ी दिखाई पड़ी हैं जिनके इंजिन बन्द हैं। इसके इलावे...(कुछ रुक कर) यह क्या ? अगर मेरे कान धोखा नहीं देते तो यह एयरोप्लेन की आवाज मालूम होती है। मालूम होता है हम पर जल स्थल और आकाश तीनों तरफ से हमला किया गया है।"

नगेन्द्रनरसिंह ने भी आवाज पर गौर किया और कहा, "बेशक एयरोप्लेन ही है मगर अभी दूर है, अच्छा भागना शुरू करो। यहां जितने आदमी हैं सब तीन टुकड़े हो जाओ ? कुछ एयरोप्लेन से निकलो, कुछ मोटरों से, और कुछ मोटर-बोट से भाग जाओ।"

चौंतीस ने पूछा, "और सरदार आप किस पर जाइयेगा ?"

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "मेरी फिक्र न करो, मैं इसी मकान में रहूंगा शायद जरूरत दिखाई ही पड़ गई तो मैं इस समूचे मकान को उड़ा दूंगा।"

चौंतीस ने घबड़ा कर कहा, "नहीं नहीं सरदार, इस काम के लिये बहुत से आदमी हैं, आपकी जान इस समय रक्त-मंडल के लिये सबसे ज्यादा कीमती है। अगर ऐसा ही है तो मैं रह जाता हूँ।" मगर नगेन्द्रनरसिंह ने हंस कर कहा, "देश के लिये सब की जानें बराबर हैं, पर तुम घबराओ नहीं, मैं अभी मरूंगा नहीं, जाओ और मैंने जो हुक्म दिया है सो करो।"

'हुक्म' शब्द सुनते ही लाचार नम्बर चौंतीस सामने से हट गया और दूसरे ही सायत में नगेन्द्रनरसिंह के हुक्म के मुताबिक कार्रवाई हो गई। उस जगह रहने वाले सब आदमियों के तीन गरोह हो गये और तीन तरफ को चले गये। थोड़ी ही देर बाद तीन भिन्न भिन्न तरह की आवाजों ने नगेन्द्रनरसिंह को बता दिया कि एयरोप्लेन मोटर और मोटर-बोट भागने के लिये तैयार हो गये हैं।

दौड़ता हुआ यकायक नम्बर चौंतीस पुनः सामने आया और बोला, "सरदार, बेतार की तार वाली मोटर बाहर ही रही जाती है, दुश्मन सिर पर आ गये हैं!" नगेन्द्र ने कहा, "तुम जाओ, मैं उसका इन्तजाम कर लूंगा। बस अब एक पल मत रुको!" चौंतीस ने झपट कर नगेन्द्र का पैर पकड़ लिया। उसको आंखों में आंसू भरे थे, वह चाहता था कि नगेन्द्रनरसिंह भी उसके साथ ही हवाई जहाज पर चढ़ कर निकल जायं, मगर वह एक फौजी सिपाही भी था, अनुशासन के—'हुक्म', के माने समझता था। नगेन्द्रनरसिंह उसका अफसर था जिसका हुक्म उसे मानना ही पड़ेगा।

वह उठा, नगेन्द्र ने उसे गले लगाया और कहा, "भागो, भागो, और याद रक्खो कि दुश्मन के हाथों पड़ने से मर जाना अच्छा !"

भागते भागते नम्बर चौंतीस ने कहा, "ऐसा ही होगा सरदार, 'रक्त-मंडल के सदस्य मरने से नहीं डरते। वे हंसते हंसते मरेंगे, मगर मरने के पहिले मार के मरेंगे !"

कान फाड़ने वाली आवाज के साथ एक एयरोप्लेन मकान के सामने के छोटे मैदान से चक्कर लगाता हुआ ऊपर को उठा, भड़भड़ाती हुई दो मोटरें पीछे की तरफ से बाहर को भागीं, गंगाजी की छाती को चीरती हुई एक मोटर-बोट ऊपर की तरफ दौड़ी।

मगर इसके साथ ही 'पड़ पड़ पड़' की आवाजों ने यह भी जाहिर कर दिया कि दुश्मन ने राइफिलें चलानी शुरू कर दी हैं। चारो तरफ भयानक शोरगुल मच गया।

एक सायत के लिये नगेन्द्रनरसिंह पत्थर की मूरत की तरह चुपचाप खड़े रहे, इसके बाद बाईं तरफ को घूमे जिधर एक शेड के नीचे बेतार की तार का यंत्र एक मोटरट्रक पर चढ़ाया हुआ रक्खा था। फुरती से ट्रक का इंजिन चालू किया और ड्राइवर की सीट पर बैठ कर उस तरफ ट्रक को दौड़ाया जिधर मकान की दक्षिणी दीवार पड़ती थी। इस दीवार में एक बड़ा सा दर्वाजा दिखाई पड़ रहा था जो इस समय खुला हुआ था। मोटर लिये दिये नगेन्द्रनरसिंह इस फाटक के अन्दर घुस गये और साथ ही फाटक जो शायद किसी कमानी पर जड़ा हुआ था आप से आप बन्द हो गया।

मगर इस बात का उन्हें कुछ पता नहीं लगा कि ट्रक के पिछले हिस्से को पकड़ कर लटका हुआ एक गैर आदमी भी उनके साथ ही साथ तहखाने के अन्दर घुसा जा रहा है।

[५]

गोपालशंकर और मिस्टर केमिल इस मकान के कंपौन्ड के फाटक पर पहुंच चुके थे जब उनकी आंखों के सामने ही से विप्लवकारियों का वायु-

यान चक्कर खाता हुआ ऊपर को उठा। गोपालशंकर के मुंह से दुःख भरे शब्दों में निकला, "अफसोस ! जरा सी देर हो ही गई और ये कंबख्त निकल ही भागे !!"

उसी समय मकान के पीछे की तरफ मोटरों और नदी में से मोटर-वोट के भागने की आवाजें भी उनके कान में पड़ीं। उन्होंने जल्दी से केमिल साहब से कहा, "जरूर इन्हीं में से किसी एक पर नगेन्द्रनरसिंह होगा। आप तीनों का पीछा कराइये, मैं जरा अन्दर जाता हूँ।" केमिल ने कुछ पूछने के लिए रोकना चाहा मगर तब तक तो गोपालशंकर चार-दीवारी के भीतर पहुंच चुके थे।

गोपालशंकर को विश्वास था कि अब इस जगह कोई न होगा मगर इसके खिलाफ उन्होंने एक कद्दावर आदमी को सामने से हट कर एक शेड के अन्दर जाते देखा। अपनी पिस्तौल उन्होंने हाथ में ली और दौड़ कर उस तरफ चले, मगर उसी समय उनकी बगल से होती हुई एक मोटर-ट्रक मकान की तरफ चली। जल्दी में सिवाय इसके वे और कुछ न कर सके कि मोटर के पिछले डंडे को पकड़ कर लटक जायं। जरा ही देर बाद उन्होंने मोटर को घूमते और तब एक फाटक में घुसते पाया। उनके चारो तरफ अंधेरा छा गया मगर अन्दाज से वे इतना समझे कि मोटर कोई ढाल उतर रही है।

मोटर अन्दर पहुंच कर रुकी और साथ ही उसके आगे वाले लम्प बुझ गये जिससे वहां घोर अन्धकार छा गया। गोपालशंकर उस पर से उतरे और आहट लेने लगे कि यह कौन सी जगह है और वह आदमी जो इस ट्रक को यहां लाया है अब कहां है या क्या कर रहा है। आपने पीछे इन्हें कोई बड़ा फाटक बन्द होने की आवाज सुनाई दी और तब जूतों की आवाज के अन्दाज से मालूम हुआ कि कोई आदमी सीढ़ियां चढ़ रहा है। वे समझ गये कि यह कोई तहखाना है जिसमें उस मोटर को बन्द करके वह आदमी अब ऊपर जा रहा है। बिजली की तरह से यह

ख्याल उनके मन में दौड़ गया कि अगर उस आदमी ने तहखाने के बाहर जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया तो वे उसी जगह फंसे रह जायंगे। यह सोचते ही उन्होंने अपनी जेब से टार्च निकाली और उसें बाएं हाथ में लिया, दाहिने हाथ में पिस्तौल सम्हाली और तब टार्च का बटन दबाया। तेज रोशनी चारो तरफ फैल गई जिसकी मदद से उन्होंने देखा कि सीढ़ियां चढ़ते हुए नगेन्द्रनरसिंह ऊपर की ओर जा रहे हैं। उन्होंने कड़क कर आवाज दी, "बस नगेन्द्रनरसिंह खड़े रहो! मेरी पिस्तौल तुम्हें निशाना बनाए हुए है !!"

नगेन्द्रनरसिंह सीढ़ी चढ़ते हुए रुक गये और घूम कर बोले, "मैं भी केवल तुम्हारे ही लिये ठहर गया था। मगर मेरी जान लेने के पहिले तुम अपनी तो बचाओ! यह तहखाना नदी की सतह के नीचे है और यह देखो तुम्हें मुक्ति प्रदान करने को साक्षात् भगवती गंगा तुम्हारे पास चली आ रही हैं।" नगेन्द्रनरसिंह ने अपने सामने का एक बटन दबा दिया जिसके साथ ही दो गोल छेदों के मुंह जो इस तहखाने की छत के पास बने हुए थे खुल गये और पानी की हाथ हाथ भर मोटी दो धाराएं उस तहखाने में भयानक शब्द करती हुई गिरने लगीं। गोपालशंकर घबड़ा कर उधर देख ही रहे थे कि उसी समय नगेन्द्र ने फिर आवाज दी—"और भी आनन्द लेना चाहो तो उस जंगले के पास जाओ, वह देखो तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें पुकार रही है !!"

सचमुच मिस रोज की बारीक आवाज गोपालशंकर के कान में पड़ी। घबरा कर उन्होंने बिजली की बत्ती का मुंह दूसरी तरफ घुमाया। देखा तो उनके बगल ही के एक जंगले में बन्द मिस रोज दोनों हाथ जंगले के बाहर निकाले करुण स्वर में उनको पुकार रही है। उनके मुंह से अचानक निकला, "हैं, रोज तुम !!" और वे उसी तरफ झपटे मगर उसी समय एक हंसी और उसके बाद जोर से किसी ढकने के गिरने की आवाज कान में पड़ने से रुक गये। बिजली की बत्ती उधर सीढ़ियों की तरफ घुमाई

तो देखा कि नगेन्द्रनरसिंह गायब हैं और सीढ़ी के ऊपर वाले रास्ते का मुंह बन्द हो गया है। दौड़ कर वे सीढ़ी पर चढ़ गये और उस पटरे को हटाने का उद्योग करने लगे मगर वह वज्र की तरह जमा हुआ था।

तहखाने में पानी पल पल में चढ़ रहा था। उसके गिरने का भयानक शब्द चारो तरफ गूंज रहा था। किसी तरफ से निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था। बेचैनी की निगाह से चारो तरफ देखते हुए गोपालशंकर के मुंह से निकला, "हे भगवान् ! क्या इस बिल में चूहे की तरह डूब कर मेरी और रोज की मृत्यु होगी !!"

मगर वे इतनी जल्दी निराश होने वाले मनुष्य न थे। तुरत ही उनका ध्यान रोज की तरफ गया। वे नीचे उतरे और उस जंगले के पास पहुंचे जिसके दरवाजे में ताला बन्द था। इतनी ही देर में उस तहखाने में घुटने घुटने भर पानी हो चुका था।

मजबूत ताले को तोड़ने की और कोई तर्कीब न थी। गोपालशंकर ने अपनी पिस्तौल की नली उसके ताली लगाने वाले छेद से सटाई और घोड़ा दबा दिया। भयानक आवाज ओर धूएं से तहखाना भर गया मगर ताला टूट कर गिर पड़ा। गोपालशंकर ने दरवाजा खोल दिया और बदहवास रोज उनके बदन से चिपक कर बोली—"शंकर, प्यारे शंकर ! इस भयानक कैदखाने से मुझे बचाओ !!"

गोपालशंकर ने प्यार के साथ दिलासा देनें वाली बातें कह कर उसे शान्त किया और तब उस तहखाने में चारो तरफ घूम घूम कर बाहर निकलने का कोई रास्ता तलाश करने लगे। मगर वह तहखाना था या मौत की दाढ़ जिसमें से निकल भागने का कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था।

पानी पल पल भर में बढ़ता जा रहा था। देखते देखते वह कमर तक पहुंच गया। तहखाने की कितनी हो चीजें इधर से उधर तैरने लगीं और उन्हीं के बीच में गोपालशंकर भी रोज को बगल में दबाये इधर से

उधर घूमने लगे। पल पल भर में अपनी बिजली की बत्ती चारो तरफ घुमाते थे मगर कहीं भी कोई राह निकलने की पाते न थे।

धीरे धीरे अब उनका पैर भी जमीन से लगना कठिन हो गया, छाती से ऊपर पानी तहखाने में आ चुका था। तहखाने की पाटन सिर के पास आने लगी। रोज जो गोपालशंकर के हिम्मत दिलाने वाले शब्दों की बदौलत दिल मजबूत किए हुए थी, अब अपनी जिन्दगी से बिल्कुल ही निराश हो गई। उसके मुंह से निकला "शंकर, प्यारे शंकर! बिदा, अब स्वर्ग में मिलूंगी!!"

यकायक उनके ऊपर बढ़ जाने वाले बोझ ने गोपालशंकर को बता दिया कि नाजुक-दिल रोज बेहोश हो गई।

× × ×

गोपालशंकर को इस खौफनाक तहखाने में बन्द कर नगेन्द्रनरसिंह ऊपर निकल गये। सीढ़ी पर का तख्ता मजबूती से बन्द किया और बीच के तहखानों और रास्तों को तय करने तथा उनके दरवाजों को भी मजबूत बन्द करते हुए वे मकान की एक दम छत पर जा पहुंचे।

यहां एक छोटी कोठड़ी थी। अपने पास की एक ताली से नगेन्द्रनरसिंह ने इसे खोला। भीतर जा कर दर्वाजा बन्द कर लिया और बिजली की टार्च बाली। छोटी कोठरी के चारो तरफ न जाने किस धातु के बड़े बड़े सिगार की शकल के चोंगे सजाये हुए थे और छत के साथ रबड़ की मोटी और बहुत बड़ी बोतल के आकार की कोई चीज लटक रही थी। यह एक गुब्बारा था और उन चोंगों में उस गुब्बारे में भरने वाली गैस खूब दबाव देकर भरी हुई थी, चोंगों से निकाल कर गुब्बारे में गैस भरने के लिए मुनासिब यन्त्र भी मौजूद था।

बाहर छत पर गुब्बारे को ला कर नगेद्रनरसिंह ने उसे मोटे रस्से द्वारा एक अंकुड़े के साथ बांध दिया जो छत के बीचोबीच में लगा हुआ था और तब गुब्बारे में गैस भरने लगे। ज्यों ज्यों उन चोगों की गैस

निकल निकल कर गुब्बारे में भरती जाती थी वह फूल फूल कर मोटा होता जाता था। दो तीन मिनट के भीतर ही वह पूरा भर गया और ऊपर उठने के लिए ज.र मारने लगा।

गुब्बारा छोटा था मगर एक आदमी को उड़ा ले जाने के लिए काफी था। जिस समय केमिल साहब के सिपाही चारो तरफ से उस मकान को घेर कर रस्सियों और सीढ़ियों की मदद से उसके ऊपर चढ़ रहे थे उसी समय नगेन्द्रनरसिंह ने गुब्बारे के नीचे लटकते हुए झूले में बैठ कर अपने को उसकी रस्सियों से मजबूत बांध लिया और तब कमर से खुखड़ी निकाल कर एक हाथ उस रस्से पर मारा जो गुब्बारे को बांधे हुए था। रस्सा कट गया, सनसनाता हुआ गुब्बारा ऊपर को उठा, कुछ देर बाद थोड़ा नीचे आया, फिर ऊँचा हुआ, और तब भयानक रूप से हिलता डुलता रात की तेज हवा में तीर की तरह उत्तर की तरफ को उड़ चला।

सरकार की सब कार्रवाइयों को मात कर और अपने जानी दुश्मन को मौत के मुंह में डाल रक्त-मंडल का मुखिया अपने किले की तरफ उड़ गया था।

बलिवेदी

[१]

भारत के भाग्य-विधाता और यहां के बड़े लाट लार्ड गेवर लंच खाकर अभी उठे हैं। उनके मुंह में एक मोटा टर्किश सिगार है और वे धूएं का बादल उड़ाते हुए आरामकुर्सी पर पांव पसारे पड़े उन अखबारों को देख रहे हैं जो उनका प्राइवेट सेक्रेटरी अभी थोड़ी देर पहिले रख गया है।

एक खबर पर उनकी आंखें कुछ आश्चर्य के साथ ठहरीं। मानों एक बार पढ़ने से कुछ समझ न सके हों इस तरह पर उन्होंने उसे दुबारा पढ़ना शुरू किया। समाचार यह था :—

"हमारे खास संवाददाता ने बहुत जांच के बाद ख़बर भेजी है कि धरमपुर के राजा ने भारत सरकार की शर्तें नामंजूर कर दी हैं। उनका कहना है कि सरकार ने उनके साथ व्यर्थ का वैर बांध रक्खा है और तरह तरह के झूठे सच्चे ऐब उन पर लगा कर इस लिये उन्हें गद्दी से उतारना चाहती है जिसमें उनके बाद राज्य की प्रसिद्ध तांबे की खानें सरकार के हाथ लगें। उन्होंने निश्चय कर लिया है कि वे स्वयम् कभी गद्दी से न उतरेंगे। अगर सरकार इसके लिए उन्हें मजबूर करेगी तो वे

अपनी तुच्छ शक्ति भर उससे युद्ध करके मर मिटेंगे पर अपने पुरखों का राज्य हाथ से जाने न देंगे।"

इस समाचार को लाट साहब ताज्जुब के साथ पढ़ गये। धरमपुर भारत की सीमा पर एक बहुत छोटा और मामूली सा राज्य था जिसके साथ कुछ दिनों से सरकार की खटपट चली आ रही थी। आज ही कल में वे उसके राज्य के सिंहासन छोड़ हट जाने का समाचार सुनने की आशा कर रहे थे, पर इसके बदले में उन्हें यह क्या सुनाई पड़ा? धरमपुर का राजा और भारत सरकार से युद्ध ठाने? खरगोश और शेर में लड़ाई? क्या वे सच देख रहे हैं? उन्होंने अखबार के हेडिंग पर निगाह की—यह देखने के लिए कि उनके हाथ में कौन सा समाचार-पत्र है। देखा तो वह 'स्वाधीन-भारत' था। नफरत के साथ उन्होंने उसे नीचे फेंक दिया। उनका सेक्रेटरी उनके पास कैसे कैसे रद्दी संवादपत्र भेज दिया करता है? इसके लिए उन्हें उसे डांट बतानी पड़ेगी।

उन्होंने अपने प्यारे पत्र 'भारत-दोस्त' को हाथ में लिया ही था कि इसी समय बाहर से किसी ने उनके स्मोकिंग रूम के दर्वाजे पर थपकी मारी। उनके 'भीतर आओ' कहने पर उनका प्राइवेट सेक्रेटरी भीतर आया जिसके हाथ में कुछ कागजात थे। इसके पहिले कि वह इनसे कुछ कहे लाट साहब ने जमीन पर पड़े 'स्वाधीन-भारत' की तरफ नफरत की उंगली दिखा कर उससे कहा, "मनरो, यह रद्दी अखबार मेरे पास !!"

मनरो ने नम्रता से कहा, "उसमें छपे धरमपुर रियासत सम्बन्धी समाचार पर आपकी निगाह पड़ जाय इसलिए मैंने उसे आज की डाक के साथ कर दिया था माई लार्ड !"

बड़े लाट ने तुच्छता के साथ कहा, "ओह, ये रद्दी अखबार इसी तरह की मनमानी खबरें छापते रहते हैं जिसमें सचाई की बू भी नहीं होती, और........"

मनरो०। मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है माई लार्ड कि

इस खबर में बहुत कुछ सचाई है।

लार्ड गेवर०। (चौंक कर) यह क्या कह रहे हो तुम मनरो ?

मनरो०। सीमान्त के हमारे एजेण्ट का यह खत अभी अभी डाक से आया है ?

लार्ड गेवर ने सेक्रेटरी के बढ़ाये हुए खत को ले लिया और कुछ उद्वेग के साथ उसे पढ़ गए। जो कुछ उन्होंने पढ़ा उसका सार यही था कि 'धरमपुर के राजा ने सरकारी शर्तें नामंजूर करके तख्त से उतरने से इनकार कर दिया है और कहा है कि चाहे मेरी जान चली जाय मगर मैं अपने बाप दादों का राज्य छोड़ कर हटूंगा नहीं।'

पूरे विवरण के साथ उपरोक्त हाल देने के बाद एजेण्ट ने लिखा था, "अगर इस राजा के साथ कड़ाई से काम नहीं लिया जायगा तो आस पास के दूसरे पहाड़ी राजाओं पर भी बहुत बुरा असर पड़ेगा और इससे केन्द्रीय सरकार के सम्मान में बहुत बट्टा लग जायगा, अस्तु शीघ्र ही इस सम्बन्ध में मुनासिब कार्रवाई होनी चाहिये।"

चीठी के पीछे इस सम्बन्ध में पोलिटिकल एजेन्ट और धरमपुर के राजा में जो पत्र व्यवहार हुआ था उसकी नकलें भी नत्थी थीं। लार्ड गेवर कुछ बेचैनी के साथ उन्हें सरसरी निगाह से देख गये और तब सवाल की नजर मनरो पर डालते हुए बोले, "यह मामला तो बड़ा बदमजा होता दिखाई पड़ता है!"

मनरो०। (गंभीर होकर) बेशक माई लार्ड, और खास करके इसलिये कि इस मामले में हमलोग धरमपुर पर कोई खास इलजाम नहीं लगा सकते। उसने अगर 'ब्रिटिश कापर ट्रस्ट' को अपने राज्य की तांबे की खानों की लीज देने से इनकार कर दिया है तो अपने हकों के भीतर ही काम किया है और हम सिर्फ इतने ही से कसूर पर खुले आम उसे हटा नहीं सकते हैं।

लार्ड गेवर०। न्याय बेशक यही कहता है, मगर इस समय तो इस 'ट्रस्ट' का साथ हमें देना ही होगा। इंगलैण्ड से चलती वक्त प्रधान

मंत्री ने खास तौर पर मुझसे कहा था कि इस 'ट्रस्ट' की सहायता करना ही उचित होगा। उन्होंने स्पष्ट ही कहा था कि अगर कोई दूसरा महा-युद्ध छिड़ गया तो ब्रिटिश गवर्नमेन्ट तांबे का अभाव अनुभव करेगी।

मनरो०। बेशक, साम्राज्य के हित के लिये इस वक्त हमें धरमपुर को बलि देना ही होगा। गत युद्ध में ही तांबे की कमी भयानक असर दिखाती अगर अमेरिका हमारी मदद को न आता। अब दुबारा वैसी ही भूल करना आत्महत्या करना होगा।

लार्ड गेवर०। जरूर! मगर सवाल तो यह है कि अब धरमपुर के राजा को हटाने के लिये बहाना क्या ढूंढ़ा जाय?

मनरो०। बहाने तो एक नहीं दस मिल जायंगे, उसकी चिन्ता आप न करें। मैंने धरमपुर की फाइल आफिस से मांगी है, उसे देखने से कोई न कोई पायन्ट जरूर मिलेगा, मगर फिलहाल तो कोई कार्रवाई तुरत ही करनी पड़ेगी। जब कि हमारी सरकार इस मामले में यहां तक बढ़ चुकी है कि धरमपुर के राजा को तख्त से उतार देने तक की धमकी दे चुकी है तो अब पीछे हटने से सचमुच ही हमारे एजेन्ट के शब्दों में उधर के पहाड़ी राजाओं के सामने हमारा 'प्रेस्टिज' एक दम नष्ट हो जायगा।

लार्ड गेवर०। अच्छा मैं कमांडर-इन-चीफ और अपने पोलिटिकल सेक्रेटरी से राय मिला कर बहुत जल्द आगे के लिये कोई कार्रवाई निश्चित करूंगा। वे लोग तो आज लौट आवेंगे न?

मनरो०। जी हां, सिकंदराबाद और रक्सौल के मामले की जांच करके आज सुबह ही उनके लौट आने की बात थी क्योंकि आज शाम को वह कमेटी है जिसके लिये आपने हुक्म दिया था।

बड़े लाट०। कौन सी? हां ठीक है याद आया, उसी कम्बख्त 'रक्त-मंडल' के बारे में?

मनरो०। जी हां, वही।

बड़े लाट०। ये कम्बख्त भी बुरी बला की तरह पीछे लग गये हैं। किसी

तरह इनका कोई भेद नहीं फूटता और दिन दिन इनकी शैतानी बढ़ती ही जाती है।

मनरो०। जी हां, कुछ ही देर हुई इनके बारे में बनारस के कमिश्नर की एक कनफिडेन्शल रिपोर्ट पहुंचो है जिसे सर ह्यूम (यू० पी० के छोटे लाट) ने अपने नोट के साथ यहां भेज दिया है। उससे इनके बारे में कुछ और भी नई बातें मालूम पड़ी हैं।

बड़े लाट०। वह क्या ?

मनरो०। (अपने हाथ के कागजों में से एक अलग करके) इससे प्रगट होता है कि बनारस जिले में कहीं पर रक्त-मंडल ने अपना एक छोटा अड्डा बना रक्खा था। बड़ी चालाकी से पंडित गोपालशंकर ने उसका पता लगाया। परसों उस पर बड़ी तैयारी के साथ हमला किया गया, मगर एक भी आदमी हाथ न आया उलटे पंडित गोपालशंकर उन लोगों के हाथ में पड़ गये।

बड़े लाट०। हैं, गोपालशंकर उनके हाथ में पड़ गये! मगर सो कैसे ? वे अब कहां हैं ?

मनरो०। उस हमले के बाद से उनका कोई पता नहीं लग रहा है। मिस्टर केमिल का विश्वास है कि वे या तो मार डाले गये और या दुश्मन उन्हें भी अपने साथ ले भागे। मगर अभी उनकी खोज हो रही है, कोई अन्तिम रिपोर्ट नहीं आई है।

बड़े लाट०। यह तो बहुत ही बुरी खबर सुनने में आई। इस कम्बख्त रक्त-मंडल के विरुद्ध अगर किसी ने कुछ भी सफलता पाई थी तो इन्हीं गोपालशंकर ने! ये अगर दुश्मनों के हाथ पड़ गये तो कभी जीते न बचेंगे और इनके हट जाने पर हम लोगों का दाहिना हाथ टूट जायगा। अच्छा कैसे कैसे क्या हुआ जरा कुछ बताओ तो सही ?

मनरो ने अपने हाथ का कागज लार्ड गेवर के सामने रख कर कुछ कहना शुरू किया ही था कि बाहर दर्वाजे पर से कुछ आवाज आई और भीतर

आने की आज्ञा पाने पर एक फौजी अफसर अन्दर आया जिसके हाथ में एक तार था। इस अफसर का चेहरा इस समय जर्द हो रहा था और इसका वह हाथ जिसमें तार था किसी उद्वेग के कारण कांप रहा था। इसने बड़े लाट को फौजी सलाम किया और तब वह तार बढ़ाते हुए कहा, "बड़ी बुरी खबर है, माई लार्ड।"

आने वाला फौजी दफ्तर का एक ऊंचा ओहदेदार था जिसकी बात सुन लार्ड गेवर ने कुछ ताज्जुब से पूछा, "क्यों क्या मामला है शेफर्ड?" उसने कांपती आवाज में कहा, "कमांडर-इन-चीफ की स्पेशल पर बम फेंका गया है, उनको मौत हो गई है!"

बड़े लाट लार्ड गेवर इस तरह चमक उठे मानों उन्हें गोली लगी हो। उनके मुंह से अस्पष्ट स्वर में निकला—"हैं, क्या? क्या कहते हो?" और उन्होंने जल्दी से तार खोल कर पढ़ा, यह लिखा था :—

"कमांडर-इन-चीफ की स्पेशल ट्रेन बम गिरने से चूर चूर हो गई। उनकी लाश नहीं मिली है। मैं बाल बाल बचा हूं, वायुयान से आ रहा हूं—गेविन।"

लार्ड गेवर के सिर में चक्कर आ गया। मनरो और शेफर्ड पागलों की तरह एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

[२]

यह भयानक समाचार बात की बात में देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया।

दुर्घटना के दूसरे ही दिन से बड़े मोटे मोटे हेडिंग देकर समाचार-पत्रों में इसके विवरण छपने लगे। पहिले पहिल तो किसी को कुछ ठीक हाल मालूम न पड़ा मगर धीरे धीरे पूरी बातें प्रगट होने लगीं। घटना के तीसरे दिन इसके विषय में 'स्वाधीन भारत' में जो कुछ छपा वह इस प्रकार था :—

"भारत के इतिहास में आज तक जो कभी नहीं हुआ था वह घटना उस दिन हो गई। यहां के जंगी लाट की स्पेशल ट्रेन पर बम फेंका गया

जिसके फलस्वरूप आधी ट्रेन नष्ट हो गई और हमारे कमांडर-इन-चीफ लार्ड गोशेन की जान चली गई। हमारे खास संवाददाता ने जिसे इस दुर्घटना का पता लगाने के लिये हमने रवाना किया था इस संबन्ध में जो समाचार भेजा है वह नीचे दिया जाता है :—

"पुलिस और फौज के कड़े पहरे तथा असल भेदों को छिपाने की सतत चेष्टा करते रहने के कारण दुर्घटना का पूरा विवरण प्रगट नहीं हो रहा है तथापि जो कुछ पता लगा है उससे जान पड़ता है कि बुध की रात को करीब दो बजे यह रोमांचकारी घटना हुई है। जैसा कि हमारे पाठकों को मालूम ही होगा, कमांडर-इन-चीफ लार्ड गोशेन बडे लाट के पोलिटिकल सेक्रेटरी मिस्टर गोविन के साथ जलालाबाद के किले वाली दुर्घटना की जांच करने पश्चिमोत्तरी सीमांत प्रदेश को गये हुए थे। वहां ही से लौट रहे थे जब की यह बात है।

"सुनने में आया है कि जलालाबाद से जमरूद तक तो लार्ड गोशेन मोटर पर आये और वहां से स्पेशल ट्रेन पर सवार होकर रक्सौल के लिये रवाना हुए। जलालाबाद से जमरूद तक सडक के दोनों तरफ और वहां से बराबर पंजाब की सीमा तक लाइन के दोनों तरफ तार के प्रत्येक खंभे के पास सिपाही खड़े थे ताकि कोई उस तरह की दुर्घटना होने न पावे जैसी कि आखिर को हो ही गई।

"दुर्घटना नौशेरा और अटक के बीच में हुई। जिस समय स्पेशल अपनी पूरी तेजी से अटक के पुल की तरफ बढ़ रही थी उसी समय किसी ने उस पर बम फेंका। ऐसा सुनने में आता है कि लाइन के दोनों तरफ खड़े सिपाहियों में से ही एक की यह कार्रवाई थी। दुर्घटना के स्थान के बाकी सिपाहियों में से एक से भाग्यवश मेरी मुलाकात हो गई जिसने इस प्रकार हाल बयान किया है :—

"मोड़ के ऊपर ट्रेन के इञ्जिन की सर्चलाइट की चमक देखते ही मैं होशियार हो गया। मैंने अपने सामने के सिपाही से जो तार के खंभे से

लगा ऊंघ रहा था कहा, "होशियार हो जाओ" जिसे सुनते ही वह तन के खड़ा हो गया और उसके बाद वाले सिपाही भी ट्रेन के आने की आहट पा चैतन्य हो गये। इसी समय यकायक मैंने देखा कि मेरे बाईं तरफ अर्थात् जिधर से ट्रेन आ रही थी उधर वाला मुझसे करीब दो या तीन खंभे के फासले पर का सिपाही अपनी जगह से कुछ आगे बढ़ आया। इन्जिन के सर्चलाइट की रोशनी में उसका बदन साफ दिखाई पड़ता था। जैसे ही ट्रेन उसके सामने पहुंची वह तेजी से दौड़ कर आगे बढ़ा। उसके हाथ में कोई चीज थी जिसे उसने जोर से ट्रेन पर फेंक दिया। उसके गिरते ही हरे रंग की एक बिजली सी वहां पर चमक गई, दूसरी सायत में ट्रेन के तीन डब्बे गायब दिखाई पड़े, चारो तरफ शोरगुल मच गया, इन्जिन उलट गया, शोर उठा कि 'ट्रेन पर बम फेंका गया है'।

"मैं इस संबंध में और जांच कर रहा हूं, जो कुछ पता लगेगा फिर लिखूंगा, पर जहां तक मालूम हुआ है यह कार्रवाई 'रक्त-मंडल' की है। यह मंडल दिन पर दिन हिम्मत बढ़ाता जा रहा है। अगर जल्दी इसे दबा न दिया गया तो इस देश की भी वही हालत हो जायगी जो जारशाही के समय में रूस की हुई थी। लोगों में बड़ा आतंक छा गया है और जिधर देखो उधर ही यह सवाल हो रहा है कि आखिर 'रक्त-मंडल' क्या बला है और वह चाहता क्या है!"

करीब करीब यही या इससे मिलते जुलते विवरण सब पत्रों में छपे थे और सभी रक्त-मंडल के पल्ले इस भयानक काम की जिम्मेदारी बांध रहे थे। अभी तक जिस 'रक्त-मंडल' का नाम लुके छिपे तौर पर केवल कुछ खास आदमी ही जानते थे, इस घटना ने उसे शैतान की तरह मशहूर कर दिया। सबकी जबान पर यही भयानक नाम दौड़ने लगा और 'स्वाधीन भारत' के संवाददाता के कथनानुसार सभी आपस में पूछने लगे—"यह 'रक्त-मंडल' क्या बला है और यह चाहता क्या है?"

सरकार की तरफ से पहिले तो इस दुर्घटना का हाल छिपाने की चेष्टा

की गई परन्तु यह ऐसी भयानक घटना थी कि किसी तरह न दबी। यह भी संभव है कि स्वयम् 'रक्त-मंडल' ने भी इस समाचार को चारो तरफ फैलाने के लिए कोई कार्रवाई की हो।

फलस्वरूप चारो तरफ पकड़ धकड़ जारी हो गई। जहां की यह घटना थी उसके चारो तरफ पचीसों कोस तक के लोग सताये जाने लगे। लाइन के दोनों तरफ के आधी आधी मील तक के सब सिपाही तो उसी समय हिरासत में ले लिये गये थे। मगर किसी की जुबानी कुछ भी पता न लगा। सिर्फ यह जाना जा सका कि जो सिपाही आगे बढ़ कर कोई चीज ट्रेन पर फेंकता हुआ देखा गया था वह रामसिंह नाम का एक नया रंगरूट था जो थोड़े ही दिन हुए सेना में भरती हुआ था और जिसने अपनी मेहनत और फर्माबर्दारी की बदौलत अपने ऊपर के अफसरों को बहुत ही मेहरबान बना लिया था। जांच से यह भी मालूम हो गया कि उस बम ने रामसिंह को भी जीता न छोड़ा क्योंकि दुर्घटना के स्थान के पास हा उसकी पोशाक का कुछ अधजला हिस्सा भी पाया गया।

भारत और लडन के वीच तार दौड़ने लगे। एक नये सेनापति वहां से जंगी जहाज पर तुरन्त रवाना किये गये और जब तक वे यहां न पहुंचें तब तक के लिये बड़े लाट के मिलिटरी सेक्रेटरी थामसन को उनकी जगह काम करने का हुक्म हुआ। बड़े लाट की कोठी में बैठकों पर बैठकें होने लगीं। खुफिया विभाग के अफसरों पर डांट पड़ने लगी। पुलिस पर दबाव पड़ा। सैकड़ों आदमी गिरफ्तार कर जेलों में ठूंस दिये गये, हजारों पर शक शुवहे होने लगे। पर जिन लोगों की यह कार्रवाई थी उनका खाक भी पता न लगा।

[३]

जंगी लाट की मृत्यु से हुई भई हलचल को कुछ देर के लिये अलग छोड़ हम अपने पाठकों को आगरे के एक शान्त स्वच्छ महल्ले की तरफ ले चलते हैं।

इस तरफ जिधर हम पाठकों को लेकर चल रहे हैं और जो शहर का बाहरी प्रान्त है, केवल ऊंचे अफसरों और अमीरों के ही बंगले हैं और मुख्य शहर की घसपस भीड़भाड़ शोरगुल कुछ भी नहीं है।

एक खूबसूरत बंगले में जो यद्यपि स्वयम् तो बहुत बड़ा नहीं है पर जिसके चारो तरफ का कम्पौन्ड खूब लम्बा चौड़ा और अच्छी तरह आरास्ता है हम पहुंचते हैं। यह बंगला भारत सरकार के मेकैनिकल एड-वाइजर तथा बेतार की तार के प्रसिद्ध एक्सपर्ट कैप्टेन रूबी का है और इसमें वे सपरिवार रहते हैं।

सुबह का समय है। एक बड़े कमरे में, जो कि वैज्ञानिक प्रयोगशाला की तरह सजा और तरह तरह के यंत्रों से भरा हुआ है, कप्तान रूबी एक कुर्सी पर बैठे हुए हैं और उनके सामने की तरफ आरामकुर्सी पर एक नौजवान आदमी जिसकी उम्र चौबीस पचीस बरस से ज्यादा न होगी कुछ विचित्र हालत में पड़ा हुआ है। उसका समूचा बदन नंगा है अर्थात् सिवाय एक जांघिये के जो कमर में पड़ा हुआ है उसके बदन पर लत्ते का एक टुकड़ा भी नहीं है और वह खुद भी आरामकुर्सी के साथ बांधा हुआ है, रस्सियों से नहीं, बल्कि तांबे का खूब महीन तारों से जो उसके बदन के हर हिस्से को उस कुर्सी के साथ इस तरह बांधे हुई हैं कि यद्यपि तारें उसके बदन में चुभ नहीं रही हैं परन्तु फिर भी इतनी ढीली भी नहीं हैं कि वह एक आध इंच भी किसी तरफ को टल सके। वह आरामकुर्सी भी जिसके साथ वह नौजवान बंधा हुआ है तांबे की ही बनी हुई है और उसमें बेंत की जगह तांबे के तारों का ही इस्तेमाल किया गया है अर्थात् बेंत की जगह तांबे की तारों से वह बिनी हुई है। इस कुर्सी के चारो पावे भी तांबे के हैं मगर वे इस समय शीशे की चार मोटी ईंटों पर रक्खे हुए हैं।

नौजवान के पीछे की तरफ शीशे से मढ़ा एक टेबुल है जिस पर विचित्र तरह का एक यंत्र रक्खा हुआ है जिसके अद्भुत अद्भुत कल पुर्ज़े और पहिये कुछ अजीब तरह से चल फिर रहे हैं। इस यंत्र का

दाहिनी तरफ का हिस्सा एक मोटे बेलन की शकल का है जिसके कई टुकड़े अलग अलग चाल से धीरे धीरे घूम रहे हैं और उनके उपर मशीन की कई बांहें सी लटकी हुई हैं जिनमें कई पेन्सिलें फंसी हुई हैं। बाईं तरफ कुछ कुछ फोनोग्राफ की तरह का एक यन्त्र लगा हुआ है जिसका चोंगा विचित्र तरह से लम्वा हो कर इस तरह आगे को वढ़ा हुआ है कि उसका भोंपा नौजवान की कुर्सी के बगल से हो हुआ उसके चेहरे के सामने आ गया है।

पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल हम बताये देते हैं कि यह नौजवान वही चोर है जो पंडित गोपालशंकर के बंगले में चोरी करते हुए मुरारी द्वारा पकड़ा गया था* और गोपालशंकर के अद्भुत मस्तिष्क की उपज यह विचित्र यन्त्र वही है जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतारता है। काशी जाती समय पंडित गोपालशंकर इस यन्त्र को कप्तान रूबी के सुपुर्द करके इस नौजवान पर उसका प्रयोग करने को कह गये थे और इस समय रूवी वही काम कर रहे हैं।

यह नौजवान जो सूरत शक्ल से किसी ऊंचे खान्दान और नामी घराने का होनहार मालूम होता है इस समय शान्ति के साथ चुपचाप कुर्सी पर पड़ा है मगर गौर के साथ देखने वाला तुरत कह देगा कि इसके मन में इस समय कोई तूफान उठ रहा है जिसके वेग को यह बड़ी कठिनता से प्रगट होने से रोक रहा है। इसकी आंखें इस समय किसी भीतरी उद्वेग के कारण चमक रही हैं और यह एकटक नजर से कप्तान रूबी की तरफ देख रहा है जो अपने हाथ की छोटी नोटबुक को बड़े गौर से पढ़ रहे हैं।

नोटवुक समाप्त करके रूबी ने बगल की कुर्सी पर रख दी और तब उस नौजवान की तरफ देख कर लम्बी सांस के साथ कहा, "नौजवान, क्या तुमने निश्चय कर लिया है कि अपनी मर्जी से हमें कुछ न बताओगे?"

नौजवान ने धीरे मगर दृढ़ता से सिर हिलाया। रूबी बोले, "तुम

---

* पहिले भाग की अन्तिम कहानी पढ़िये।

जानते हो कि चाहे बड़े अफसर इसे स्वीकार न करें पर उनकी जानकारी में है कि यहां की पुलिस मुजरिमों को ऐसी ऐसी तकलीफें दे सकती है कि मौत भी उसके सामने तुच्छ हो पड़ती है और जिससे लाचार हो कर मुजरिमों को असल हाल कह ही देना पड़ता है !"

नौजवान की जुबान कुछ न वोली, मगर उसकी आंखों ने कह दिया कि वह इस बात को जानता है मगर साथ ही इसकी परवाह भी नहीं करता। कप्तान रूबी जो उसके चेहरे की एक एक लकीर और तेज आंखों की एक एक चमक को गौर से देख रहे थे यह बात समझ गए और बोले, "यह मैं समझता हूँ कि तुम बहादुर आदमी हो और अपना भेद छिपाये रखने के लिये सब तरह की तकलीफें सहने को तैयार हो मगर इस जमाना देखे हुए अधेड़ की बात भी याद रक्खो। मनुष्य की आत्मा चाहे कितनी ही बलवान हो पर इस शरीर रूपी पिंजड़े में वन्द रहने के कारण इस शरीर के आधीन हो कर ही उसे चलना पड़ता है। शरीर को असह्य कष्ट पहुंचेगा तो आत्मा को भी दुःख पहुंचेगा और उसकी तकलीफ जुबान के रास्ते प्रगट हो ही जायगी।"

नौजवान के मुंह पर हंसी की एक क्षीण आभा दिख कर तुरत लोप हो गई, मानों रूबी की यह फिलासफी उसके लिए हास्यजनक थी और वह इस बात के लिये तैयार था कि चाहे कितना भी कष्ट उसके शरीर को दिया जाय मगर उसकी जवान चुप ही रहेगी। क्या जाने कप्तान रूबी इस बात को समझे या नहीं पर वे कहते गए—"तुम यह भी समझ रक्खो कि तुम्हारी जुबानी तुम्हारे रक्त-मंडल का भेद जानने के लिये सरकार उचित अनुचित सभी प्रकार के उपायों को भी काम में लाने को तैयार है। अगर जरूरत देखी गई तो तुम्हारे बदन को लोहे से दाग दाग कर के भी तुम्हारी जुबान खुलवाई जा सकती है !"

नौजवान की निगाह ने उसके बदन की तरफ घूम कर मानो कहा "वह भी कर देखो !"

रूबी०। मगर इस समय तुम जो नंगे करके इस तांबे को कुर्सी पर बैठाये गये हो वह इसलिये नहीं कि तुम्हारा बदन दागा जाय, या तुम्हारे नाखूनों में कांटियें ठोंकी जांय, या तुम्हारी उंगलियों में तेल से तर लत्ता लपेट उन्हें जलाया जाय, या तुम्हारे नीचे आतिशबाजी का अनार छुड़-वाया जाय, या तुम पर उबलता हुआ तेल छिड़का जाय और जिस तरह पर भी हो तुम्हारी जुबान जो जब से तुम पकड़े गये हो तुम्हारे तालू से सटी हुई है, खुलवाई जाय। यद्यपि यह मैं कहे देता हूं कि आवश्यकता पड़ने पर वह सब कुछ बल्कि इससे बढ़ के भी कुछ करने को हम लोग तैयार हैं मगर अभी नहीं। हम लोग रहमदिल हैं, तुम्हारे 'रक्त-मंडल' की तरह खूनी नरपिशाच नहीं। हम पहिले शान्तिपूर्ण उपायों से काम लेंगे और जब उनसे काम निकलता नहीं देखेंगे तभी दूसरे उपाय काम में लावेंगे। नौजवान, इस समय मैं विज्ञान की सहायता से तुम्हारे दिल के अन्दर घुसने और वहां का भेद जानने की कोशिश करूंगा। आज का विज्ञान ऐसी मशीन के बनाने में सफल हुआ है जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतार सकती है, उसके दिल के तहों में छिपा भेद प्रगट कर सकती है। तुम पर ऐसे ही एक यन्त्र का प्रयोग किया जायगा जो मुझे विश्वास है कि तुम्हारी जुबान के न हिलने पर भी उन बातों को जो मेरे पूछने पर भी तुम बताना नहीं चाहते, प्रकट कर देगा।

इस बार एक प्रकार के भय की क्षीण रेखा नौजवान के चेहरे पर दौड़ गई पर फिर तुरत ही दूर भी हो गई। इसे रूबी ने भी देखा और प्रसन्न होकर कहा, "पंडित गोपालशंकर की बनाई वह मशीन तुम्हारे पीछे है। इस समय मैं उसी का प्रयोग तुम पर करने जा रहा हूं मगर यदि तुम स्वयम् ही ठीक हाल बता दो तो क्यों व्यर्थ का तरद्दुद किया जाय!"

कहते हुए रूबी जरा ठहरे, मगर नौजवान स्थिर दृष्टि से उनकी तरफ देखता ही रहा कुछ बोला नहीं। आखिर वे फिर कहने लगे—"यह मैं इसलिये कह रहा हूं कि उस यन्त्र के प्रयोग के लिये तुम्हारे बदन के अंदर

से बिजली का बहुत तेज करेन्ट दौड़ाया जायगा जो तुम्हारी सब इन्द्रियों को शिथिल करके मन और दिमाग को ढीला कर देगा। सम्भव है कि वह कई हजार वोल्ट की बिजली तुम्हारे बदन को नुकसान पहुंचावे, तुम्हें लकवा फालिज या ऐसा ही कोई रोग हो जाय, या तुम्हारा प्राण ही निकल जाय, अस्तु अब भी मेरी बातें मानो और साफ साफ जो कुछ जानते हो कह दो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि इसके बदले में तुम इस दुनिया में जो कुछ भी सब से कीमती चीज समझते हो वह पावोगे, बल्कि......."

रूबी आगे कह न सके क्योंकि उस नौजवान ने घृणा के साथ आंखें दूसरी तरफ फेर ली थीं। अगर उसका सिर भी उन्हीं तांबे की तारों से कुरसी के साथ बंधा न होता तो शायद वह सिर घुमा लेता। आखिर लाचार हो रूबी ने कहा, "खैर तो अब अपनी जिद्द के लिये तुम खुद जिम्मेदार हो। मैं उस यन्त्र का प्रयोग करता हूं। अगर तुम्हारी जुबान नहीं बोलती तो मैं तुम्हारे मन से तुम्हारा और तुम्हारे उस खूनी मंडल का भेद पूछूंगा।"

नौजवान के चेहरे पर एक बार पुनः वही भय का चिन्ह जो कुछ देर पहिले दिखाई पड़ा था दौड़ गया, मानो वह उस भेद के प्रगट हो जाने के ख्याल से डर रहा था, पर कप्तान रूबी ने अब ध्यान न दिया और उस यन्त्र की दुरुस्ती में लग गये।

उस अत्यन्त नाजुक और उच्च वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण यन्त्र का पूरा भीतरी हाल कहना व्यर्थ और अनावश्यक होगा और रूबी ने उसके किस भाग को किस प्रकार के काम में लगाया यह भी कहने की आवश्यकता नहीं। मोटा-मोटी हिसाब से जो कुछ दिखाई पड़ा वह यह था कि उस यन्त्र से लगी छः महीन तारों में से, जिन सभों के सिरे पर रबर की कुप्पियों के अन्दर कुछ बहुत ही नाजुक यन्त्र लगे हुए थे, दो उस कैदी की दोनों बाहों के साथ ठीक नब्ज के ऊपर लगा दीं, दो माथे के दोनों बगल की कनपटी के साथ लगा दीं, एक हृदय के ऊपर लगा दी, और एक नाभी के साथ

लगा दी। शायद अगर वह कुरसी के साथ बंधा हुआ न होता तो कैदी इसमें कुछ आपत्ति करता पर इस समय वह सब तरह से लाचार था। दो अन्य तारें यन्त्र से लाकर कुरसी के दो तरफ लगा दी गईं और अब वह यन्त्र प्रयोग के लिये तैयार हो गया। कप्तान रूबी ने यन्त्र के कई पुर्जों को छेड़ दिया जिससे वे मंदगति से चलने लग गये और उसके भिन्न भिन्न अंश अपना अपना काम करने लगे। यन्त्र के अंदर से एक तरह की गूंजने वाली आवाज निकलने लगी।

यंत्र के दाहिनी तरफ लगे मोटे बेलन को गौर से रूबी ने देखना शुरू किया जिसके कई टुकड़े थे जो अलग अलग चाल से धीरे धीरे घूम रहे थे और जिनमें से हर एक पर सफेद कागज मढ़ा हुआ और सामने की तरफ एक एक पेन्सिल एक तरह की बांह के साथ लगी हुई थी। कप्तान रूबी ने इसमें से कई पेंसिलों को दबा दिया। वह बेलन अब इन पेंसिलों से रगड़ कर घूमने लगा जिससे पतली पतली काली लकीरें कई जगह उन कागजों पर बनने लगीं।

रूबी कुछ देर तक उन लकीरों को देखते रहे। यकायक उन्होंने कुछ जोर से कहा, "तुम क्या 'रक्त-मंडल' द्वारा पंडित गोपालशंकर के बंगले में चोरी कर कुछ फोटो के प्लेट निकाल लेने के लिये भेजे गये थे?"

यकायक बेलन के एक हिस्से के ऊपर की पेंसिल वाली बांह जोर से हिली और कुछ सायत तक हिलती रह कर फिर शान्त हो गई। वह लकीर जो इस पेंसिल द्वारा बेलन पर पड़ रही थी एक दफे जोर से दाहिने से बाएं को हटी और फिर तीन चार लहरें खाकर पुनः शत भाव से बनने लगी। रूबी ने खुशी के साथ कहा, "नौजवान, तुम्हारी जुबान नहीं हिली मगर तुम्हारे दिल की धड़कन ने यकायक बढ़ कर मुझे जवाब दिया है—"हां।"

इस बात के साथ ही उस बेलन के बाद वाले बेलन की पेंसिल जोर से हिल गई जिससे उसके नीचे के कागज पर पड़ती हुई लकीर में लहर आ

गई। रूबी प्रसन्नता से बोले, "मेरी बात सुन कर तुम्हें अचानक यह भय हो गया कि क्या इसी तरह सममुच तुम्हारे दिल के भीतर छिपा सब भेद खोल तो नहीं लिया जायगा। इससे तुम्हारा दम बहुत जरा देर के लिये रुका। तुम्हारी नाभी पर धक्का पहुंचा और इस यंत्र की जुबान द्वारा तुम्हारी नाभी ने इस बात को प्रकट कर दिया। अच्छा नौजवान, यह तो बताओ कि तुम्हारी जो षड्यंत्रकारी सभा है उसका हेड आफिस कहां है?"

किसी पेंसिल ने कुछ न बताया। नौजवान अपने मन पर खूब काबू किये हुए था, परंतु कप्तान रूबी भी इस बात को समझते थे। उन्होंने फिर पूछा, "तुम इस बात को जानते तो हो न?"

नौजवान के अपने को बहुत सम्हालने पर भी एक पेंसिल ने हिल कर "हां" कह ही दिया। कप्तान रूबी ने प्रसन्न होकर मन हो मन कहा, "पंडित गोपालशंकर का यह यंत्र सब भेद खोल देगा!" उन्होंने एक कागज और पेंसिल उठा ली और उस पर अब तक के नौजवान से किये हुए सवाल और यंत्र द्वारा मिले हुए जवाबों को लिख लिया। इसके बाद उस नौजवान से उन्होंने पूछा, "अच्छा तुम्हारी वह सभा जो यह सब उपद्रव कर रही है अपने को 'रक्त-मंडल' कहती है और उसके मुखिया कोई चार आदमी हैं जो अपने को 'भयानक-चार' कहते हैं?"

यंत्र की एक पेंसिल बोली—"हां।" रूबी ने सवाल और जवाब कागज पर लिख लिया। इसके बाद फिर पूछा, "क्या उस 'भयानक-चार' का मुखिया राणा नगेन्द्रनरसिंह नाम का कोई नैपाली सरदार है?"

मशीन ने जवाब दिया—"हां।" रूबी ने यह भी नोट कर लिया और फिर पूछा, "क्या तुम्हारे मंडल ने नैपाल और भारत की सरहद के पास कहीं एक किला बनाया और उसमें 'मृत्यु-किरण' नामक एक तरह की किरणें बनाने की मशीन खड़ी की है?"

मशीन बोली—"हां।" कप्तान रूबी ने इसे भी नोट किया और पूछा, "उसी किरण के तुम लोगों ने बम भी बनाये हैं और उन्हीं बमों द्वारा इस

देश भर की फौजी छावनियां उड़ा दिया चाहते हो ?"

जवाब "हां" मिला। प्रसन्नता-पूर्वक कप्तान रूबी ने इसे भी नोट किया। अब इन्हें यंत्र की सफलता में कोई सन्देह न रहा। इस उत्तर को नोट करने बाद वे कुछ देर के लिए रुके और सोचने लगे। चूंकि फिलहाल यह यंत्र सिर्फ 'हां' और 'ना' में ही उत्तर दे सकता था, अस्तु ये विचार कर रहे थे कि अपने सवालों की गोलावारी को किस तरह पर शुरू करें कि जिसमें नौजवान के दिल के किले में छिपा हुआ भेद रूपी दुश्मन बाहर निकल पड़े ? कुछ ही देर में उन्होंने सवालों का क्रम निश्चय कर लिया।

सवाल—"इस समय नगेन्द्रनरसिंह अपने किले में है ?"

जवाब—"नहीं।"

सवाल—"क्या वह इस समय भारत में आया हुआ है ?"

जवाब—"हां।"

सवाल—"वह किस शहर में है ?"

जवाब कुछ नहीं मिला। कुछ सोच कर रूबी ने पूछा, "अच्छा वह जिस शहर में है क्या उसके नाम का पहला अक्षर 'अ' वर्ग में है ?"

जवाब कुछ नहीं मिला। सवाल हुआ—" 'क' वर्ग में है ?" अचानक सूई ने हिल कर "हां" कहा। कप्तान रूबी ने खुश होकर कहा, "मैं हर अक्षर कहता जाता हूं। अगर 'अ' नहीं तो कौन सा अक्षर है वह—"क ?"

सूई हिली, रूबी समझ गये कि जिस शहर में नगेन्द्रनरसिंह हैं उसके नाम का पहला अक्षर 'क' है। उन्होंने पूछा, "अच्छा मात्रा बताओ—क ? का ? कि ?"

'का' कहते ही सूई हिली। रूबी ने कहा "क्या काशीजी में ?" सूई जोर से हिल कर बोल पड़ी—"हां।" रूबी ने लिख लिया कि 'नगेन्द्रनरसिंह आजकल काशीजी में है'।

अब उन्हें गोपालशंकर के बताये यंत्र पर पूरा विश्वास हो गया।

कैदी अपने मुंह से कुछ बताये या न बताये यह यन्त्र जरूर उसका सब भेद बता देगा।

पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने सवाल करना और यंत्र ने जवाब देना शुरू किया।

[४]

कैप्टेन रूबी के सवालों के सिलसिले को यकायक धक्का लगा जब उनके कमरे के बन्द दर्वाजे पर किसी ने ठोकर मारी। उन्होंने कुछ उतावली से पूछा, "कौन है?" जवाब मिला—"हुजूर, शिमले से टेलीफोन आया है हुजूर कि बड़े लाट साहब के सेक्रेटरी साहब हुजूर को याद कर रहे हैं, कहते हैं बहुत जरूरी काम है।"

आश्चर्य करते हुए कैप्टेन रूबी वहां से हटे और दर्वाजे के पास आ उसे खोला। सामने उनका खिदमतगार खड़ा था जिसने यह संदेशा उन्हें दिया था। उससे कुछ बातें पूछीं और तब लपकते हुए उस तरफ चले जिधर टेलीफोन था। मगर जाने से पहले उन्होंने कमरे का दर्वाजा बन्द कर दिया और ताला लगा ताली अपनी जेब में रख ली।

यकायक किसी तरह की नई आवाज सुन उस कुर्सी पर बंधे कैदी ने अपनी आंखें खिड़की की तरफ घुमाईं जिधर से धूप की एक किरण आ कर उस कमरे में गिर रही थी। उसने देखा कि उस खिड़की से छः सात हाथ के फासले पर वाले घने मौलसिरी के पेड़ पर कोई आदमी चढ़ा हुआ उसी की तरफ देख रहा है। यह आवाज भी उसी आदमी ने की थी। नौजवान को अपनी तरफ देखते पा उस पेड़ पर वाले आदमी ने अपना हाथ उठा कर चार उंगलियें दिखाईं और तब छाती पर हाथ रख कर कुछ इशारा किया। उस इशारे को देखते ही इस नौजवान के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक आ गई। इसके हाथ पैर तो बंधे हुए थे मगर इसने अपनी बांई आंख को चार दफे बन्द किया और दाहिनी को एक दफे बन्द कर फिर दोनों आंखें बंद कर लीं। अब दोनों आदमियों

में हाथ और आंख के इशारे से बातचीत होने लगी। पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल हम यहां केवल उस बातचीत का तात्पर्य कहे देते हैं जो बहुत ही जल्दी जल्दी हुई।

पेड़ का आदमी०। यह तुम्हारी क्या दशा है? वह मशीन कैसी है?

कैदी०। बड़ी भयानक मशीन है। इसे गोपालशंकर ने बनाया है। इससे आदमी के मन की बात प्रगट हो जाती है। मुझ पर प्रयोग करके रूबी ने बहुत कुछ मेरी अनिच्छा रहते हुए भी जान लिया है।

पेड़ पर का आदमी०। तब तो बड़ी बुरी बात है! फिर क्या करना चाहिये?

कैदी०। क्या तुम इस कमरे में आ सकते हो?

पेड़ पर का०। नहीं, वह खिड़की इस पेड़ से बहुत दूर पड़ती है।

कैदी०। अच्छा तो मुझे गोली मार दो, अगर मैं जीता रह गया तो रूबी और भी न जाने क्या क्या भेद जान लेगा।

पेड़ पर का०। सो भला कैसे हो सकता है! मैं अपने हाथ से अपने ही भाई की जान लूं?

कैदी०। करना ही पड़ेगा, अगर मैं जीता हुआ इन सभों के कब्जे में पड़ा रहा तो सब भेद इस मशीन की सहायता से ये लोग जान जायंगे। सोच मत करो। मातृ-भूमि की सेवा में मेरी जान जाय, बड़ी खुशी की बात है। तुम मुझे गोली मार दो और फिर दो तीन गोलियें मार इस मेरे पीछे वाली मशीन को भी तोड़ दो। जल्दी करो, रूबी आता ही होगा।

पेड़ पर के आदमी ने इस भयानक काम को करने से अनिच्छा प्रगट की मगर कैदी ने उसे मजबूर किया। इस समय ऐसा किये बिना चल भी नहीं सकता था। अगर यह नौजवान रूबी के पंजे में रह गया तो इस भयानक मशीन की बदौलत रक्त-मंडल का कोई भी भेद छिपा न रह जायगा। पेड़ पर के आदमी ने अपनी कमर में छिपी हुई पिस्तौल निकाली और अपने ही साथी की तरफ सीधी की मगर उसकी आंखों में आंसू भर

आये थे। कैदी ने यह देख उसी तरह इशारे में कहा, "हैं, आंसू! मातृ-भूमि की सेवा में खून की बूंदों की जरूरत है, पानी की बूंदें क्या मदद करेंगी। जल्दी गोली मारो, कोई आता है!"

पेड़ पर के आदमी ने इशारा किया, "भाई मुझे माफ करना!" और तब पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया। धड़ाम की आवाज के साथ सनसनाती हुई गोली आ कर उस कैदी की छाती में घुस गई। कैदी के मुँह से अस्पष्ट स्वर में निकला, "माता, सेवा के लिये फिर बुलाना!" मगर उसके स्वर में रंज नहीं था बल्कि खुशी भरी हुई थी। उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया, उसकी आत्मा अमर-लोक की ओर चली गई।

"धड़ाम, धड़ाम, धड़ाम" तीन फायर और हुए। नौजवान के पीछे वाली मशीन चूर चूर हो गई।

× × × ×

कैप्टेन रूबी से बड़े लाट के मिलिटरी सेक्रेटरी कह रहे थे—"बड़ी अच्छी बात है, पंडितजी की मशीन के जरिये जो कुछ बातें आप उस कम्बख्त विप्लवकारी के पेट से निकाल सकें निकाल कर तुरत यहाँ चले आइये। लार्ड गोशेन की मृत्यु से लार्ड गेवर एक दम घबड़ा गये हैं। रक्त-मंडल को शीघ्र ही काबू में करना चाहिये नहीं तो वह गजब कर डालेगा। परसों की कमेटी में आप......."

उनकी बात पूरी नहीं हुई थी कि कैप्टेन रूबी के कान में पिस्तौल छूटने की आवाज पड़ी। वे चौंक उठे। उसी समय धड़ाम धड़ाम करके पुनः कई आवाजें आईं और यह भी मालूम हुआ कि ये आवाजें उनकी प्रयोगशाला की तरफ से ही आ रही हैं। घबड़ा कर उन्होंने टेलीफोन में कुछ कहा और तब उसका चोंगा हाथ से रख अपनी जेब से पिस्तौल निकालते हुए लेबोरेटरी की तरफ दौड़े।

दर्वाजे पर पहुंच फुर्ती से ताला खोला और अन्दर घुसे। जो कुछ

देखा उससे उनके पैर के नीचे भी मिट्टी खिसक गई। देखा कि वह बेश-कीमत मशीन एक दम चूर चूर हो गई है और उसके टुकड़े कमरे भर में इधर उधर छितराये हुए हैं। एक चीख बेतहाशा उनके मुंह से निकल गई, पर जब उन्होंने देखा कि कुर्सी पर के कैदी की छाती में गोली लगी है जिससे उसकी मौत हो गई और उसकी कुर्सी के नीचे खून टप टप करके चू रहा है तब तो उनके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया। वे एक कुर्सी पर गिर गये और पागलों की तरह इधर उधर देखने लगे।

इसी समय फिर 'धड़ाम' की आवाज आई। बाहर पेड़ पर के आदमी ने पुनः पिस्तौल छोड़ी जिसकी गोली कप्तान रूबी के बदन में घुस गई और वे एक चीख मार कर वहीं गिर गये।

चारो तरफ दौड़ धूप मच गई। कई नौकर चाकर उस कमरे में पहुंचे जिसमें यह दुर्घटना हुई थी और कितने ही सिपाहियों ने उस पेड़ को घेर लिया जिस पर वह आदमी चढ़ा हुआ था। मगर वह आदमी अपने को घिरा हुआ पा जरा भी न घबराया। उसकी पिस्तौल में एक गोली अभी बची हुई थी। अपने सगे भाई से प्यारे साथी को गोली मारने बाद अब उसका भी मर जाना ही श्रेयस्कर था, यह भी डर था कि अगर वह जीता बच कर इन सभों की कैद में पड़ गया तो शायद गोपालशंकर की बनाई कोई अन्य मशीन उससे भी रक्त-मंडल का सब भेद खींच ले। जल्दी जल्दी बहुत कुछ सोच पिस्तौल की नली उसने कनपटी से लगाई। उसके मुंह से निकला, "मां जन्मभूमि, विदा!" और तब उसने घोड़ा दबा दिया। 'धड़ाम' की आवाज के साथ ही उसका निर्जीव शरीर भी उस पेड़ से नीचे आ गिरा।

———

प्रेमी-युगल

[१]

निकलते हुए सूरज को आड़ में कर रखने वाले ऊंचे पहाड़ों की नुकीली चोटियां इस तरह को मालूम हो रही हैं मानों उछले हुए गेंद को लोकने के लिए खेलाड़ियों के हाथ ऊपर को उठे हुए हैं।

नैपाल राजधानी काठमाण्डू से दक्षिण कुछ दूर हट कर हरे भरे और सुहावने जंगल के किनारे बहने वाली एक छोटी पहाड़ी नदी के तट पर हम दो तीन खेमे लगे हुए देखते हैं। खेमे यद्यपि बहुत बड़े नहीं हैं पर छोटे भी नहीं हैं और बहुत खूबसूरती तथा किते से लगे हुए होने के कारण सुन्दर मालूम हो रहे हैं।

एक खेमा जो गुलाबी रंग का है और जिसको चारो तरफ से कुछ जगह छोड़ कनातों ने घेरा हुआ है, सब से बड़ा है और इस समय इसी की तरफ हम अपने पाठकों को ले चलते हैं।

खेमे के दरवाजे की चिक उठी हुई है और उसकी राह भीतर को सुन्दर पलंगड़ी पर पड़ी हुई एक नाजुक और खूबसूरत औरत पर हमारी निगाह पड़ती है जो रेशमी लिहाफ ओढ़े कई तकियों के सहारे उठंगी

अधलेटी सी पड़ी हसरत भरी निगाहों से दरवाजे के सामने के दृश्य और निकलते हुए सूर्य की विचित्र छटा देख रही है।

औरत की आकृति बता रही है कि वह बहुत दिनों की बीमार है। बड़ी बड़ी आंखें जो कभी कमलों को नीचा दिखाती होंगी गड़हों में धंस गई हैं, गाल जो किसी समय गुलाबों को मात करते होंगे पीले पड़ गये हैं, बदन की हड्डी हड्डी दिखाई पड़ रही है, कलाइयां सूखे पेड़ की टहनियां हो रही हैं, चेहरा मुरझाया हुआ है, फिर भी जो कुछ बच गया है वह इस बात को बताने के लिये काफी है कि किसी जमाने में यह औरत खूबसूरती में अपना सानी न रखती होगी।

ऊंचे पहाड़ों की नुकीली चोटियों को नीचे छोड़ सूर्य ऊपर उठ आये। इसके साथ ही रंग बिरंगी खूबसूरत चिड़ियें अपने अपने घोसलों का आसरा छोड़ बाहर निकल पड़ीं और सुबह की खूशबूदार हवा को अपनी मीठी तानों से और भी लुभावना बनाती हुई इधर उधर फुदकने लगीं। एक नाजुक छोटी चिड़िया इस खेमे के दरवाजे के पास की एक डाल पर आ बैठी और अपनी दुम और गरदन को विचित्र तरह से हिलाती हुई मनोहर तान सुनाने लगी।

मगर कोमल चिड़िया की मीठी तान ने उस नाजुक-बदन के दिल को खुश करने के बदले और भी मसोस दिया। न जाने किस गम के बोझ से दबे हुए उसके कलेजे से एक ठंढी सांस निकल पड़ी और उसने अपना सिर रजाई में छिपा कर उसांसें लेना शुरू कर दिया। इसके साथ ही उसकी आंखें डबडबा आईं और कई बूंद आंसू निकल कर मुरझाये हुए गालों पर लुढ़क पड़े।

इसी समय एक नौजवान उस खेमे के दरवाजे पर आ पहुंचा और भीतर की तरफ झांक कर बोला, "कामिनी, जाग गई?" "हां भैया!" कह कर उस औरत ने छिपे तरीके से अपनी आंखें पोंछ डालीं और मुंह पर से रजाई हटा उस नौजवान की तरफ देखते हुए कहा, "आओ।"

नौजवान भीतर आया और पलंग की पाटी पर बैठता हुआ बोला, "बहिन, तबीयत कैसी है ?" औरत ने कहा, "अच्छी है ।" नौजवान बोला, "सुबह का समय बड़ा सुहावना है, कुछ दूर टहलने चलोगी ?" औरत ने सिर हिला कर कहा, "नहीं, मन नहीं करता ।"

मगर उस नौजवान ने एक न सुनी और जिद्द करके उस औरत को साथ चलने पर मजबूर ही किया । उसने कहा, "पड़े पड़े तो तुमने अपना शरीर और भी खराब कर लिया है, न जाने कौन सी फिक्र तुम्हें सता रही है कि एकदम घुली जा रही हो ! ऐसी सुहावनी जगह आ कर भी जरा घूमो फिरोगी नहीं तो कैसे बनेगा ? उठो, दुशाला ओढ़ लो, जरा दूर घूम आवें, मन बहल जायगा ।" आखिर उसकी जिद्द से लाचार हो औरत को उठना ही पड़ा । नौजवान ने एक कीमती दुशाले से उसके बदन को अच्छी तरह ढांक दिया और तब हाथ पकड़े हुए सहारा देकर बाहर ले आया । इसके बाद दोनों आदमी धीरे धीरे टहलते हुए उस पहाड़ी नाले के किनारे किनारे जाने लगे जिसके तट पर ही यह छोटा पड़ाव पड़ा हुआ था ।

हमारे पाठक इन दोनों को ही पहिचानते हैं । यह औरत तो कामिनी देवी है और नौजवान उसका भाई नरेन्द्रसिंह । अपनी बहिन की तबीयत किसी तरह सम्हलती न देख यह उसे शहर से बाहर के इस रमणीक स्थान में ले आया है और आशा करता है कि यहां की साफ हवा, रमणीक दृश्य, और साथ ही साथ कुछ चहलकदमी शायद उसे फायदा पहुंचावे ।

[२]

सुन्दर और मनोहर दृश्य देखते, नाजुक चिड़ियों की मनोहर बोलियां सुनते, और सुबह की खुशबू से लदी फुरती पैदा करने वाली ठंढी हवा का आनन्द लेते हुए कामिनी और नरेन्द्रसिंह धीरे धीरे टहलते हुए खेमों से कुछ दूर निकल गये । मन को लुभाने वाली प्रकृति की छटा ने बीमार कामिनी के मन पर भी आखिर असर किया ही और वह कुछ देर के लिये अपनी बीमारी को भूल कर प्रसन्नता और आनन्द के साथ इधर उधर

देखती और अपने भाई से बातें करती हुई नाले के किनारे किनारे जाने लगी। रास्ते के पहाड़ी गुल बूटों में से जो उसका ध्यान आकर्षित करते उन्हें वह तोड़ कर सूंघती, जूड़े में खोंसती या हाथ में गुच्छे की तरह इकट्ठ करती जाती थी और नरेन्द्र भी यह देख कर कि इससे उसका मन बहलता था इधर उधर चट्टानों की आड़ या कुछ बेमौके जगहों पर लगे हुए सुन्दर फूलों की तरफ उसका ध्यान आकर्षित कराता तथा इच्छा समझते पर उन्हें ला देता हुआ प्रसन्न चित्त से तरह तरह की बातें करता चला जा रहा था।

पहाड़ी का अन्त आ गया और अपने सामने नीचे की तरफ कोसों तक फैले हुए मैदान की ओर कामिनी का ध्यान गया। वहां के आसमान पर मंडराती हुई किसी काली चीज ने उसकी आंखें आकर्षित कीं। उसने गौर से देखा और तब अपने भाई का हाथ पकड़ कर बोली, "भैया, देखो तो वह काली काली क्या चीज है?" नरेन्द्र उस वक्त एक गढ़े में झुका हुआ नीले रंग के बड़े ही सुन्दर एक फूल को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। कामिनी के कहने से उसने सिर घुमाया और सरसरी तौर पर देख कर बोला, "कोई चील या गिद्ध होगा!" और तब फिर अपने काम में लग गया, मगर जब कामिनी ने कुछ तुनुकमिजाजी से कहा, "अजी ठीक तरह से देखा भी, गिद्ध नहीं तुम्हारा सिर है!" तो वह सीधा हो कर गौर से देखने लगा। कुछ देर बाद वह बोला, "यह तो कोई गुब्बारा मालूम पड़ता है!"

उसके कन्धे के साथ आड़े तस्मे से बंधी दूरबीन लटक रही थी जिसे उसने दूर का दृश्य देखने की सुविधा के ख्याल से साथ ले लिया था। उसने दूरबीन निकाल कर आंख से लगाई और कुछ देर तक खूब गौर से देखने के बाद बोला, "वह गुब्बारा है और उसकी रस्सियों के साथ एक झूला सा बना हुआ है जिसमें एक आदमी लटक रहा है!"

कौतूहल के साथ कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और अपनी आंखों पर लगा कर उसी ओर देखने लगी। सचमुच ही वह एक छोटा

गुब्बारा था जो सुबह के मन्द मन्द वायु के हलके थपेड़ों के कारण पेंगें लेता हुआ इन्हीं लोगों की तरफ बढ़ा आ रहा था। उसके नीचे की ओर रस्सियों से लटकते हुए आदमी की तरफ भी कामिनी का ध्यान गया और वह कुछ देर तक गौर के साथ उसे देखने के बाद नरेन्द्रसिंह से बोली, "भैया, उस आदमी पर तुमने गौर किया जो उसके नीचे लटक रहा है ? वह बिल्कुल हिलता डुलता नहीं, क्या मुर्दा तो नहीं है !"

"नहीं नहीं, मुरदा क्यों होगा ?" कह कर नरेन्द्र ने दूरबीन कामिनी के हाथ से ले ली और गौर के साथ देर तक उधर देखता रहा, मगर कामिनी की तरह अन्त में उसे भी यही निश्चय करना पड़ा कि वह आदमी या तो मुर्दा है और या फिर, बेहोश है क्योंकि एक तो उसके बदन में हरकत बिल्कुल न थी, दूसरे उसका सिर एक बगल को इस प्रकार लटका हुआ था मानों उसकी गर्दन में इतना जोर नहीं रह गया है कि सर को सम्हाल सके, तीसरे उसका बदन भी उस झूले से बेतरह आगे को लटका हुआ था, अगर वे कई रस्सियां जिनके साथ उसकी कमर और छाती झूले के साथ बंधी हुई थीं न होतीं तो वह जरूर आगे लटक कर झूले से गिर जाता या नहीं तो उलटा लटकने लग जाता।

नरेन्द्र ताज्जुब के साथ देर तक उसकी हालत पर गौर करता रहा, जो कुछ उसने देखा वह कामिनी को भी बताया, और इसके बाद दोनों ही आदमी उसी जगह एक चट्टान पर बैठ कर गौर ताज्जुब और उत्कंठा के साथ उस गुब्बारे को देखने लगे जिसे हवा सीधा उन्हीं की तरफ ला रही थी और जो पलपल में नजदीक आता हुआ अब निगाहों का पहिले से बड़ा मालूम पड़ रहा था।

धीरे धीरे वह गुब्बारा उनसे कोस भर से भी कम फासले पर पहुंच गया। अब नगेन्द्र की तेज दूरबीन उस गुब्बारे और उसके साथ लटकने वाले आदमी के बदन के एक एक हिस्से को साफ साफ दिखाने लग गई। बहुत देर तक गौर के साथ देखने पर भी उस आदमी के बदन में किसी तरह की हरकत न पा कर यह तो उन दोनों ही को निश्चय

कर लेना पड़ा था कि वह आदमी या तो बेहोश है और या मर गया है मगर अब ज्यों ज्यों वह पास आता जाता था त्यों त्यों उस आदमी की पौशाक आदि भी स्पष्ट होती जाती थी तथा चेहरे का भी कुछ हिस्सा साफ दिखने लगा था। पौशाक बता रही थी कि वह कोई फौजी अफसर है और चेहरे का जो कुछ अंश दिखाई पड़ता था वह कह रहा था कि वह एक नौजवान और खूबसूरत आदमी है।

सूर्य की किरणें उस गुब्बारे पर आ कर पड़ी जिससे वह एक दम चमक उठा, साथ ही कुछ ऊपर की तरफ भी उठा। ऊपर उठते ही तेज हवा पाकर उसकी चाल भी कुछ तेज हो गई मगर रुख जरा पलट गया अर्थात् जहाँ वह सीधा इन दोनों की तरफ आ रहा था वहां अब इनके कुछ दाहिने झुकता हुआ जाने लगा। नरेन्द्रसिंह जो गौर से इन बातों को देख रहा था आप ही आप बोल उठा, "रात की ठंढ में गुब्बारे की गैस सिकुड़ी हुई थी इससे वह नीचे उड़ रहा था, अब धूप पा कर गर्म होने से गैस कुछ फैलने लगी है जिससे गुब्बारा भी ऊपर उठ रहा है।" कामिनी ने यह सुन कहा, "मगर इसका रुख क्यों पलट रहा है? पहिले तो सीधा हमी लोगों की तरफ आ रहा था अब दूसरी तरफ जाने लगा है!" नरेन्द्र बोला, "ऊपर की हवा का रुख उसी तरफ का होगा! (चौंक कर) मगर, अरे यह क्या नगेन्द्रनरसिंह हैं?" हवा के एक झोंके ने गुब्बारे को घुमा दिया था जिससे उस लटकने वाले का चेहरा इन लोगों के सामने आ गया था, साथ ही सूर्य की किरणों ने उस पर पड़ उसके हर एक रग रेशे को साफ कर दिया था जिससे उस आदमी का चेहरा साफ दिखाई पड़ने लगा था। नरेन्द्र ने फिर गौर से दूरबीन के जरिये उसकी तरफ देखा और तब कहा, "अगर नगेन्द्र नहीं है तो जरूर उसी से मिलती जुलती सूरत शकल का कोई नौजवान है।"

गुब्बारा अब इन लोगों के और भी पास आ गया था मगर क्षण-क्षण में ऊंचा होता और इनके दाहिने घसकता जाता था। नरेन्द्र की बात सुन

कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और बहुत गौर के साथ उस आदमी की सूरत देखी। न जाने उसे क्या दिखाई दिया कि वह एक दम चौंक पड़ी और दूरबीन उसके हाथ से छूट उसकी गोद में गिर पड़ी। उसकी आंखें बन्द हो गईं और वह दोनों हाथों से अपना कलेजा थाम लम्बी सांसं लेने लगी। नरेन्द्र की आंखें उस गुब्बारे की तरफ लगी हुई थीं मगर यकायक उसका ध्यान इसकी तरफ गया और वह एक दम चौंक कर दोनों हाथों से अपना बहिन का कंधा पकड़ सहारा देता हुआ घबड़ा कर बोला, "कामिनी कामिनी, क्यों क्यों, क्या हुआ, क्या हुआ ?"

कामिनी ने आंखें खोलीं और एक बार अपने चारो तरफ देखा, तब बोली, "कुछ नहीं, यों ही कुछ सिर में चक्कर आ गया था।" नरेन्द्र ने उसे सम्हालते हुए कहा, "मेरी जांघ पर सिर रख कर जरा देर के लिए लेट जाओ, मालूम होता है कमजोरी से सिर में चक्कर आने लगा है।" मगर कामिनी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया और दूरबीन उठा कर उसके हाथ में देती हुई बोली, "देखो गौर से, सचमुच यह तुम्हारे दोस्त नगेन्द्रनरसिंह ही हैं क्या ?"

गुब्बारा अब इनके सिर से लगभग सौ गज ऊंचे और चौथाई मील के फासले पर से उड़ता हुआ उत्तर पश्चिम के कोण की तरफ जा रहा था मगर फासला कम हो जाने के कारण उस वेहोश की सूरत वह तेज दूरबीन अब खूब साफ साफ दिखा रही थी। नरेन्द्र ने फिर उसकी तरफ देखा और कहा, "बेशक मालूम तो नगेन्द्र ही होते हैं। तब क्या करना चाहिये ?"

कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और यह कहते हुए आंखों से लगाई, "जैसे भी हो उन्हें गुब्बारे पर से उतारना चाहिये।" दूरबीन के सहारे उस लटकते हुए नौजवान की सूरत उसने पुनः गौर से देखी और फिर एक लम्बी सांस के साथ अपने कलेजे को दबाया, दूरबीन हाथ से रख दी और नरेन्द्र की तरफ देख आग्रह के साथ बोली, "भैया, अपने दोस्त की तुम कोई मदद न करोगे ? जरूर वे बेहोश हो गये हैं !"

नरेन्द्र कुछ सोचता हुआ बोला, "मगर करूं तो क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आता। गुब्बारा जमीन पर उतारने के लिये उसकी गैस निकालनी चाहिये। इस काम के लिये एक छेद गुब्बारों में बना होता है मगर उसको खोलना न खोलना गुब्बारे पर वाले के आदमी के हाथ में रहता है और वह इस समय या तो बेहोश है या मर गया है और ज्यों ज्यों सूरज की गर्मी बढ़ रही है गुब्बारे की गैस फैलती और उसे ऊंचा भी करती जा रही है। तब क्या करूं ?"

यकायक नरेन्द्र को कुछ ख्याल आ गया। उसने पीठ से लटकती हुई राइफिल, जिसको इस जंगली और पहाड़ी जगह में हर दम साथ रखना जरूरी था, उतारी और उस गुब्बारे की तरफ सीधी की। कामिनी चौंक कर बोली, "हैं हैं, क्या करते हो ? उन्हें गोली मारोगे !!" नरेन्द्र हंस कर बोला, "नहीं नगेन्द्र को नहीं उसके गुब्बारे में गोली से छेद करूंगा।" कामिनी बेचैनी से बोली, "कहीं उन्हें ही गोली लग गई तो !" जिस पर नरेन्द्र ने कहा, "अगर ऐसा होगा तो बन्दूक चलाना छोड़ दूंगा।" इसके साथ ही 'धांय' की आवाज हुई और राइफिल की गोली सनसनाती हुइ गुब्बारे की चोटी से दो अंगुल के फासले पर से निकल गई। नरेन्द्र ने दूसरी बार फायर किया और इस बार गुब्बारे की चोटी को छूती हुई गोली गई। एक बहुत ही जरा सा चरका गोली का लगा जिससे करीब एक उंगली जाने लायक और कुछ लम्बा सा छेद वहां पर हो गया। नरेन्द्र ने खुश होकर कहा, "वह मारा, अब गैस धीरे धीरे निकलनी शुरू होगी और गुब्बारा जमीन पर आ जायगा !" इतना कह वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "अच्छा चलो कामिनी, तुम्हें खेमे में पहुंचा दूं और वहीं से एक घोड़ा ले गुब्बारे का पीछा करूं। न जाने कहां और कितनी दूर जाकर वह जमीन पर आवेगा।" कामिनी इस समय दूरबीन आंखों से लगाये उस गुब्बारे की चाल देख रही थी। नरेन्द्र की बात सुन वह सिर हिला कर बोली, "मैं यहीं हूँ और देखती रहती हूं कि गुब्बारा किधर जाता है, मुम-

किन है कि तुम्हारे लौटते लौटते तक किसी ऐसी जगह जा गिरे जहां से फिर खोजना मुश्किल हो।"

नरेन्द्र यह सुन बोला, "हां यह तो तुम ठीक कहती हो, अच्छा तुम यहीं रहो मैं अभी आया, यह राइफिल छोड़े जाता हूं। मगर जरा चौकन्नी रहना, जंगल का वास्ता ठहरा, मैं चुटकी बजाते आया।" वह दौड़ता हुआ पीछे को भागा और जाते जाते कामिनी के ये शब्द उसके कान में पड़े—"अपने साथ दो घोड़े लाना !" उसने पूछना चाहा, "काहे को ?" मगर मोहलत न थी। यह समझ कर चित्त को सन्तोष दिया कि शायद बेहोश नगेन्द्र को लाने के लिये दूसरा घोड़ा कहा होगा, और तब सरपट लश्कर की तरफ भागा।

कामिनी एकटक उस गुब्बारे को ही देख रही थी जिसका फासला अब यद्यपि बढ़ता जा रहा था फिर भी दूरबीन की मदद से अभी तक उस बेहोश की सूरत साफ दिखाई पड़ रही थी खास कर इसलिये कि अब गुब्बारा नीचे उतर रहा था। पीछे फिर कर यह देखने बाद कि नरेन्द्र दूर निकल गया है कामिनी ने अपनी चोली में हाथ डाला और वहां छिपी हुई कोई चीज निकाली। एक निगाह उस चीज पर डाली और तब दूसरी उस गुब्बारे पर वाले आदमी पर, इसके बाद फिर एक लम्बी सांस के साथ वह चीज छाती से चिपकाते हुए उसने कहा, "मेरी आंखें चाहे ठीक न बतावें मगर प्यारे, मेरा दिल बता रहा है कि तुम वही हो जो इस तस्वीर के रूप में बरसों से मेरे दिल के अन्दर विराज रहे हो ! भगवान, क्या सचमुच आज तू मेरी मुराद पूरी करने चला है !!"

पर साथ ही उसके मन ने निराशा से कहा, "मगर वे तो बेहोश हैं, शायद मुर्दा ही हों ?" उसके चेहरे पर कालिमा दौड़ गई मगर होठों ने दृढ़ता से कहा, "अगर बीमार होगे तो मैं अपनी जान देकर तुम्हारी जान बचाऊंगी, अगर मरे होगे तो मैं तुम्हारी लाश के साथ जल कर बैकुण्ठ जाकर तुमसे मिलूंगी।" उसने एक लम्बी सांस के साथ वह चीज जो वास्तव में एक फोटो थी अपने होठों से चूम ली और तब अपने ठिकाने रख

दूरबीन की सहायता से पुनः उस गुब्बारे पर के नौजवान को देखने लगी।

पाठक, क्या आप जानना चाहते हैं कि वह तस्वीर किसकी है और कैसे कामिनीदेवी के हाथ लगी ? सुनिये हम बताये देते हैं। वह तस्वीर नगेन्द्रनरसिंह की थी और कामिनी को उस समय मिली थी जिस समय आगरे से नैपाल जाती समय उसका जेवरों का बेग फाड़ा गया था★। गहनों के डिब्बे के अन्दर से कोई चीज कामिनी देवी के हाथ लगने का हाल आप पढ़ चुके हैं। वह चीज यही तस्वीर थी।

[३]

दो नौजवान अंगरेज तेज घोड़ों पर चढ़े सरपट उस पहाड़ी मैदान में चले जा रहे हैं जिसे तीन तरफ से ऊंचे ऊंचे पहाड़ों ने घेरा हुआ है।

दोनों की पौशाकें वता रही हैं कि वे फौजी जवान और साथ ही अफसर भी हैं तथा उनको पेटी से लटकती हुई बन्दूकें और हाथ को दूरबीनें यह भी सन्देह पैदा कर रही हैं कि वे कदाचित् किसी शिकार के पीछे जा रहे हैं।

मगर नहीं. हमारा संदेह गलत है। एक जगह पहुंच जव उन दोनों ने यकायक घोड़ों की चाल कम की और आसमान की तरफ अपनी अपनी दूरबीनें उठाईं तो पता लगा कि उनका लक्ष्य जमीन का कोई शिकार नहीं बल्कि हवा का है और साथ ही कोई ऐसा शिकार है जिसका ठीक पता अभी उन्हें नहीं लगा है क्योंकि वे लोग आसमान में चारो तरफ अपनी निगाहें दौड़ा रहे थे और दूरबीन से आकाश का एक एक कोना टटोल रहे थे। इतना कहना हम भूल गये कि यह समय बहुत सुबह का है और सूर्यदेव के उदय होने में अभी घड़ियों की देर जान पड़ती है फिर भी आसमान साफ है और उस पर सिर्फ कहीं कहीं ही कोई तारा चमकता नजर आ रहा है।

★ यह हाल जानने के लिये श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'लाल-पंजा' नामक उपन्यास पढ़िये।

यकायक एक सवार ने अपना हाथ सामने की तरफ उठाया और खुशी भरी आवाज में कहा, "वह है, वह है !!" इसके साथ ही दूसरे ने भी कहा, हां ठीक है, मैंने भी देखा—वह बादल के टुकड़े के नीचे न ?" जिसके जवाब में उस पहिले ने कहा, "हां हां वही, मगर अभी वहुत दूर है।" दूसरा बोला, "कोई हर्ज नहीं, हवा वहुत तेज नहीं है, शायद हम लोग अब भी उसे पा सकते हैं।" इतना कह अपनी दूरबीनें ठिकाने रखने बाद उन्होंने घोड़ों को एड़ लगाई और पुनः सरपट जाने लगे।

जिस चीज को देख ये लोग इतना खुश हुए थे वह वही गुब्बारा था जिसका हाल अभी अभी हम ऊपर लिख आये हैं। मालूम होता है ये लोग उस आदमी का पीछा कर रहे हैं जो गुब्बारे के साथ बेहोश बंधा हुआ था।

आधे घंटे तक सरपट जाने बाद इनके और उस गुब्बारे के बीच के फासले में बहुत कुछ कमी हो गई क्योंकि हवा बहुत ही मंद मंद बह रही थी जिसके कारण गुब्बारे की चाल तेज नहीं थी पर इनके घोड़े बहुत ही तेज और ताकतवर थे। इस बीच में सूर्यदेव भी निकल आये और उनकी पहिली किरणें उस गुब्बारे पर पड़ीं जिनसे वह एक दफे चमक उठा।

मगर अब इन सवारों की चाल कुछ कम होने लगी क्योंकि मैदान का हिस्सा खतम होकर पहाड़ी सिलसिला जारी हो रहा था जिससे रास्ते में पड़ने वाले पत्थरों के बड़े बड़े ढोंके और पहाड़ी के टुकड़े इनके घोड़ों की राह रोकने लगे थे। यद्यपि अभी भी दो चार कोस आगे जाने लायक रास्ता था मगर इसके बाद पहाड़ों की बीहड़ दीवार शुरू हो जाती थी जिस पर घोड़े किसी तरह नहीं चढ़ सकते थे। इसके साथ ही सूर्योदय के संग संग हवा की तेजी भी कुछ बढ़ने लगी और वह गुब्बारा भी कुछ ऊपर की तरफ उठता सा जान पड़ा। इनके घोड़े भी कोसों से सरपट आते हुए थक रहे थे जिसे देख आगे जाने वाले सवार ने अपनी चाल कुछ कम की और साथी को देख कर कहा, "अगर गुब्बारा पहाड़ों

पर चला गया तो हम लोग उसे किसी तरह पकड़ न सकेंगे।" दूसरे सवार ने कहा, "यही तो मैं भी देख रहा हूं। गुब्बारे की चाल तेज होती जा रही है और मालूम होता है वह कुछ ऊपर की तरफ भी उठ रहा है। अब तक मैदान रहने के कारण हम लोग पीछा करते चले आये परन्तु अब पहाड़ों के बीच से होकर चलना मुश्किल होगा।"

अगले सवार ने अपना घोड़ा रोक दिया और दूरबीन से पुनः उस गुब्बारे को गौर से देखना शुरू किया जो उससे लगभग दो या तीन मील आगे और करीब पांच सौ गज की ऊंचाई पर था और सूर्य की सीधी किरणें पाकर अब स्पष्ट दिख रहा था। कुछ देर तक गौर से उसकी तरफ देखते रहने के बाद वह अपने साथी से बोला, "मैं समझता हूं अब उसका हाथ आना कठिन है फिर भी मैं पीछा करता हूं। तुम वापस जाओ और बड़े साहब को खबर करो कि हम लोगों ने गुब्बारे पर एक आदमी उड़ता जाता देखा है जो दक्षिण की तरफ से आ रहा था, संभव है कि वह रक्त-मंडल का वही आदमी हो जिसकी खबर आई है। उनसे यह भी कह देना कि वह नैपाल के पहाड़ों में कहीं गिरेगा और बिना नैपाल सरकार की आज्ञा के अब हम लोग उसे नहीं पा सकते। वे नैपाल सरकार को इसकी खबर कर दें अथवा जो कुछ भी मुनासिब कार्रवाई करनी हो उसका इन्तजाम करें।"

दो चार मिनट तक आपस में कुछ बातें होती रहीं और तब एक सवार पीछे को लौटा तथा दूसरा पुनः आगे को बढ़ा। इस बीच में गुब्बारा कुछ और आगे निकल गया था फिर भी सवार ने हिम्मत न हारी और ऊबड़-खाबड़ जमीन पर होशियारी के साथ चलता हुआ अपने भरसक तेजी के साथ पुनः गुब्बारे के पीछे पीछे जाने लगा।

यकायक सवार के कानों में बन्दूक छूटने की आवाज आई। उसके शिक्षा-प्राप्त कानों ने यह भी बता दिया कि यह राइफिल की आवाज है जो उससे लगभग मील भर दूर और कुछ ऊपर से आई है। उसने चौंक कर अपनी दूरबीन आंखों से लगाई और उसी समय उसकी निगाह अपने

सामने की कोई तीन चार सौ गज ऊंची एक छोटी पहाड़ी पर गई। तेज दूरबीन ने पहाड़ी के सिरे पर बैठे एक औरत और एक मर्द को साफ दिखला दिया। औरत के हाथ में दूरबीन थी और मर्द के हाथ में एक राइफिल जिसके मुंह से निकला हुआ धूंआ ऊपर उठ अब लोप हो रहा था। बन्दूक की सीध पर गौर कर के उस सवार ने यह भी समझ लिया कि उसका लक्ष्य वही गुब्बारा है।

दांत से होंठ चबा कर गुस्से के साथ इस सवार ने कहा, "बेवकूफ आदमी, सरकारी कैदी पर गोली चलाता है!" मगर उसी समय पुनः गोली छूटी और इसके साथ ही वह गुब्बारा यकायक कई गज नीचे को उतर पड़ा। अब इस सवार की समझ में उस बन्दूक चलाने वाले का मतलब आ गया और वह कुछ खुश हो कर बोला, "उसने गुब्बारे में छेद कर दिया है, अब जरूर वह जमीन पर आ गिरेगा और मैं उसके सवार को पा सकूंगा।" उसने अपने घोड़े की चाल तेज की और गुब्बारें की तरफ बढ़ा मगर साथ ही साथ उसके मन में यह ख्याल भी चक्कर मारने लगा—"ये लोग कौन हैं? और गुब्बारे को गिराने से इनका क्या अभिप्राय है?"

गुब्बारे की गैस तेजी से निकल रही थी और वह क्षण क्षण में नीचे गिरता आ रहा था जिससे सवार की हिम्मत बढ़ती जा रही थी और वह घोड़े को डपेटता हुआ आगे बढ़ा जा रहा था। नीचे उतरने के साथ साथ हवा कम लगने से गुब्बारे की चाल में भी फर्क आ रहा था अर्थात् उसकी गति धीमी पड़ रही थी और अब यह सवार सहज ही में अपने और उस गुब्बारे के बीच के फासले को कायम ही नहीं रख सकता था बल्कि उसे कम भी कर सकता था, फिर भी इसमें शक नहीं कि अभी काफी दूर जाने बाद वह गुब्बारा जमीन पर आवेगा।

लगभग कोस भर और जाते जाते इस सवार और उस गुब्बारे का फासला बहुत कम हो गया। उसकी ऊंचाई भी बहुत कम हो गई और उम्मीद पाई जाने लगी कि कोस भर और जाते जाते वह जमीन पर

आ जायगा, मगर अब इस सवार को रास्ता तय करने में बेहद तकलीफ होने लगी क्योंकि मैदानियत का अन्त होकर पहाड़ी सिलसिला जारी हो रहा था और बड़े बड़े बीहड़ ढोकों ने रास्ते को बेतरह रोकना शुरू कर दिया था, फिर भी वह सवार बड़ा होशियार और उसका घोड़ा खूब मजबूत था जो रास्ते की कठिनाइयों पर कुछ भी ध्यान न देता हुआ भरसक तेजी के साथ ही बढ़ा जा रहा था।

यकायक सवार के कानों में कुछ आवाई आई और साथ ही उसने देखा कि गुब्बारे का ऊपरी हिस्सा. शायद गैस निकलने की तेजी से, फट गया जिसके साथ ही उसकी मोटाई तेजी से पचक गई और वह जोर से नीचे की तरफ गिरा। सवार यह देख एक ऊंची जगह पर खड़ा हो गया और गौर से देखने लगा कि गुब्बारा कहां गिरता है। उसने देखा कि बहुत तेजी से नीचे आता हुआ वह गुब्बारा एक ऊंचे और बहुत बड़े पेड़ पर जाकर गिरा और उसकी डालियों को तोड़ता तथा शाखों से उलझता हुआ कुछ नीचे को आकर रुक गया। सवार ने यह देख प्रसन्न हो घोड़े को आगे बढ़ाया और सम्हालता हुआ पहाड़ी के ऊपर की तरफ ले चला क्योंकि वह पेड़ जिस पर गुब्बारा और उसका बेहोश सवार गिरा था सामनेकी पहाड़ी की लगभग आधी ऊंचाई चढ़ कर था और वह पहाड़ी इतनी ऊबड़ खाबड़ और ढोकों से भरी हुई थी कि उस पर घोड़ेपर सवारहोकर चढ़ना काम रखता था।

अभी मुश्किल से इस सवार ने अपने और उस गुब्बारे के बीच का आधा रास्ता तय किया होगा कि उसके कानों में आदमियों के बोलने की आवाज आई और साथ ही उसी पहाड़ी के ऊपर की तरफ से उतरते हुए जिस पर नीचे से यह चढ़ रहा था दो घुड़सवार दिखाई पड़े जिनमें से एक मर्द और दूसरी औरत थी। इन दोनों के नैपाली टांगन बड़े ही फुर्तीले और मजबूत-कदम थे और ये लोग बड़ी आसानी से पहाड़ी की ऊबड़ खाबड़ जमीन को तय करते हुए चले आ रहे थे। हमारे इस पहिले सवार को कुछ भी सन्देह नहीं रह गया कि ये दोनों वे ही औरत और मर्द हैं

जिन्होंने इस गुब्बारे को गोली मार कर गिराया था, साथ ही वह यह भी सोचने लगा—"इन दोनों से मुझे इस गुब्बारे वाले को गिरफ्तार करने में मदद मिलेगी या बाधा ?"

[४]

कामिनी देवी ने वह तस्वीर पुनः अपनी जगह छिपा दी और दूरबीन उठा कर उस बेहोश आदमी तथा उसके गुब्बारे को देखती हुई इस बात पर दिमाग दौड़ाने लगी कि देखें वह गुब्बारा कहां जाकर गिरता है। साथ ही यह खयाल भी उसके दिल को मसोसने लगा कि कहीं गुब्बारा इतनी जोर से न गिरे कि नगेन्द्रनरसिंह को कोई भयानक चोट आ जाय, शायद जख्मी और बेहोश तो वह हुई हैं।

यकायक उसकी निगाह नीचे के मैदान की तरफ चली गई जहां एक सवार को तेजी के साथ सरपट घोड़ा दौड़ाते आते देख वह चौंक पड़ी। उसने अपने दूरबीन उसकी तरफ घुमाई और देखा कि वह एक फौजी अंगरेज है जिसकी पौशाक उसका कोई अफसर होना भी बता रही है। उसके मन में बिजली की तरह यह बात दौड़ गई—"कहीं नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने के लिये ही तो यह सवार नहीं आ रहा है !" क्योंकि यद्यपि उसने कभी देखा न था परन्तु अपने भाई से बहुत दफे नगेन्द्रनरसिंह का नाम सुन चुकी थी और इस बात का भी कुछ आभास पा चुकी थी कि वह नैपाल के पड़ोसी देश भारत के खिलाफ कोई भयानक साजिश कर रहे हैं। वह बहुत दफे नरेन्द्र के मुंह से उनकी हिम्मत और बहादुरी की तारीफ सुन चुकी थी और यद्यपि आज के पहिले तक यह नहीं जानती थी कि वह नगेन्द्र जिसकी तारीफ करते हुए उसका भाई अघाता नहीं वह तस्वीर वाला नौजवान है जिसने उसका दिन चुराया हुआ है फिर भी इस बात को बखूबी समझती थी कि अगर नगेन्द्रनरसिंह एक वार अंगरेजी सरकार के आदमियों के हाथ में पड़ गए तो फिर उनकी जान की खैर नहीं। इस कारण वह बहुत गौर से उस सवार की

गति-विधि को देखने लगी और कुछ ही देर में उसे निश्चय हो गया कि उस सवार का लक्ष्य भी वह गुब्बारा ही है। उसका दिल उछलने लगा और वह इस चिन्ता में पड़ गई कि देखें वह सवार क्या करता है।

उसी समय नरेन्द्र दो घोड़े लिए, एक पर सवार और दूसरे की लगाम पकड़े, वहां आ पहुंचा और घोड़े पर चढ़े ही चढ़े कामिनी से बोला, "डेरे पर से मैं कई आदमियों को मदद के लिए बुला आया हूं, तुम उनमें से एक के साथ खेमे में चली जाओ और बाकी को मेरी तरफ भेजो, मैं नगेन्द्र के पीछे जाता हूं।" पर कामिनी उसकी आवाज सुनते ही उठ कर खड़ी हो गई और बन्दूक को उसे देती मगर दूरबीन को अपनी बगल में लटकाती हुई बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।" नरेन्द्र ताज्जुब से बोला, "हैं तुम घोड़े पर मेरे साथ चलोगी! तुमसे चला तो जाता ही नहीं है क्या गिर कर हाथ पैर तुड़वाने का इरादा है?" मगर कामिनी बोली, "तुम घबड़ाओ नहीं, मुझे सिर्फ एक बार सहारा दे कर बैठा दो फिर मैं गिरूंगी नहीं इसका जिम्मा मेरा!" नरेन्द्र ने पुनः कहा, "नहीं नहीं बहिन जिद्द न करो, जंगल पहाड़ का वास्ता, ऊबड़ खाबड़ रास्ता, नदी नाला खोह दर्रा डांकते कूदते गुब्बारे का पीछा करना पड़ेगा, तुम कहां आफत में पड़ने जाती हो?" मगर कामिनी ने एक न सुनी और लाचार नरेन्द्र को सहारा देकर उसे घोड़े पर चढ़ाना ही पड़ा, मगर जब कामिनी घोड़े पर जम कर बैठ गई और घोड़ा आगे बढ़ा कर उसके घोड़े के साथ हो गई तो यह देख नरेन्द्र को कुछ सन्तोष हुआ कि उसकी रानें अभी भी मजबूत हैं और हाथ तेज से तेज और मुंहजोर घोड़े को भी बस में करने वाली पुरानी होशियारी को भूले नहीं हैं। इस समय कामिनीदेवी के चेहरे पर एक हलका गुलाबी रंग आया हुआ था और उसकी आंखों से सदा प्रगट होती रहने वाली कमजोरी और उदासीनता न जाने कहां काफूर हो गई थी। नरेन्द्र ने इसे क्षणिक उत्साह के कारण उत्पन्न समझा मगर फिर भी उसको कुछ सन्तोष इस बात का हुआ कि उसकी

वहिन किसी काम में दिलचस्पी तो लेने लगी है। अबोध युवक, तू क्या जाने कि कामिनी को इस प्रकार अचानक फुर्तीली बना देने वाली शक्ति कौन सी है ?

दोनों जहां तक सम्भव हुआ तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे का रुख किए हुए उसी तरफ चले जिधर वह गुब्बारा जा रहा था। उस समय नरेन्द्रसिंह की भी निगाह उस सवार पर पड़ी और उसने उसकी तरफ हाथ उठ कर कहा, "वह क्या कोई सवार नीचे मैदान में जा रहा है ?" कामिनी ने जवाब दिया, "हां अंगरेजी फौज का कोई अफसर है और वड़ी दूर से उनका पीछा करता चला आ रहा है।" दोनों की निगाहें आपस में मिल गईं। जुबानों ने कुछ न कहा परन्तु दिलों ने वात कर ली और एक दूसरे से कह दिया कि यह बहुत बुरी बला है जो मुश्किल से दूर होगी।

इस विचार से कि ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी रास्ते पर से तेज जाने में कामिनी को कष्ट होगा नरेन्द्र अपने घोड़े को धीरे धीरे ले जा रहा था परन्तु कामिनी को यह सुस्ती नापसन्द थी। उसका विचार था कि उस अंगरेज सवार के पहुंचने के पहिले ही पास पहुंच कर गुब्बारे पर कब्जा कर ले, अस्तु कुछ ही देर के वाद उसने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और रास्ते की कठिनाइयों पर कुछ भी ध्यान न दे तेजी से जाने लगी। नरेन्द्र ने यह देख आवाज दी, "कामिनी, होशियार ! तेज जाने का रास्ता नहीं है !!" मगर उसने सिर्फ पीछे को हाथ कर साथ आने का इशारा किया और घोड़े को और तेज किया। लाचार नरेन्द्र को भी अपने घोड़े को एड़ लगानी पड़ी मगर उसने अपने दिल में कहा, "जरूर कामिनी की शामत आई है, ऐसी कमजोर हालत, ऐसा खतरनाक रास्ता, और इतना तेज सफर !" मगर उसका डर व्यर्थ था। कामिनी के वदन में इस वक्त पुनः लाल खून तेजी से चक्कर मारने लगा था और उसकी कमजोरी और बेबसी न जाने कहां गायव हो गई थी। थोड़ी ही देर में वे लोग गुब्बारे और उसके सवार के वहुत करीब जा पहुंचे।

यकायक एक आवाज के साथ गुब्बारे का ऊपरी हिस्सा फट गया और वह तेजी के साथ नीचे को गिरा। कामिनी के मुंह से चीख निकल पड़ी मगर उसने अपने होठों को दांतों से दबा कर जवर्दस्ती उसे रोका तथा घोड़ा और तेज किया। नरेन्द्र भी अब आगे बढ़ कर साथ हो गया और दोनों घोड़े अपनी पूरी तेजी के साथ आगे दौड़े। बात की बात में बीच का फासला तय हो गया और एक तरफ से वह अंगरेज अफसर और दूसरी तरफ से ये दोनों एक साथ एक ही वक्त उस बड़े पेड़ के नीचे पहुंचे जिसके ऊपर वह गुब्बारा गिरा था।

कामिनी और नरेन्द्र की बेचैन निगाहें ऊपर को उठीं। उन्हें गुमान था कि शायद नगेन्द्रनरसिंह की कुचली टूटी लाश देखने को मिलेगी मगर नहीं, उस बड़े पेड़ की डालियों ने गुब्बारे की रस्सियों को उलझा कर उसे ऊपर ही रोक लिया था और नगेन्द्र एक दम अधर में बेलाग लटकता हुआ बाल बाल बच गया था। नरेन्द्र के गले से सन्तोष की सांस निकली और वह घोड़े से कूद पड़ा। कामिनी भी नीचे उतरी और दोनों में सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिये।

अभी ये लोग कुछ निश्चय नहीं कर पाये थे कि वह फौजी जवान घूम कर इनके सामने आ गया और कुछ घमण्ड भरी आवाज में अकड़ता हुआ बोला, "शायद तुम लोग सोचते हो कि यह कौन आदमी है इससे मैं बतला देना चाहता हूं कि यह एक खौफनाक बागी है जिसकी तलाश हमारी सरकार बहुत दिनों से कर रही थी और जिसे गिरफ्तार कर के ले जाने के लिए मैं बहुत दूर से साथ साथ आ रहा हूं।"

इस उद्धत अफसर की बात का ढंग कुछ ऐसा था कि गर्ममिजाज नरेन्द्र के दिमाग का पारा तुरत चढ़ गया और वह कुछ कड़े स्वर में बोला, "अफसर, शायद तुम यही समझ रहे हो कि अभी तक भारत में हो पर जान लो कि तुम नैपाल राज्य में हो और तुम्हारे सामने यहां की फौज का मातहत सिपहसालार मौजूद है जो भारतीय फौजों का आनरेरी मेजर

जेनरल सो है ।" कहते हुए नरेन्द्र ने अपनी फौजी पोशाक में लगे हुए एक फीते की तरफ उंगली उठाई ।

नरेन्द्र की बात सुन और खास कर उस फीते को देख कर उस अंगरेज का दिमाग कुछ ठंढा हुआ, थोड़ी कुरुखी के साथ उसने नरेन्द्र को फौजी सलाम किया और तब ऐसे स्वर में जिसमें से अकड़ अभी तक निकली न थी कहा, "मैं ब्रिटिश फौज का कर्नल हूं । मेरा नाम कासग्रेव है । मैं (ऊपर की तरफ उंगली उठा कर) इसे गिरफ्तार करने के लिए आया हूं, मुझे मदद मिलनी चाहिये ताकि मैं इस बागी को लेकर अभी ही वापस भी लौट जा सकूं ।"

नरेन्द्र ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर कहा, "तुम्हारा पासपोर्ट ?" अंगरेज का चेहरा कुछ उतर गया । वह अच्छी तरह जानता था कि इधर नैपाल सरकार का सख्त हुक्म हो गया है कि बिना पासपोर्ट लिये और हमेशा अपने साथ रक्खे हुए एक भी भारतीय चाहे वह कोई भी क्यों न हो नैपाल सीमा के अन्दर पैर न रक्खे और न कोई विदेशी बिना उसे साथ रक्खे कहीं आवे जाए । इसके लिये तिब्बत भूटान भारत तथा नैपाल की सरकारों में बहुत कुछ लिखा पढ़ी भी हो चुकी मगर नैपाल सरकार अपनी बात पर अड़ी हुई थी, और इस समय अपने गोरे चमड़े के घमंड में वह बिना पासपोर्ट साथ लेने का तरद्दुद उठाए नैपाल सीमा ही नहीं डांक आया था बल्कि पचीसों मील भीतर भी घुस आया था । यही सोच उसका मुंह कुछ उतर गया फिर भी वह ऐंठ के साथ बोला, 'मैं रेजीडेन्सी का एक अफसर हूं, मुझे पासपोर्ट की जरूरत नहीं है और न मेरे पास वह मौजूद ही है ।

नरेन्द्र ने तन कर कहा, "अगर और कोई ऐसी बात कहता तो शायद यह समझ कर कि उसे नियमों का पता नहीं है मैं उसे माफ भी करता मगर तुम जब अपने को रेजीडेन्सी का अफसर बताते हो तो तुम्हारा यह अपराध अक्षम्य हो जाता है । मैं समझता हूं कि तुम झूठ बोल रहे हो ।

जब तक इस मामले की पूरी जांच न हो ले तब तक के लिए तुम अपने को हिरासत में समझो। मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया, जाओ वहां पेड़ के नीचे खड़े हो जाओ, अपने हथियार मुझे दे दो।" कह कर नरेन्द्रसिंह ने अपना हाथ पुनः आगे बढ़ाया।

उस अफसर का चेहरा नरेन्द्र की बात सुन कर लाल हो गया। उसने गुस्से से कहा, "क्या तुमको यह मजाल है कि एक अंगरेज अफसर के हथियार रखवा लो?"

कड़क कर नरेन्द्र ने कहा, "जरूर है!" साथ ही उसने अपनी पिस्तौल कमरपेटी से निकाल ली और उस अफसर के सिर का निशान लगा कर उसी कड़े स्वर में पुनः बोला, "तुमने नैपाल राज्य की फौज के सहायक सिपहसालार के हुक्म की उदूली की है, खबरदार अगर जरा भी जुम्बिश खाई तो मैं गोली मार दूंगा!"

नरेन्द्रसिंह के लहजे में ऐसी दृढ़ता और कड़ाई थी कि उस अफसर का हाथ उसकी कमर तक जाता जाता रुक गया। वह इस बात को बखूबी जानता था कि इस समय रक्त-मंडल की काली करतूतों के कारण नैपाल में भी बड़ी तंदेही थी और उसने पासपोर्ट साथ न रख कर केवल नियम-भंग ही नहीं किया था बल्कि अगर नरेन्द्र सचमुच नैपाल का मातहत सिपहसालार और भारतीय फौज का आनरेरी मेजर जनरल भी है (जिसके विषय में वे फीते कोई संदेह नहीं रहने देते थे) तो उसका हुक्म न मान कर उसने फौजी कानून के खिलाफ काम किया है जिसके लिए उसका कोर्ट-मार्शल हो सकता है। यह सब सोचता हुआ कुछ देर के लिए वह रुका मगर साथ ही उसके विचारों का ढंग पलटा। एक हिन्दुस्तानी काले आदमी के हाथों अपना हथियार रखवा लिया जाना उससे बर्दाश्त न हो सका और उसने "ओह, फजूल की बकवाद मत करो?" कह कर अपने कमर से लटकती हुई पिस्तौल पर हाथ डाला।

शायद उसे ख्याल था कि एक नेपाली एक अंगरेज की इतनी बेइज्जती नहीं कर सकता, शायद उसने यह भी सोचा हो कि यह नेपाली इतनी

जुर्रत नहीं करेगा कि मुझ पर गोली चलावे, मगर जो कुछ भी हो उसने अपनी पिस्तौल के मुट्ठे पर हाथ रक्खा तो सही पर अफसोस कि उसे बाहर निकाल न सका क्योंकि नरेन्द्र ने फायर कर दिया। उसे ऐसा जान पड़ा मानो उसके हाथ में किसी ने जलता हुआ लोहे का छड़ घुसेड़ दिया हो, नरेन्द्र की गोली उसकी कलाई के पार हो गई थी। उसके मुंह से एक चीख निकली मगर उसने हिम्मत के साथ उसे रोका और दूसरे हाथ से जख्मी हाथ को पकड़ कर जमीन पर बैठ गया।

नरेन्द्र ने फिर कड़क कर कहा, "हुक्म-उदूली का मजा पाया!" और तब कामिनी से कहा, "बहिन, आगे बढ़ कर इसके हथियार ले लो!" तुरत आगे बढ़ कामिनी ने उस अफसर की पेटी खोल ली जिसमें तलवार और पिस्तौल थी और ला कर नरेन्द्र को दे दी। नरेन्द्र ने उसे अपने घोड़े की पीठ पर फेंकते हुए फिर कड़ी आवाज में उस अंगरेज से कहा, "जा और उस पेड़ के नीचे खड़ा हो!"

उस अंगरेज ने लाल आंखें कर नरेन्द्र की तरफ देखा मगर नरेन्द्र की आंखों से इस वक्त खून टपक रहा था। उसने फिर जोर से कहा, "अगर नहीं मानता है तो अबकी तेरा पैर तोड़ दूंगा!"

अब उसको यह हिम्मत न रही कि नरेन्द्र का हुक्म मानने से इनकार करे। मन ही मन उससे कभी अच्छी तरह बदला लेने की बातें सोचता हुआ वह तकलीफ के साथ उठा और जिस पेड़ की तरफ नरेन्द्र ने बताया था वहां जाकर खड़ा हो गया।

नरेन्द्र ने अपनी पिस्तौल कमर में रख ली और कामिनी की तरफ देखा। कामिनी ने धीरे से कहा, "भैया, यह तुमने अच्छा नहीं किया!"

नरेन्द्र ने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्यों!" कामिनी बोली, "एक अंगरेज पर तुमने गोलो चलाई है, लाख हो फिर भी अंगरेज ही है। अगरेज सरकार अपनी इज्जत का खयाल करेगी और तुम्हारी सरकार पर इतना दवाव डालेगी कि ताज्जुब नहीं कि तुम्हें........"

नरेन्द्र ने लापरवाही से कहा, "मैंने जो कुछ किया है अपने हक के

भीतर किया है और उसने मुनासिब सजा पाई है, फिर भी मैं यह अन्तिम कार्रवाई न करता अगर यह जानता कि इस समय नगेन्द्र को बचाने की कोई दूसरी तरकीब हो सकती है। अगर यह लौट कर अपने अफसरों से नरेन्द्र के हम लोगों के हाथ पड़ने का हाल कह देगा तो फिर हम लोग लाख कोशिश करने पर भी उसे किसी तरह बचा न सकेंगे क्योंकि हमारे महाराज ने रक्त-मंडल के मुकाबले में भारत सरकार की मदद करने की प्रतिज्ञा की है। अब तो यह अपने हाथ में है, जब तक चाहेंगे, दो चार पांच रोज तक भी, यह बात किसी को मालूम नहीं होगी कि नगेन्द्र को हम लोगों ने पाया है। (इधर उधर देख कर) मगर अब फजूल की देर हो रही है, हमारे आदमी अभी तक क्यों नहीं आए? ओह, वह आ रहे हैं!"

थोड़ी ही देर में वे कई आदमी उस जगह आ पहुंचे जिन्हें नरेन्द्र अपनी मदद के लिये बुला आया था। हट्टे कट्टे गठीले कई गोरखे नरेन्द्र की आज्ञा पा उस पेड़ पर चढ़ गए और नगेन्द्रनरसिंह को उतारने की चेष्टा करने लगे तथा दो आदमी उसके हुक्म के मुताबिक उस अंगरेज को कैदी की तरह लिये अपने खेमों की तरफ चले गये।

कुछ ही देर की कोशिश और मेहनत के बाद नगेन्द्रनरसिंह उतार कर जमीन पर लेटा दिए गए। कामिनी झपट कर उनके पास पहुंची और उनका सिर गोद में लेकर बैठती हुई अश्रुपूर्ण नेत्रों से नरेन्द्र से बोली, "पहिले देखो इनमें जान भी है या नहीं?" क्योंकि नरेन्द्र की पौशाक खून से तर थी, उनका बदन एक दम ठंढा हो रहा था, और चेहरा मुर्दों की तरह पीला हो गया था। मगर इसी बीच में नरेन्द्र जो बड़े गौर से उनके अंगप्रत्यंग की जांच कर रहा था खुशी से बोल उठा, "है है, जान है, मरे नहीं हैं मगर बहुत सख्त जख्मी हो गये हैं! यह देखो यहाँ पर चोट लगी है। मगर अब ज्यादा देर न कर इन्हें यहां से उठा ले चलना चाहिये।"

नरेन्द्र के हुक्म से बात की बात में उसके आदमियों ने पेड़ों की

डालियां काट कूट कर एक डोली सी बनाई और बेहोश नगेन्द्र को उस पर लाद के डेरे की तरफ चले। पीछे पीछे कामिनी और नरेन्द्र जाने लगे।

घन्टे भर से कुछ ही अधिक देर में ये लोग अपने ठिकाने पहुंच गए। कामिनी की इच्छा से बेहोश नगेन्द्रनरसिंह खास उसके खेमे में उसी के पलंग पर लेटा दिए गए। एक आदमी किसी होशियार जर्राह या डाक्टर को बुलाने के लिए काठमान्डू दौड़ाया गया। उनकी खून से तर पोशाक उतार कर दूसरी पहिनाई गई। घाव धोकर साफ किया गया और उन्हें होश में लाने की कोशिश की जाने लगी। एक कविराजजी नरेन्द्र के साथ थे, जिन्होंने कुछ ताकत की दवा भी उनके मुंह में डाली।

लगभग एक घंटे की कोशिश के बाद नगेन्द्र की बेहोशी कुछ दूर होती मालूम पड़ी। उन्होंने अपने हाथ पांव हिलाए और उनके मुंह से तकलीफ भरी एक सांस निकली। पलकें दो चार बार हिलीं और तब एक बार आंखें खोल कर उन्होंने अपने चारो तरफ देखा।

उनके सिर्हाने बैठी बल्कि उनके सिर को अपनी जांघ पर लिये अपनी बार बार डबडबा आने वाली आंखों को आंसू गिराने से बहुत ही कोशिश के साथ रोकती हुई कामिनी के दिल से प्रसन्नता की एक आह निकली और उसने कृतज्ञता भरी दृष्टि आकाश की ओर उठा कर भगवान को धन्यवाद दिया। इसके बाद अपने मुलायम हाथों को नगेन्द्र के माथे पर प्यार के साथ फेरती हुई वह बोली, "कहिये अब तबीयत कैसी है?"

नगेन्द्र ने अपनी आंखें चारो तरफ घुमाईं। ऐसा जान पड़ता था मानों आंखें खुली रहने पर भी उनमें अभी देखने की शक्ति लौटी नहीं है। इसके बाद कुछ अस्पष्ट स्वर में उन्होंने पूछा, "मैं कहां हूं?"

नरेन्द्र ने यह सुन जवाब दिया, "दोस्तों में, भाई नगेन्द्र, क्या तुम नरेन्द्र को भूल गये!"

"नरेन्द्र! नरेन्द्र! कौन नरेन्द्र?" कह के नगेन्द्र ने गौर से नरेन्द्र

की तरफ देखा। यकायक उनका चक्कर खाता हुआ दिमाग ठिकाने आ गया। नरेन्द्र को पहिचान वे खुशी भरी आवाज में बोले, "नरेन्द्र, अरे तुम!" उन्होंने अपने हाथ नरेन्द्र की तरफ बढ़ाए और उठने की कोशिश की मगर उठ न सके, कमजोरी इतनी थी कि जरा सर उठाते ही चक्कर आने लगा और वे फिर कामिनी की गोद में गिर गए। थोड़ी देर के लिये उन्हें पुनः गश आ गया। कामिनी के पास ही पानी का बरतन और गीला कपड़ा रक्खा था जिससे वह उनका सिर पुनः तर करने लगी, नरेन्द्र हवा करने लगा।

दस मिनट के बाद नगेन्द्रनरसिंह ने पुनः होश में आकर आंखें खोल दीं और इस बार सिर घुमा कर अपने चारो तरफ अच्छी तरह देखा। यकायक कामिनी से उनकी चार आंखें हुईं। वे चौंक पड़े। एक कंपकंपी सी उनकी देह में आ गई। मानों अपनी आंखों पर यकीन नहीं है, इस तरह पर उन्होंने फिर उनकी तरफ देखा और तब कुछ देर के लिये इस तरह आंखें बन्द कर लीं जैसे कुछ याद कर रहे हों।

"कहीं फिर गश तो नहीं आ गया" सोचते हुए नरेन्द्रसिंह ने कहा, "भाई नगेन्द्र, अब तबीयत कैसी है?"

नगेन्द्र ने आंखें बन्द किए किए ही पूछा, "मैं कहां पर हूं? तुमने मुझे कैसे पाया?"

नरेन्द्र ने कहा, "तुम काठमाण्डू से बीस कोस दक्खिन गोना पहाड़ी पर मेरे खेमे में हो, तुम्हें एक गुब्बारे पर बेहोश उड़े जाते हम लोगों ने देखा और उतार कर यहां ले आए।"

नगेन्द्र ने अपना कांपता हुआ हाथ अपने माथे पर फेरा और सिर को दबाता हुआ बोला, "गुब्बारे पर? हां ठीक है, मुझे ख्याल आ गया।" कह कर उन्होंने पुनः आंखें खोल दीं। कामिनी से फिर उनकी आंखें चार हुईं जो अपने बड़े बड़े नेत्रों को एकटक उनके चेहरे पर जमाए हुई थी। यकायक एक बिजली सी नगेन्द्र की आंखों में चमक गई। उन्होंने कामिनी को पहिचान लिया, और कामिनी भी जान गई कि नगेन्द्र ने उसे पहिचान

लिया। दोनों की आंखें बन्द हो गईं । न जाने क्यों दोनों ही का चेहरा लाल हो आया।

नरेन्द्र बोला,"अब तबीयत कैसी है ?" नगेन्द्र ने जवाब दिया, "अच्छी है, मगर न जाने क्यों कमजोरी बहुत मालूम पड़ती है।" नरेन्द्र ने कहा, "जख्म से बहुत खून निकल जाने के कारण ऐसा हुआ है।"

नगेन्द्र ने सिर हिला कर कहा, "ठीक है, मुझे आसमान में जाते हुए एक हवाई जहाज का बहुत कड़ा धक्का लगा जिससे मैं बेहोश हो गया।"

नरेन्द्र ने पूछा, "आखिर यह सब हुआ क्या ? तुम कैसे....?" मगर उसी समय कामिनी ने कड़ी आंख उस पर डाल कर उंगली के इशारे से उसे मना किया। वह समझ गया और बात घुमा कर बोला—"तुम कैसे और क्यों यहां तक आए यह सब हाल पीछे पूछूंगा। इस समय ज्यादा बात करने की जरूरत नहीं है। डाक्टर बुलाने आदमी गया है। दो घन्टे के भीतर वह आ पहुंचेगा तो तुम्हारे जख्म की जांच करके मुनासिब इन्तजाम करेगा। तुम अब आराम करो।"

कामिनी ने कुछ इशारा किया जिसका मतलब समझ कर नरेन्द्र खेमे के बाहर निकल गया जहां रसोइया कामिनी के हुक्म के मुताबिक तीतर का शोरबा तैयार कर चुका था। नरेन्द्र ने कटोरा उसके हाथ से ले लिया और खेमे में वापस लौट आया। कटोरा अपने हाथ में लेकर कामिनी ने कहा, "लीजिये इसे पी लीजिए, कुछ ताकत आवेगी।"

नगेन्द्र ने आंखें खोलीं। पुनः कामिनी से चार आंखें हुईं। बड़ी कोशिश से इस बार कामिनी ने अपनी आंखों को नीचा होने से रोका और निगाह भर कर नगेन्द्र के मुरझाये हुए चेहरे को देखा जिसकी आंखें इस समय उसके ऊपर इस तरह पड़ रही थीं मानों महीनों का भूखा सामने भोजन की थाली देख रहा हो। कामिनी के हाथ का कटोरा देख उसने अपना मुंह खोल दिया और कामिनी ने चिम्मच से थोड़ा थोड़ा शोरबा उसके मुंह में देना शुरू किया।

शोरवा पी कर नगेन्द्र के वदन में कुछ ताकत आई और वह उठने की कोशिश करने लगा मगर नरेन्द्र ने मना कर के कहा, "नहीं, अब तुम आराम से चुपचाप पड़ जाओ और जरा सोने की कोशिश करो, नींद आ जाने से तवीयत हलकी हो जायगी।" उसका इशारा पा कर कामिनी ने धीरे से नगेन्द्र का सिर तकिया पर कर दिया और आप उठ कर अलग हो गई। हलका ओढ़ना नगेन्द्र के वदन पर डाल दिया गया और तब खेमे के दर्वाजों का पर्दा गिरा कर दोनों व्यक्ति बाहर निकल आये। सिर्फ एक दाई दर्वाजे के पास वैठी रह गई और खेमे के चारो कोनों पर वे चार सिपाही रह गये जिन्हें नगेन्द्र के यहाँ पहुंचते ही नरेन्द्र ने पहरे के लिए मुकर्रर कर दिया था। कामिनी को लिए नरेन्द्र वाहर आया और वोला, "एकान्त होने से जरूर नींद आ जायगी, तब से चलो उस अंगरेज को देख आवें कि उसका क्या हाल है।" कामिनी ने कहा, "अच्छी वात है, चलो।"

ताज्जुब की वात थी कि चारो तरफ खोज आने पर भी उस फौजी नौजवान का कहीं पता न लगा और दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि वे दोनों आदमी भी अभी तक वहां नहीं पहुंचे जिनके साथ वह भेजा गया था। चारो तरफ खोज ढूंढ़ मची, मगर न तो उस अफसर का पता लगा और न नरेन्द्र के दोनों नौकर ही दिखाई पड़े। नरेन्द्र के हुक्म से दो सवार चारो तरफ दूर तक घूम के उनकी तलाश भी कर आए मगर उन तीनों का कुछ भी पता न लगा और नरेन्द्र गहरे तरद्दुद में पड़ गया कि वे तीनों आखिर गए तो कहां गए।

[५]

नरेन्द्र की दौड़ धूप, कामिनी की सुश्रूषा, और होशियार डाक्टर की मेहनत नगेन्द्रनरसिंह को शीघ्र शीघ्र आरोग्यता की ओर लाने लगी। पांच ही छः दिन के वाद वे इस लायक हो गये कि खेमे के वाहर निकल कर कुछ दूर तक टहल सकें।

पहाड़ी के उसी हिस्से पर जहां से कामिनी और नरेन्द्र ने बेहोश नरेन्द्र को गुब्बारे पर उड़े जाते देखा था एक दिन संध्या के समय कामिनी को नगेन्द्र के साथ बैठे हम देख रहे हैं। कामिनी का मुलायम पंजा नगेन्द्र के हाथों में है और उसकी आंखें जमीन की तरफ। नगेन्द्र की निगाहें एकटक उसके चेहरे की तरफ हैं जो इस समय किसी उत्तेजना के कारण लाल हो आया है। दोनों चुपचाप हैं।

कुछ देर बाद नगेन्द्र ने कहा, "तब क्या मैं समझ लूं कि मेरी किस्मत खोटी है और मैं तुम्हारे प्रेम का पात्र किसी प्रकार भी नहीं बन सकता ?"

कामिनी की आंखें उठीं और एक बार नगेन्द्र के चेहरे पर पड़ फिर नीचे को झुक गईं। उसने कुछ कहने की चेष्टा की पर मुंह से बात निकल न सकी, हां उसके शरीर में एक हलकी कंपकंपी सी जरूर आ गई। नगेन्द्र ने पुनः कहना शुरू किया, "कामिनी, मैं तब से तुम्हारे प्रेम का भिखारी हूं जब आज से बहुत पहिले तुम्हें लूटने के विचार से तुम्हारे डिब्बे में घुसा था। अफसोस, उस समय मुझे जरा भी नहीं मालूम था कि तुम मुझसे भी बढ़ कर डाकू निकलोगी और मेरा सर्वस्व, मेरा दिल ही लूट लोगी!"

कामिनी के होठों पर एक हंसी दौड़ गई मगर उसका लज्जावनत सिर और भी नीचे को झुक गया। नगेन्द्र उत्तेजना के साथ बोला, "निराशा के साथ लड़ता हुआ अब तक मैं किसी तरह सब्र करता आया परन्तु अब तुम्हारी मोहनी सूरत सामने देख कर मुझसे और सब्र नहीं होता। मैं अब अपनी किस्मत का फैसला ही कर डालना चाहता हूं। तुम अपना सिर उठाओ और एक बार मेरी तरफ देख कर कह दो कि क्या तुम मुझे कुछ भी प्यार करती हो। प्यार न करती हो तो न सही क्या भविष्य में कभी कर सकोगी? या मैं इसकी भी आशा न करूं? मैं तुमसे कोई बात छिपाना नहीं चाहता, इसी से साफ साफ कहे देता हूं कि मैं बड़ा ही खराब आदमी हूं। मैं चोर रहा, डाकू रहा, खूनी

रहा, और आजकल अंग्रेजी सरकार का सब से बड़ा बागी और हिन्दुस्तान का मुख्य क्रान्तिकारी भी बन बैठा हूं। यह भी समझ रक्खो कि मेरी जान का कुछ भरोसा नहीं है और न जाने कब मैं सूली पर दिखाई पड़ूं ...!"

यकायक नाजुक-दिल कामिनी का बदन कांप गया और उसने डरी हुई आंखें नगेन्द्र की तरफ उठाईं। नगेन्द्र के हाथों में पड़े हुए उसके हाथ कांप गए। गौर से देखने वाला कह सकता था कि उसका चेहरा एक सायत के लिये पीला हो गया। मगर नगेन्द्र इन सब बातों का दूसरा ही मतलब समझ कर बोला, "मैं इसलिए साफ साफ कहे देता हूं कि पीछे तुम्हें यह कहने का मौका न मिले कि मैंने अपने ऐबों को छिपा कर तुम्हें धोखे में डाला। मगर तुम्हारा चेहरा कह रहा है कि इन सब बातों से, खून खराबा दगा फरेब मार काट से, तुम्हें नफरत है। ऐसी हालत में मेरा कुछ भी आशा करना वृथा है। खैर तो लो अब मैं कभी तुम्हें इस विषय में कुछ न कहूंगा। मेरे दिल में जो गुबार भरा था वह मैंने निकाल लिया। मैं समझ गया कि तुम्हें मुझसे नफरत है। अब मैं जाकर एक बारगी ही अपनी किस्मत का फैसला कर डालूंगा!" कहता हुआ वह उठने लगा।

अब कामिनी अपने दिल को रोक न सकी। अब तक बड़ी मुश्किल से जिस बांध के भीतर वह अपने दिल को रोके हुई थी वह टूट गया। उसने उद्वेग भरे स्वर में कुछ कहना चाहा मगर—"नगेन्द्र... ! नगेन्द्र... !!" सिर्फ इस प्यारे नाम के सिवाय उसके रुंधे हुए कंठ से और कुछ न निकल सका।

परन्तु जो कुछ निकला वही उसके हृदय की व्यथा को प्रगट कर देने को काफी था। नगेन्द्र के मुरझाए हुए दिल पर आशा का मानो अमृत बरस गया। वह पुनः बैठ गया और कामिनी की आगे बढ़ी हुई बाहों को उसने अपने गले में डाल लिया।

जुबानें चुप थीं, मगर पास पास धड़कते हुए दिल बातें कर रहे थे। आंखें बन्द थीं, मगर मन एक दूसरे की मोहिनी सूरत देख रहे थे। बार बार आ जाने वाली कंपकंपी आशा उत्कंठा और उद्वेग का संदेशा ला और ले जा रही थी।

न जाने कब तक दोनों की यही हालत रहती अगर एक तेज सीटी की आवाज दोनों को चौंका न देती। चमक कर दोनों इधर उधर देखने लगे। पुनः वही आवाज आई और इस बार ऐसा जान पड़ा मानों कोई खास इशारे के साथ सीटी बजा रहा है। नगेन्द्र यह आवाज सुनते ही चिहुंक गया और जरा देर गौर करने के बाद उसने भी अपनी जेब से सीटी निकाली और कुछ खास ढग पर बजाई। इसके साथ ही उसने कुछ दूर की झाड़ियों में से निकलते हुए एक आदमी को देखा जिसने उसको ओर देख अपना हाथ उठा कर उंगलियों से कोई खास इशारा किया जिस पर नगेन्द्र ने उसे पास आने का इशारा किया।

बात की बात में वह आदमी पास आ पहुंचा और नगेन्द्रनरसिंह को फौजी सलाम कर अपने दाहिने हाथ की तीन उंगलियां बाएं हाथ की हथेली पर एक खास ढंग से रक्खीं। नगेन्द्र ने भी कुछ इशारा किया जिसके जवाब में उस आदमी ने पुनः कुछ इशारा किया। हाथ उंगलियों पलकों और होठों के सहारे दोनों में कुछ बातें होने लगीं।

कामिनी ताज्जुब के साथ इस इशारेबाजी को देख रही थी। इतना तो वह समझ गई कि यह नया आने वाला आदमी नगेन्द्रनरसिंह का कोई जासूस अथवा 'रक्त-मंडल' का आदमी है मगर उन दोनों में क्या बातचीत हो रही है इसे वह बिल्कुल समझ न सकी। आखिर जब नगेन्द्रनरसिंह के एक इशारे के जवाब में वह फौजी सलाम करके चला गया तो कामिनी ने नगेन्द्र का हाथ पकड़ के पूछा, "यह कौन आदमी था और किस लिए आया था!"

नगेन्द्र मुस्कुरा कर बोला, "यह मेरा जासूस था, कहता था कि

नेपाल सरकार के दो सौ सिपाहियों ने अभी अभी आकर तुम्हारे भाई का डेरा घेर लिया है।

कामिनी चौंक कर बोली, "अरे, ऐसा ! तब क्या होगा ? वह फौज किस लिए आई है ?"

नगेन्द्र० । (हंस कर) मुझे पकड़ने ।

कामिनी का चेहरा पीला हो गया। डर से काँपती हुई वह बोली, "तब फिर ? तुम तो इतने कमजोर हो कि भाग भी नहीं सकते।"

नगेन्द्र कुछ गम्भीर होकर बोला, "अगर तुम एक काम करो तो मैं बच सकता हूँ।"

कामिनी जल्दी से बोली, "बोलो बोलो, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूं।"

नगेन्द्र ने कामिनी के कान के पास मुंह ले जा कर कहा, "मुझसे विवाह करने की प्रतिज्ञा कर दो तो मैं अपने को बचा सकता हूं।"

कामिनी का चेहरा लज्जा से लाल हो गया और वह सिर झुका कर बोली, "मसखरापन रहने दो और अपनी जान बचाने की फिक्र करो !" नगेन्द्र बोला, "मैं हंसी नहीं करता, ठीक कह रहा हूँ। अगर तुम मुझसे विवाह करने की प्रतिज्ञा करो तब तो मैं वह देखो उस घोड़े पर चढ़ के निकल जा सकता हूं जो मेरा आदमी ला रहा है, और नहीं तो तुम्हारी सरकार के इन्हीं आदमियों के हाथ पड़ अपनी जिन्दगी का खातमा करता हूं क्योंकि इसमें तो कोई शक ही नहीं हो सकता कि ये लोग मुझे पकड़ कर अंगरेजी सरकार के हवाले कर देंगे जो फौरन मुझे फांसी लटका देगी।"

कामिनी ने उधर देखा जिधर नगेन्द्र ने हाथ का इशारा किया था। देखा कि वही आदमी जो अभी थोड़ी देर पहिले नगेन्द्र से बात कर रहा था, दो घोड़ों की लगाम पकड़े चला आ रहा है। वह बोली, "क्या तुम घोड़े पर चढ़ सकोगे ?" नगेन्द्र ने जवाब दिया, "हां, मगर जो मैंने पूछा

उसका ठीक ठीक जवाब पा कर ही !"

शर्म ने कामिनी की जबान बन्द कर दी मगर नगेन्द्र ऐसा सुन्दर मौका चूक जाने वाला आदमी न था। उसने उतावलापन दिखाते हुए कहा, "जल्दी बताओ, जितनी देर करोगी उतना ही मुझे गिरफ्तार करने वाले मेरे पास आते जायंगे।"

कामिनी डर कर बोली, "अच्छा मैं वचन देती हूं, मगर यह भयानक काम........।"

यह कहती हुई वह उठ खड़ी हुई। नगेन्द्र भी खड़ा हो गया और बोला, "कौन भयानक काम?" कामिनी ने जवाब दिया, "रक्त-मंडल वाला। उसको तुम्हें छोड़ देना...!"

नगेन्द्र ने उसे अपने कलेजे से लगाते हुए कहा, "डरपोक औरत !!"

दोनों कुछ सायत तक एक दूसरे से चिपके रहे, इसके बाद अलग हो कर नगेन्द्र ने कामिनी से कहा, "आज से ठीक एक महीने बाद, आज ही के दिन और इसी वक्त, तुम यहां पर आना, मैं तुमसे मिलूंगा।" कामिनी ने सिर हिला कर "अच्छा" कहा।

घोड़े लिए हुए वह आदमी पास आ चुका था। नगेन्द्र कामिनी का हाथ पकड़ कर कुछ देर तक उसकी आंखों में एकटक देखता रहा, कामिनी भी उससे टकटकी मिलाए देखती रही, इसके बाद उसके कानों में "प्यारी, एक महीने के लिये बिदा !" कह नगेन्द्र एक घोड़े पर चढ़ गया। दूसरे घोड़े पर उसका साथी चढ़ा और दोनों घोड़े घूम कर तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे की तरफ झपटे। जाते जाते नगेन्द्र ने पुकार कर कहा, "ठीक एक महीने के बाद, इसी समय, इसी जगह !" कामिनी ने कलेजे को दबाते हुए सिर हिला कर कहा, "हां !"

अफसोस नगेन्द्र, तुम इतने होशियार हो कर भी गलती कर ही गये ! आखिरी बात तुमने इस जोर से कही कि पास की एक दूसरी झाड़ी में छिपे हुए एक लंबे कद के आदमी ने उसे बखूबी सुन लिया और उसका

मतलब भी लगा लिया। इसके बाद वह उसी झाड़ी के अन्दर और भी दबक कर छिप रहा।

× × ×

कामिनी जब तक निगाहें काम करती रहीं एकटक उसी तरफ देखती रही जिधर नगेन्द्र गया था। इसके बाद वह घूमी और तब उसकी निगाह उन बहुतेरे सिपाहियों पर पड़ी जो सब ओर फैलते हुए उसी तरफ को आ रहे थे और जिन पर अपनी ही धुन में मग्न रहने के कारण उसने अब तक कुछ भी ध्यान न दिया था।

हमला

[१]

पाठकों को साथ लेकर अब हम नैपाल की तराई पर के छोटे राज्य धरमपुर की तरफ चलते हैं जिसको राजधानी धरमपुर हिमालय की एक छोटो मगर खुशनुमा पहाड़ी पर बड़ी सुन्दरता से बसी हुई है। धरमपुर की आबहवा और सीन सीनरी ऐसी अच्छी है, वहां की पहाड़ियों में शिकार की ऐसी बहुतायत है, और वहां का रहन सहन का खर्चा इतना कम है कि प्रत्येक गर्मियों में सैकड़ों विदेशी वहां जाते हैं और उस समय वह एक छोटे मोटे हिल-स्टेशन का रूप धारण कर लेता है। कहा जाता है कि वहां की पहाड़ियों में तांबे लोहे मेगनीशियम आदि की खानें भी बहुत हैं जिसकी लालच में बहुतेरे अंगरेज व्यापारी भी वहां आते रहते हैं।

धरमपुर के राजा गिरीशविक्रमसिंह एक नौजवान आदमी हैं । अभी मुश्किल से अट्ठाईस तीस बरस की उम्र होगी। शरीर से हृष्टपुष्ट, सुन्दर, उत्साही, पढ़े लिखे, वीर पुरुष हैं और इन्हें गद्दी पर बैठे अभी कुल दो ही तीन बरस हुए हैं। कहा जाता है कि राज्य पाने से पहिले ये अंगरेजों के बड़े भक्त थे, साल के आठ महीने इनके विलायत में ही कटा करते

थे, उनके ही जैसा इनका भी साहबी रहन सहन और खाना पीना हो गया था, मगर सिंहासन पर आने के कुछ दिन बाद ही यह सब कुछ एकदम बदल गया। आजकल तो बिना नित्य की संध्या किए मुंह में अन्न का दाना तक नहीं डालते हैं। कालीजी का बड़ा भारी मन्दिर बनवाया है और नित्य अपने हाथ से देवी की पूजा करते हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि अंगरेजों के ये कट्टर दुश्मन हो गये हैं, मगर इस बात में कहां तक सचाई है हम कुछ कह नहीं सकते।

[२]

सुबह के कोई नौ बजे होंगे। राजा गिरीशविक्रम अपने खास कमरे में बैठे हुए हैं और उनके चारो तरफ राज्य के दीवान और कई ऊंचे अफसर बैठे हैं। आपस में कुछ गुप्त सलाह मशविरा हो रहा है जिसके कारण सब नौकर चाकर बाहर कर दिए गए हैं।

दीवान साहब के हाथ में एक लम्बी 'आफिशियल' सी चीठी है जिसे उन्होंने अभी पढ़ कर राजा साहब को सुनाया है। चीठी के मजमून ने राजा साहब को तरद्दुद में डाल दिया है और ये सिर नीचा कर किसी सोच में पड़ गए हैं। बाकी के लोग भी गम्भीर चिन्ता में पड़े हुए हैं।

कुछ देर बाद एक लम्बी सांस के साथ राजा साहब ने सिर उठाया और मुसाहिबों की तरफ देख कर कहा, "तब ? आप लोगों की क्या राय होती है ?"

कोई कुछ न बोला, मगर जब राजा साहब कुछ देर तक उन लोगों की तरफ देखते रहे तो दीवान ने हाथ जोड़ कर कहा, "कसूर माफ हो तो मैं कुछ अर्ज करूं।"

राजा साहब ने कहा, "आप तो जो कुछ कहेंगे वह मैं अच्छी तरह समझता हूँ पर खैर कहिए, क्या कहते हैं ?"

दीवान०। जल में रह कर मगर से बैर करना ठीक नहीं। जब हुजूर को इसी मुल्क में रहना है तो अंगरेजों से दुश्मनी लेना मुनासिब नहीं,

उनसे मेल रखने में ही हम लोगों की कुशल है।

राजा०। (कुछ तेजी के साथ) तो आपकी राय है कि मैं रेजीडेंट का हुक्म मान कर तख्त से उतर जाऊं?

दीवान०। (दबी जुबान से) जी ई ई ई....मैं...मैं.... समझता हूं कि थोड़े दिन के लिए ऐसा करके जब उनका गुस्सा शान्त हो जाय तो फिर से... ...

राजा०। फिर मे उनकी मिन्नत खुशामद करके गद्दी पर आ बैठूं? दीवान साहब, आप तो मेरे ही राज्य में मुझे भिखमंगा बनाना चाहते हैं! मानों मैंने यह राज्य अपने बाप दादों से नहीं पाया है अंगरेजों का दिया पाया है। (और लोगों की तरफ देख कर) क्यों साहबों, आप लोग भी क्या ऐसा ही करने की सलाह मुझे देते हैं?

लोगों की जुबानों ने कुछ न कहा मगर उनकी आकृति साफ 'हां' कह रही थी। राजा गिरीशविक्रम यह देख उबल कर बोल उठे, "साहबों, हो सकता है कि आप लोग राज्य के भले के लिए ऐसा कहते हों, संभव है कि मेरा प्रेम भी शायद आपसे यह कहला रहा हो, पर इतना तो मैं जरूर कहूंगा कि आप लोग जो कुछ कह रहे हैं यह क्षत्रित्व के खिलाफ बात है! अर्जुन और भीम की संतान होकर मैं बनियों के डर से भाग जाऊं यह कायरता की सीमा है। आप लोगों का खून ठंढा पड़ गया है तभी आप ऐसी सलाह मुझे दे रहे हैं। पुश्त दर पुश्त से मेरे खानदान के कब्जे में रहने वाला यह राज्य मैं इसीलिए छोड़ दूं कि कुछ थोड़े से सुफेद बनिए यहां आकर तांबे की खानें खोदना चाहते हैं? क्यों, यही बात है न!"

नौजवान राजा की आंखें लाल हो गईं और नथुने फड़कने लगे। वह जोश के मारे और कुछ कह न सका मगर उसकी आकृति उसके दिल के भीतर भरे हुए गुबार को साफ जाहिर कर रही थी। उसके जोश को देख किसी की हिम्मत न हुई कि उसकी बात के खिलाफ कुछ कहे,

मगर बूढ़े दीवान ने जो इनका बचपन देख चुका था फिर भी हिम्मत की
और कहा, "हुजूर का कहना सही है मगर हम लोग भी करें तो क्या करें,
समय ही ऐसा आ गया है, जमाना हमें मजबूर कर रहा है। अभी देखिये
हाल ही की तो बात है, दक्खिन के दो बहुत बड़े राजा इससे भी मामूली
बात पर राज्य से निकाल बाहर किए गए। पूरब में जो हुआ मालूम ही
है। मध्य भारत के उस राजा का हाल कल ही मैंने आपको सुनाया है।
तो क्या वे लोग क्षत्रिय नहीं थे? थे, उनके दिलों में भी जोश था, वे भी
रजामन्दी से अपनी अपनी गद्दियों से अलग नहीं हुए, मजबूरी ने उनसे
यह काम कराया। वही मजबूरी अब हम लोगों पर आ पड़ी है। हमें केवल
अपने ही बारे में तो नहीं सोचना चाहिये, उन हजारों आदमियों का भी
तो ख्याल करना चाहिये जिनकी किस्मत परमात्मा ने हमारे हाथों में सौंपी
है। ईश्वर न करे अगर कुछ हो गया, लड़ाई ही छिड़ गई, या कुछ और ही
बात हो गई, तो हमारा राज्य ही तहस नहस नहीं हो जायगा बल्कि हजारों
आदमियों पर भी बन आएगी, इस बात का खयाल तो करना चाहिये।
नीति में कहा है कि बहुतों के फायदे के लिए थोड़ों को कष्ट उठाना पड़ता
है। हम अकेले तनहा तो नहीं हैं, हमारे साथ और भी जिन हजारों की
किस्मत बंधी हुई है उनका भी तो खयाल करना पड़ेगा। हजूर यह
विचारें कि इस समय जैसा रेजीडेन्ट कह रहा है वैसा न करने से क्या होगा?
वह साफ कह रहा है कि (चीठी का एक हिस्सा पढ़ते हुए)—"अगर राजा
साहब आज से तीन दिन के अन्दर अपनी रजामन्दी से राज्य छोड़ कर अलग
नहीं हो जायंगे तो जबर्दस्ती अलग कर दिए जायंगे जिसके लिए काफी फौज
सरहद पर पहुंच चुकी हैं।" महाराज खुद ही सोचें कि क्या अंगरेजी फौजसे
मोरचा लेने लायक सामान महाराज के पास है? हम लोग कै मिनट अपनी
पुरानी कड़ाबीनों और जंग खाई हुई तलवारों को लेकर सब तरह के जंगी
सामानों से लैस अंगरेजी पलटन का मुकाबला कर सकते हैं।"

किसी ने दीवान की बात का कोई जबाब नहीं दिया। कुछ ठहर कर

वे फिर बोले, "इस बात को हुजूर विचार लें कि अभी तो साधारण तौर पर हटना पड़ रहा है पर अगर बाद में जबर्दस्ती हटना पड़ा तो कितनी भारी बेइज्जती या क्या कुछ हो जायगा ?"

अबकी राजा ने कहा, "एक बार लड़ कर दिल का हौसला निकाल लेने के बाद फिर चाहे भागना या मरना ही क्यों न पड़े मगर मेरी समझ में वह कम बेइज्जती की बात होगी।"

दीवान०। बजा है, मगर यह भी तो मैंने अर्ज किया कि हम लोग उनसे लड़ने लायक हैं कहां ? दस मिनट भी तो नहीं टिक सकते ! (फौज के अफसर की तरफ देख कर) क्यों कप्तान साहब, कहिए तो सही आपकी पांच सौ जवानों की पलटन अंगरेजों की फौज के सामने कै घड़ी ठहर सकती है ?"

कप्तान ने कुछ गम्भीर होकर कहा, "अवश्य ही मेरी फौज जीत तो कभी नहीं सकती पर मैं इतना जरूर कहूँगा कि हमारी वे पुरानी कड़ाबीनें और जंग खाई हुई तलवारें जिनकी तरफ दीवान साहब ने इशारा किया है जब एक एक के कई टुकड़े हो जायंगी और जब प्रत्येक सिपाही की बोटी बोटी उड़ जायगी तभी हमारे महाराज पर किसी तरह की आंच आने देंगी। मगर अवश्य ही इसका यह मतलब नहीं समझना चाहिए कि मैं हुजूर को अंगरेजों से लड़ाई ठानने की सलाह दे रहा हूं। मैं तो सिर्फ अपनी और अपनी फौज की नमकहलाली का इजहार कर रहा हूँ।"

राजा साहब ने खुशी की निगाह कप्तान साहब पर डालते हुए कहा, "शुक्र है कि कोई आदमी मेरे साथ यह कहने को तो राजी हुआ कि वह अपनी जान देने को तैयार है ! हां तो कप्तान साहब, आप जरा यह भी तो बताइए कि अगर मैं इस चीठी के जवाब में इनकार कर दूं तो आप मुझे बचाने के लिए कहां तक और क्या क्या कर सकते हैं ?"

कप्तान०। मैंने अर्ज किया कि मेरी जान और मेरी पांच सौ फौज की जान हाजिर है, जब तक हर एक के टुकड़े टुकड़े न हो जायंगे हुजूर

का बाल बांका नहीं हो पावेगा, बाद के लिये मैं कुछ नहीं कह सकता।"

राजा०। और आप यह कुछ कह सकते हैं कि अगर मैं इस किले के सब फाटक बन्द करके अन्दर बैठ जाऊं तो कब तक अपने को दुश्मनों से बचा सकता हूँ?

कप्तान०। हुजूर, अंगरेजी फौज और तोपें तो हफ्तों हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं क्योंकि इन पहाड़ी पगडंडियों पर बड़ी तोपें लाना नामुमकिन है और किला सहज में फतह नहीं हो सकता, मगर हवाई जहाजों की तरफ से मुझे अन्देशा है। वे जो कुछ फसाद न वर्षा करें थोड़ा है, और अंगरेजी सरकार के पास इस समय पचासों ही हवाई जहाज हैं।

राजा०। बेशक, यही खयाल मेरा भी है। खैर (सभों की तरफ देख कर) आप लोगों की राय तो मैंने जान ली, अब आज दिन भर मैं सब बातों पर गौर करूंगा! शाम के छः बजे आप लोग फिर हाजिर हों। तब मैं इस मामले का फैसला करूंगा, मगर इस बीच में आप लोग मेरी एक बात अपने दिल में लेते जायं और उस पर गौर करें। वह यह कि अभी तक हिन्दुस्तान के हर राजा ने हर मौके पर बुजदिली से ही काम लिया। किसी ने कभी कोई हिम्मत नहीं दिखाई। जब जो अंगरेजी फरमान निकला सिर दबा कर उसे मंजूर करते गये, इसी से यह नौबत आ गई है कि सरकार शेर होती जा रही है। अगर दो चार राजा भी हिम्मत कर जाते तो यह हालत कभी नहीं होती जो आज यहां के रजवाडों की हो रही है। मैं तो खैर बहुत ही मामूली ताकत रखता हूँ, जिन दो चार राजाओं का जिक्र दीवान साहब ने किया उनमें से कुछ इतनी ताकत रखते थे कि दस बीस दिन सरकार से मोरचा ले सकें। वे अगर अपनी जान की परवाह न कर लड़ाई के मैदान में डट जाते तो झख मार कर सरकार को अगर अभी नहीं तो कम से कम आगे के लिए अपना रुख बदलना ही पड़ता। भले ही अपने 'प्रेस्टीज' के खयाल से पहिले आदमी को, जो यह काम करता, सरकार पीस देती

मगर बाद वाले से फिर कड़ाई का बर्ताव करने के लिये पहिले तीन दफे सोच कर तब कोई काम करती। असल में वे लोग दब्बू और डरपोक थे, जान से खौफ खाते थे, ऐश और आरामतलबी में इस कदर डूबे हुए थे कि अपनी और अपने पुरखों की इज्जत की याद भूल चुके थे। जरा सी भी तकलीफ और मुसीबत सहना उनके लिए दुश्वार हो गया था। इसी का यह नतीजा है कि आज मैं अपने राज्य की एक मामूली खान अपने देश की एक कम्पनी को देना चाहता हूँ तो नहीं दे सकता और विदेशियों को देने पर मजबूर किया जा रहा हूँ। आप लोग यह भी समझ लें कि चाहे मैं कुछ ही क्यों न करूं परन्तु यह कदापि न होगा कि फांसी चढ़ा दिया जाऊं या कत्ल कर दिया जाऊं। ऐसा कभी न होगा। भले ही देश-निकाला हो जाय, या मामूली कैदी की तरह जेल में सड़ना या चक्की ही पीसना पड़े, मगर मेरी जान पर कोई आंच न आयेगी जिसका यद्यपि मुझे कोई खौफ नहीं है पर जिसके लिये शायद आप लोगों को बहुत फिक्र सता रही है। अच्छा अब आप लोग तशरीफ ले जाइये। शाम को फिर आइयेगा जैसा मैंने कहा। और कप्तान साहब, आप जरा मेरे साथ घूमने चलिए, मुझे आपसे कुछ बात करनी है।

सब लोगों के चले जाने पर राजा साहब अपने फौजी अफसर को लिए हुए महल के बाहर निकले। फाटक पर घोड़ा लिए साईस खड़ा था क्योंकि आज अभी तक वे हवाखोरी के लिए जा न सके थे। महाराज घोड़े पर सवार हुए, उनके हुक्म से कप्तान भी एक दूसरे घोड़े पर सवार हुआ, साईस हटा दिया गया और सिर्फ ये ही दोनों कुछ गुप्त बातें करते हुए आगे बढ़े।

महल की चहारदीवारी के फाटक के बाहर होकर राजा जाहब ने कहा, "मैं एक दफा अपने किले को चारो तरफ से देख कर यह निश्चय करना चाहता हूं कि अगर मैंने लड़ाई करने की ठानी तो यह मेरी कहां तक हिफाजत कर सकेगा।"

काठ के पुल द्वारा राजा साहब और कप्तान ने किले की खाई पार की और तब उसी खाई के साथ साथ चक्कर खाते हुए जाने लगे।

[६]

घूमते और तरह तरह की बातें करते हुए राजा साहब और कप्तान उस किले के तीन तरफ घूम आये मगर जब चौथी तरफ पहुंचे तो उन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि एक नौजवान घुड़सवार वहां खड़ा हुआ था जिसने राजा साहब को देखते ही सलाम किया और एक चीठी उनकी तरफ बढ़ाई।

ताज्जुब करते हुए राजा साहब ने वह चीठी ले ली और तब एक सरसरी निगाह उस सवार पर डालने के बाद जिसकी पौशाक उसे अंगरेजी फौज का कोई अफसर बता रही थी, उसे खोल कर पढ़ा। चीठी लाल रंग के कागज पर थी और उसमें लाल ही स्याही में यह लिखा हुआ था : –

"राजा साहब—

"हम लोगों को यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि आप अपने राज्य और अपने हकों के लिए लड़ने को तैयार हैं। हम लोग मुल्क में यही प्रवित्ति बढ़ती हुई देखना चाहते हैं और इसीलिए आपको सब तरह की मदद देने को तैयार हैं। क्या मदद हम दे सकते हैं और किन शर्तों पर देंगे यह आपको उस आदमी से मालूम होगा जो यह चीठी आपको देगा।"

इसके नीचे 'रक्त-मंडल' का वही निशान—लाल दाग के भीतर चार उंगलियें—बना हुआ था मगर राजा साहब रक्त-मंडल का नाम और उसके कृत्यों की कुछ जानकारी रखते हुए भी इस निशान से परिचित न थे अस्तु कुछ समझ न सके कि यह चीठी भेजने वाला कौन है। उन्होंने ताज्जुब करते हुए वह चीठी कप्तान की तरफ बढ़ा दी और खुद उस सवार की तरफ देखा जो उनका इशारा पा कर पास आ गया।

राजा साहब ने उससे पूछा, " मैं कुछ समझ नहीं सका कि यह चीठी किसने भेजी है ।"

सवार० । इस चीठी को भेजने वाला 'रक्त-मंडल' है जिसका नाम शायद आपने सुना होगा ।

राजा० । (चौंक कर) रक्त-मंडल ! बेशक यह नाम मेरा सुना हुआ है और बड़ी दिलचस्पी के साथ सुना हुआ है, क्योंकि इसने थोड़े ही दिनों में जो कुछ किया मुझसे छिपा हुआ नहीं है । अच्छा तो क्या आप रक्त-मंडल के भेजे हुए आए हैं ।

सवार० । जी हां ।

राजा० । आप लोगों को कैसे मालूम हुआ कि मेरा भारत सरकार से झगड़ा पड़ गया है ।

सवार ने यह सुन मुस्कुरा दिया और कुछ बोला नहीं जिसे देख राजा साहब भी मुस्कुरा कर बोले, "खैर मेरा ऐसा पूछना ही गलती है । जो मंडल अंग्रेजों के जासूसों से मोरचा ले सकता है उसके लिए मेरे जैसे एक मामूली मातहत राज्य के भेदों की वाकफियत रखना कोई ताज्जुब की बात नहीं । अच्छा तो फिर मैं असल बात पर ही आऊंगा । अगर मान लिया जाय कि मैं अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा हो जाऊं तो आपका मंडल मेरी क्या मदद कर सकता है ?

सवार० । सब तरह से मदद कर सकता है, रुपये पैसे से, आदमी से, फौज से, हथियार से, हवाई जहाजों से, जंगी तोपों से !

राजा० । (ताज्जुब से) हवाई जहाजों से और जंगी तोपों से !

सवार० । जी हां ।

राजा० । मगर क्या आपकी मदद अंग्रेजी फौजों का मुकाबला करने लायक होगी ?

सवार० । केवल मुकाबला करने लायक ही नहीं बल्कि उसे शिकस्त देने लायक भी होगी ।

राजा० । (ताज्जुब और अविश्वास के साथ कप्तान की तरफ देख

कर) मुझे विश्वास नहीं होता । क्यों कप्तान साहब, आप क्या सोचते हैं ?

कप्तान० । (सवार से) मैं कैसे मान लूं कि अंगरेजी फौज को हरा देने लायक मदद आप लोग हमें दे सकते हैं ?

सवार० । (मुस्कुरा कर) रक्त-मंडल की ताकत का पता न होने से ही आप ऐसा कहते हैं, मगर खैर इस बात को आप पीछे के लिये छोड़िये, पहले यह बताइये कि जितना मैंने कहा अगर उतनी मदद आपको मिल जाय तो आप कहां तक करने को तैयार हैं ?

राजा०।(जोश के साथ) ओह! अगर मुझे सिर्फ कुछ हवाई जहाज और दस बीस बड़ी बड़ी तोपें मिल जायं तो मैं जान रहते इन कम्बख्त अंगरेजों को अपनी सरहद के अन्दर पैर न रखने दूं,फिर मेरे मरने बाद चाहे जो हो!

सवार० । (खुश होकर) अगर आपमें इतनी हिम्मत है तो मैं भी कह सकता हूँ कि चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय मगर एक भी अंगरेजी सिपाही आपके राज्य के सीवाने के भीतर घुस न पावेगा ।

राजा० । मगर मुझे विश्वास जो नहीं होता कि आपका कहना ठीक हो सकता है ।

सवार०। आप घबड़ायें नहीं विश्वास तो मैं न करा दूंगा,पहिले हमारी आपकी शर्तें तय हो जायं । अच्छा यह कहिये कि उतनो मदद आपको मिले जितना कि मैंने कहा तो आप हमारी क्या सहायता करने को तैयार हैं ?

राजा० । आप ही बताइये कि अपनी मदद के बदले में आप मुझसे क्या चाहते हैं !

सवार० । हम लोग यह चाहते हैं कि आपके राज्य को अपना हेड-क्वार्टर बनावें और यहीं से अपनी सब कार्रवाई करें, दूसरे शब्दों में आपका यह राज्य कुछ दिनों के लिये 'रक्त-मंडल' का हो जाय ।

राजा० । (चिन्ता के साथ) तो इसके क्या यह माने नहीं होंगे कि आपकी मदद के बदले में अंगरेजों को न दे आपके रक्त-मंडल को मैं अपना यह राज्य दे दूं ?

सवार० । (हंस कर) नहीं नहीं, यह मतलब मेरा नहीं है ! यह राज्य आपका और आपके वंशजों का ही रहेगा, मेरा मतलब सिर्फ थोड़े से आदमी और थोड़ी सी जगह की मदद से है । आपको, आप ही को क्यों इस राज्य की थोड़ी सी प्रजा को, कुछ दिनों तक हमारे कहने में चलना पड़ेगा, जिस तरह जो कुछ हम लोग कहें वही आप लोगों को करना होगा ।

राजा० । यह शर्त तो बहुत कड़ी है, इसके अनुसार तो एक तरह पर मैं आप लोगों के आधीन हो जाऊंगा ।

सवार० । मगर वह आधीनता उस तरह की न होगी जैसी इस समय अंगरेज सरकार की आप कर रहे हैं । वह आधीनता परस्पर के प्रेम, परस्पर के विश्वास, परस्पर की सहायता, और परस्पर के आत्म-सम्मान की रक्षा पर निर्भर रहेगी और आप हमारे उतना ही वश में रहेंगे जितना हमलोग आपके ।

राजा० । और यह सब कब तक के लिये ?

सवार० । सिर्फ छः महीने के लिये ! हम लोग छः महीने के अन्दर यहां की, इस देश की, अपने इस भारत की, काया पलट कर देंगे ।

राजा० । मुझे आपकी बातें समझ में नहीं आतीं, आखिर आप करना क्या चाहते हैं ?

कप्तान० । बेहतर होगा कि हम लोग कहीं बैठ कर बातें करें क्योंकि पूरा मामला समझने में जरूर कुछ समय लगेगा ।

राजा० । आप मेरे साथ महल में चलिये, वहीं बातें होंगी ।

सवार० । आपके महल की बनिस्बत इस झाड़ी को मैं अधिक सुरक्षित समझूंगा अगर आपको कोई आपत्ति न हो !

राजा० । (हंस कर) मुझे कोई उज्र नहीं है ।

तीनों आदमी घोड़ों पर से उतर पड़े और उस झाड़ी के पास जाकर जमीन पर बैठ गये । घोड़े उसी जगह पेड़ों के साथ लगा में अटका कर छोड़ दिये गये और तीनों में बातें होने लगीं ।

घंटे भर से भी ऊपर समय के बाद कहीं जाकर उस सवार और राजा साहब की बातें खत्म हुईं। हम नहीं कह सकते कि इस समय की बातचीत में क्या क्या तय हुआ या किस किस तरह की प्रतिज्ञाएं और क्या क्या वादे आपस में किये गये, मगर इतना जरूर कह सकते हैं कि बातों का सिलसिला टूटने पर सवार ने अपनी जेब से कागज कलम निकाली और कुछ लिख तथा अपना हस्ताक्षर कर राजा साहब को दिया तथा उसी तरह राजा साहब ने भी कुछ लिख और दस्तखत कर उसे दिया, इसके बाद सब लोग उठ खड़े हुए।

अपने अपने घोड़ों के पास पहुंच कर तीनों आदमी सवार हुए। नौजवान ने अपने घोड़े का मुंह दूसरी तरफ घुमाते हुए कहा, "तो कल से हम लोग इस इकरारनामे के मुताबिक काम शुरू कर देते हैं।"

राजा साहब ने कहा, "खुशी से, और मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह आपकी अभिलाषा पूरी करे, मगर सबसे पहिले वह काम हो जाना चाहिये जिसके आज ही पूरा कर देने का आपने वादा किया है।"

सवार०। हां हां, वही अंगरेजी पलटन वाला काम तो! मैं उसे आज ही पूरा करने का इन्तजाम किए देता हूं।

महाराज०। हां, क्योंकि वैसा न होने से मैं अपने दीवान मुसाहिबों और रिआया को अपनी तरफ मिला न सकूंगा।

सवार०। मैं इस बात को समझता हूं।

कह कर उस सवार ने अपनी पेटी से लगी हुई सीटी निकाली और होठों से लगा उसे कुछ खास इशारे के साथ कई दफे बजाया। आवाज की गूंज अभी बन्द नहीं हुई थी कि उसी झाड़ी के आस पास से जिसके पास बैठ इन सभों ने बातें की थीं, कई आदमी निकल पड़े। सवार ने उनकी तरफ देख अपना हाथ उठाया और तब उंगलियों से जरा देर तक कई तरह के इशारे करता रहा जिसके अन्त में वे लोग तेजी के साथ एक तरफ को रवाना हो गये। सवार राजा साहब की तरफ घूमा और बोला,

"वह काम आप हो गया हुआ समझिए।"

राजा०। (ताज्जुब से) क्या ये पांच सात आदमी उस बड़ी फौज का मुकाबला करेंगे जो मुझे दबाने के लिये आ रही है! ये भला क्या कर सकेंगे?

सवार ने हंस कर कहा, "शाम होने के पहिले ही आपको इनकी करतूत सुनाई पड़ जायगी! अच्छा अब मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूं क्योंकि जाना दूर और काम बहुत करना है।"

राजा साहब से बिदा हो वह सवार पूरब और उत्तर के कोने की तरफ रवाना हुआ और राजा तथा कप्तान किले की तरफ बढ़े। थोड़ा आगे बढ़ते ही उन्हें कई आदमी मिले जो राजा साहब की इतनी लम्बी गैरहाजिरी से घबड़ा कर उनका पता लगाने की नीयत से उनको खोजते हुए चारो तरफ घूम रहे थे।

[४]

रियासत धरमपूर छोटी और कम महत्व की होने के कारण वहां के लिये और रियासतों की तरह खास तौर पर कोई रेजीडेन्ट मुकर्रर नहीं है। उस प्रान्त की पांच सात छोटी रियासतों का एक गुट बना कर भारत सरकार ने एक ही रेजीडेन्ट नियुक्त कर दिया है जो पारी पारी से दो दो एक एक महीना सब रियासतों में घूमता और आवश्यक काम करता रहता है, अवश्य ही उसके रहने के लिये बंगला और दफ्तर इत्यादि इन सब रियासतों में मौजूद हैं।

धरमपूर रियासत के लिये बनी हुई छोटी सी रेजीडेन्सी शहर धरमपूर से कोसों दूर और धरमपूर राज्य तथा अंगरेजी भारत की सीमा पर पड़ने वाली एक छोटी खुशनुमा पहाड़ी पर बनी हुई है। इस पहाड़ी पर से चारो तरफ कोसों तक का सुहावना दृश्य दिखाई देता है और इसके चारो तरफ जंगली और पहाड़ी गुलबूटों की इतनी बहुतायत है कि यह जगह बड़ी ही रमणीक मालूम पड़ती है। इसके ऊपर बना हुआ रेजीडेन्ट

का बंगला बहुत ही सुन्दर है जो इस तरफ आने वालों का मन अपनी खूबसूरती से बरबस खींच लेता है।

दोपहर का समय है। बंगले के दक्षिण तरफ वाले बरामदे में दो आदमी बैठे सिगार पीते हुए कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो रेजीडेन्ट मिस्टर पिम हैं और दूसरे उनके एक अमेरिकी दोस्त डाक्टर काहेन।

मिस्टर पिम एक लांबे कद के हृष्ट पुष्ट सुन्दर हंसमुख आदमी हैं। इनका स्वभाव बहुत अच्छा है और अब तक इनका जिन जिन रियासतों से सम्पर्क रहा है प्रायः वे सभी इनसे खुश रही हैं। ये इस प्रान्त के बहुत बड़े शिकारी भी माने जाते हैं और कहा जाता है कि इनकी गोली से अब तक पचासों शेर चीते और जंगली हाथी मर चुके हैं।

मिस्टर पिम के दोस्त डाक्टर काहेन अमेरिकन हैं जो बहुत दिनों से भारत की, विशेष कर हिमालय की पहाड़ी स्वाधीन रियासतों की, सैर करते फिर रहे हैं। इस जगह आने से इनका खास क्या उद्देश्य है यह तो अभी हम यहां नहीं बतावेंगे पर हां इतने से पाठक अगर कुछ अन्दाजा लगा सकें तो लगा लें कि ये महाशय नव-संगठित 'अमेरिको-ब्रिटिश कापर ट्रस्ट' के एक प्रभावशाली कार्यकर्ता हैं।

दोनों आदमी सिगार पीते हुए आपस में बातें कर रहे हैं और साधारण रीति से देखने से इनके विषय में कोई नई बात नहीं मालूम पड़ेगी मगर गौर से ध्यान-पूर्वक देखने वाला कह देगा कि ये दोनों ही आदमी इस समय किसी उत्कंठा में पड़े हुए हैं क्योंकि इनका बार बार अपने सामने वाले पहाड़ी मैदान के बीच में से सांप की तरह चक्कर खाकर आती हुई उस पतली सड़क की तरफ देखना जो भारत की ओर से आती और इस बंगले के बगल से होती हुई धरमपूर की ओर निकल जाती है, कहे देता है कि उधर से इन्हें किसी प्रकार की आशा है।

यकायक सामने कुछ देख कर मिस्टर पिम बोल उठे, "वह लो आ पहुंची!" डाकर काहेन ने भी गौर से सामने की तरफ देखा और कहा,

"हां ठीक तो है, वह चली आ रही है !"

बगल के टेबुल पर एक दूरबीन पड़ी हुई थी जिसे उठा कर पिम ने आंखों से लगाया। सामने की तरफ यहां से लगभग चार मील दक्खिन, एक पहाड़ी की आड़ से निकल कर सामने आती हुई फौज साफ दिखाई पड़ी जिसके आगे आगे लगभग दो सौ घुड़सवार, पीछे कोई सात आठ सौ पैदल फौज और सब से पीछे एक पहाड़ी तोपखाना था। फौज पूरी तेजी से आ रही थी और जान पड़ता था कि अगर इसी तरह बढ़ती आई तो दो डेढ़ घंटे के अन्दर ही यहां आ पहुंचेगी।

मिस्टर पिम ने यह देख दूरबीन डाक्टर काहेन के हाथ में दे दी और कुछ कहना ही चाहते थे कि बेयरा ने आकर एक कार्ड इनके सामने पेश किया। कार्ड पढ़ और उस पर का नाम देख वे कुछ चौंक पड़े और डाक्टर काहेन से यह कर कि—'कोई मुझसे मिलने आया है, दस मिनट की गैरहाजिरी माफ कीजिये !' वे बंगले के भीतर घुस कर उस कमरे में पहुंचे जो मुलाकात के काम में आता था।

रियासत धरमपुर का एक अहलकार इस कमरे में बैठा हुआ था जिसकी तरफ कुछ भी गौर के साथ देखने वाला कह देगा कि यह आज सुबह राजमहल में होने वाली बैठक में भी शामिल था। पिम साहब को देखते ही इसने उठ कर बड़े अदब से सलाम किया।

पिम०। वेल मिस्टर गोवर्धनदास, क्या खबर ? बैठिये।

गोवर्धनदास से हाथ मिला कर पिम एक कुर्सी पर बैठ गये और उनका इशारा पाकर सामने की कुर्सी पर बैठते हुए गोवर्धनदास ने कहा, "हुजूर अच्छी ही खबर है, आज सुबह राजा साहब ने खास महल में एक प्राइवेट मीटिंग की थी जिसमें मैं भी था।"

पिम०। अच्छा ! उसमें क्या क्या हुआ ?

गोवर्धन०। बहुत बहुत बातें हुईं, राजा साहब तो एक दम ही फिरंट हो रहे थे और बहकी बहकी बातें करते थे मगर हम लोग आखिर

उन्हें बहुत कुछ राह पर ले ही आये। क्या करें, अगर आखीर में कम्बख्त कप्तान रौशनसिंह ने मामला न बिगाड़ दिया होता तो उसी वक्त खातिरखाह फैसला हो जाता क्योंकि दीवान को तो मैं बिल्कुल मुट्ठी में कर चुका हूं, फिर भी आशा है कि आज शाम की बैठक में सब कुछ ठीक हो जायगा।

इतना कह गोवर्धनदास ने आज सुबह किले में जो कुछ हुआ था वह बहुत कुछ निमक मिर्च के साथ मिस्टर पिम को सुना दिया और अन्त में यह भी कहा कि—'राजा साहब कप्तान साहब को ले कर अपने किले की मजबूती देखने निकले और मैं भी जरूरी कामों से निपट इधर को चल पड़ा कि आपको सब खबर सुना दूं।'

पिम०। बहुत अच्छा किया, मगर मैं समझता हूं कि आज शाम की बैठक में भी आपका रहना बहुत जरूरी है ताकि मुझे यह मालूम हो सके कि आखिरी फैसला क्या हुआ।

गोवर्धन०। मैं यहां से सीधा वहीं जाऊंगा और जो कुछ तय होगा कल सुबह या तो स्वयं मिल कर और या किसी आदमी द्वारा आप की खिदमत में अर्ज करूंगा। मगर हां यह तो बताइये कि आपकी फौज के आने में अब क्या कसर है?

दीवान०। बस आ ही गई समझिये, दो घन्टे के अन्दर यहां पहुंच जायगी, दिखाई देने लगी है।

इतना कह दीवान साहब ने एक खिड़की की तरफ इशारा किया। गोवर्धनदास खुशी खुशी उसकी तरफ बढ़े और पीछे पीछे पिम साहब भी वहां पहुंचे। इस खिड़की से नीचे के मैदान का अच्छा दृश्य दिखाई पड़ता था जिस पर एक निगाह डालते ही गोवर्धनदास ने उस फौज को देख लिया जो भारत सरकार की भेजी हुई चली आ रही थी। उन्होंने खुशी से हाथ उठा कर कहा, "वह है, वह है!"

पिम साहब ने विचित्र मुद्रा से उनकी तरफ देखा और तब कहा,

"अब आशा है आपके राजा साहब की अक्ल ठिकाने आ जायगी।"

गोवर्धन०। बेशक, इस फौज को देख के उनकी बौखलाहट मिट जायगी और नसों की गर्मी ठण्डी पड़ जायगी। अच्छा अब मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूं क्योंकि अभी एक लम्बा सफर मेरे आगे है।

पिम०। हां हां आप जाइये, मगर जो कुछ आज शाम को तय हो उसकी खबर मुझे जल्द से जल्द दीजियेगा।

गोवर्धनदास ने "जरूर जरूर!" कह कर पिम से हाथ मिलाया और दर्वाजे की तरफ घूमे मगर दो ही एक कदम जाकर लौट और पुनः उनकी तरफ घूम कर बोले, "उस मामले में पिम साहब कुछ हुआ जिसके बारे में मैंने आपसे अर्ज किया था?"

पिम०। कौन, किस मामले में?

गोवर्धन०। (अफसोस जाहिर करते हुए) आप भूल गये? वही यहां की दीवानी के बारे में!!

पिम०। हां ठीक है, याद आया, आपने कहा था कि अगर राजा गिरीशविक्रम तख्त से उतारे जायं तो उसके बाद इस राज्य की दीवानी आपको दी जाय।

गोवर्धन०। (हाथ जोड़ कर) जी हां बस इतनी ही दरख्वास्त मेरी थी और इसी उम्मीद पर सिर तोड़ मेहनत करके मैंने राज्य के सब अहलकारों को अपने साथ मिलाया और इस बात की कुछ भी परवाह नहीं की है कि अगर राजा साहब को मेरी कार्रवाइयों की खबर लग गई तो वे बेधड़क मेरा सिर उड़ा देने की आज्ञा दे देंगे!

पिम०। मुझे बहुत अफसोस है कि मैं इस बारे में बिल्कुल भूल गया। खैर मैं इसको नोट करे लेता हूं और मुनासिब मौका आते ही इसके बारे में अपनी सरकार को लिखूंगा।

गोवधर्न०। केवल लिखिए ही नहीं, जोर दीजिए। आपकी बात न मानी जाय ऐसा हो नहीं सकता।

पिम० । नहीं नहीं मैं अपने भरसक पूरा उद्योग करूंगा, आप खातिर जमा रखिए ।

पिम साहब को लम्बी सलामें करते हुए गोवर्धनदास कमरे के बाहर निकले और उसी समय एक घबड़ाहट भरी चीख की आवाज सुन पिम साहब लपकते हुए उस बरामदे में डाक्टर काहेन की तरफ दौड़े जिधर से वह आवाज आई थी । उन्होंने देखा कि डाक्टर काहेन बड़े उद्वेग के साथ दूरवीन लिये और बरामदे की रेलिंग से आगे को लटके हुए कुछ देख रहे हैं । वे उनके पास पहुंचे और बोले, "क्या बात है डाक्टर ?"

डाक्टर काहेन घबराये हुए बोले, "गजब हुआ पिम, तुम्हारी फौज तो नष्ट हो रही है !"

"हैं, यह आप क्या बक रहे हैं ?" कह कर पिम साहब ने दूरबीन काहेन के हाथ से ले ली और सामने की तरफ देखने लगे । मगर जो कुछ उन्होंने देखा उससे उनके होश हवास भी गुम हो गये । उन्होंने देखा कि अभी अभी जो फौज इतनी शान शौकत और खूबसूरती के साथ परा बांधे बढ़ी आ रही थी, वह इस समय बड़ी बेतरतीबी के साथ पीछे की तरफ भागी जा रही है, साथ ही यह भी उनकी तेज नजरों ने देख लिया कि उस घुड़सवार फौज का कहीं नाम निशान भी नहीं है जो सब से आगे आगे आ रही थी, केवल थोड़े से सवार इधर उधर छिटके हुए दिखाई पड़ रहे हैं जो सब के सब भी पूरी तेजी से पीछे ही को भागे जा रहे हैं । उन्होंने अचम्भे में आकर काहेन से पूछा, "आखिर यह हुआ क्या डाक्टर ? कौन पिशाच इस फौज को दिखाई पड़ा है जो यह इस तरह कायरता के साथ भागी जा रही है !"

डाक्टर ने कहा, "सब फसाद की जड़ वे चार आदमी हैं जो वह देखिये उस पहाड़ी की चोटी पर दिखाई पड़ रहे हैं । जिस समय यह फौज उस पहाड़ी के नीचे पहुंची उन चारो आदमियों ने पहाड़ी पर से उससे कुछ कहा और जब फौज उनके कहे को न मान आगे बढ़ी तो कोई चीज

फौज पर फेंकी जो जरूर किसी तरह का खौफनाक बम था क्योंकि काफी फौज उससे नष्ट हो गई और बाकी बची हुई की वह हालत है जो आप देख रहे हैं, और यह सब कुछ पलक झपकते में हो गया है, अभी एक ही दो मिनट की तो बात है।"

घबराहट में भरे मिस्टर पिम दूरबीन की मदद से सामने का वाकेया देख रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ ही दूर जाते जाते अफसरों ने फौज को पुनः सम्हाला और लौटा लाकर उस छोटी पहाड़ी को घेर लिया जिस पर सब आफत की जड़ वे चार आदमी खड़े थे। यह भी देखा कि तोपखाना, जो यद्यपि अछूता नहीं बचा था फिर भी काम करने के काबिल था, एक जगह रुक कर उस पहाड़ी पर निशाना लगाने की तैयारी कर रहा है। उनके मुंह से कुछ आशा के साथ निकला, "खैर, कम से कम वे चारो कंबख्त तो अब नहीं बचते !"

इस बीच बंगले के अन्दर जा डाक्टर काहेन एक दूसरी दूरबीन ले आये थे और पिम के बगल में खड़े उसी तरफ देख रहे थे। दोनों ने देखा कि पैदल फौज और बचे हुए घुड़सवारों ने उस छोटी पहाड़ी को चारो तरफ से घेर लिया और उन चारो आदमियों पर गोलियां चलाने लगे। उसी समय 'गुडुम' की आवाज करती हुई एक तोप छूटी जिसका गोला पहाड़ी की चोटी का एक कोना तोड़ता हुआ उन चारों के बहुत पास से निकल गया। अब इन दोनों को उम्मीद हो गई कि वे चारो किसी तरह नहीं बच सकते। दोनों के चेहरों पर कुछ हरियाली दिखाई पड़ी।

मगर उनकी खुशी बहुत ही थोड़ी देर के लिये थी। गोलियों की शायद एक बाढ़ भी पूरी दगी न होगी कि उन चारों ने पुनः अपने वही भयानक बम के गोले निकाले और नीचे वाली फौज पर फेंक दिये। एक डरावनी हरी बिजली सब तरफ चमक गई और कुछ धूआं सा फैल गया जो साफ हुआ तो दिखाई पड़ा कि उस फौज का तीन चौथाई हिस्सा इस तरह गायब है कि कहीं उसका नाम निशान भी बाकी नहीं है।

केवल यही नहीं, अचानक उस तोपखाने से ठीक ऊपर के एक टीले पर दो नये आदमी दिखाई पड़े जिनके हाथ में कोई चीज, शायद वैसे ही बम थे। तोपों की दूसरी और ज्यादा भयानक बाढ़ छूटा ही चाहती थी कि उनके हाथ के बम उन तोपों पर जाकर गिरे। हरी बिजली की चमक के साथ ही एक भयानक दन्नाटा हुआ और दूसरी सायत में सब तोपें मय उनके अफसरों चलाने वालों और साज सामान के गायब थीं !

पिम साहब के भर्राये हुए गले से एक बार निकला, "रक्त-मंडल।" और तब वे बदहवास होकर कुर्सी पर गिर गये। डाक्टर काहेन की भी अजीब हालत थी। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि यह सब क्या हो रहा है। वे अपने माथे का पसीना पोंछते हुए बरामदे से उठंगे कभी सामने के मैदान और कभी मिस्टर पिम की हालत को देखने लगे।

× × × ×

खुशी खुशी गोवर्धनदास बंगले के बाहर निकले मगर अफसोस, उनकी खुशी थोड़ी ही देर की थी।

उनके साथ ही साथ एक और आदमी भी बंगले के दर्वाजे की आड़ से बाहर निकला और दबे पांव उनके पीछे रवाना हुआ। बंगले के बाहर वाले बागीचे की चारदीवारी का फाटक पार कर गोवर्धनदास अभी बीस पचीस कदम से ज्यादे दूर नहीं गये होंगे कि इस आदमी ने कड़क कर आवाज दी, "खड़ा रह !"

चौंक कर गोवर्धनदास ने अपना घोड़ा रोका और पीछे घूम कर देखा। इस आदमी ने डपट कर कहा, "घोड़े के नीचे उतरो !" इसकी आवाज में कुछ ऐसी हुकूमत मिली हुई थी कि गोवर्धनदास बिना मीन मेख किये चुपके से घोड़े के नीचे उतर पड़े और पूछने लगे, "कहिये क्या है ?"

कड़ी आवाज में उस आदमी ने पूछा, "तुम पिम के पास क्यों गये थे ?"

गोवर्धनदास यह सवाल सुन कुछ बौखला सा गया। उसके मुंह से कुछ अस्पष्ट सी आवाज निकली जिससे उसके दिल के अन्दर की घबराहट प्रकट होती थी।

डपट कर उस आदमी ने कहा, "कमीने, बेइमान, मुखबिरी करने पिम के पास गया था! अपना उल्लू सीधा करने के लिये तू वहां गया था! अपने मालिक का नाश करते तुझे शर्म न आई!"

डरते डरते गोवर्धनदास ने कहा, "जी, ई, ई,.........मैं तो.......सिर्फ मुलाक़ात करने गया था....!!" पर उसकी बात पूरी होने के पहिले कड़क कर आदमी ने कहा, "चुप रह नामाकूल! मुलाकात करने गया था! और धरमपुर की दीवानी कौन मांग रहा था? तेरे ऐसे हरामखोर ही तो देशों का नाश करते हैं। अच्छा भगवान को याद करले और मरने के लिये तैयार हो जा!!"

उस आदमी ने अपने कपड़े के अन्दर से एक छोटी पैनी तलवार निकाली और उसे ऊंचा किया।

डरे हुए गोवर्धनदास के मुंह से मुश्किल से निकला, "रहम करो, रहम करो!" मगर उस आदमी ने गुस्से भरे गले से कहा, "चुप रह! तेरे ऐसों पर रहम करना सांप पर रहम करने से भी ज्यादा बुरा है। होशियार हो जा और मुकाबला करना हो तो कर!"

मगर गोवर्धन ऐसे विश्वासघातियों में मुकाबला करने की हिम्मत कहां! उसके भर्राए हुए गले से केवल एक चीख की आवाज निकली। दूसरे सायत में उस अजनबी की तलवार बिजली की तरह चमक कर गिरी और गोवर्धन का सिर भुट्टे की तरह कट कर दूर जा गिरा।

आतंक

[१]

भारत की सब से बड़ी रियासत मुजफ्फराबाद की राजधानी मुजफ्फरगढ़ में आज बड़ी रमन चमन और रौनक है। बात यह है कि कल यहां बड़े लाट साहब आने वाले हैं जो यहां एक दर्बार करेंगे और नवाब के अतिथि बन कर लगातार एक हफ्ते तक रियासत के मशहूर शिकारगाह महावा के जंगलों में शिकार खेलेंगे। उन्हीं की अवाई की खुशी में शहर दुलहिन की तरह सजाया जा रहा है और चारो तरफ दौड़ धूप मची हुई है।

मुजफ्फराबाद के नौजवान नवाब हैदरजंग बहादुर पर ब्रिटिश सरकार बड़ी खुश है क्योंकि इन्होंने कभी किसी बात पर उसका कोई हुक्म नहीं टाला है। इनके नाम के पीछे अक्षरों की लम्बी दुम इस छोटी उम्र में ही लग गई है और विशेष कर थोड़े ही दिन पहले भारत सरकार की एक प्यारी इच्छा पूरी कर देने के उपलक्ष्य में इन्हें जी० सी० बी० की महामान्य उपाधि मिली है जिसे प्रदान करने के लिए ही खास तौर पर बड़े लाट साहब यहां आ रहे हैं और परसों के आम दरबार में इन्हें खिलअत देंगे।

रियासत के हजारों कर्मचारी तो दौड़ धूप में लगे ही हैं खास नवाब साहब भी काफी परेशानी में हैं और खुद सब जगह जा जा कर इन्तजाम देख रहे हैं। उनके मन में यह बात समाई हुई है कि इस मौके पर उनके राज्य में लाट साहब की ऐसी खातिरी हो जाय जैसी कि आज तक कभी किसी रियासत में न हुई हो और इसलिये पानी की तरह रुपया बहाया जा रहा है।

पचास हजार रुपया लगा कर तथा बंबई से कारीगर और सामान मंगा कर कोठी फरहतबख्श में जो ऐसे ही किसी मौके के लिए अनगिनती रुपया लगा कर इनके बाप ने बनवाई थी एक नया पाखाना और नहाने का घर (बाथ-रूम) बना है। हमारे नवाब साहब अभी अभी उसे देख कर लौटे और मोटर से उतर कर अपने महल में पहुंचे हैं। परसों के दरबार में क्या क्या और किस किस तरह पर होगा इसकी खबर रेजीडेन्सी से लेकर उनके वजीर साहब अभी अभी आए थे जिसकी खबर सुन नवाब साहब उनसे बातें करने के लिए ड्राइंगरूम की तरफ वढ़ रहे थे कि यकायक एक चोबदार ने बड़े अदब के साथ एक लाल रंग का लिफाफा उनके सामने पेश करते हुए कहा, "हुजूर, थोड़ी देर हुआ रेजीडेन्ट साहब के दफ्तर का एक सिपाही यह चीठी दे गया और कह गया है कि बहुत जरूरी है।" नवाब साहब ने चीठी ले ली और उसके लिफाफे को उँगली से फाड़ते हुए ड्राइंगरूम की तरफ बढ़े जो वहां से कुछ ही दूर था और जिसके अंदर बैठे हुए उनके वजीर साहब उन्हें आता देख उठ कर अदब से सलाम करने को झुक रहे थे।

मगर नवाब साहब के मुंह से ताज्जुब की एक आवाज ने यकायक निकल कर वजीर साहब की झुकी हुई कमर को सीधा करने में जल्दी की और उन्होंने सिर उठा कर देखा कि उनके मालिक उस लाल कागज को गौर ताज्जुब तथा कुछ खौफ के साथ देख रहे हैं जो चोबदार के दिए हुए लिफाफे में से निकला है। इसके पहिले कि वे कुछ कहें या पूछें,

नवाब साहब ने उनकी तरफ देख इशारे से उन्हें अपने पास बुलाया और पहुंचते ही वह कागज उनके हाथ में देकर कहा, "पढ़िए।"

ताज्जुब में डूबे वजीर साहब उस कागज को पढ़ गए, यह लिखा हुआ था :—

"हमारे मुल्क के इन गुलामी के दिनों में भी बीती हुई इज्जत की कुछ कुछ याद दिलाने वाली यहां की रियासतें ही रह गई थीं पर वे भी जब वेहयाई का बोरका पहिन कर ठोकर मारने वाले जूतों को सर पर रखती हैं और जिनकी बदौलत गुलामी का तौक गले में पड़ा उन्हीं की इज्जत करती हैं तो कलेजे पर सांप लोट जाता है। 'रक्त-मंडल' इस फरमान के जरिये आज से इस बात को एक दम बन्द करता है और यहां की सब रियासतों और सरदारों को हुक्म देता है कि वे आज के बाद अंग्रेजी हुकूमत से कोई भी सम्बन्ध न रक्खें।

"अगर यहां की किसी रियासत का सरदार किसी अंग्रेज या उसके नुमाइन्दे को अपनी रियासत में रक्खेगा, आने देगा, या उसकी किसी तरह की खातिर तवाजेह करेगा तो कसूरवार समझा जाकर सजा पावेगा। अगर कोई राजा या नवाब अपनी रियासत के अन्दर अंग्रेजी रियासत के किसी ओहदेदार या अफसर को बुलावेगा, खुद उसके पास जायगा, या उसकी खुशामद या खातिर तवाजेह में लगेगा तो वह भी कसूरवार होकर सजा पावेगा। कोई भी देशी रियासत अंग्रेजी सरकार को किसी भी मद की कोई भी रकम देगी तो वह भी कसूरवार समझी जायगी।

" 'रक्त-मंडल' हुक्म-उदूली की सिर्फ एक ही तरह की सजा देना जानता है—मौत की—! इस लिए खबरदार, खबरदार !!"

इस अजीब चीठी के नीचे 'रक्त-मंडल' का अब प्रसिद्ध हो गया हुआ निशान—खून के दाग के भीतर चार उंगलियां—बना हुआ था।

[२]

वजीर साहब पर इस चीठी का कोई असर नहीं पड़ा यह कहना बिलकुल सुफेद झूठ होगा। वह अपना सिर खुजलाते हुए अपने, उस चीठी के पढ़ने से बिगड़ जाने वाले, हवासों को दुरुस्त करने लगे, तथा साथ ही छिपी निगाहों से यह भी देखने लगे कि उनके मालिक अर्थात् नवाब साहब के ऊपर इस चीठी का कैसा असर हुआ है ताकि वे भी उसी मुताबिक अपनी राय कायम करें।

अपने भयानक कामों की बदौलत 'रक्त-मंडल' शैतान से बढ़ कर मशहूर हो गया था और उसका नाम देश के कोने कोने में फैल गया था अस्तु नवाब साहब भी उसके कारनामों से थोड़ा बहुत वाकिफ जरूर हो चुके थे। 'रक्त-मंडल' की इस धमकी का उन पर कुछ भी असर नहीं पड़ा हो यह बात न थी, और इसमें भी कोई शक नहीं कि अगर वही बात जो इस चीठी में लिखी गई थी किसी और मौके पर तथा किसी दूसरे ढंग पर उनके सामने लाई गई होती तो शायद वे उस पर काफो गौर करते और उसके बर्खिलाफ चलने के पहिले तीन दफे सोच लेते, मगर इस चीठी के लफ्जों ने उनके गर्म खून को उबाल दिया। इस चीठी को 'फरमान' कहना, इतनी बड़ी रियासत के नवाब को 'हुक्म' देना, और न मानने पर 'मौत' की धमकी देना—ऐसी बातें थीं जिनको उनका नौजवान दिमाग सहज में पचा न सकता था। फिर भी वे इस बात की राह देख रहे थे कि देखें उनका जमाना देखे हुआ बूढ़ा वजीर इस बारे में क्या राय कायम करता है और इसी गरज से वे इस समय एकटक अपने वजीर की तरफ देख रहे थे।

जब वजीर साहब ने देखा कि नवाब साहब का चेहरा कुछ भी इशारा नहीं कर रहा है कि वे किस तरह की राय उन्हें दें और साफ यही जाहिर हो रहा है कि वे उन्हीं की राय जानना चाहते हैं तो आखिर

उन्हें अपना मुंह खोलना ही पड़ा। उन्होंने कुछ रुकते रुकते कहा, "हूजूर, यह तो बड़ी बुरी खबर है !!"

नवाब साहब बोले, "वेशक, लेकिन अब करना क्या चाहिए ?"

वजीर साहब ने इधर उधर देखा। कई नौकर चाकर काम काज के लिए चारो तरफ फिर रहे थे। यद्यपि नवाब साहब के पास आने की जुर्रत कोई भी नहीं कर रहा था परन्तु फिर भी वजीर साहब को शक हो गया कि शायद उनके मुंह से कोई ऐसी बात निकल पड़े जो 'रक्त-मंडल' की शान के खिलाफ हो तो लेने के देने पड़ जायंगे, और इसी तरह अगर अंगरेज सरकार के खिलाफ कुछ कहा तो भी मुश्किल होगी, क्योंकि इसमें तो कोई शक ही न था कि दोनों ही के जासूस और भेदिये इस महल में मौजूद होंगे, अस्तु उन्होंने इधर उधर देख कर कहा, "हुजूर अगर अपने प्राइवेट कमरे में चले चलें तो इस बारे में मैं अपनी राय जाहिर करूं।"

बड़ी जल्दी बल्कि खुशी के साथ नवाब साहब ने यह राय मान ली और अपने वजीर को लिए हुए निजी कमरे की तरफ चले। इस कमरे में पहुंच वे एक कोच पर बैठ गए। वजीर ने कमरे का दर्वाजा बन्द कर लिया और तब एक निगाह चारो तरफ इस नीयत से फेर लेने बाद कि कहीं कोई आदमी तो मौजूद नहीं है नवाब का हुक्म पा उनके सामने एक कुर्सी पर बैठ गये। कुछ देर सन्नाटा रहा जिस बीच दोनों ही कुछ सोचते रहे, इसके बाद नवाब साहब की सवाल की निगाह अपने ऊपर पड़ती देख वजीर साहब बोले, "सच तो यह है हुजूर कि इस वक्त ऐसा मौका आ गया है कि कोई बात ठीक करना मुश्किल हो गया है। दोनों ही तरफ खराबी नजर आती है। अगर इस चीठी की बात न मानी जाय तो ये शैतान बहुत भारी खराबी पैदा कर सकते हैं। हुजूर को याद होगा कि कुछ ही दिन हुए अंगरेजों के खास कमांडर-इन-चीफ को इन लोगों ने मार डाला और किसी के किए कुछ न हुआ, और अगर इस चीठी की बात मानते हैं तो उधर अंगरेज नाराज होते हैं जिनकी अवाई का

सब इन्तजाम हो चुका है और इस वक्त कोई बहाना निकाल लेना बहुत ही मुश्किल है। हुजूर, लाख भी हो फिर भी हमारे मालिक तो अंगरेज हैं ही।''

नवाब०। बेशक, और उन्हें नाराज करके मैं कहीं का न रहूंगा खास कर ऐसे मौके पर जब कि उनसे इतना बड़ा काम लेना है। (सिर हिला कर) नहीं नहीं, मैं इस वक्त किसी तरह भी अंगरेजों को नाराज नहीं कर सकता, एक रक्त-मंडल नहीं सौ रक्त-मंडल भी चाहे मुझे रोकें। आप ही सोचिये वजीर साहब कि अगर वह इलाका मुझे वापस मिल गया जो मेरे बुजुर्गों के हाथ से निकल गया था तो मेरी आमदनी दूनी हो जायगी और मेरा राज्य ड्योढ़ा हो जायगा। भला इतने दिनों के बाद अब जब मामला कुछ रंग पर आता दिखाई पड़ रहा है तो ऐसे वक्त अंगरेजों को नाराज कर मैं अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारूंगा !!

वजीर०। हूजूर बहुत ठीक कहते हैं, सो भला कैसे हो सकता है ! इतने दिन तक लगातार कोशिश करने बाद जो मामला कुछ सीधी राह पर आया है उसे इस तरह बिगाड़ना कभी अक्लमन्दी की बात नहीं होगी, मगर फिर यह बात भी है कि इस रक्त-मंडल का कुछ खयाल रखना भी जरूरी है।

नवाब०। (कुछ जोश के साथ) दो नाव पर पैर रखने से कुछ न होगा वजीर साहब, एकबग्गा बनना पड़ेगा,—या इधर या उधर। सरकार से भी भले बने रहें और इस कम्बख्त रक्त-मंडल को भी नाराज न करें, सो नहीं हो सकता। और फिर ये थोड़े से शैतान मेरा कर क्या सकते हैं। भले ही ब्रिटिश इन्डिया में वे जो चाहे उपद्रव किया करें। मेरे राज्य के अन्दर वे कुछ भी मीन-मेख करेंगे तो एक एक को पकड़वा कर बोटी बोटी उड़वा दूंगा, वे सब हैं किस फेर में ! इस तरह अगर मैं ऐरे गैरे शैतानों की धमकियों में आया करूं तो बस फिर हो चुका !!

जमाना देखे हुए बूढ़े वजीर के दिल में तो कुछ और ही था पर मालिक का बिगड़ा हुआ रुख देख ऊपर से वह बोला, "जी हां हुजूर, इस रियासत में तो इनकी कोई कलई चलने न पाएगी जहां आपके आकानामदार इस कदर रोब गालिब कर गए हैं कि नाम सुन कर लोगों का पेशाब खता होता था। और हुजूर के रुआब का भी यह हाल है कि ....

नवाब०। (मोछ पर हाथ फेर कर) जनाब मैं कहता हूं कि कोई आंख उठा कर तो देखने की हिम्मत कर ही नहीं सकता, जरा कोई चूं करे एक बारगी तोप-दम करवा दूं। मैं सच कहता हूं कि मेरे यहां यह कम्बख्त रक्त-मंडल कुछ नहीं कर सकता, अंगरेजी सल्तनत में जो चाहे किया करे जहां के अहलकार कानून कायदे के पीछे ही मरे जाते हैं !

वजीर०। यही बात है हुजूर, अंगरेज लोग कड़ाई से काम लेना नहीं जानतें नहीं तो भला कोई बात है कि ऐसे नालायकों की जरा भी दाल गल सके। हुजूर बहुत छोटे थे तब की बात है और शायद आपने भी सुना ही होगा कि एक दफे हुजूर के दादा साहब के वक्त में इस शहर के कुछ सौदागरों ने सरकार के हुजूर से माल देकर रुपया न पाने की शिकायत कलकत्ते जाकर बड़े लाट साहब से कर दी थी। बड़े हुजूर को खबर लग गई। उसी वक्त हुक्म दिया कि जो जो भी गया हो इस रियासत में बसे हुए उसके सब रिश्तेदार कैद कर लिये जायं, सभों का घर लूट कर खजाना सरकार में दाखिल किया जाय, और मकानात गिरा कर जमींदोज कर दिये जांय। रातो-रात इस हुक्म की तामील की गई और सबेरा होते होते तक उनके घरबार का कोई नाम निशान बाकी न रहा। कलकत्ते जाने वाले तो खौफ के मारे लौटे ही नहीं उनके रिश्तेदारों के भी बरसों गिड़गिड़ाने और नाक रगड़ने पर तब बड़े हुजूर ने उन सभों को जेलखाने से रिहाई दी सो भी इस शर्त पर कि दिन के दिन रियासत छोड़ कर बाहर लिकल जांय। तब का दिन है और यह आज का कि फिर कभी किसी ने वैसा करने की जुर्रत न की।

थोड़ी देर तक इसी लहजे में बातचीत होती रही और तब नवाब

साहब ने परसों वाले दरबार का जिक्र छेड़ दिया। बूढ़ा दीवान उनके सवालों का जवाब देने लगा मगर उसके दिल में रह रह कर रक्त-मंडल की वह धमकी अंधेरी रात की बिजली की तरह तड़प उठती थी।

[३]

सुबह के आसमान में सूर्य ऊंचे हो चुके थे जब नवाब हैदरजंग बहादुर अपने सुनहरे पलंग पर से अंगड़ाइयां लेते हुए उठे। रात को कल दिन भर की खुमारी दूर करने के खयाल से उन्होंने दो एक 'पेग' मामूल से ज्यादा ले लिये थे जिन्होंने इस वक्त खुमारी पैदा कर दी थी जिससे उन्हें उठने में सिर्फ देर ही नहीं हो गई थी बल्कि सिर दर्द कर रहा था।

मुंह धोने के लिये वर्फ से तर किया हुआ गुलाबजल और आफताबा लिए हुए दो लौंडियां दर्वाजे पर मौजूद थीं जो नवाब साहब को जगा हुआ देख भीतर आईं। नवाव साहब ने मुंह धोया और पान खाया। एक लौंडी ने जूते आगे बढ़ा दिये। नवाब उनमें पांव डाल हो रहे थे कि यकायक सिर्हाने के बगल वाले टेबुल पर कोई चीज देख चौंक पड़े।

वह चीज जिसने नवाब साहब को चौंका कर उनकी सब खुमारी एक दम दूर कर दी एक चमकता हुआ छूरा था जिसकी नोक टेवुल की लकड़ी में घुसी हुई थी और जिसके मुट्ठे के साथ लाल रंग का कोई कागज बंधा हुआ था।

जिस तरह कोई जहरीले सांप को देखता है उस तरह थोड़ी देर तक नवाब साहब उस छूरे को देखते रहे। इसके बाद बड़ी हिम्मत के साथ हाथ बढ़ा कर उन्होंने वह छुरा टेबुल से निकाला, कुछ देर तक उसे देखते रहे, और तब उसमें बंधे पुर्जे को खोला। यह भी रक्त-मंडल की ही एक चीठी थी जिसमें सिर्फ इतना लिखा हुआ था :—

"होशियार, होशियार !

"नौजवान नवाब, याद रख कि जिस आसानी से यह छूरा इस टेबुल पर गाड़ कर हम जा रहे हैं उसी आसानी से इसे तेरी छाती में भी भोंक

सकते थे। अगर हमारा हुक्म तूने न माना और बड़े लाट की खातिर तवाजो से बाज न आया तो अपने को जीता न पावेगा। इसी से फिर कहते हैं— खबरदार ! होशियार !!"

मजमून के नीचे रक्त-मंडल का खूनी निशान वना हुआ था।

नवाब साहब कुछ देर तक डर घवराहट और फिक्र में डूबे बैठे रहे। वे लौंडियां भी आश्चर्य में डूबी कभी अपने नवाब और कभी उस छूरे को देखती रहीं।

रक्त-मंडल की इस धमकी ने असर नहीं किया यह वात नहीं थी। खुद नवाब साहब भी इस बात को समझते थे कि जो लोग इतने कड़े पहरे को तोड़ते हुए महल के अन्दर आ गए और खास उनके कमरे में घुस कर इस छूरे को गाड़ गये वे उनका खून भी कर जा सकते थे। वे यह भी समझ सकते थे कि जिस रक्त-मंडल ने खुद अंगरेज सरकार को परेशान किया हुआ है वह उनके जैसों को क्या समझेगा। मगर यह सब सोचते जानते और समझते हुए भी वे अपने नौजवान खून और उस उद्दण्डता के भाव से लाचार थे जो पुश्तों से इस खून में भरती चली आई थी। अगर कोई ज्यादा उम्र का या अधिक बुद्धिमान आदमी इस चीठी को पढ़ता तो शायद दब जाना ही होशियारी की बात समझता मगर नौजवान नवाब पर इसका उल्टा ही असर पड़ा। जो कुछ डर और घबराहट पैदा हुई थी उसे दबा कर थोड़ी देर वाद क्रोध ने अपना अधिकार जमाया और यह भाव दिमाग में चक्कर खाने लगा कि 'हैं, ये शैतान मुझ पर हुकूमत चलाते और मुझे डराते हैं ! मुझे भी क्या कोई मामूली आदमी समझ रक्खा है कि इनकी धमकी से डर जाऊंगा ? मैं भी इन लोगों को वता दूंगा कि क्या कुदरत रखता हूँ !!'

यकायक सिर उठा कर नवाब साहब ने एक लौंडी से कहा, "जा, जुलफिकारअली को अभी बुला कर ला।" दूसरी की तरफ देख कर वे बोले, "कल रात नौ बजे से लेकर आज इस वक्त तक मेरे महल की

सातो ड्योढ़ियों पर जिसने जिसने भी पहरा दिया हो सब को हुक्म दे कि पन्द्रह मिनट के अन्दर तीसरी ड्योढ़ी पर हाजिर हों।"

दोनों लौंडियां झपटती हुई कमरे के बाहर हो गईं और हमारे नवाब साहब गुस्से में भरे हुए उस कमरे में इधर से उधर चक्कर लगाने लगे। उनके हाथ में छूरा था जिसे घुमा फिरा कर देखते हुए वे कभी कभी बोल उठते थे, "इतने पहरेदार रखने से फायदा ही क्या कि जो चाहे ऐरा गैरा मेरे महल में घुस आवे और मनमानती कार्रवाई करके अछूता चला जाय!"

मुश्किल से पांच मिनट बीते होंगे कि लौंडी ने हाजिर होकर कहा, "वजीरे आजम साहब बाहर ड्योढ़ी पर हाजिर हैं।" नवाब साहब बोले, "उन्हें यहीं ले आ।" लौंडी चली गई और थोड़ी ही देर में नवाब साहब के वजीर जुलफिकारअलीखां ने वहां पहुंच लम्बी सलाम अता की।

उन्हें देखते ही नवाब साहब बोल उठे, "देखिये वजीर साहब यह छूरा। आज सुबह जब मैं सोकर उठा तो इसे उस टेबुल पर गड़ा हुआ पाया। इसके साथ था यह पुर्जा।" नवाब साहब ने वह पुर्जा वजीर के हाथ में दिया।

पुर्जा पढ़ वजीर साहब का चेहरा पीला पड़ गया और बदन कांपने लगा। उनकी हालत नवाब साहब से भी छिपी न रही जो उनकी तरफ कड़ी निगाह से देख रहे थे और इसके पहिले कि दीवान साहब कुछ बोलें उन्होंने कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि मेरे महल और खास मेरे सोने के कमरे में खूनी शैतान बेधड़क घुस आवें और इस तरह के काम करके बेलाग निकल जावें। तब तो मुझमें और उस भिखमंगे में कोई फर्क न रह गया जो सड़क के किनारे पड़ा सोया करता है। इतना पहरा चौकी और ड्योढ़िएं सब फजूल हैं। मगर खैर इसका तो मैं इन्तजाम कर लूंगा, आपको मैंने इस लिये बुलाया है कि आप फौरन रेजीडेंट साहब के पास चले जांय और उनसे यह सब हाल कह के सलाह करें कि

इस हालत में क्या करना मुनासिब होगा। अगर वे बड़े लाट साहब से बातें कर सकें तो उन्हें भी यह खबर दे दी जाय और साथ ही साथ मेरी तरफ से यह भी कह दिया जाय कि यह रक्त-मंडल वाले रियासत अंग-रेजी के बागी हैं, ये अगर मेरी रियासत में आकर इस तरह का फिसाद खड़ा करेंगे तो लाचार हो कर मुझे दब जाना पड़ेगा क्योंकि जिन्हें अंगरेज सरकार पस्त न कर सकी उनका मैं भला किस तरह मुकाबिला कर सकता हूं। इसी वक्त फौरन या तो इनके वार से मुझे बचाने का पूरा इन्तजाम किया जाय और या फिर मुझे इस बात की इजाजत दी जाय कि मैं दिन भर महल के अन्दर छिपा बैठा रहूं और लाट साहब की अग-वानी के लिए भी बाहर न निकलूं। अपने साथ आप इन दोनों चीठियों को भी लेते जाइये।"

नवाब साहब ने अपने वजीर को और भी कुछ बातें बताईं और उसी वक्त उन्हें अपने पास से बिदा कर दिया।

उनके जाने के थोड़ी देर बाद तक नवाब साहब इधर उधर टहलते हुए कुछ सोचते रहे, इसके बाद जिस समय एक लौंडी ने हाजिर होकर अर्ज किया कि सब पहरेदार तीसरी ड्योढ़ी पर हाजिर हैं तो वे कमरे के बाहर निकले और वह छूरा हाथ में लिए हुए तीसरी ड्योढ़ी की तरफ चले।

नवाब साहब के महल में कुल सात ड्योढ़ियां पड़ती थीं जिनमें से पहिले दो पर सिपाहियों का पहरा पड़ता था, तीसरी पर हब्शी गुलामों का, चौथी पर खोज़ों का, और बाकी तीनों पर हथियारबन्द लौंडियों का। दिन रात में आठ बार यह पहरे बदले जाते थे। कल रात से अब तक के चार पहरों के सब सिपाही, हब्शी, खोजे और लौंडियां इस समय बाहर की तीसरी ड्योढ़ी पर इकट्ठे थे और आपस में कानाफूसी करते हुए इस डर से कांप रहे थे कि देखें गुस्सेवर नवाब साहब उन लोगों को क्या सज़ा देते हैं, क्योंकि उड़ती उड़ती वह खबर तो इसी बीच में उनको ही क्या आधे महल को लग चुकी थी कि नवाब साहब के पलंग के पास कोई

छूरा गाड़ गया है। रक्त-मंडल का नाम भी किसी किसी जुबान पर था मगर बहुत ही छिपे तौर पर।

नवाब साहब को आते देखते ही चारो तरफ सन्नाटा छा गया और कानाफूसी एकदम बन्द हो गई। इस समय सब लौंडियां एक तरफ और खोजे तथा मर्द पहरेदार एक तरफ खड़े थे। नवाब साहब दोनों के बीच में जाकर खड़े हो गये और गुस्से भरी आवाज में बोले, "लौंडियों, गुलामों, और पहरेदारों! बड़े अफसोस की बात है कि तुम लोग इतने दिनों से हमारा नमक खाते आ रहे हो फिर भी तुम्हें इसका कुछ ख्याल नहीं है कि मेरी जान की क्या हिफाजत होता है! लो सुनो और देखो, आज सुबह जब मैं सो कर उठा तो यह छूरा मेरे पलंग के बगल वाले टेबुल पर गड़ा हुआ था और इसके साथ इस मतलब का एक पुर्जा बंधा था कि अगर मैं होशियारी से नहीं चलूंगा तो कल इसी तरह मेरी छाती में छूरा भोंक दिया जायगा। इतने पहरेदारों को रखने से मुझे क्या फायदा अगर इस आसानी से पाजी शैतान मेरे सोने के कमरे में घुस आवें और निकल जायं? इसके दो ही माने हो सकते हैं। या तो जिसका यह काम है उसने तुम सभों को घूस और लालच दे के अपनी तरफ मिला लिया है और या तुम लोग इतनी लापरवाही से अपना फर्ज अदा करते हो कि उससे मेरी कोई भी हिफाजत नहीं हो सकती। इन दोनों ही हालतों में तुम्हारा रखना बेकार ही नहीं है खतरनाक भी है।"

नवाब साहब अपनी बात का पूरा असर हो जाने देने के लिये जरा देर के लिये चुप हो गये। सुनने वालों के चेहरे पीले पड़ गये! नवाब साहब की प्रकृति को जानने वाले खूब समझते थे कि सबसे भयानक हिस्सा अभी सुनने को बाकी है।

कुछ ठहर कर नवाब साहब बोले, "मैं तुम लोगों को तीन पहर की मोहलत देता हूं। इस बीच में या तो उस आदमी को गिरफ्तार करके मेरे पास लाओ जिसने यह काम किया है, और नहीं तो समझ रक्खो कि तुम

सभों को जिन्दगी भर के लिए मैं कालकोठरी में ठूंस दूंगा, तुम्हारा माल असवाव जब्त कर लिया जायगा, तुम्हारे औरत मर्द और बच्चे मेरी रियासत के बाहर निकाल दिए जांयगे, और मकानात गिरा कर ज़मींदोज कर दिए जायंगे। कोई मिन्नत, कोई आरजू, मेरे इस हुक्म को बदल न सकेगी। बस, अभो मेरे सामने से चले जाओ और तीन पहर वाद इसी जगह फिर हाजिर होवो।''

पहरेदारों को अपने जवाब में कुछ भी कहने का कोई मौका दिए बिना ही नवाव साहव घूमे और झपटते हुए अपने बैठके की तरफ चले गए।

[४]

वात की वात में यह समाचार समूचे शहर में फैल गया कि रात को किसी के नवाव साहव को छूरा भोंक कर मार डालना चाहा था।

जैसा कि किम्वदंतियों की आदत है, तरह तरह से बढ़ती हुई इस खवर ने रियासत के कोनों तक पहुंचते पहुंचते बड़े ही विकृत और अद्भुत अनेक रूप धारण कर लिए पर हमें इस जगह उससे कोई मतलब नहीं, हम तो इस समय ताज्जुव और प्रसन्नता से देख रहे हैं कि नवाब साहब को धमकी का इतना बड़ा असर हुआ कि लगभग घंटे ही भर बाद एक आदमी जो रस्सियों से बहुत मजवूती के साथ बांधा हुआ था उनके हुजूर में यह कह कर पेश किया गया कि आधी रात के वाद यह आदमी महल के बाहर इधर उधर घूमता दिखाई पड़ा था और इस वक्त महल की एक अंधेरी कोठरी के अन्दर छिपा हुआ पकड़ा गया है, बोलने से कुछ भी नहीं वताता कि कौन है, और न यही वताता है कि किस काम के लिये महल में घुसा था।

यह खवर जव नवाव साहव के कान में पड़ी तो उनके सिर से मानो एक बोझा सा उतर गया। उन्होंने अपने पास उस मुजरिम को बुलाया और उससे तरह तरह के सवाल करने लगे मगर उसने किसी बात का कोई जवाब न दिया। जब बहुत तरह से पूछ कर नवाब साहब हार गये तो गुस्से में भर कर उन्होंने हुक्म दिया, ''इसे मेरे सामने से ले जाओ और

जैसे यह बताए वैसे दरियाफ्त करो कि यह मेरे महल में क्यों घुसा था !!" "जैसे हो तैसे" का मतलब सब जानते थे, उसका माने था असह्य यंत्रणा !

इस काम से फारिग हो नवाब साहब अपने कमरे में लौट ही रहे थे कि उन्हें अपने वजीरआजम के वापस लौटने की खबर लगी और कुछ ही सायत बाद वजीर साहब ने उस कमरे में पैर रक्खा।

नवाब साहब ने कुछ व्याकुलता से पूछा, "कहिए क्या हुआ?" उन्होंने जवाब में एक कागज सामने पेश करते हुए कहा, "लाट साहब ने यह संदेशा हुजूर को भेजा है।"

नवाब साहब ने कागज उठा कर पढ़ा। अंगरेजी का एक छोटा मजमून था जिसका मतलब यह था :—

"रक्त-मंडल की किसी धमकी से बिल्कुल मत घबराइए। मैंने अपने कर्मचारियों को पूरा बन्दोबस्त करने की आज्ञा दे दी है। किसी इन्तजाम में कोई भी फर्क अगर पड़ेगा तो मैं समझूंगा मेरा अपमान किया गया है।"

पढ़कर नवाब साहब के माथे पर दो चार सिकुड़नें पड़ गईं। उन्होंने चिन्ता के साथ पूछा, "इसका क्या मतलब? रेजीडेन्ट साहब से आपकी क्या बातें हुईं?"

वजीर०। हुजूर मैंने उन्हें वे दोनों खत दिखाये और पूरा हाल सुनाया। सुन कर वे बोले, "हमारी सरकार को पहिले से यह खबर लग चुकी है कि रक्त-मंडल आपकी और आस पास की दूसरी कई रियासतों में शैतानी करना चाहता है और इसीलिये सरकार के भेजे हुए कई होशियार जासूस बहुत थोड़ी देर में यहां आ पहुंचेंगे। उन्होंने बहुत तरह से भरोसा दिलाया और कहा कि इन कम्बख्तों से डरने की कोई भी जरूरत नहीं है, यह सब इनकी कोरी धमकी है जिसका कोई भी असर नहीं पड़ सकता। इसके बाद उन्होंने लाट साहब की स्पेशल ट्रेन इस समय कहां पर है इसे दरियाफ्त कराया और तब उनसे तार के जरिये बातचीत की। लाट साहब ने आपको जो संदेशा भेजा वही यह है। रेजीडेन्ट साहब का

भी इस बारे में कहना है कि अगर आप इन शैतानों की धमकियों में पड़ कर बड़े लाट साहब के स्वागत में कुछ भी कोर कसर करेंगे तो वे इसे अपनी बेइज्जती समझेंगे। फिर इसका बुरा असर आस पास की दूसरी रियासतों पर पड़ेगा और वे सब भी डर के मारे कुछ खातिर तवाजो न करेंगी। यह तो हुजूर जानते ही हैं कि लाट लाहब इधर दो महीने तक सिर्फ इस तरफ की सब रियासतों में ही घूमते रहेंगे।

नवाब०। (कुछ बेचैनी से) मगर वजीर साहब, आपने यह उनसे नहीं कहा कि रक्त-मंडल वाले जिस तरह आज रात को मेरे सोने के कमरे के टेबुल में छूरा घुसा गए उसी तरह कल मेरी छाती में उसे भोंक जा सकते हैं। ब्रिटिश सरकार जब अपनी अमलदारी में इस रक्त-मंडल का कुछ बिगाड़ नहीं सकती तो मेरी रियासत में उनसे मुझे बचा सकेगी इसका क्या इतमीनान है ?

वजीर०। मैंने तो सब कुछ कहा हुजूर मगर वहां कोई सुने भी तब तो ! सच तो यह है कि रेजीडेन्ट साहब की बातों से मुझे कुछ यह अन्देशा हुआ कि ऐसी ही चीठियें उन सब रियासतों में पहुंची हैं जिनमें लाट साहब दौरा करने वाले हैं। अगर हमारे यहां उनकी खातिर में फर्क पड़ गया तो फिर बाकी छोटी रियासतें तो एक दम ही डर जाएंगी और इसी खयाल से हम पर इतना दबाव डाला जा रहा है।

नवाब०। खैर जो होगा देखा जायगा, अब इतना करके तो मैं पीछे हटने का नहीं और फिर जब रक्त-मंडल का एक जासूस पकड़ा गया है तो मुमकिन है उससे कुछ भेद लग भी जाय। आप जाइये और सब इन्त-जाम जैसे हो रहा था उसी तरह पूरा करा डालिए।

वजीर०। बजा इर्शाद, मगर यह हुजूर ने क्या कहा कि रक्त-मंडल का एक जासूस पकड़ा गया है।

नवाब०। क्या आपको मालूम नहीं हुआ ? मैंने पहरेदारों को वह डांट बताई कि उन्होंने दौड़ धूप कर के एक आदमी को गिरफ्तार किया

है जो रात भर महल के अन्दर छिपा हुआ था। वह कम्बख्त अगरचे कुछ भी नहीं बताता है कि कौन है या किस वास्ते यहां आया था मगर मालूम होता है वह रक्त-मंडल ही का कोई आदमी है। जरा आप भी उससे बातें करके देखियेगा, शायद आपको कुछ पता लग सके।

कुछ और बातचीत के बाद नवाब साहब उठ खड़े हुए। दीवान साहब ने भी उनसे इजाजत ली और काम की फिक्र में लगे।

× × ×

लाट साहब की स्पेशल जब मुजफ्फराबाद से दो स्टेशन पहिले के एक छोटे फ्लैग स्टेशन पर पहुंची तो यकायक रोक दी गई। बड़े अफसरों के हुक्म से यहां के स्टेशन मास्टर ने यह कार्रवाई की थी। लाट साहब ने जब इसका कारण जानने को खिड़की के बाहर सिर निकाला तो उनके सेक्रेटरी ने वहां पहुंच कर एक तार उनके हाथ में दिया जिसमें यह लिखा था :—
"नवाब हैदरजंग बहादुर अगवानी के लिये बड़े स्टेशन को आ रहे थे जब उनकी मोटर पर बम फेंका गया और उनकी मौत हो गई।"

लाट साहब के मुंह से रक्त-मंडल के लिए एक गाली निकल गई।

थोड़ी देर तक लाट और उनके सेक्रेटरी में कुछ बातें होती रहीं, इसके बाद सेक्रेटरी ने ड्राइवर को ट्रेन पीछे वापस ले चलने का हुक्म दिया।

हमारे किस्से से सम्बन्ध न होने पर भी बता देने में हर्ज नहीं कि वह जासूस जो महल में पकड़ा गया था उसी दिन मर गया। क्यों? यह बताना तो कठिन है, पर बाद में इतना जरूर जाना गया कि वह एक गरीब अन्धी भिखारिन का एकलौता गूंगा और बहरा लड़का था जिसे महल के पहरेदार जबर्दस्ती उसके घर से पकड़ ले गये थे। देशी रियासतों में अपनी जान बचाने के लिए दूसरी जानें होम कर देने की ऐसी घटनायें होती ही रहती हैं अस्तु यह बात कोई महत्व की न समझी गई और नवाब साहब की मौत से पैदा होने वाली घबराहट में यह छोटी घटना न जाने कहां दब गई।

ज्वालामुखी

[१]

अपने दफ्तर के बगल वाले छोटे कमरे में काशी के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल थकावट की मुद्रा में एक कोच पर पड़े हुए हैं। उनके मुंह में एक सिगार है पर उससे कभी ही कभी वे धूआं खींचते हैं।

कल रात को रक्त-मंडल के प्रधान अड्डे पर धावा करके नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने की जो जो भी ऊंची उम्मीदें बंधी थीं आज वे सब टूटी हुई हैं क्योंकि न केवल नगेन्द्रनरसिंह भाग गया बल्कि उसके सब साथी भी निकल गये, एक भी हाथ न लगा। इतने परिश्रम और विचार के साथ की गई सब तैयारी व्यर्थ हुई, केवल व्यर्थ ही नहीं हुई बल्कि इनके पक्ष के लिये बहुत कीमती भी सिद्ध हुई, क्योंकि पंडित गोपालशंकर भी तभी से गायब हैं और बहुत मुमकिन तो यही है कि दुश्मनों के कब्जे में पड़ गए हों।

इस समय कोच पर पड़े केमिल इन्हीं सब बातों को सोच रहे थे और साथ ही साथ अपनी प्यारी बेटी रोज का भी कुछ पता न पाने के रञ्ज में डूबे हुए दुश्मनों से बुरा बदला लेने का खयाल भी करते जाते थे । कल

रात का पूरा अहवाल वे ऊंचे अफसरों के पास भेज चुके थे और इस समय के घोर निराशा के अन्धकार में आशा का कोई टिमाटिमाता प्रदीप यदि उन्हें दिखाई पड़ता था तो केवल यही कि शायद कहीं दूर जाकर उन मोटर, मोटर-बोट या वायुयान में से कोई पकड़ा गया हो (जिन पर चढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह और उसके साथी भागे थे) और कोई आदमी गिरफ्तार हुआ हो। उन्होंने इस बात की प्रार्थना अपने ऊपर के अफसरों से कर दी थी कि अगर कहीं इस सम्बन्ध में कोई बात जानी जाय तो उन्हें उसकी खबर तुरन्त की जाय और यह प्रार्थना स्वीकार भी कर ली गई थी अस्तु जैसा कि हमने ऊपर कहा, कोई आशा अगर बच गई थी तो सिर्फ इतनी ही।

सबसे ज्यादा दुःख उन्हें गोपालशंकर के बारे में था। इसमें तो उनको कोई सन्देह ही न रह गया था कि वे दुश्मनों के हाथ में पड़ गये हैं और यह भी वे सोच सकते थे कि उनके दुश्मन उन्हें अपने कब्जे में पा कर कभी जिन्दा न छोड़ेंगे। इस समय अगर उन्हें या उनकी सरकार को किसी का भरोसा था तो केवल गोपालशंकर का। यद्यपि रक्त-मंडल ने उनकी बुद्धि को भी चक्कर में डाल दिया था तिस पर भी उससे मोरचा लेने लायक कोई था तो वे ही। उनके चले जाने से उनकी सरकार का दाहिना हाथ टूट गया था और खुद उनका तो एक दम दिल ही बैठ गया था।

इस समय बहुत देर से कोच पर पड़े केमिल यही सोच विचार रहे थे। कल रात की थकावट दूर करके थोड़ी देर की नींद लेने के इरादे से वे यहां आये थे मगर नींद उनकी आंखों से कोसों दूर जान पड़ती थी। आखिर जब किसी तरह उन्होंने अपने शरीर या मन को विश्राम पाते न देखा तो व्यर्थ को पड़े रहना फजूल समझ वे उठे और कहीं जाना ही चाहते थे कि अचानक बगल की कोठरी से टेलीफोन की घन्टी बजने की आवाज उनके कान में पड़ी और वे उसी तरफ को बढ़ गए।

टेलीफोन छोटे लाट साहब के दफ्तर से आया था। युक्त-प्रान्तीय लाट

के सेक्रेटरी मिस्टर फरगूसन के साथ केमिल की बात होने लगी—

फरगूसन०। मिस्टर केमिल, हम लोगों को नैपाल रेजीडेन्सी से अभी अभी खबर मिली है कि गुब्बारे पर चढ़ा हुआ कोई आदमी इसी तरफ से उड़ कर आता हुआ वहां देखा गया है। गुब्बारा वहां के पहाड़ों में कहीं गिरा है। हमलोगों की इच्छा है कि कुछ आदमी इस बात की जांच करने के लिये भेजें कि उस गुब्बारे पर कौन था और वहां कहां गया क्योंकि बहुत संभव है कि वह रक्त-मंडल का ही कोई आदमी या स्वयं नगेन्द्रनरसिंह ही हो। क्या आप उन आदमियों के साथ जाना पसन्द करेंगे?

केमिल०। बड़ी खुशी से!

फरगूसन०। तो बस दो घन्टे में तैयार हो जाइये और जहां तक जल्दी हो सके रक्साल पहुंचिये जहां आपको बाकी आदमी मौजूद मिलेंगे। वहां के फौजी दफ्तर में आपको हुक्मनामा तथा बाकी के जरूरी कागजात मिल जायेंगे।

केमिल०। बहुत अच्छा, मैं दो घन्टे के भीतर वहां के लिये रवाना हो जाऊंगा, मगर मैं सोचता हूं कि साथ ही साथ अगर मुझे यह इजाजत भी मिल जाय कि अगर मौका पाऊं तो रक्त-मंडल के किले का पता लगाऊं या उस पर हमला ही कर दूं तो और भी अच्छा था।

फरगू०। अच्छा मैं लाट साहब से पूछ कर इसके विषय में भी तय कर लूंगा। आपकी राय बेशक ठीक और मुझे भी पसन्द है मगर मैंने सुना है कि बड़े लाट साहब के हुक्म से एक पार्टी इस काम के लिए रवाना हो चुकी है जिसके साथ चार जंगी हवाई जहाज और लड़ाई का पूरा सामान भी है। कैप्टेन रूबी ने रक्त-मंडल के एक जासूस से पंडित गोपालशंकर के बनाये यन्त्र के जरिये जो कुछ गुप्त भेद जाने थे उन्हीं के बिना पर हमला हो रहा है, मगर खैर इस बारे में भी पूरी खबर आपको रक्साल ही में मिल जायगी।

केमिल०। बहुत अच्छा, लेकिन तब मैं कहूंगा कि रक्त-मंडल के

किले पर आक्रमण करने को रवाना होने वाले लोगों में मुझे भी शामिल कर दिया जाय। मुझे शैतान रक्त-मंडल से शुरू से वास्ता पड़ा हुआ है और इसीलिए इतना मैं अपना अधिकार समझता हूं।

फरगू०। (हंस कर) बेशक आपको यह हक हासिल है और मैं पूरी कोशिश करूंगा कि आप उस गिरोह में रह सकें, पर अभी ठीक तौर से कोई बात मैं इसलिये नहीं कह सकता कि बड़े लाट साहब ने यह मामला बिल्कुल अपने हाथ में रक्खा है, फिर भी मैं मिस्टर थामसन से इस बारे में बात करूंगा। चूंकि वह दल भी रक्साल ही से रवाना होने को है इससे मुझे उम्मीद है कि आपकी बात मिस्टर थामसन मंजूर कर लेंगे। खैर आप यह तो बताइये कि वहां से जो रक्त-मंडल वाले भागे उनमें से किसी जगह कोई पकड़ा भी गया ?

कमिल०। कहीं कोई नहीं, उनकी मोटर इतनी तेज थी कि हमारी सब मोटरों को पछाड़ के कहीं निकल गई। हमारी मोटर-बोट एक जगह दलदल में फंस गई और उनकी मोटर-बोट का पीछा करने से लाचार रही। उनके हवाई जहाज की कोई खबर नहीं लगी मगर एक हवाई जहाज के रात के समय कोसी नदी के ऊपर से उड़ते जाने की आवाज कुछ लोगों ने सुनी ऐसी खबर लगी है, परन्तु वह भी किधर चला गया कोई नहीं जानता, संभव है कि वह उनके किले में ही जा उतरा हो। अंधेरी रात ने हम लोगों को बहुत बड़ी बाधा दी। हां हमारे एक हवाई जहाज के चलाने वाले का कहना है कि पीछा शुरू होने के कुछ ही मिनटों बाद उसके जहाज के दाहिने पंख में किसी चीज का ऐसा कड़ा धक्का लगा था कि जहाज डोल गया था मगर वह चीज क्या थी इसका कुछ पता न लगा। इतने इन्तजाम, इतनी कोशिशें, सब बेकार हुईं और वे कम्बख्त निकल ही गए।

फरगू०। बेशक और इससे उनकी फुर्ती हिम्मत और दिलेरी साबित होती है। हां यह तो बताइये, पंडित गोपालशंकर का कुछ पता लगा ?

केमिल० (अफसोस के स्वर में) कुछ भी नहीं, मुझे तो ख्याल होता है कि वे दुश्मनों के हाथ पड़ गये।

फरगू० । जरूर यही बात है, अगर ऐसा हुआ है तो बहुत ही बुरा हुआ है। और आपकी लड़की मिस रोज ? उनका कुछ पता लगा।

केमिल० । उसका भी कुछ पता नहीं लगा, मगर मकान की तलाशी के समय उसके कुछ कपड़े जरूर मिले जिससे यह विश्वास करना पड़ता है कि वह उस जगह मौजूद अवश्य थी।

फरगू० । अफसोस, मेरी आपके साथ पूरी सहानुभूति है। आपने वहां पहरे का इन्तजाम तो रक्खा हुआ है न ?

केमिल० । हां पूरा, और दो एक होशियार आदमी इसलिए भी मुकर्रर कर दिए हैं कि अच्छी तरह से इस बात की जांच करें कि उस मकान में कोई ऐसा गुप्त तहखाना कोठड़ी वगैरह तो नहीं है जिसमें कुछ रक्खा गया हो। एक तहखाने का पता हम लोगों को लगा था मगर उसका दर्वाजा खुला हुआ था और भीतर उसके बिल्कुल पानी भरा हुआ था जिसके कारण बहुत कोशिश करने पर भा यह न जाना जा सका कि अन्दर क्या है। गोताखोरों के जरिए उसके अन्दर का भेद लेने की कोशिश की गई मगर कुछ ठीक ठीक पता न लगा, अब पम्प करके पानी निकालने की कोशिश की जा रही है।

फरगू० । अच्छी बात है, अगर कुछ पता लगे तो तुरन्त हमलोगों को खबर दी जाय ऐसा प्रबन्ध करके तब रवाना होइयेगा।

दो एक बातें और हुई और तब केमिल साहब टेलीफोन का चोंगा टांग कर वहां से हटे। उसी समय एक दूसरा आदमी भी जो उनके बगल की कोठड़ी में खड़ा एक दूसरे टेलीफोन के चोंगे को कान में लगाये यह सब बातें गौर से सुन रहा था अपनी जगह से हटा। टेलीफोन को उसने छिपा कर एक संदूक के अन्दर बन्द कर दिया, उसकी तारें भी जो इस तरह लगी हुई थीं कि जब चाहे बेमालूम तौर पर हटाई जा सकें कहीं

छिपा दीं, और तब कोठड़ी के बाहर निकल गया। इस आदमी की सूरत शक्ल और पौशाक बिल्कुल खानसामाओं की तरह थी और अगर केमिल साहब इसे देखते तो बखूबी पहिचान लेते क्योंकि अभी महीना भर भी नहीं हुआ था कि उन्होंने इसे नौकर रक्खा था और इनकी मेहनत और वफादारी पर बहुत खुश थे।

[२]

नैपाल राज्य के लिए भारत सरकार की ओर से जो रेजीडेन्ट नियुक्त है उसके रहने का बंगला राजधानी से दूर एक अलग ही सुन्दर यद्यपि छोटी पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ है। चूंकि इतने बड़े राज्य के रेजीडेन्ट का पद एक जिम्मेदारी और महत्व का पद माना जाता है इसलिए उसके रहने का स्थान भी खूब शानदार और आलीशान बना हुआ है। नैपाल की विशेष परिस्थिति और कुछ समय पहिले वहां उत्पन्न हो गये हुए एक हलके विद्रोह के कारण इस रेजीडेन्सी की बनावट भी कुछ ऐसी है कि प्रगट में वैसा मालूम न होने पर भी यह एक किले की तरह की है जिसकी मजबूती इतनी है कि बिना छोटी मोटी लड़ाई लड़े वह स्थान जबरदस्ती अधिकार में नहीं किया जा सकता। पहाड़ी की चोटी पर की उसकी स्थिति भी उसकी मजबूती को बढ़ाती है और उसमें रहने वालों को सुरक्षित किए हुए है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि नैपाल सरकार का बर्ताव कभी ऐसा हुआ जो मित्रता के दायरे के बाहर हो या सन्देह को उत्पन्न करे—नैपाल वीरों का देश है, वे लड़ेंगे तो जी खोल कर, मगर मिलेंगे भी तो बाहें खोल कर, अंगरेजों से प्राचीन समय में उनकी कई लड़ाइयें हो चुकीं पर अब जब से मेल हो गया है तो वे अपनी ओर से उसे तोड़ने का कोई कारण कभी नहीं देते, इसी प्रकार भारत सरकार भी उनके भावों की कद्र करती हुई उनको सब तरह से सन्तुष्ट और शान्त रखने की बराबर चेष्टा रखती है। यही कारण है कि दोनों सरकारों का सम्बन्ध प्रेम और सद्भाव तथा मित्रता का है—अस्तु।

यहां के अंगरेज रेजीजेन्ट मिस्टर ग्रिफिथ अपने दफ्तर में बैठे हुए हैं। उनके बगल में खड़ा उनका क्लर्क कुछ कागजात उन्हें समझा रहा है जिन्हें वे मनोयोग के साथ देख रहे हैं। सामने की तरफ उत्तरी हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा नकशा टंगा हुआ है। कुछ दूर हट कर कमरे की खिड़की के सामने दीवार से लगे टेबुल के पास बैठा एक टाइपिस्ट कुछ टाइप कर रहा है।

इसी समय एक नौजवान ने उस कमरे में प्रवेश किया और मिस्टर ग्रिफिथ को सलाम कर उनके टेबुल के पास आ खड़ा हुआ। ग्रिफिथ ने उसे देखते ही सब क्लर्कों को वहां से चले जाने का इशारा किया और तब नौजवान को बैठने को कह कर पूछा, "कहो क्या हुआ?"

इस नौजवान का नाम रतनसिंह था और यह मिस्टर ग्रिफिथ का बहुत ही प्यारा और विश्वासी मददगार था। एक तरह पर यह उनका मातहत-अफसर भी था और उनकी गैरहाजिरी में कई बार उनका कार्य-भार गैर सरकारी तौर पर सम्हाल चुका था। इसमें कोई शक नहीं कि रतनसिंह अगर हिन्दुस्तानी न होकर गोरे चमड़े वाला होता तो अभी तक किसी रियासत का रेजीडेन्ट या एजेन्ट बन चुका होता। खैर यह सब जो कुछ हो, पर मिस्टर ग्रिफिथ का यह बहुत ही विश्वासपात्र नौजवान था जैसा कि हमने कहा।

रतनसिंह के बैठते ही ग्रिफिथ ने पुनः पूछा, "कहो कुछ सफलता मिली?"

रतन ने सिर हिला कर कहा, "जी बहुत कम, एक दम नहीं के बराबर।"

ग्रिफिथ०। तो क्या जो हम लोगों ने सुना वह खबर सही है!

रतन०। अब तो मुझे भी यही शक होता है। अगर पूरी पूरी नहीं तो कुछ सचाई इस खबर में जरूर है कि रक्त-मंडल ने रियासत नैपाल पर किसी तरह का ऐसा दबाव डाल दिया है कि वह अब उसके मामले में हमारी सहायता करने को अधिक उत्सुक नहीं रह गई है।

ग्रिफिथ०। अच्छा क्या क्या हुआ मुझसे खुलासा कहो।

रतन०। यहां से जाकर मैं पहिले तो सरदार गोपीसिंह के घर पहुंचा। उनसे दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि यद्यपि उन्होंने कई तरफ अपने जासूस दौड़ाए हैं मगर कहीं से भी अभी तक उस गुब्बारे के गिरने की खबर नहीं आई है और न कहीं से कासग्रेव की ही कोई खबर लगी है।

ग्रिफिथ०। उनकी बातचीत से तुम्हें क्या अटकल लगा! क्या वह गलत कह रहे हैं या उन्हें सचमुच ही अब तक कोई खबर नहीं लगी है?

रतन०। जी उनकी आकृति से तो मुझे यह नहीं गुमान हुआ कि वे झूठ बोल रहे हों। कोई खबर छिपा रहे हों, ऐसा भी नहीं भास हुआ। मेरी समझ में तो उन्हें अभी तक इस बारे में कोई खबर नहीं लगी हैं। मेरे सामने ही उन्होंने कई जगह टेलीफोन भी किया मगर सब जगह से 'नहीं' में ही जवाब पाया।

ग्रिफिथ०। ताज्जुब की बात है, आज कई दिन हो गये और अभी तक न गुब्बारा ही पकड़ा गया और न कासग्रेव की ही कोई खबर लगी—आखिर इसका सबब क्या है?

रतन०। कई सबब हो सकते हैं। या तो गुब्बारा किसी ऐसे खड्ड में गिर पड़ा जहां से उसके सवार के छुड़ाने की फिक्र में कासग्रेव ने भी जान से हाथ धोया हो, अथवा कहीं ऐसी बीहड़ जगह में गिरा जहां कोसों तक आबादी न हो, वहां से खबर आने में बहुत देर लग सकती है, और नहीं तो यह भी हो सकता है कि शायद वे दोनों ही—गुब्बारे का आदमी और कासग्रेव, रक्त-मंडल वालों के हाथ पड़ गये हों।

ग्रिफिथ०। हां बेशक यह हो सकता है, खैर तब तुमने क्या किया?

रतन०। मैंने सरदार गोपीसिंह को बहुत ताकीद की कि जैसे ही दोनों मे से किसी की कुछ भी खबर लगे हम लोगों को यहां सूचना दे दी जाय और उन्होंने इसका वादा किया कि जरा भी सुनगुन पाते ही पूरे

हाल की खबर देंगे। इसके बाद मैं महाराजा साहब के महल में गया। स्वयं तो वे महाराजाधिराज के हुजूर में गये हुए थे मगर अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को मेरे बारे में समझा गये थे। उनसे बहुत देर तक मेरी बातचीत होती रही मगर जो कुछ सार निकला वह यही था कि हमलोगों को इस मामले में बिल्कुल स्वतन्त्रता दे देने को महाराजा साहब तैयार नहीं हैं।

ग्रिफिथ०। (चिन्ता के साथ) आखिर वे कहते क्या हैं? जब इस बात का निश्चय हो गया कि रक्त-मंडल ने अपना एक अड्डा इस रियासत नैपाल में ही, और सो भी काठमान्डू के एक दम पास में, बनाया हुआ है, तब भी उसका पता लगाने में हमारी मदद न करने के माने तो यही हैं कि वे हमारे साथ दोस्ती का हक अदा नहीं कर रहे हैं?

रतन०। जी सो बात नहीं है। उनका कहना यह है कि हम लोग खुद अपने आदमी या सिपाही वगैरह ला कर यकायक कोई कार्रवाई न करें, नियमबद्ध रूप से काम करें, अर्थात् भारत सरकार उनकी सरकार को यह खबर दे कि रक्त-मंडल ने इस तरह पर फलां जगह में अपना अड्डा कायम किया हुआ है और वहीं से भारत में उत्पात मचाया है। तब वे अपने आदमियों द्वारा इस बात की जांच करावेंगे और अगर उनका पता लगा तो उन्हें गिरफ्तार करके हम लोगों के सुपुर्द कर देंगे। यदि हम लोग चाहें तो अपने दो चार आदमी उनकी मदद और निशान के लिए दे सकते हैं मगर कोई फौज फर्रा या मजबूत गिरोह इस काम के वास्ते नहीं भेज सकते। इसके लिए वे अपनी सन्धि की शर्तों का हवाला देते हैं और कहते हैं कि उसके बाहर न तो वे स्वयम् जायेंगे और न हम लोगों का जाना पसन्द करेंगे।

ग्रिफिथ०। बेशक जो सन्धि हमलोगों से उनसे हुई भई है उसकी एक शर्त यह है कि अगर ब्रिटिश सरकार का कोई दुश्मन चोर डाकू या बागी रियासत नेपाल में आ जाय तो वे उसे गिरफ्तार करके हमारे सुपुर्द करेंगे और इसी तरह अगर उनका ऐसा ही कोई आदमी हमारे देश में

आवे तो हम उसे गिरफ्तार करके उनके हवाले करेंगे, मगर इस मौके पर अगर सन्धिपत्रों और नियमों के अक्षरों के अनुसार काम किया जायगा तो कुछ भी न होगा। जिस रक्त-मंडल का हमारे बड़े बड़े जासूस कुछ पता न लगा सके उसका उजड्ड नैपाली सिपाही पता लगा लेंगे ऐसी आशा मुझे तो नहीं होती।

रतन०। बेशक यह तो सही है, मगर वे लोग अपनी बात पर अड़े हुए हैं। हां ठीक ख्याल आया, एक बात और भी है।

ग्रिफिथ०। वह क्या ?

रतन०। जिस किले के बारे में हम लोगों को खबर लगी है कि उसमें रक्त-मंडल का अड्डा है उसके बारे में भी एक विचित्र रहस्य है। पुराने कागजों से पता लगता है कि वह जमीन वास्तव में नैपाल सरकार के आधीन हुई नहीं बल्कि एक बिल्कुल स्वतन्त्र जमीन का टुकड़ा है जिसका मालिक एक नैपाली खानदान होते हुई भी अपने निजी हक में महाराजा के अधिकार रखता है और उस किले तथा उसके आस पास की करीब दो सौ वर्ग मील जमीन का स्वतन्त्र अधिपति है।

ग्रिफिथ०। अच्छा ! यह दूसरी मुश्किल है और इसके आधार पर हम लोगों के काम में बाधा डालने का एक और बढ़िया बहाना निकल सकता है।

रतन०। बेशक, मगर जो दो एक कागज मुझे दिखायें गये उनसे साफ जाहिर है कि यह बात है बिल्कुल ठीक।

ग्रिफिथ०। क्या बात ठीक है ? यानी नैपाल सरकार का उस भूमि पर कोई अधिकार ही नहीं है जिस पर रक्त-मंडल का किला है !

रतन०। जी हां, और वह वास्तव में एक बिल्कुल स्वतंत्र रियासत है।

ग्रिफिथ०। तौ भी वह नैपाल के अन्तर्गत तो है ही ?

रतन०। जी नहीं, ऐसा भी नहीं है, एक पुराना सन्धि-पत्र मुझे दिखाया गया जो कभी उस किले के मालिक और नैपाल सरकार के बीच में एक दम स्वाधीन और बराबरी के दर्जे पर लिखा गया था। इधर पचीसों

बरसों से उस जगह का दावेदार कोई न होने के कारण वह जमीन और किला लावारिसों की तरह पड़ा हुआ था और इसीलिए नैपाल सरकार उसे अपनी सम्पत्ति समझने लगी थी मगर अब सुनने में आया है कि उसका कोई हकदार पैदा हो गया है कि जिसने नैपाल सरकार से वह जमीन लेने और उसका मालिक करार दिए जाने की दरख्वास्त की है। उस दरख्वास्त पर ही ये सब पुराने कागजात ढूंढ़ कर निकाले गये हैं।

ग्रिफिथ०। यह एक और बखेड़ा पैदा हुआ!

रतन०। जी बखेड़ा तो जरूर है मगर इससे हमलोगों का कुछ मतलब भी सिद्ध हो सकता है।

ग्रिफिथ०। सो कैसे?

रतन०। जब वह जगह नैपाल की नहीं एक तीसरे ही और स्वतन्त्र व्यक्ति की है तो हमारी गवर्नमेन्ट को अख्तियार है कि उस पर खुद हमला करके उसे अपने काबू में करे या जो चाहे सो करे। नैपाल सरकार को उसके बारे में बोलने का हक ही कितना है!

ग्रिफिथ०। (कुछ देर तक इस बात पर गौर करके और तब जोर से टेबुल पर हाथ मार कर) बेशक! यह तो तुमने खूब दूर की बात सोची! ऐसा जरूर हो सकता है!!

रतन०। जी हां और अगर नैपाल सरकार सिर्फ अपनी जमीन पर से हमारी फौज को गुजर जाने की इजाजत दे दे, और ऐसा होना कोई मुश्किल बात नहीं है, तो हम लोग बेखटके जाकर उस किले को घेर ले सकते हैं।

ग्रिफिथ०। जरूर जरूर, अच्छा तो तुमने इसके बारे में उन लोगों से कुछ बातचीत की?

रतन०। जी नहीं, मैं इस बात को बिल्कुल पचा ही गया। उनके प्राइवेट सेक्रेटरी के मुंह से धोखे में यह बात निकल पड़ी और मैं इसे अपने मतलब की समझ कर जो कुछ जान सका उतना ही जान कर चुपका

हो रहा, क्योंकि मैंने सोचा कि अगर काठमाण्डू वाले अड्डे की फिक्र छोड़ हम लोग सीधे इस किले पर ही हमला करें तो मामला तुरत ही तय हो जायगा। अब और सभी बातें दरियाफ्त करके तथा सोच विचार करके ही इस सम्बन्ध में कुछ निश्चय करना उचित होगा।

ग्रिफिथ०। बेशक ! तुम इस बारे में ज्यादा से ज्यादा जो कुछ जान सको जानने की कोशिश करो, इससे हमलोगों का काम होने की संभावना है।

रतन०। जो हुक्म, लेकिन अगर आप एक दफे खुद यहां के महाराजा साहब से मिलें तो शायद कुछ ज्यादा हाल मालूम हो।

ग्रिफिथ०। मैं बहुत जल्द उनसे मिलूंगा, मैं सिर्फ उस खलीते की राह देख रहा हूं जो बहुत जल्द यहां पहुंचने वाला है और जिसे वे लोग ला रहे हैं जिन को रक्त-मंडल के उस किले का पता लगाने और उस सम्बन्ध में पूरी कार्रवाई करने का भार सौंप कर हमारे बड़े लाट साहब ने भेजा है।

रतन०। मगर उन्हें तो आज सुबह ही पहुंच जाना चाहिये था? क्या अभी तक वे लोग आये नहीं?

ग्रिफिथ०। नहीं मगर अब आते ही होंगे।

रतन०। वह दल किसके चार्ज में है?

ग्रिफिथ०। किस्टर केमिल नामक एक सज्जन के चार्ज में—मगर उसका असली और बड़ा हिस्सा रक्सौल में है जहां बहुत बड़ा इन्तजाम रक्त-मंडल का मुकाबला करने के लिये किया गया है और उस दल का मुखिया एक जनरल बनाया गया है जो केमिल साहब के साथ साथ काम करेगा।

रतन०। इस वार हमारी सरकार इस बात पर तुली दिखाई देती है कि जैसे भी हो इस मामले को तय करके रक्त-मंडल का हेसनेस कर हो डाला जाय।

ग्रिफिथ०। रक्त-मंडल ने बखेड़ा भी क्या कम मचाया है! आज

तक किसी विद्रोही दल ने किसी देश की किसी सरकार को इतना परेशान नहीं किया जितना हमलोगों को इसने किया है। इसका फैलावा भी इतनी दूर दूर तक फैला हुआ है कि हाल सुन कर आश्चर्य होता है। मुजफ्फरा-वाद रियासत वाली खबर तो तुमने सुनी ही होगी ?

रतन०। नहीं नहीं, वहां क्या हुआ ?

ग्रिफिथ०। वहां के नौजवान नवाब का रक्त मंडल ने इसलिये खून कर दिया कि उसने हमारे बड़े लाट का स्वागत करना चाहा था।

रतन०। अरे, खून कर डाला !

ग्रिफिथ०। हां, मालूम हुआ है कि रक्त-मंडल ने एक चीठी, जिसे वह अपना फरमान कहता है, समस्त देशी रियासतों के पास भेजी है जिसमें यह लिखा है कि कोई रियासत किसी विदेशी को अपनी भूमि में आने या रहने न दे, किसी को किसी मद में कोई रुपया न दे और न उसके किसी कर्मचारी का स्वागत आदि ही करे।

रतन०। ओफ ओह, यहां तक उनकी हिम्मत बढ़ गई है ! मगर अवश्य ही इस फरमान का कोई असर नहीं पड़ सकता !!

ग्रिफिथ०। कहां खयाल है तुम्हारा ! मुजफ्फराबाद के नवाब के मरते ही दक्षिण की जिन जिन रियासतों में बड़े लाट जाने वाले थे उन सभों ने उनका स्वागत करने से साफ इनकार कर दिया और स्पष्ट कह दिया कि जब तक रक्त-मंडल दबा नहीं दिया जाता तब तक हम लोग अपनी जान पर खेल कर उसकी इच्छा के बखिलाफ कुछ भी करने को स्वेच्छा पूर्वक तैयार न होंगे। इसी सबब से बड़े लाट को अपना दक्षिण का दौरा रद कर देना पड़ा।

रतन०। वाह वाह, इसके माने तो यह कि इस समय हिन्दुस्तान का राजा मानों रक्त-मंडल ही हो गया है ! मगर क्या यह संभव नहीं है कि इसी तरह की कोई धमकी की चीठी रक्त-मंडल ने नैपाल रियासत को भी भेजी हो जिससे इन लोगों का रुख यकायक पलट गया, नहीं तो पहिले

तो ये लोग सब तरह से हमारी मदद करने को तैयार थे।

ग्रिफिथ०। मैं समझता हूं यही बात है, और हमारी सरकार भी इस बात को समझती है, तभी तो हम लोगों को यह आदेश मिला है कि नैपाल सरकार खुशी और रजामंदी से जो कुछ करने दे वहीं तक करो, जरा भी किसी तरह की जोर जबर्दस्ती मत करो और धमकी देने या डराने धमकाने का तो नाम मत लो।

रतन०। शायद इसलिए कि इस वक्त अगर नैपाल रियासत भी विगड़ उठी तो भारत सरकार भी परेशानी में पड़ेगी और अपना प्रेस्टिज किसी तरह भी कायम न रख सकेगी?

ग्रिफिथ०। और नहीं तो क्या? इसीलिए तो सब देशी रियासतों के साथ भी इतना मुलायम बर्ताव हा रहा है! इसा कारण तो धरमपूर के राजा को उसके इतनी बेहूदगी के साथ जवाब देने पर भी छोड़ दिया गया।

रतन०। मैंने सुना कि उसको अपनी तांवे की खानों के मामले में स्वतन्त्रता दे दी गई कि जिसे चाहे उसे ठेका दे?

ग्रिफिथ०। हाँ, पिम साहब की एक चीठी कल आई थी जिसमें सब हाल उन्होंने लिखा है। लेकिन रक्त-मंडल ने उस फौज का जो उस राजा को दबाने के लिए भेजी गई थी जिस तरह नाश किया उसे पढ़ कर तो मुझे भय होता है कि हमारी सरकार उन्हें जीत भी सकेगी या नहीं? ऐसे भयानक वम के गोले इन्होंने बनाए हैं कि सिर्फ छः आदमियों ने छः गोले फेंक कर हमारी पूरी फौज का नाम निशान मिटा दिया!

रतन०। मैंने सुना है कि उन्होंने 'मृत्यु-किरण' नाम की कोई किरण बनाई है जिससे वे कोसों दूर पर के आदमियों को मार सकते हैं। यह भी सुना है कि उस मृत्यु-किरण को किसी तरह उन्होंने शीशे के गोलों में भरा है और उनसे बम का काम लेते हैं। अगर यह खबर सच है तो उन पर फतह पाना बहुत मुश्किल होगा।

मिस्टर ग्रिफिथ इसके जवाब में कुछ कहना चाहते थे कि इसी समय

खिड़की की राह उनकी नजर बाहर जा पड़ी जहां कुछ देख वे रुक गए और तब खड़े होकर ध्यान से देखने लगे। रतनसिंह ने भी उस तरफ देखा और कहा, "ओहो, मालूम होता है मिस्टर केमिल और उनका दल आ गया !"

× × × ×

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उसके कई दिन बाद दोपहर के समय मिस्टर ग्रिफिथ और मिस्टर केमिल नैपाल रेजीडेन्सी के एक कमरे में बैठे सिगार का धूआं उड़ाते हुए कुछ बातचीत कर रहे हैं। इस समय इन दोनों ही के चेहरे से हंसी और प्रसन्नता जाहिर हो रही है जिससे जान पड़ता है कि इन्हें अपने काम में कुछ सफलता मिली है। आइए हम लोग भी पास चल कर सुनें कि ये दोनों क्या बातें कर रहे हैं, शायद इनकी बातचीत से इनकी प्रसन्नता का कुछ कारण ज्ञात हो सके।

ग्रिफिथ०। जो कुछ भी हो इसमें तो कोई शक नहीं कि हमलोगों की डिप्लोमेसी काम कर गई।

केमिल०। बेशक, सच तो यह है कि आप इन देशी रजवाड़ों की नाड़ी खूब पहिचानते हैं। जो काम और किसी भी तरह से हो न सकता था वह जरा सी खुशामद और चापलूसी ने कर डाला।

ग्रिफिथ०। बात्त यह है कि इस देश के लोग घमन्डी बड़े भारी होते हैं। चाहे करनी करतूत कुछ भो न हो पर अपने को एक दम दुनिया का शाहंशाह ही समझते हैं, और इसी से इनका नाश भी होता है।

केमिल०। (हँस कर) आपके जरा सा यह कहने ही ने कि—'इस वक्त आप ही हमारी सरकार के आखिरी आशा भरोसा रह गए हैं, अगर आप इस वक्त हमारा हाथ नहीं पकड़ेंगे तो रक्त-मंडल वाले हमें एक दम भारत के बाहर ही करके दम लेंगे' उनके घमण्ड के पहिये की धुरी में मक्खन का काम किया। उसकी चरचराहट बिल्कुल बन्द हो गई और वे चट आपकी सहायता करने को तैयार हो गए।

ग्रिफिथ० । (मुस्कुरा कर) क्या किया जाय, लाचारी ने मुझे वैसा करने पर मजबूर किया । मैंने देखा कि अब अगर इस वक्त मैं कुछ दबंगताई दिखाता हूं तो मामला उलटता है । हमारे देशी रजवाड़े डर के मारे कुछ मदद कर ही नहीं रहे हैं, अगर नैपाल सरकार भी कहीं पलट कर दुश्मनों की तरफ जा मिली तो फिर बहुत मुश्किल हो जायगी ।

केमिल० । जी हां आपने बहुत ठीक रुख पकड़ा और तभी काम भी हुआ, नहीं तो महाराज साहब तो बिल्कुल हमारे बर्खिलाफ ही हुए भए दिखाई पड़ते थे । मालूम होता है उनके ऊपर रक्त-मंडल ने कोई चक्र चला दिया था ।

ग्रिफिथ० । बेशक यही बात थी । उड़ती हुई यह खबर मैंने सुनी है कि रक्त-मंडल का मुखिया यहां के शाही खानदान का ही कोई आदमी है और यहां के महाराजाधिराज से उसकी किसी तरह की रिश्तेदारी है ।

केमिल० । ऐसा ! रक्त-मंडल का मुखिया कौन ? नगेन्द्रनरसिंह ?

ग्रिफिथ० । हां शायद ऐसा ही कुछ नाम है । मैंने किसी से सुना था कि उसके पूर्व-पुरुषों को जो नैपाल के शाही खानदान की ही एक शाखा के थे किसी समय काठमान्डू से कुछ ही हट कर बहुत सी जमीन दे दी गई थी जिस पर उन लोगों ने एक किला बनाया और स्वतंत्रता के साथ वहीं रहना शुरू किया था । मगर कुछ समय बाद न जाने क्यों वे लोग वहां से भाग गये और तब से वह स्थान उजाड़ ही पड़ा रहता था । अब इन कम्बख्तों ने उस पर कब्जा कर वहां अपने पिशाची यन्त्र बैठाए हैं और दुनिया में तहलका मचा दिया है !

ग्रिफिथ० । मैं इसका पूरा पूरा हाल जानने की कोशिश कर रहा हूं, उम्मीद है दस पांच दिन में और भी कुछ मालूम हो जायगा । खैर यह सब जो कुछ हो इस समय तो नैपाल सरकार से उस किले पर हमला करने की आज्ञा पाकर हमारा काम बन गया है, पीछे जो होगा देखा जायगा ।

केमिल० । सिर्फ यही दो शर्तें बुरी हैं कि हमलोगों के साथ नैपाल सरकार के आदमी रहेंगे और उस किले में से जो कोई भी पकड़ा जायगा या जो कुछ भी माल बरामद होगा वह सब पहिले काठमान्डू ले जाया जायगा, वहीं उसके ब रे में निश्चय होगा कि वह कहां जाय या क्या हो।

ग्रिफिथ० । (मुस्कुरा कर) अरे यह सब शर्तें तो वनती ही टूटती रहती हैं केमिल साहब ! एक बार उस किले पर कब्जा होकर रक्त-मंडल पर काबू तो होने दीजिए, फिर कौन शर्त करता है और कौन कराता है ! जिसका डर है वही जब न रहेगा तो फिर क्या है ?

केमिल साहब भी इसके जवाब में मुस्कुरा उठे और कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय रतनसिंह ने तेजी के साथ उस कमरे में प्रवेश किया। उसके चेहरे से उतावली मगर साथ ही साथ प्रसन्नता प्रगट हो रही थी और वह कोई शुभ समाचार ग्रिफिथ साहब को सुनाने को व्यग्र जान पड़ता था। ग्रिफिथ ने उसकी तरफ देख कौतूहल से पूछा, "क्या है रतनसिंह ?"

रतन० । मुझे एक बड़ी अच्छी खबर लगी है।

ग्रिफिथ । क्या ?

रतन० । अभी अभी मालूम हुआ है कि वह गुब्बारा और उस पर का सवार गोना पहाड़ी के पास कहीं गिरा था और किसी नैपाली अफसर ने उसे बेहोश पा अपने डेरे में ला उसका इलाज शुरू किया है। जो डाक्टर उसका इलाज करने काठमान्डू से गया था उसकी जुबानी यह पता लगा है और सुनते ही दौड़ा-दौड़ा यहां आया हूं।

इस खबर ने ग्रिफिथ को और उनसे भी कहीं ज्यादा केमिल साहब को प्रसन्न कर दिया। दोनों आदमी उछल पड़े और रतनसिंह से तरह-तरह के सवाल करने लगे। उसे जो कुछ मालूम था वह उसने कह सुनाया और अब इस वात पर विचार होने लगा कि क्या करना चाहिए।

परन्तु वाद विवाद में समय नष्ट करने की फुर्सत ही किसे थी ? बहुत

जल्दी यह तय कर लिया गया कि मिस्टर केमिल अपने साथ आये हुए कुल आदमी, रेजीडेन्सी के पचीस सिपाही, और महाराज नैपाल से यदि कुछ मदद मिले तो उसे भी लेकर अभी वह जगह घेर लें जहां उस गुब्बारे वाले सवार के गिरने की खबर लगी है। ग्रिफिथ ने महाराज नैपाल को फोन करके यह समाचार सुनाया और उन्होंने थोड़े ही विचार के बाद सौ सवार इनकी मदद के लिये देना कबूल कर लिया।

नतीजा यह कि लगभग आधे घन्टे के बाद ही केमिल साहब अपने दल-बल के साथ रेजीडेन्सी से निकल कर गोना पहाड़ी की तरफ रवाना हो गए जो यहां से ज्यादा दूर न थी। उनके साथ रतनसिंह भी था और लगभग आधा रास्ता तय करने बाद नैपाल सरकार के वे सौ सवार भी उनके दल में आ मिले जिनको केमिल साहब की आज्ञानुसार काम करने का हुक्म मिला था।

मगर हमारे पाठक जानते हैं कि इतनी दौड़ धूप सब बेकार हुई। ये लोग जिस समय नरेन्द्रसिंह के डेरे पर पहुंचे उस समय चिड़िया उड़ गई थी और अपने एक जासूस द्वारा इनके आने की खबर पा नगेन्द्रनरसिंह वहां से चम्पत हो गये थे।

[४]

भयानक पहाड़ों और जंगलों को लांघते हुए दो सवार तेजी के साथ उस किले की तरफ बढ़ रहे हैं जो रक्त-मंडल का मुख्य अड्डा है। हमारे पाठक इन दोनों ही को जानते हैं क्योंकि ये दोनों नगेन्द्रनरसिंह और उनका वही साथी है जिसने सिपाहियों के आने की खबर उन्हें दी थी।

जख्मी और कमजोर होने पर भी नगेन्द्रनरसिंह अपने भरसक पूरी तेजी के साथ जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण तो दुश्मनों के घेरे के बाहर निकल जाने की इच्छा ही थी पर कामिनीदेवी की 'हां' ने भी इसमें बहुत बड़ी मदद पहुंचाई थी। तरह तरह के खयाल उनके दिमाग में चक्कर खा रहे थे मगर सभी को दबा कर इस समय कामिनीदेवी

का भोला मुंह और उसकी लज्जावनत आंखें उनके मन पर अधिकार जमाए हुई हैं।

नरेन्द्र के डेरे से लगभग सात आठ कोस के ये लोग चले आये थे मगर अभी भी इन्हें अपना पीछा किये जाने का डर बना ही हुआ था क्योंकि नगेन्द्र को यह खबर भी लग गई थी कि उनका पुराना दुश्मन केमिल मिट्टी सूंघता हुआ यहां तक पहुंच गया है। केमिल की हिम्मत बुद्धिमानी और अध्यवसाय से भली भांति परिचित होने के कारण वे बखूबी समझते थे कि वह सहज में उनका पिण्ड छोड़ने वाला जीव नहीं है, अस्तु वे इस समय मन ही मन सोच रहे थे कि क्या वे उस चालीस पचास मील के फासले को घोड़े की पीठ पर तय कर सकेंगे जो अब भी उनमें और उनके किले के बीच में है!

एक छोटे मोटे मैदान में पहुंच कर नगेन्द्रनरसिंह ने बाग खींची और सुस्ताने के लिये रुक गए। उनके साथी ने भी घोड़ा रोका और इनकी तरफ देख के पूछा, "क्या उतरियेगा?" नगेन्द्र बोले, "हां, दस मिनट के लिये। कुछ थकावट मालूम होती है।"

नगेन्द्र घोड़े से उतरने का विचार कर ही रहे थे कि यकायक किसी तरह की आवाज ने उनका ध्यान आकर्षित किया। एक तरह की सनसनाहट की और गूंजने वाली मगर बहुत ही हलकी आवाज कहीं से आती हुई सुनाई पड़ रही थी। नगेन्द्र उसे सुन घोड़े से उतरने का विचार छोड़ चारो तरफ गौर से देखने लगे और उनका साथी भी इधर उधर गौर करने लगा। आवाज कुछ तेज होने लगी और थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि वह आस्मान की तरफ से आ रही है। अगर यह आवाज तेज और भारी होती तो नगेन्द्र समझ जाते कि यह किसी हवाई जहाज की आवाज है परन्तु वैसा न होकर यह बहुत धीमी और कुछ कुछ उस तरह की थी जैसी रात के समय कई तेज चिड़ियों के एक साथ उड़ते जाने से पैदा होती है। अन्दाज के बल पर यह बताना भी कठिन था कि यह आवाज कितनी दूर से आ रही है।

परन्तु इसी समय एक दूसरी आवाज ने उनका ध्यान दूसरी तरफ खींचा। यह आवाज बिल्कुल दूसरे ही ढंग की थी और कुछ ही गौर ने उन्हें बता दिया कि यह बहुत से सवारों के सरपट चले आने की आवाज है जो यद्यपि अभी दूर हैं फिर भी तेजी से इधर ही को बढ़े आ रहे हैं। आंखों ने उसी समय कानों की मदद की और नगेन्द्र तथा उनके साथी ने देखा कि बाईं तरफ की पहाड़ी ढाल पर से तेजी के साथ उतरते हुए लगभग चालीस पचास सवार इन्हीं की तरफ सरपट चले आ रहे हैं। नगेन्द्र के साथी के मुंह पर भय का चिन्ह छा गया, वह घबड़ाहट के साथ बोला, "ये दुश्मनों के सिपाही हैं सरदार ! अब मुश्किल होगी, क्योंकि हमारा रास्ता वही था जिधर से ये लोग चले आ रहे हैं। खैर दाहिनी तरफ बढ़िए।" उसने अपने घोड़े का मुंह घुमाया और नगेन्द्र ने भी रुख मोड़ा। दोनों जितनी तेजी से उनके घोड़े उन्हें ले जा सकते थे उतनी तेजी से दाहिनी तरफ रवाना हुए जिधर थोड़ा मैदान पार करके एक ढालुईं पहाड़ी पड़ती थी।

मगर उनकी यह आशा भी टूट गई जब उन्होंने उस पहाड़ी की चोटी पर भी कुछ शकलें यकायक ही देखीं और समझ लिया कि उस तरफ से लगभग तीस पैंतीस के सवार सरपट उन्हीं की तरफ दौड़े चले आ रहे हैं।

अब नगेन्द्र को बचने की उम्मीद बहुत कम रह गई। उन्होंने घोड़ा रोका और अपने चारो तरफ देखा। कहीं कोई रास्ता ऐसा दिखाई नहीं पड़ता था जिधर से वे निकल जा सकते हों। उनके किले में जाने का रास्ता बाईं तरफ से था, सरहद की तरफ निकल जाने की राह दाहिनी तरफ को थी, और ये दोनों ही रास्ते घिर गए थे। पीछे लौटने से नरेन्द्र के डेरे और उनको गिरफ्तार करने के लिए आये हुए सवारों की मौजूदगी मिलती और सामने की तरफ एक भयानक खड्ड उनका रास्ता रोके पड़ा था। कहीं से बचाव की सूरत निकलती नहीं दिखाई पड़ती थी। दोनों तरफ के सवार तेजी से पास होते जा रहे थे।

नगेन्द्र के चेहरे से उनके दिल की परेशानी भले ही न प्रगट हो परन्तु उनके मन ने कह दिया, "अव तेरा वचना मुश्किल है !"

इसी समय नगेन्द्र के साथी ने अपने कपड़ों में हाथ डाल कर कोई चीज बाहर की और नगेन्द्र की तरफ वढ़ा कर कहा, "इसे सरदार आप अपने पास रखिए, अफसोस कि यह एक ही इस समय मेरे पास है !" यह चीज मृत्यु-किरण का वम था। नगेन्द्र ने हाथ वढ़ा कर उसे ले लिया और सोचने लगे, "दुश्मन के हाथ में पड़ जाने की वनिस्वत इस वम द्वारा अपनी जान आप ही दे देना क्या ज्यादा अच्छा नहीं होगा ?"

वास्तव में केमिल ने अपना काम वड़ी ही होशियारी से पूरा किया था। नरेन्द्र के डेरे के लिए रवाना होने के पहिले ही उन्होंने इस वात को सोच लिया था कि अगर किसी तरह उस आदमी को जो गुब्बारे से गिरा है, उनके आने को खवर लग गई तो वह जरूर अपने उस किले की तरफ ही भागेगा। अस्तु उसका रास्ता घेरने के लिए दो छोटी टुकड़ियां वे पहिले ही से उस तरफ रवाना कर आए थे और वे दोनों इसी समय और ऐसे बेमौके यहां पर पहुंची थीं कि हमारा बहादुर और हिम्मतवर सिपाही नगेन्द्रनरसिंह भी परेशान हो गया था।

[५]

धरमपुर के राजा गिरीशविक्रम, उनके सेनापति रौशनसिंह, और एक अजनबी को हम घोड़ों पर सवार पूरब की तरफ जाते देख रहे हैं। अजनबी का घोड़ा राजा साहव के घोड़े के साथ है और रौशनसिंह अदव के लिए अपने घोड़े को कुछ पीछे हटाए हुए हैं फिर भी बातचीत में कभी कभी दखल देते जाते हैं। इन लोगों का लक्ष्य एक छोटा मैदान है जिसे हरियाली ने एकदम ढंक कर सरसब्ज मखमली फर्श वना रक्खा है पर जो चारो तरफ से ऊंचे पेड़ों झाड़ियों और जंगलों से इस तरह ढंका हुआ है कि यहां से बहुत मुश्किल से दिखाई पड़ता है।

अजनवी ने न जाने क्या कहा जिसके जवाव में राजा गिरीशविक्रम

कुछ तुर्शी के साथ बोल उठे, "देखिए साहब, अब आप बार बार इस बात को मेरे सामने कह कर मेरा अपमान न करें ! मैं क्षत्रिय हूं, और क्षत्रियों की जबान एक होती है । जब मेरी मुसीबत में आपने मेरी मदद की और मैंने आपको सहायता देने का वचन दे दिया तो अब प्राण रहते मैं उस वचन से फिरूंगा नहीं । अंगरेज भले ही मुझे अपनी खानें क्या तमाम दुनिया की खानें जिसे चाहे दे देने का अधिकार दे दें, यही क्यों, वह मुझे भारत का सम्राट ही क्यों न बना दें, पर मैं अपने वचन से डिगने का नहीं, आपसे मैंने जो वादा किया है उसे मैं पूरा करूंगा ही । आप बार बार मुझे अपनी अवस्था पर पुनर्विचार करने को न कहें ।"

अजनबी ने यह सुन गर्व के साथ राजा की तरफ देखा और कहा, "मैं आपकी इस इच्छा की कदर करूंगा और अब आपसे कभी इस विषय में कुछ न कहूंगा । इस बार भी जो मैंने कहा वह सिर्फ इसलिए कि अब मेरे साथ चल कर जो काम आप करने वाले हैं वह आपको भारत सरकार के दुश्मनों की पंक्ति में पूर्ण रूप से बैठा देगा और फिर आप पीछे हटने के रास्ते को सदा के लिए बन्द पावेंगे ।"

राजा साहब ने कुछ दर्प से कहा, "मैं आपके आशय को पहिले ही समझ गया था और इसीलिये मैंने वह बात कही । साथ ही मैं इतना और कहे देता हूं । चूंकि मैं राजा हूं, दस बीस हजार मनुष्यों का स्वामी हूं, सौ दो सौ कोस जमीन का मालिक हूं, या कुछ धन का अधीश्वर हूं, इसी से आप यह न समझ लें कि मुझे सिर्फ चैन की वंशी बजाने का ही अधिकार है और मैं अपने देश की स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग लेने का कोई हक नहीं रखता । मेरे शरीर में भी गर्म खून बहता है, मेरा कलेजा भी उन अपमानों से जलता है जो इस अभागे देश पर विदेशियों द्वारा किए जा रहे हैं, मेरे शरीर को भी वे पराधीनता की वेड़ियां कष्ट पहुंचा रही हैं जो मेरी मातृ-भूमि के पवित्र शरीर को कसे हुए हैं । आप लोगों की तरह मैं भी अपने देश को स्वाधीन करने के प्रयत्न में कुछ भाग

लेना चाहता हूं। हो जो होना है, आवे जो आने को है, इस समय तो मैंने आप लोगों से हाथ मिला लिया है और दम रहते उसे छोड़ूंगा नहीं, आप लोग अगर चाहें तो भले ही अपना हाथ छुड़ा लें।"

अजनबी ने भावपूर्ण नेत्रों से महाराज की तरफ देखा। दोनों की चार आंखें हुईं। एक वीर हृदय ने दूसरे वीर हृदय की व्यथा को अनुभव किया। दोनों के नेत्र भर आए, फिर दोनों में इस विषय में कोई बातचीत न हुई।

लगभग घड़ी भर तक तीनों सवार तेजी से चलते रहे और इस बीच वे उस मैदान के किनारे पर आ पहुंचे जो इनका लक्ष्य था। जंगली हिस्सा पीछे छूट गया था और सामने लगभग पचास बिगहे का एक समथर मैदान नजर आ रहा था। तीनों आदमी इस मैदान में थोड़ा आगे बढ़ गए और तब उन्होंने अपने घोड़े रोके। राजा साहब ने इधर उधर देख कर कहा, "कहां, आपका हवाई जहाज तो कहीं दिखाई नहीं देता ?"

अजनबी ने कहा, "आप अभी उसे देखेंगे।" और तब जोर से किसी खास इशारे के साथ सीटी बजाई। जवाब में एक हलकी सीटी की आवाज कुछ दूर से आती हुई सुनाई पड़ी और थोड़ी ही देर बाद दूर के पेड़ों की झुरमुट के अन्दर से निकलता हुआ एक छोटा हवाई जहाज दिखाई पड़ा जिसे तीन चार आदमी खींच कर बाहर ला रहे थे। ये तीनों आदमी भी उसी तरफ को बढ़े और थोड़ी ही देर में उसके पास जा पहुंचे।

यह छोटा सा मगर खूबसूरत हवाई जहाज बिल्कुल एल्युमिनियम का बना हुआ था। इसमें तीन चार आदमियों के बैठने की जगह थी और पीछे की तरफ कुछ सामान भी रक्खा जा सकता था। इंजिन जो देखने में बहुत बड़ा नहीं मालूम होता था अकेला नहीं था बल्कि उनकी एक जोड़ी थी जो दायें बायें लगी हुई थी।

राजा साहब ने बड़े गौर से उस जहाज को चारो तरफ से घूम घूम कर देखा और कहा, "क्या मैं यह विश्वास कर लूं कि यह हवाई जहाज आप लोगों ने स्वयम् और उसी किले के ही अंदर बनाया है जिसमें हमलोग

चल रहे हैं ?" अजनबी ने हंस कर जवाब दिया, "हां, और केवल यही नहीं, इसमें के करीब नौ या दस बन कर तैयार है और एक नई मशीन जो हमलोग बैठा रहे हैं जब ठीक तरह से काम करने लगेगी तो हम लोग हर हफ्ते इसमें का एक बनाने लायक हो जायंगे।"

महाराज०। (ताज्जुब से) ऐसा ! मगर आप इनसे काम क्या लेंगे ?

अजनबी ने विच्चित्र ढंग से मुस्कुरा के कहा, "हमारा काम तो आप जानते ही हैं ! खैर अब आइए बैठिए, देर हो रही है।"

अजनबी ने महाराज को सहारा दे कर उस हवाई जहाज के अन्दर बैठाया और तब आप भी उनके बगल में बैठा ही चाहता था कि यकायक सरपट दौड़ते आने वाले एक सवार पर उसकी निगाह पड़ी जो बेतहाशा घोड़ा दौड़ाता हुआ चला आ रहा था। इस सवार को देखते ही अनजवी रुक गया।

वात की बात में वह सवार जिसका घोड़ा पसीनं से लथपथ हो रहा था इन सभों के पास ग्रा पहुंचा। अजनत्री ने ताज्जुब की निगाह उस पर डाली और कुछ पूछना चाहा मगर उसी समय सवार ने एक चीठी उसकी तरफ बढ़ाई और घोड़े पर से कूद पड़ा। उसका घोड़ा उसी समय जमीन पर गिर पड़ा।

न जाने उस चीठी में क्या लिखा हुआ था कि अजनबी उसे पढ़ते ही एक दम चौंक पड़ा, उसके चेहरे पर भय और घबराहट की छाया दौड़ गई और उसने कुछ बेचैनी के साथ उस सवार की तरफ देख कर पूछा, "क्या तुम वता सकते हो कि वे इस समय कहां पर होंगे ?"

अपने घोड़े की तरह वह सवार भी बिल्कुल वेदम हो कर जमीन पर बैठ गया था। इस सवाल के जवाव में उसने बड़ी कठिनता से पूर्व की तरफ हाथ उठा कर कहा, "किले के रास्ते पर, शायद डमरू पहाड़ी के पास कहीं।" और तब बदहवास हो गया।

अजनबी ने राजा साहब की तरफ देखा और कहा, "राजा साहब,

अफसोस है कि आज का कार्यक्रम हम लोगों को रद कर देना पड़ेगा। मुझे अभी यह जहाज लेकर एक बहुत जरूरी काम से जाना पड़ रहा है।"

राजा साहब ने पूछा, "आपकी बेचैनी और घबराहट बता रही है कि कोई बड़ी भारी मुसीबत आ गई है। अगर आप मुझे अपना अन्तरंग समझते हों तो कृपा कर कुछ बतला दीजिये कि क्या मामला है?"

अजनबी जरा देर के लिए हिचकिचाया, इसके बाद झुक कर उसने उनके कान में कहा, "हमलोगों के प्रधान मुखिया को दुश्मनों ने ऐसी जगह घेर लिया है जहां उनको और किसी तरह से मदद नहीं पहुंचाई जा सकती। मैं इसको लेकर उन्हें छुड़ाने के लिए जाना चाहता हूं।"

राजा साहब ने यह सुन आग्रह के साथ कहा, "अगर मेरे रहने से कोई हर्ज न पड़े तो मैं भी आपके साथ चलना चाहता हूँ।"

अजनबी ने सिर हिला कर कहा, "नहीं, यह बड़ी जोखिम का काम है, मुमकिन है कि हमलोगों में से कोई भी जिन्दा न बचे! जो कुछ भी हो, आखिर आप एक रियासत के मालिक हैं, मैं अपने साथ आपकी जान होम नहीं कर सकता!"

राजा साहब ने अपनी जगह पर मजबूती से बैठ कर कहा, "तब तो मैं अपनी इच्छा से कदापि न उतरूंगा! मुझे अपनी जान का जरा भी भय नहीं है। मेरे बाद रियासत किस तरह चलेगी इसकी जरा भी परवाह न रखते हुए भी मैं अपने भरसक उसका मुनासिब इन्तजाम कर चुका हूं। मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपने साथ रखिए। मैं देखना चाहता हूँ कि आपलोग किस तरह से काम करते हैं। जब मुझे आपके साथ होकर काम करना है तो आफतों से डरना मुझे दूर कर देना पड़ेगा।"

एक सायत के लिये उस अजनबी के चेहरे पर क्रोध का चिन्ह दौड़ गया मगर उसे दबा कर उसने कहा, "आप अभी समझे नहीं हैं कि कितनी बड़ी जोखिम का काम हमारे साथ रहने की इच्छा करके आप करने जा रहे हैं!"

राजा गिरीशविक्रम ने हंस कर कहा, "आप मुझे उठा कर जबर्दस्ती भले ही अपने एयरोप्लेन के नीचे गिरा दें मगर अपनी इच्छा से मैं उतरूंगा नहीं ! यह भी ख्याल रखिए कि जितना समय आप इस बहस में नष्ट कर रहे हैं उतने में आप अपने रास्ते पर बहुत कुछ बढ़ सकते थे।"

अजनबी ने कुछ कहना चाहा पर उसे रोक राजा ने अपने सेनापति रौशनसिंह की तरफ देख कर कहा, "कप्तान साहब, आप कल इसी समय तक यहां मेरी राह देखिएगा। अगर मैं तब तक यहां न आऊं तो समझ लीजिएगा कि अब इस लोक में नहीं हूं और तब मेरी वसीयत के मुताबिक इन्तजाम करिएगा।"

रौशनसिंह ने कुछ कहना चाहा मगर राजा साहब की कड़ी निगाह ने उन्हें चुप कर दिया। इसके बाद गिरीशविक्रम अजनबी की तरफ झुके और उसका हाथ पकड़ कर बोले, "अरे भाई, इतने स्वार्थी न बनो ! जन्मभूमि की सेवा करने का कुछ अधिकार अपने उन विचलित भाइयों को भी दो जिन्हें उनके दुर्भाग्य ने राजा बना दिया है !!"

उनके लहजे से कुछ ऐसी कातरता और दुःख प्रगट हो रहा था कि फिर अजनबी कुछ कहने की इच्छा न कर सका। "अपनी करनी के लिए मुझे दोष न दीजिएगा। सिर्फ इतना कह कर वह उछला और चलाने वाले की सीट पर जा बैठा।

भयानक शोर के साथ हवाई जहाज के पंखे घूमने लगे। हवाई जहाज आगे को घसका, कुछ तेज हुआ, थोड़ी देर तक जमीन पर हरिन की तरह दौड़ता रहा, दो चार उछालें मारीं, और तब एक चक्कर मारता आसमान की तरफ उठा।

इंजिन के कान फाड़ने वाले शब्द और हवा के झोकों में मुश्किल से अपने हवास सम्हालते हुए राजा साहब अपनी कुर्सी को पकड़ कर नीचे की तरफ देखने लगे। पृथ्वी क्षण क्षण में उनसे दूर हटती जा रही थी। नीचे के आदमी पल पल पर छोटे होते जा रहे थे।

हवाई जहाज सीधा हुआ, इसके इंजिनों की आवाज और तेज हुई, हवा के झोंके कुछ और बढ़े यद्यपि सामने की तरफ उसके लिए रोक लगी हुई थी, और तब शिकार पर गिरते हुए बाज की तेजी से वह छोटा हवाई जहाज पूरब की ओर झपटा।

[६]

नगेन्द्रनरसिंह ने अपने चारो तरफ देखा। दाहिने और बायें से दुश्मन बढ़े आ रहे थे, सामने गहरा खड्ड था, पीछे दुश्मन थे ही। किसी तरफ से बचाव की कोई सूरत नहीं दिखाई पड़ती थी।

फिर भी वहां खड़े रह कर सोच विचार में समय नष्ट करने की अपेक्षा बचाव का कुछ उद्योग करना, चाहे वह सफल नहीं ही हो, ज्यादे अच्छा था। उन्होंने अपने घोड़े का मुंह घुमाया और पीछे की तरफ, जिधर से वे आ रहे थे, लौटे। एड़ खाते ही जानदार घोड़ा हवा से बातें करने लगा, उनका साथी भी उनके पीछे पीछे रवाने हुआ।

अपने शिकार को आंखों के सामने देख पीछा करने वाले दोनों दलों के मुंह से प्रसन्नता की आवाजें निकलने लगीं और उन्होंने भी अपने घोड़े तेज किए। जिस समय दाहिनी और बाईं पहाड़ी से उतर कर सवारों के दोनों गरोह एक साथ हो गए उस समय नगेन्द्रनरसिंह से उनका फासला एक मील से अधिक न होगा। अब उन्हें अवश्य पकड़ लेंगे यह विश्वास सभी पीछा करने वालों के दिल में बैठ गया और उन्होंने अपने घोड़े उन आगे जाने वालों के पीछे सरपट छोड़ दिए।

नगेन्द्रनरसिंह भागे तो जाते थे मगर साथ ही साथ अपने इधर उधर और चारो तरफ इस निगाह से देखते भी जाते थे कि अगर कोई छिपने या किसी दूसरी तरफ निकल जाने की राह दिखाई पड़े तो उधर ही को घूम जायं, मगर उस पहाड़ी बीहड़ जगह में सिवाय उस पतली पगडण्डी

के जिस पर से वे जा रहे थे और किसी तरफ जाने का कोई रास्ता कहीं था ही नहीं।

यकायक नगेन्द्रनरसिंह के साथी के मुंह से एक आवाज निकल गई जिसे सुन उन्होंने ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखा। उसने सामने की तरफ इशारा किया और उन्होंने देखा कि लगभग तीन मील आगे एक पहाड़ की ढाल उतरते हुए करीब पचास सवार इसी तरफ को आ रहे हैं। उन्हें देखते ही नगेन्द्र अपनी हालत अच्छी तरह समझ गए। अब वे आगे पीछे और अगल बगल सभी तरफ से घिर गए थे, और एक ऐसी जगह में जहां से कहीं किसी तरफ को निकल जाने का रास्ता ही नहीं था। उन्होंने अपने पीछे की तरफ देखा। पीछे के सवार भी मील भर से ज्यादा के फ़ासले पर न होंगे और बराबर झपटे ही चले आ रहे थे।

नगेन्द्रनरसिंह ने अपना घोड़ा रोक लिया और चारो तरफ देखा। निकल जाने की कोई राह कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी। उन्होंने एक बार ऊपर की तरफ देखा और अपने भगवान को स्मरण किया, इसके बाद वह हाथ जिसमें मृत्यु-किरण का बम था ऊंचा किया।

परन्तु अचानक ही उनके कान में गूंजने वाली एक आवाज ने पड़ कर उन्हें चौंका दिया और उन्होंने ताज्जुब के साथ गर्दन उठा कर देखा। पश्चिम तरफ के ऊंचे पहाड़ों की चोटियों को पार करके आता हुआ एक छोटा हवाई जहाज उन्हें दिखाई पड़ा और वे अपना हाथ रोक कर सोचने लगे कि यह जहाज हमारा है या दुश्मनों का ?

परन्तु उनका यह सन्देह शीघ्र ही दूर हो गया जब उन्होंने उस जहाज पर से एक आकाशबान छूटता हुआ देखा जो ऊपर की तरफ जा कर फूट गया और उसमें से हरे रंग का बहुत सा धूआं निकल कर चारो तरफ फैल गया जिसके बीच में चार चमकते हुए सितारे दिखाई पड़ रहे थे।

नगेन्द्र के साथी ने खुशी भरी आवाज में कहा, "मालूम होता है हम लोग बच जायंगे, यह हमारा ही वायुयान है !"

नगेन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वे यह सोच रहे थे कि क्या उस जहाज के यहां तक पहुंचने के पहिले ही ये सब सवार यहां उनके पास पहुंच कर उन्हें गिरफ्तार न कर लेंगे ?

तीर की तेजी से हवाई जहाज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ झपटा। पलक झपकते में वह उनके सर के ऊपर आ पहुंचा मगर वहां रुका नहीं बल्कि उन सिपाहियों की तरफ बढ़ा जो उनके पीछे की तरफ से हमला करते हुए चले आ रहे थे और जिनका फासला अब नगेन्द्रनरसिंह से आध मील से भी कम ही रह गया होगा। चक्कर काटता हुआ वह उनके सर पर पहुंचा। उन सवारों ने उसकी तरफ अपनी राइफिलें ऊंची कीं मगर इसके पहिले कि वे लोग कुछ कर सकें दो शीशे के गेंद उस हवाई जहाज पर से गिरते दिखाई पड़े। सनसनाते हुए ये गेंद नीचे आये। एक तो सामने के खड्ड में जा गिरा मगर दूसरा ठीक उस गरोह के बीच में पहुंच कर फटा। वहां पर हरी बिजली सी चमक गई और दूसरी सायत में लगभग पचीस गज के घेरे के भीतर के सब सवार गायब थे, इस तरह पर गायब कि सिवाय कुछ अधजले हड्डी और कपड़े के टुकड़ों के उनका कहीं नाम निशान भी बाकी न रह गया था। बाकी के सिपाहियों में बेचैनी और भगदड़ मच गई मगर उनका भी अन्त समय आ गया था। दो बम और उस हवाई जहाज पर से आये। इनमें से भी एक बेकार गया पर दूसरा उन बचे हुए सिपाहियों पर आ गिरा। इसने अपना भयानक काम इस सफाई से पूरा किया कि मुश्किल से दस बारह सवार जीते बचे। जिस समय एक तीसरी जोड़ी बमों की गिरती दिखाई पड़ी उस समय तो बाकी बचे सवारों ने एक दम ही पीठ दिखा दी और तेजी से पीछे की तरफ भागे। इधर का मैदान साफ था।

दूसरी तरफ से हमला करते हुए आने वाले सिपाही इस हवाई जहाज को देखते ही ठिठक गये थे और जिस समय उन्होंने उस पर से गिरने वाले बमों की भयानक कारंवाई देखी उनके कलेजे दहल उठे अपने। अफसरों के बढ़ावा देने वाले लफ्जों की बदौलत वे पीछे भागने से तो रुके

रहे लेकिन आगे की तरफ बढ़ने से भी उन्होंने इनकार कर दिया, पर जिस समय उन्होंने उस हवाई जहाज को सामने वाली टुकड़ी का सफाया करके अपनी तरफ घूमते देखा उस समय तो उनकी बची खुची हिम्मत भी जाती रही। बहुत मुमकिन था कि वे सब मैदान छोड़ पीठ दिखा देते पर अपने अफसरों के पिस्तौल निकाल कर यह कहने पर कि 'जो कोई भी पीछे घूमेगा हमारी पिस्तौल का निशाना बनेगा!' वे भागने से रुके रहे। उन्होंने अपनी राइफलों की दो तीन बाढ़ें उस हवाई जहाज की तरफ छोड़ीं जो बिल्कुल बेकार गईं और इतने ही में तो वह उनके सिर पर आ पहुंचा। जिस समय उस पर से वैसे ही दो गोले गिरते दिखाई दिये उस समय बहुत कम सिपाही थे जो अपनी जगह पर कायम रह सके थे, ज्यादातर सिपाहियों के घोड़ों ने अपना अपना रुख पीछे को घुमा दिया था। राइफिलों की पुनः एक बाढ़ छूटी पर दूसरी छूटने के पहिले ही वे दोनों गोले इस दल पर आ कर गिरे। अभी अभी जो कुछ सामने की तरफ हो चुका था वही इस जगह पर भी हुआ मगर पहिले से कहीं अधिक भयानकता के साथ हुआ क्योंकि इस बार ये दोनों ही बम निशाने पर गिरे थे। पलक झपकते में आधे से ज्यादे सिपाही गायब हो गये।

बाकी सिपाहियों ने अब रुक कर अपनी जान देने से साफ इनकार कर दिया और सब के सब बेतहाशा पीछे की तरफ को सरपट भागे। देखते ही देखते मैदान साफ हो गया।

हवाई जहाज अब ऊपर की तरफ उठा। एक गहरा चक्कर उसने चारो तरफ का लगाया। सिवाय भागते जाने वाले सवारों के कहीं भी कोई और दिखाई नहीं पड़ता था। यह देख वह नीचे को झुका। जिस मैदान तक पहुंच कर नगेन्द्रनरसिंह को पीछे लौटना पड़ा उस तरफ को उसने अपना मुंह घुमाया और पलक झपकते में वहां पहुंच कर चक्कर खाता हुआ नीचे को उतरने लगा।

नगेन्द्रनरसिंह और उनके साथी ने भी जो अभी तक खुशी के साथ

यह सब कार्रवाई देख रहे थे सब अपने अपने घोड़ों की बागें मोड़ीं और उधर ही को रवाना हुए जिधर वह हवाई जहाज गया था। लगभग पन्द्रह मिनट बाद ही दोनों उस जगह पहुंच गये जहां मैदान के बीचोबीच में वह जहाज अभी अभी उतरा था।

जैसे ही नगेन्द्रनरसिंह वहां तक पहुंचे वैसे ही एक आदमी उस हवाई जहाज पर से नीचे उतरा। यह वास्तव में वही नौजवान था जिसके हवाई जहाज पर गिरीशविक्रम के साथ चढ़ कर रवाना होने का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं। नगेन्द्रनरसिंह के घोड़े पर से उतरते उतरते यह भी दौड़ कर उनके पास जा पहुंचा और तब आंसू गिराता हुआ उनके पैरों पर गिर पड़ा जिन्होंने उठा कर इसे अपनी छाती से लगा लिया। दोनों में कुछ बातें हुईं, इसके बाद सब लोग हवाई जहाज पर सवार हो गए और कान के पर्दे फाड़ डालने वाली आवाज के साथ वह हवाई जहाज पुनः हवा में ऊंचा हुआ।

इस वार उसका लक्ष्य वह जमींदोज किला था जो रक्त-मंडल का हेड-क्वार्टर था। तीर की तेजी से हवाई जहाज उसी तरफ को रवाना हुआ।

[७]

मिस्टर केमिल अपने दलबल के साथ गोना पहाड़ी पर नरेन्द्रसिंह के डेरे तक आये थे मगर उसके आगे नगेन्द्र का पीछा करना उन्होंने फजूल समझा क्योंकि जब हाथ में आई हुई चिड़िया उड़ गई तो आस्मान से उसका पकड़ पाना कठिन ही था। जब नगेन्द्र उनके डेरे से भाग निकला तो आगे कहीं पकड़ा जायगा इसकी आशा बहुत ही कम थी। उन्होंने कुछ मामूली जांच पड़ताल की, नरेन्द्र और कामिनीदेवी से थोड़े बहुत सवाल किए, (हमें अफसोस से कहना पड़ता है कि इन दोनों के जवाबों में झूठ का सम्मिश्रण उससे बहुत ज्यादा था जो साधारण बातचीत में इस्तेमाल किया जाता है) और तब अपने डेरे अर्थात् नैपाल की अंग्रेजी रेजीडेन्सी की तरफ लौट गए।

रेजीडेन्सी पहुंचने के दो तीन घंटे बाद तक केमिल साहब बहुत ही कार्यव्यस्त रहे। पहिले तो बहुत देर तक इधर उधर टेलीफोन द्वारा बातचीत करने में फंसे रहे तथा इसके बाद मिस्टर ग्रिफिथ और रतनसिंह के साथ एक बहुत बड़े नक्शे पर झुके हुए भावी युद्ध के लिए प्रोग्राम तैयार करने में उन्होंने बहुत सा समय बिता दिया। कहना नहीं होगा कि यह भावी युद्ध रक्त-मंडल के साथ होने को था जिसके किले पर हमला करने का निश्चय भारत सरकार कर चुकी थी। बड़े लाट का हुक्म मिल गया था और एक जनरल भी इस युद्ध के लिए तैनात हो कर पहुंच चुका था, पर मुख्य रूप से इस हमले का सूत्र-संचालन मिस्टर केमिल के हाथों में ही था।

किस किस तरह की सलाहें हुईं, क्या क्या मनसूबे बांधे गये, क्या क्या तैयारियां हुईं, और किस किस तरह की मोरचेबंदी स्थिर की गई, इन सभों के बारे में यहां कुछ लिखना हम व्यर्थ समझते हैं क्योंकि समय पर यह सभी हाल पाठकों को मालूम हो जायगा, हां इतना कह देना जरूरी है कि यह हमला कल सुबह ही शुरू कर देने का निश्चय हुआ था और इसके लिए एक दर्जन हवाई जहाज सूर्य के साथ साथ रक्साल से उस किले के लिये रवाना हो जाने को थे। दो पलटनें, दो पहाड़ी तोपखाने और दो रिसाले तो कल ही उस किले की तरफ रवाना हो चुके थे।

संध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब वे संत्रस्त और भागे हुए सवार वापस लौटे जिन्हें नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने के लिए केमिल साहब ने भेजा था। केमिल ने उनके मुंह से सब समाचार सुना। दुःख तो अलबत्ता बहुत हुआ पर आश्चर्य उन्हें कुछ भी न हुआ। रक्त-मंडल और नगेन्द्रनरसिंह का पीछा करने जा कर ऐसा कुछ न हो तभी ताज्जुब की बात होती। कुछ मामूली झाड़ झपट के बाद उन सवारों को अपने अपने ठिकाने जाने की उन्होंने इजाजत दी और तब पुनः बंगले में चले गये जहां उन्होंने समूची संध्या और रात का भी बहुत काफी हिस्सा सोच विचार और बहस में बिताया।

सुबह को केमिल साहब अपने मामूली समय से बहुत जल्दी उठ गये, बल्कि यों कहना चाहिये कि उद्वेग के मारे रात को उन्हें नींद ही बहुत कम आई।

सात बजने के कुछ पहिले टेलीफोन से उन्हें समाचार मिला कि बारह जंगी हवाई जहाज उस किले पर हमला करने के लिए रवाना हो गये— उस फौज के रवाना होने का समाचार तो उन्हें कल ही मिल चुका था। वे अपने मामूली कामों में लगे मगर उनका चित्त इसी दुविधा में पड़ा हुआ था कि देखें इस हमले का क्या नतीजा निकलता है।

एक पहर बीता, दो पहर हुआ, तीसरा पहर भी करीब करीब बीत चला था जब रक्साल से केमिल साहब के नाम टेलीफोन हुआ। उद्वेग में भरे हुए मिस्टर केमिल दौड़ते हुए टेलीफोन के पास पहुंचे और चोंगा कान में लगाया। कोई कह रहा था—"रक्त-मंडल के किले पर हमला करने का नतीजा हमारे लिए बहुत ही भयानक सिद्ध हुआ। न जाने किस विचित्र शक्ति के बल से जिस समय हमारे हवाई जहाज उस किले से कोई पचीस मील दूर थे उसी समय उनमें से नौ जल कर एक दम भस्म हो गये, दो के बलते हुए गिर जाने का समाचार है, सिर्फ एक जहाज जिसका संचालक इञ्जिन बिगड़ जाने के कारण पीछे छूट गया था, अछूता बच गया जिसने बेतार की तार से यह समाचार भेजा है। अगर उसका इंजिन ठीक हो गया और सही सलामत वापस लौटा तो पूरे हाल का पता लगेगा। यह भी सुनने में आया है कि वह फौज भी जो किले पर हमला करने के लिए भेजी गई थी पन्द्रह सोलह मील जाते जाते नष्ट-भ्रष्ट हो गई, परन्तु यह खबर अभी अनिश्चित है। पूरे हाल की खबर लेने दो अन्य हवाई जहाज रवाना किये गये हैं।"

टेलीफोन मिस्टर केमिल के हाथ से छूटकर गिर गया और वे बद-हवास होकर कुरसी पर उठंग गये।

× × ×

जिस समय मिस्टर केमिल की यह अवस्था थी उसी समय शिमले की अपनी कोठी में बैठे बड़े लाट लार्ड गेवर करीब करीब इसी मजमून का एक तार पढ़ रहे थे। समाचार पढ़ कर उनके मुंह से भी एक लम्बी सांस निकल गई और वह कागज हाथ से छूट गया।

लम्बे कद का एक आदमी जिसका तमाम बदन यहां तक कि चेहरा भी काले कपड़े से ढंका हुआ था, उनके सामने बैठा हुआ था। उसने वह तार उठा लिया और उसे पढ़ा। उसके मुंह से भी एक ठंडी सांस निकल गई मगर अपने को सम्हाल कर उसने कहा, "देखिये माई लार्ड, मैंने आपको मना किया था कि इस तरह उस किले पर हमला न कीजिये मगर आपने न माना। मैं आपको पुनः कहता हूं कि वर्तमान फौजी उपायों द्वारा उस किले पर हमला करना केवल व्यर्थ ही नहीं बल्कि ज्वालामुखी पर धावा करने के समान खतरनाक सिद्ध होगा। पश्चिमी विज्ञान युद्ध के लिये भयानक से भयानक जो कुछ भी अस्त्र शस्त्र अब तक बना सका है उससे कई हजार गुना भयानक 'मृत्यु-किरण' का आविष्कार करके रक्त-मंडल अपने को उन अस्त्रों से अजेय बना चुका है। अगर उस पर आप फतह पाना चाहते हैं तो आपको मेरी बताई तर्कीब से चलना पड़ेगा।"

लार्ड गेवर ने कांपती हुई आवाज में कहा, "बेशक पंडितजी, आपका कहना ठीक निकला। मेरा उद्योग असफल हुआ। अब मैं इस युद्ध की बागडोर आपके हाथ में देता हूं। आप जैसे जैसे कहें वैसे ही वैसे मैं और मेरी सरकार चलने को तैयार हैं। सचमुच ही 'रक्त-मंडल' का वह किला हम लोगों के लिए ज्वालामुखी ही सिद्ध हुआ!"

———

श्यामा

[१]

उपरोक्त घटना भयानक और निरुत्साहित कर देने वाली थी फिर भी अफसरों के सतत प्रयत्न से उसका पूरा पूरा और ठीक ठीक समाचार साधारण जनता पर प्रगट होने न पाया। बहुत कम लोग जान पाए कि रक्त-मंडल के किले पर हमला करने जाकर भारत सरकार को बुरी तरह जक उठानी पड़ी।

लेकिन न जाने किस तरह यह समाचार जरूर भीतर ही भीतर फैलने लग गया कि सरकार ने रक्त-मंडल का मुकावला करने का विचार छोड़ दिया है और अब उससे सुलह कर लेने की कोशिश की जा रही है। किसी संवादपत्र में यह समाचार नहीं छपा न किसी विश्वसनीय सूत्र से सुना ही गया पर इसका प्रचार बहुत हो गया और शीघ्र ही इस सम्बन्ध में तरह तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। इस समाचार में कोई सत्यता थी ऐसा तो हमें मालूम नहीं होता पर यह सम्भव है कि रक्साल में पड़ी फौज को वापस लौटने का हुक्म मिलना और मिस्टर केमिल का अपने दल सहित शिमले लौट आना इसका आधार हो। खैर जो कुछ भी हो, कम से कम

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उस किले पर जिसका नाम ही अब 'ज्वालामुखी' पड़ गया था किसी तरह का हमला करने का विचार कम से कम कुछ दिनों के लिए निश्चित रूप से छोड़ दिया गया था।

[२]

जमींदोज किले 'ज्वालामुखी' के अपने खास कमरे में नगेन्द्रनरसिंह एक कुर्सी पर बैठे हुए हैं। आसपास की कई कुर्सियों पर और भी कई आदमी बैठे हैं जिनमें से करीब करीब सभों ही को हमारे पाठक पहिचानते हैं।

नगेन्द्रनरसिंह के दाहिनी तरफ एक गद्देदार कुरसी पर बैठे कमरे की छत की तरफ देखते तथा अपनी मोछों को बल देते हुए जो बलिष्ट पुरुष बैठे हैं वह धरमपुर के राजा गिरीशविक्रम हैं। उनके सामने कुरसी पर घुटने उठाये अपनी सुफेद दाढ़ी के लम्बे बालों में कंघी की तरह उंगलियें फेरने वाले रोबीले वृद्ध पुरुष केशवजी हैं। बाईं तरफ की कुरसी पर अकड़ कर बैठा अपने दोनों पैरों को तेजी से हिलाता हुआ जो आदमी कड़ी निगाहों से कमरे की खिड़की की राह बाहर की तरफ देख रहा है वह वही अजनबी है जिसके हवाई जहाज पर चढ़ के नगेन्द्रनरसिंह के बचने का हाल हम ऊपर लिख आए हैं और जो इस किले में नम्बर 'दो' के नाम से मशहूर है। पाठकों को शायद यह भी याद होगा कि नम्बर 'दो' के सुपुर्द इस किले के चारो तरफ की पचास पचास मील जमीन की रक्षा करी गई थी *। यहां हम यह भी कह देना चाहते हैं कि इस वीर का नाम रघुनाथ † है और यह रक्त-मंडल के 'भयानक चार' में से एक प्रमुख कार्यकर्ता है।

---

* पहिले भाग की 'दुश्मन के किले में' नामक गल्प देखिये।

† रघुनाथ के असीम साहसिक कार्यों का हाल जानना हो तो श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास पढ़िये।

नगेन्द्रनरसिंह की तबीयत अब पहिले से बहुत ठीक है फिर भी कुछ कमजोरी बनी ही हुई है अस्तु इनका ज्यादा समय आरामकुरसी की गोद में ही बीतता है पर फिर भी इन्हें यह मजबूरी का आराम अखरता नहीं क्योंकि इस हालत में भी जब ये आंख बन्द करते हैं तो अपनी प्यारी कामिनीदेवी का भोला चेहरा आंखों के सामने पाते हैं और उसे ही देखने में ये दुनिया की सुध-बुध भूल जाते हैं। इस समय भी इनके हाथ में एक अखबार है जिसे देख लोग यही समझते होंगे कि वे गौर से कोई समाचार पढ़ रहे हैं पर वास्तव में इनकी अधखुली आंखों के सामने कामिनीदेवी की तस्वीर विराजमान है और मन में तरह तरह के ख्याली पुलाव पकाते हुए ये उसको पाने का ही सुख-स्वप्न देख रहे हैं।

यकायक इनकी तन्द्रा को राजा गिरीशविक्रम की आवाज ने यह कह कर तोड़ा, "तब राणा, आपने मेरी प्रार्थना पर क्या निश्चय किया ?"

चिहुंक कर नगेन्द्र ने कहा, "क्या ? कैसी प्रार्थना ?"

राजा०। आपसे मैंने प्रार्थना की थी कि आप अब यहां से अपना हेडक्वार्टर हटा कर मेरे किले में ले चलिये और वहां से आगे की कार्रवाई जारी कीजिये।

नगेन्द्र०। मैंने इस बात पर गौर किया मगर मैं यह न समझ सका कि ऐसा करने से क्या लाभ होगा ? इस किले में जो मजबूती सुरक्षा और छिपाव है वह हमें आपकी राजधानी में क्योंकर मिल सकता है ?

गिरीश०। (रघुनाथ की तरफ बता कर) आपसे मेरी जो कुछ बात-चीत हुई थी उससे तो यही जाहिर हुआ था कि मेरा किला ही अब कुछ दिनों के लिए सदर बनाया जायगा और वहीं से आगे की सब कार्रवाई की जायगी।

रघुनाथ०। (नगेन्द्र से) मैंने आपसे कहा था कि हमलोगों की यह राय हुई थी कि यहां की देशी रियासतों के सम्बन्ध में जो कार्रवाई हम लोगों ने सोची उसके लिए इस किले की बनिस्बत इनका स्थान अधिक

उपयुक्त होगा क्योंकि उस काम के लिये एक छोटा मोटा दफ्तर खोलना आर बराबर चीठी-पत्री करती रहनी पड़ेगी और इस काम के लिए दूतों और जासूसों का आना जाना बराबर लगा रहेगा। इस किले में बहुत से आदमियों की आवाजाही ठीक नहीं यही सोच कर मैंने धरमपूर को इस काम के लिये उपयुक्त समझा था।

गिरीश०। और मैंने भी यह सोच कर स्वीकार कर लिया था कि चाहे यह प्रयत्न असफल ही हो और चाहे पीछे मुझे आफत में ही पड़ना पड़े मगर धरमपूर को यह कहने का गौरव तो प्राप्त हो ही जायगा कि वह 'स्वाधीनता-प्राप्त' भारत की प्रथम स्वाधीन राजधानी बना था चाहे कुछ ही दिनों के लिए सही।

नगेन्द्र०। (हंस कर) आपने हमलोगों से मिल कर हिम्मत तो बहुत दिखाई है राजा साहब इसमें कोई शक नहीं मगर अब जब सरकार ने आपके सब कसूरों को माफ कर दिया है तब आपको अपने साथ बनाए रख कर व्यर्थ की आफत मे डालना क्या हम लोगों के लिए उचित होगा ?

गिरीश०। जरूर, बल्कि अपने साथ न रखना ही अनुचित होगा, क्योंकि उस हालत में मुझे एक वीर संस्था के प्रति यह कहने का अवसर मिलेगा कि उसने एक गरीब राजा को धोखे में डाला और अपने वचन की रक्षा न की। मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि जब से मेरा आप लोगों का साथ हुआ है तब से मेरा दृष्टिकोण ही बदल गया है। मैं अब जानने लगा हूं कि वीरता क्या चीज है और वास्तविक स्वार्थ-त्याग किसे कहते हैं। मैंने तो अपने दिल में यहां तक निश्चय कर लिया है कि अगर आप लोग मेरा साथ न देंगे तो मैं अकेला ही खड़ा हो कर स्वतन्त्रता का युद्ध छेड़ दूंगा परन्तु अब किसी विदेशी शासक के सामने कभी सिर न झुकाऊंगा।

नगेन्द्र०। मगर एक बात तो बताइए, जैसा हमला उस दिन इस किले पर अंगरेजी हवाई जहाजों ने किया था वैसा अगर आपकी राजधानी राज्य या किले पर किया गया होता तो आप क्या करते ?

गिरीश० । आप मुझे बच्चों की तरह वहलाइए नहीं राणाजी । अभी उस दिन केशवजी मुझसे कह चुके हैं कि दो सौ मील के घेरे के अन्दर उनकी मृत्यु-किरण किसी को फटकने नहीं दे सकती और मेरा किला तो यहां से सौ मील से भी कम ही की दूसरी पर है । केशवजी, आप इस जगह से अपना रक्षा का हाथ मेरे किले तक बढ़ा सकते हैं तो ?

केशव० । जी हां बात तो यह जरूर है ।

गिरीश० । और फिर अगर आप लोग एक छोटा मोटा मृत्यु-किरण का यन्त्र मेरे किले में बैठा दें तो और भी अच्छा हो । मेरे राज्य में कोयला इफरात से मिलता है और इस बात का जिम्मा मैं लेता हूं कि आपके यन्त्र के बारे में जरा सा भी भेद किसी गैर पर प्रगट न होने पावेगा । मैं अपनी रियासत के किसी आदमी को उसके पास फटकने ही न दूंगा, केवल आपके आदमी ही उसे चलावेंगे ।

केशव० । (हंस कर) मृत्यु-किरण का यन्त्र लगाना आप क्या हंसी खिलवाड़ समझते हैं ! पांच बरस की लगातार कोशिश और करोड़ों रुपए के खर्च के वाद वे यन्त्र खड़े हुए हैं जिन्हें आपने उस दिन देखा और आप यह भी सुन चुके हैं कि वे कोयले से नहीं चलते बल्कि पृथ्वी के अन्दर दबी हुई गरमी की सहायता से काम करते हैं ।

गिरीश० । ठीक है आपने ऐसा कहा था मगर मैं वैज्ञानिक न होने के कारण इन सब बातों को ठीक ठीक समझ न सका और मेकैनिक न होने के कारण आपके यन्त्रों की परिचालन क्रिया भी समझ नहीं पाया । मैं तो एक सीधा सादा मूर्ख राजा हूं जिसे ऐश आराम से कभी इतनी फुरसत ही नहीं मिली कि दुनिया में कहां क्या हो रहा है इसे देखे । फिर भी जब प्रसंग चला है तो एक बात मैं पूछना चाहता हूं ।

केशव० । क्या ?

गिरीश० । मैंने आप लोगों से सुना और देखा भी है कि आपके यन्त्र एक दिशा में केवल सौ मील तक अपनी किरणें फेंकते हैं । तो क्या इसमें

के और बड़े यन्त्र बना कर आप इस फासले को बढ़ा नहीं सकते ? क्या आप इतना बड़ा यन्त्र नहीं बना सकते कि जो यहां बैठे बैठे यूरोप और अमेरिका में तहलका मचा दे ?

केशव०। मेरी मृत्यु-किरण में दो बड़ी कमजोरियां हैं जिन्हें दूर करने की यद्यपि मैं फिक्र में पड़ा हुआ हूं फिर भी सफलता नहीं मिल रही है। बात यह है कि जिस तरह एक्स-रेज अपने चारो तरफ दायरा बनाती हुई आकाश (ईथर) में फैलती हैं उस तरह मेरी ये किरणें काम नहीं करतीं। ये सीधी लकीर में एक ही दिशा में जाती हैं। यही कारण मेरी किरणों के अद्भुत बल का भी है क्योंकि एक ही दिशा में जाने के कारण जिस समय मैं भिन्न भिन्न कई केन्द्रों से इन किरणों को फेंक कर एक ही बिन्दु पर इकट्ठा कर देता हूं तो वहां इतनी शक्ति इकट्ठी हो जाती है कि जो चीज भी वहां रहे उसी समय भस्म हो जाती है। यह काम ठीक वैसा ही है जैसा आतशी शीशा करता है अर्थात् वह बहुत सी सूर्य-किरणों को इकट्ठा करके एक बिन्दु पर एकत्र कर देता है। अगर शब्द प्रकाश या अन्य किरणों की तरह फैलती हुई न आकर सूर्य की किरणें भी सीधी सीधी ही यहां पहुंचतीं-तो उनकी आंच या रोशनी सहन करना असम्भव हो जाता, उनके इधर उधर बिखर जाने से ही उनका जोर कम हो जाता है और चूंकि सूर्य की किरणों का रुख बदल कर आतशी शीशा उन्हें पुनः इकट्ठा करने में समर्थ होता है इसी से एक बिन्दु पर थोड़ी आंच पैदा हो जाती है। वही हिसाब मेरी मृत्यु-किरणों का भी समझिए। ये सीधी और सिर्फ एक ही दिशा में जाती हैं और इसी से मैं कई स्थानों से उन्हें एक बिन्दु पर इकट्ठा करके जो चाहे सो करने में समर्थ होता हूं।

गिरीश०। ठीक है, मगर मेरा कहना तो यह है कि आप अपने यन्त्रों को इतना बड़ा बनाइए कि वे सो मील के बजाय हजार मील, दो हजार, दस हजार मील, तक इन किरणों को फेंक सकें ?

केशव०। आपने मेरी बात पूरी नहीं होने दी। मैं यही बता रहा

था कि क्यों ऐसा नहीं कर सकता। केवल एक दिशा और सीधी पंक्ति में जाने ही के कारण ऐसा होता है कि ये सौ मील से अधिक दूर नहीं जा सकतीं।

केशव०। मगर क्यों?

केशव०। इसलिए कि इससे आगे पृथ्वी की गोलाई उनकी गति में वाधा देती है और वे किरणें पृथ्वी से टकरा के उसमें समा जाती हैं! आप जानते ही हैं कि पृथ्वी गेंद की तरह गोल है। अगर गोल सतह पर कोई चीज चलना चाहे तो उसे भी गोलाई लेकर ही चलना पड़ेगा। मेरी किरणें चूंकि सीधी चलती हैं इससे पृथ्वी की गोलाई उसमें बाधा देती है! प्रत्येक मील पर पृथ्वी कुछ इंच मोटी हो जाती है अर्थात् उसकी गोलाई का इतना अंश एक मील की दूरी पर आ जाता है। मैं बहुत ऊंचे से इन किरणों को फेंकता हूँ इसलिए वे सौ मील तक भी चली जाती हैं नहीं तो इतना भी न जातीं।

गिरीश०। ठीक है, अब मैं इस रुकावट का कारण समझ गया। यह वेशक बहुत बड़ी कमजोरी है। ऐसा न हो तो आप यहीं बैठे सारी दुनिया को वस में कर लेते।

केशव०। हां, और पहिले मैंने ऐसा ही स्वप्न देखा भी था, पर जब काम करने का मौका आया तो यह झगड़ा पैदा हो गया।

गिरीश०। बेशक, इसे कुछ कुछ इस तरह पर दूर कर सकते हैं कि किरणों को और ऊंचे से फेकें, मगर आखिर कहां तक!

केशव०। जी हां कहां तक ऊंचा किया जाय। बहुत ऊंचा करने से भी एक तो शत्रुओं की अंखों पर चढ़ेगी जो वहुत वड़ा ऐब हो जायगा दूसरे ये किरणें पृथ्वी छोड़ आकाश मार्ग में जाकर नष्ठ हो जायंगी।

गिरीश०। ठीक है, अच्छा वह दूसरी क्या कमजोरी आपने अपनी किरणों में पाई?

केशव०। दूसरी बात यह है कि ये किरणें सीधी ऊपर को नहीं उठतीं,

हमेशा कुछ कोण ही लेकर भेजी जा सकती हैं। इसीलिये एक दम ठीक सिर के ऊपर इनका कोई प्रभाव नहीं होता।

गिरीश०। ऐसा ! तब क्या अगर ठीक आपके सिर के ऊपर से कोई दुश्मन आप पर हमला करे तो आप इन किरणों की सहायता से उसे भस्म नहीं कर सकते ?

केशवजी कहते कहते रुक गए। उनकी निगाह नगेन्द्रनरसिंह की निगाहों से मिली जिसमें कोई सन्देशा उन्होंने पढ़ा जिसके साथ ही वे सम्हल गये और बोले, "नहीं वह बात नहीं है, बात इसमें कुछ ऐसी है....!"

कहते कहते केशवजी फिर रुक गए। गिरीशविक्रम कुछ पूछना चाहते थे कि इसी समय रघुनाथ ने नगेन्द्रनरसिंह की तरफ देख कर पूछा, "उस अंगरेज अफसर कासग्रेव के बारे में क्या हुक्म होता है जो आपका पीछा करता हुआ गया था और जिसे हमारे जासूसों ने नरेन्द्रसिंह के आदमियों सहित गिरफ्तार कर यहां भेज दिया है ?"

नगेन्द्र०। उससे मैंने एक काम लेना सोचा है। अभी उसे कुछ दिन तक और कैद रखना ही मुनासिब होगा, हां यह ख्याल रखना पड़ेगा कि वह कहीं भाग न निकले।

रघुनाथ०। जी नहीं, हमारी कैद से छूट जाने की संभावना तो बहुत कम है।

नगेन्द्र०। नरेन्द्रसिंह के वे दोनों आदमी भी तो अभी तक यहीं होंगे?

रघुनाथ०। जी हां हैं। उनके बारे में भी मैं पूछने वाला था कि क्या किया जाय ?

नगेन्द्र०। उन्होंने क्या यहां का रास्ता या यह जगह देख ली है ?

रघुनाथ०। जी नहीं, वे तीनों ही बेहोश कर के यहां लाए गए थे और यहां पहुंच कर जिस जगह बन्द किए गए वहां से कभी बाहर निकलने नहीं दिये गये। इस कारण वे यहां के बारे में कुछ भी नहीं जानते।

नगेन्द्र० । बहुत ठीक है, तो कल उन दोनों को तो छोड़ दो । मुझे एक चीठी नरेन्द्र के पास भेजनी है जो उन्हीं की मारफत भेज दी जायगी। छोड़ते समय जरूरी एहतियात से काम लेना और. . . .

इसी समय कमरे के बन्द दर्वाजे पर थपकी पड़ने की आवाज आई। आज्ञा पाने पर दर्वाजा खोल एक फौजी जवान अन्दर आया जिसके हाथ में एक कागज था । सलाम कर उसने वह कागज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ बढ़ा दिया और तब उनका इशारा पा कमरे का दर्वाजा बन्द करता हुआ पुन: बाहर निकल गया ।

नगेन्द्रनरसिंह ने वह कागज पढ़ा, पढ़ कर वे चौंक पड़े और उनके माथे के बल यह सूचना देने लगे कि वे किसी चिन्ता में पड़ गए हैं। उन्होंने थोड़ी देर तक आंखें बन्द कर के कुछ सोचा और तब जेब से कलम निकाल उस कागज के एक कोने पर कुछ लिख कर रघुनाथ की तरफ बढ़ा दिया । रघुनाथ ने उसे पढ़ केशवजी को दिया और उन्होंने भी उसे पढ़ने बाद यह कहते हुए नगेन्द्रनरसिंह को वापस कर दिया— "जी हां, यही मुनासिब जान पड़ता है ।"

नगेन्द्रनरसिंह ने ताली बजाई । आवाज के साथ ही वही जवान पुन: कमरे के अन्दर आया । नगेन्द्रनरसिंह ने एक दूसरे कागज पर कुछ लिख कर उसके हाथ में दिया और कहा, "यह तार अभी जायगा ।" वह कागज ले सलाम कर चला गया और कमरे का दर्वाजा फिर बन्द हो गया ।

महाराज गिरीशविक्रम यह जानना चाहते थे कि उस कागज का मजमून क्या था जो नगेन्द्रनरसिंह को मिला था मगर कुछ पूछने की उनकी हिम्मत न पड़ी, फिर भी इतना वे जरूर समझ गये कि उसमें कोई जरूरी और फिक्र पैदा करने वाली बात थी क्योंकि उस कागज के मजमून को पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह रघुनाथ और केशवजी तीनों ही चिन्तित से दिखाई पड़ने लगे थे ।

[३]

यद्यपि दोपहर का समय होने के कारण सूर्यदेव पूरी तेजी से और एकदम सिर से ऊपर चमक रहे हैं फिर भी इस मैदान में उनकी तीखी किरणें अपनी गर्मी भूल सी गई हैं। चारो तरफ के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से टकरा कर आती हुई हवा दूर के बर्फ से ढंके पहाड़ों की मदद पा ठंडी हो गई है और इसी से उन दो मुसाफिरों को गर्मी की तकलीफ बिल्कुल नहीं सता रही है जो मजबूत पहाड़ी टांगनों पर सवार तेजी से चले जा रहे हैं।

हमारे पाठक इन दोनों को पहचानते हैं। इनमें से एक तो राजा गिरीशविक्रम हैं और दूसरे उनके सेनापति कप्तान रौशनसिंह। जहां पर ये दोनों इस समय हैं वहां से रक्त-मंडल का किला 'ज्वालामुखी' लगभग पचार्स कोस के दूर है मगर यह पहाड़ी सिलसिला अभी तक वही चला आ रहा है। नैपाल की राजधानी काठमांडू इनके दाहिने हाथ लगभग चालीस पचास मील पर है और धरमपुर इनके वाएं पड़ता है पर इस समय ये दोनों धरमपुर नहीं जा रहे हैं बल्कि सीधे पश्चिम की तरफ किसी दूसरी ही जगह जा रहे हैं। सामने लगभग पांच छः कोस के फासले पर एक घने जंगल की तरफ बार बार निगाहें उठा कर देखने से जान पड़ता है कि इन लोगों का वर्तमान लक्ष्य स्थान इस समय वही है।

थोड़ी देर और जाने बाद राजा साहब ने अपने सेनापति की तरफ देख कर पूछा, "मेरे पीछे कोई सरकारी चीठी तो नहीं आई थी?"

रौशनसिंह ने जवाव दिया, "जी नहीं, मगर रेजीडेण्ट साहब ने कई बार मिलने के लिए पुछवाया था।"

राजा०। तब? क्या जवाव दिया गया?

रौशन०। कहला दिया गया कि महाराजा साहब की तबीयत बहुत खराब है, वैद्यों ने किसी से मुलाकात करने को एकदम मना किया है।

राजा साहब ने इस तरह सिर हिलाया मानो इस जवाव को पसन्द

किया। इसके बाद फिर चुपचाप सफर होने लगा।

एक घन्टे से कम ही समय में ये दोनों उस जंगल के पास जा पहुंचे। यह घना और डरावना जंगल ऊंचे ऊंचे पेड़ों सौर झाड़ झंखाड़ के कारण कुछ ऐसा गुन्जान हो रहा था कि उसके अन्दर एकदम अंधकार हो रहा था। इस जगल का फैलाव कितनी दूर तक था यह तो कहना यद्यपि कठिन है परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि इसके अन्दर सैकड़ों आदमी इस तरह छिप कर रह सकते थे कि आस पास की पहाड़ियों और रास्तों पर से जाने वाले लोगों की ही निगाहों से नहीं बल्कि हवाई जहाजों के उड़ाकों की नजरों से भी छिपे रह सकें।

राजा गिरीशविक्रम और कप्तान रौशनसिंह ने इस जंगल के पास पहुंच कर घोड़ों की चाल कम कर दी और आपस में कुछ बातें करने बाद जंगल के किनारे दाहिनी तरफ को रवाना हुए। उनके रंग ढंग से जान पड़ता था कि ये लोग करीब करीब अपने ठिकाने पर पहुंच गए हैं और आखिर वैसा निकला भी क्योंकि एक बहुत ही बड़े और दूर तक फैले हुए बड़ के पेड़ के नीचे पहुंच ये दोनों घोड़े से उतर पड़े। राजा गिरीशविक्रम ने अपने चारो तरफ गौर से देखा और तब जेब से एक सीटी निकाल कर कुछ खास इशारे के साथ बजाई। आवाज की गूंज अभी बन्द नहीं हुई थी कि जंगल के भीतर की तरफ से जवाब में दूसरी सीटी की आवाज सुन पड़ी और साथ ही आहट ने यह भी बता दिया कि यह दूसरी सीटी बजाने वाला इसी तरफ आ रहा है।

थोड़ी देर बाद इनकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो घोड़े पर सवार इनकी तरफ बढ़ा आ रहा था। इन दोनों आदमियों के पास पहुंच कर उसने इन्हें अदब से सलाम किया और तब एक चीठी इनकी तरफ बढ़ाई। राजा गिरीशविक्रम ने चीठी पढ़ी और तब उसे रौशनसिंह को देते हुए उस आदमी से पूछा, "वह जगह यहां से कितनी दूर है?"

आदमी ने जवाब दिया, "ज्यादा दूर नहीं है, करीब बीस मिनट का

रास्ता होगा।" राजा साहब ने कहा, "क्या और भी कोई आया है ?" जवाब मिला, "जी हां, दो यूरोपियन और दो हिन्दुस्तानी अफसर हैं मगर मैं जानता नहीं कि वे कौन हैं।" राजा साहब ने कुछ सोच कर जवाब दिया, "अच्छा चलो, मैं चलता हूँ।"

घोड़ां पर सवार आगे आगे वह आदमी, उनके पीछे राजा साहब, और सब के पीछे रौशनसिंह जंगल के भीतर घुसे। ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे जंगल घना गुंजान और डरावना होता जाता था। आस्मान से बातें करने वाले बड़े बड़े पेड़ अपनी दूर दूर तक फैली हुई शाखों की मदद से अंधेरा किए हुए थे, नीचे के झाड़ झंखाड़ की यह कैफियत थी कि दस कदम भी दूर से देखने से यही मालूम होता था कि एक ठोस हरी दीवार सामने खड़ी है जिसमें बड़ी मुश्किल से रास्ता पैदा करते हुए ये लोग अन्दर घुसने लगे। थोड़ी देर में उस जंगल ने इन लोगों को इस तरह हजम कर लिया कि बाहर से बिल्कुल पता नहीं लग सकता था कि अभी अभी कुछ आदमी इसके अन्दर घुसे हैं।

[४]

चारो तरफ के भयानक घनघोर जंगलों और पहाड़ों से घिरा हुआ एक छोटा मैदान हरी हरी घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का मजा दे रहा है।

यह मैदान जो मुश्किल से दस बारह बीघे का होगा नैपाल के पहाड़ों के बीच में ही कहीं है और इसके चारों तरफ का जंगल शेर भालू और जंगली सुअरों से इतना भरा हुआ है कि शायद किसी भी आदमी के पैर अब तक इस पर न पड़े होंगे क्योंकि इन खूंखार जानवरों के डर से कोई इधर आता ही नहीं होगा। इस जगह से दस बीस कोस के घेरे के अन्दर कोई आदमी गांव झोपड़ी यहां तक कि खेत भी न होने से किसी को कभी इधर आने की जरूरत नहीं पड़ती और इसी से यह स्थान और भी एकान्त रहता है जिससे जंगली जानवर बेरोकटोक इसमें घूमा फिरा करते हैं।

ऐसे मैदान में तीन चार आदमियों को देख कर हमें ताज्जुब मालूम होता है। इनकी पौशाकें कारतूस भरी कमर पेटियां और पीठ पर की राइफिलें यद्यपि बता रही हैं कि ये बहादुर शिकारी हैं जो शायद शिकार की खोज में यहां तक पहुंच गए होंगे फिर भी जो आदमी हमारी तरह इस मैदान को घेर रखने वाले जंगलों से पूरी तरह वाकिफ है वह इस बात पर ताज्जुब किये बिना न रहेगा कि चारो तरफ का कोसों का भयानक जंगल पार करके ये सब इस जगह तक पहुंचे भी तो कैसे ? आइए शायद पास चलने पर कुछ पता लगे कि ये कौन हैं या कैसे यहां तक पहुंचे। बीच का मैदान छोड़ ये लोग किनारे के दरख्तों की छाया में टहल रहे हैं अस्तु हमें भी वहीं चल कर इन्हें देखना और इनकी बातें सुननी चाहिए।

मगर ये लोग तो हमारे जाने पहिचाने निकले ! वह अपने पीछे की झाड़ी में से कोई आहट पा गौर से उधर देखने वाले तो मिस्टर केमिल हैं। उनके साथ का नौजवान जिसके मुड़े हुए बाएं हाथ के घेरे में उसकी राइफिल लटक रही है उनका भतीजा एडवर्ड है। इनसे कुछ हट कर जो दो आदमी आपस में बातें करते दिखाई पड़ रहे हैं उनमें से एक तो बड़े लाट साहब के मिलिटरी सेक्रेटरी मिस्टर थामसन हैं और दूसरा छोटे लाट के सेक्रेटरी मिस्टर फर्गूसन। इनसे कुछ दूर हट कर अदब के साथ खड़ा हुआ नौजवान रतनसिंह है जिसे हमारे पाठक नैपाल की अंगरेजी रेजीडेन्सी में देख चुके हैं।

जिस आहट ने केमिल और एडवर्ड का ध्यान आकर्षित किया था वही थामसन और फर्गूसन के कान में भी पड़ी और वे भी सिर घुमा कर उधर ही को देखने लगे। धीरे धीरे आवाज स्पष्ट होने लगी और कुछ ही देर बाद मालूम हुआ कि घुड़सवारों के आने की आहट है जो गिनती में दो तीन से ज्यादे नहीं हैं। थोड़ी देर में यह शक बिल्कुल जाता रहा और तीन सवारों की सूरत दिखाई पड़ी जो जंगल को भेदते हुए इधर ही को आ रहे थे।

थामसन ने केमिल साहब की तरफ देख कर पूछा, "ये लोग कौन हैं ?" केमिल साहब ने जवाब दिया "मैं नहीं पहिचानता, पर जान पड़ता है हमारी ही तरह ये भी यहां के लिए निमंत्रित हैं क्योंकि वह आगे आगे आने वाला सवार वही है जिसने मुझे यहां तक पहुंचाया था।"

इसी समय रतनसिंह ने जिसके कान में यह सवाल और जवाब पड़ चुका था अदब के साथ धीरे से कहा, 'मैं इन्हें पहिचानता हूँ। इनमें से एक तो धरमपूर के राजा गिरीशविक्रमसिंह हैं और दूसरे उनके सेनापति रौशनसिंह।'

यह नाम सुनते ही सभों की भृकुटी चढ़ गई और उन्होंने नफरत के साथ उधर से मुंह घुमा लिया। फर्गूसन के दांत तले दवे हुए होठों से निकला, "यह कम्बख्त दुश्मनों का भेदिया यहां क्यों आया ?"

राजा गिरीशविक्रमसिंह और रौशनसिंह को यहां तक पहुंचा कर वह सवार पुनः पीछे लौट गया। ये दोनों कुछ देर तक तो चुपचाप खड़े रहे और तब धीरे धीरे उस तरफ बढ़े जिधर बाकी के लोग थे पर कुछ पास पहुंचने पर राजा साहब रुक गये, या तो उन्होंने इन लोगों को पहिचान लिया और या इनकी कुरुखी देख दूर ही रहना उचित समझा।

अचानक एक आवाज ने इन सब आदमियों का ध्यान आकर्षित किया जो आकाश से आती हुई मालूम होती थी। आवाज बहुत तेज नहीं थी मगर कुछ विचित्र ढंग की और दवी दबी सी थी। जिनके कान बहुत तेज होंगे उन्होंने रात के वक्त चिमगादड़ या उल्लू के उड़ने की आवाज सुनी होगी। इस समय आने वाली आवाज भी कुछ कुछ उसी ढंग की थी जिसने वहां पर इकट्ठे सभी आदमियों को इस बात पर मजबूर किया कि बीच के मैदान की तरफ घसकें और ऊपर देख कर पता लगावें कि आवाज किस चीज की है। मगर देर तक निगाहें दौड़ाने पर भी किसी को कुछ दिखाई न पड़ा और कुछ देर बाद वह आवाज भी कम होती हुई एक दम मिट गई।

अचानक एक तेज सीटी की आवाज सब तरफ गूंज गई। यह आवाज

भी आसमान से ही आती मालूम होती थी। सभों की निगाहें फिर ऊपर को उठीं मगर आस्मान एक दम साफ था। सीटी की गूंज अभी मिटी न थी कि यकायक आस्मान की तरफ से गिरते हुए दो बड़े गोलों पर उन सभों की निगाह पड़ी। ये गोले किसी हलकी चीज के थे जो हवा के झपेड़ों से इधर उधर मंडराते हुए बहुत धीरे धीरे नीचे आ रहे थे। मैदान के आदमी अभी ताज्जुब ही कर रहे थे कि खुले आस्मान में ये गोले क्योंकर पैदा हो गये कि वे दोनों गोले उड़ते और गिरते हुए उनके पास आ पहुंचे और इन लोगों से लगभग पचीस तीस गज ऊपर पहुंच कर हलकी आवाज के साथ फट गए। गोलों के फटते ही ढेर सा काला धूआं उनमें से निकला जो तेजी के साथ चारो तरफ फैलने लगा। केमिल ने यह देखते ही चौंक कर कहा, "हट जाइए, हट जाइए, मालूम होता है ये किसी तरह की जहरीली गैस के बम हैं!" सब लोग जल्दी जल्दी वहां से हटे मगर इस बीच में हवा के झोकों ने उस काले धूएं को सब तरफ फैला दिया था। इस धूएं में एक अजीव तरह की वदबू थी जिसने इन आदमियों के नाक में जाते ही इनका दम रोकना शुरू किया मगर फुर्ती से हट जाने के कारण और कोई वुरा असर न हुआ और पांच ही सात मिनट के बाद उस गैस के कारण पैदा होने वाली बेचैनी एक दम दूर हो गई।

इसी समय फिर आस्मान से सीटी की आवाज आई। सभों की निगाह पुनः उधर को उठी और अचानक सभों ने देखा कि कपड़ों की गठरी की तरह की कोई चीज ऊपर से नीचे को गिर रही है जो थोड़ा नीचे आते ही फैल कर एक छाते की शकल की हो गई जिसके बीचोबीच में रस्सियों के सहारे कोई चीज लटक रही थी।

केमिल ने इसे देख कर कहा, "यह तो पैराशूट मालूम होता है मगर यह आया कहां से? कोई हवाई जहाज या गुब्बारा दिखाई पड़ता तो समझते कि उस पर से फेंका गया होगा!"

इसके साथ ही थामसन ने कहा, "यही नहीं, जो चीज इस पैराशूट से लटक रही है वह मुझे बम मालूम होता है। ताज्जुब नहीं कि जमीन पर गिर कर यह फूटे और हम सभों को दूसरे लोक का राही बना दे!"

मानो इस बात के जवाब में ही उस लटकती हुई काली चीज में से आग की एक लम्बी लवर बड़े जोर के साथ निकली और जमीन की तरफ झपटी। यद्यपि अभी भी उस पैराशूट की ऊंचाई पांच सौ गज से कम न होगी मगर यह लपट इतनी तेज थी कि जमीन तक पहुंच गई। अगर नीचे खड़ी मंडली तेजी से भाग कर एक तरफ पेड़ों की आड़ में न हो जाती तो ताज्जुब नहीं कि उस पर भी इस लपट का कुछ असर पड़ता और उसे तकलीफ उठानी पड़ती मगर ऐसा कुछ न हुआ और ये लोग अपनी आड़ की जगह से ताज्जुब और बहुत कुछ डर के साथ देखने लगे कि यह बम और क्या करता है। मगर नहीं, सिर्फ एक दफे यह अग्नि-वर्षा कर चुकने के बाद इस बम ने फिर कुछ और न किया और धीरे धीरे नीचे उतरता हुआ वह पैराशूट उस बम को लिए दिए कुछ दूर के एक पेड़ पर गिर डालियों से उलझ गया।

कुछ लोगों की इच्छा हुई कि पास जा कर उस बम को और गौर से देखा जाय मगर ज्यादातर आदमी इसके खिलाफ थे, कौन ठिकाना वह बम फूट पड़े या क्या हो, अस्तु उधर कोई न गया और सब कोई पुनः मैदान में निकल इस विचार में पड़े कि आखिर ये सब चीजें गिर कहां से रही हैं, इन्हें फेंकने वाला भी तो कोई होना चाहिए। मगर आस्मान एक दम साफ था। कहीं किसी गुब्बारे या हवाई जहाज का तो क्या एक पक्षी तक का भी नामनिशान न था और लोगों का ताज्जुब बढ़ता जा रहा था।

अचानक फिर एक सीटी की आवाज सुनाई पड़ी। सभों की निगाहें पुनः ऊपर को उठीं और इस बार फिर एक छोटी चीज आसमान से नीचे गिरती दिखाई पड़ी। हिफाजत के खयाल से सब लोग पुनः आड़ में हो गए पर इस बार की चीज कोई खतरनाक चीज न थी। वह सिर्फ

एक कागज का टुकड़ा था जिसके साथ लकड़ी का छोटा सा टुकड़ा बंधा हुआ था। रतनसिंह ने आगे बढ़ कर वह कागज उठा लिया और ला कर थामसन के हाथ में दिया जिन्होंने उसे पढ़ा। सिर्फ यह लिखा हुआ था :—

"अब मैं प्रगट होता हूं।"

इस विचित्र संदेशे ने लोगों के ताज्जुब को और भी बढ़ा दिया और सब कोई पुनः बीच के मैदान में आकर कौतूहल के साथ देखने लगे कि अब कौन कहां प्रगट होता है।

फिर उसी तरह की गूंजने वाली आवाज जैसी पहिले सुनाई पड़ी थी देखने वालों के कान में पड़ी, पर पहिली दफे से अबकी इतना अन्तर था कि इस बार यह मालूम होता था कि जिस चीज की यह आवाज है वह उनके सिर के ऊपर चक्कर लगा रही और साथ ही नीचे भी उतरती आ रही है क्योंकि आवाज पल पल में तेज होती जाती थी! कुछ देर तक यही हालत रही और इसके बाद आस्मान पर बहुत दूर ऊंचे एक धुंधली चीज सभों को दिखाई पड़ी जो हलके बादल के टुकड़े की तरह मालूम पड़ती थी। यह बादल का टुकड़ा चक्कर खाता हुआ नीचे की तरफ उतर रहा था और साथ ही खुद भी धीरे धीरे हलका होता हुआ गायब होता जा रहा था।

थोड़ी ही देर में वह बादल सी चीज बिल्कुल साफ हो गई और अब एक हवाई जहांज की धुंधली शकल दिखाई पड़ने लगी जिसका रंग आस्मान के रंग से इतना मिलता जुलता था कि बड़ी मुश्किल से उस पर निगाह पड़ सकती थीं। इस समय वह जमीन से कोई दो हजार फीट की ऊंचाई पर था और अभी भी चील की तरह चक्कर काटता हुआ नीचे ही को उतर रहा था। ज्यों ज्यों वह नीचे आता जाता था उसकी आकृति स्पष्ट होती जाती थी तथा थोड़ी देर और बीतते बीतते साफ मालूम पड़ने लगा कि वह एक छोटा मगर तेज चलने वाला हवाई जहाज है जिसकी दो पंखियां बड़ी तेजी से घूम रही थीं मगर फिर भी ताज्जुब की बात थी

कि इसके इंजिनों की आवाज बिल्कुल नहीं आती थी, हां वह सनसनाहट की सी आवाज बढ़ती जा रही थी और अब विश्वास होने लगा था कि पहिले दो बार जो आवाज इन लोगों ने सुनी थी वह इस हवाई जहाज के उड़ने की ही आवाज थी ।

पल पल में नजदीक आता हुआ वह हवाई जहाज कुछ ही देर बाद इन लोगों के सिर पर मंडराने लगा और तव गिद्ध की तरह गोल बड़ा घेरा बांधता हुआ ख़ूबसूरती के साथ जमीन पर उतर पड़ा । अभी उसकी पंखियों का घूमना बन्द नहीं हुआ था कि दौड़ती हुई यह मण्डली उसके पास जा पहुंची । सब से पहिले केमिल उसके पास पहुंचे और वहां पहुँचते ही एक चीख बेतहाशा उनके मुंह से निकल गई ।

हवाई जहाज के उड़ाके थे पंडित गोपालशंकर, और उनके बगल में बैठी थी मिस्टर केमिल की लड़की मिस रोज !

[५]

पंडित गोपालशंकर और मिस रोज को अपने सामने देख उन सभों ही की विशेष कर मिस्टर केमिल की तो यह हालत हो गई कि बयान करना मुश्किल है ।

अब तक सब लोग यही विश्वास किए बैठे थे कि पंडित गोपालशंकर की जान रक्त-मंडल वालों ने उस समय ले ली जब वे रोज को छुड़ाने के लिए उसके काशीजी वाले अड्डे में घुसे थे, पर आज यकायक उन दोनों ही को सही सलामत अपने सामने पा सभों की खुशी और ताज्जुब का कोई हद न रहा । सब से बढ़ कर प्रसन्नता तो मिस्टर केसिल को हुई जो अपनी प्यारी बेटी और अपने सब से बड़े मित्र को इस दुनिया से सदा के लिए उठ गया हुआ समझ कर बिल्कुल ही निराश हो चुके थे । इस समय उन दोनों ही को अपने सामने पाकर वे अपने को किसी तरह रोक न सके

और आगे को झुक कर इस तरह उन दोनों को देखने लगे मानों उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा है। मगर उनका शक जाता रहा जब उन्हें देखते ही एक चीख मार कर 'डियरेस्ट पापा !' कहती हुई रोज झपट कर उनके गले से चिपट गई। इसी समय गोपालशंकर भी जो अपने हवाई जहाअ के किसी कल पुर्जे को दुरुस्त कर रहे थे आगे वढ़ आए और खुशी खुशी केमिल का हाथ पकड़ते हुए वोले, "कहिए मिस्टर केमिल, आप तो मेरी तरफ से बिलकुल ही नाउम्मीद हो चुके होंगे !"

केमिल ने कहा, "वेशक, मुझे बिल्कुल आशा न थी कि इन आंखों से फिर कभी आपको जीता जागता देखूंगा, और इस रोज की तरफ से भी कुछ कुछ वैसी ही भावना मेरी हो चली थी। मगर आप अब तक कहां थे अथवा रोज किस तरह उन शैतानों के कब्जे से छूटी यह सब कुछ जानने के पहिले मैं आप लोगों को इनसे इन्ट्रोड्यूस कर दूं।'

वहां इकट्ठे सब अफसरों और लोगों से केमिल ने गोपालशंकर और रोज का परिचय करा दिया जिनमें से कुछ को वे पहले से भी जानते थे और साधारण शिष्टाचार के बाद आपस में इस तरह बातें होने लगीं :—

थामसन०। आप और मिस रोज रक्त-मंडल के पंजे से जिस तरह छूटे यह तो मैं जानना ही चाहता हूं मगर उससे भी वढ़ कर ताज्जुब जिस बात का है वह आपके इस हवाई जहाज के बारे में है। क्या सचमुच इसमें गायब हो जाने की ताकत है या हम लोगों की आंखों ने हमें धोखा दिया है ?

गोपाल०। (हंसकर) जी आप लोगों की आंखें बिल्कुल दुरुस्त हैं और मेरा यह वायुयान 'श्यामा' ही कुछ इस तरह का है कि हवा में केवल चुपचाप ही नहीं उड़ता वल्कि अलक्ष्य भी हो जाता है। मैंने उतरने के पहिले आकाश में इसके कई चक्कर लगाये थे और कुछ चीजें भी गिराई थीं। मैं समझता हूं कि आपको कुछ पता न होगा कि वे चीजें कहां से गिर रही हैं।

थामसन०। बिल्कुल नहीं और अगर अन्त में आप प्रगट न हो जाते

तो कम से कम मैं तो यही समझता रहता कि यह कोई भूत-लीला हम लोगों ने देखी।

फर्गूसन०। जी-हां, मैं भी अपने मन में कोई ऐसी ही बात सोच रहा था। भला यह कैसे गुमान किया जा सकता था कि आप ऐसे हवाई जहाज पर से वे चीजें फेंक रहे हैं जो आंखों के सामने रहता हुआ भी गायब है। अभी तक परियों और जादूगरों के किस्सों ही में आंखों से ओट हो जाने या कर देने वाली चीजों का हाल मैंने पढ़ा था पर अब जान पड़ता है कि उनको देखने का वक्त भी आ गया है।

गोपालशंकर०। (मुस्कुराते हुए) बेशक ऐसा ही है, मगर मैं उचित समझता हूँ कि हम लोग पेड़ों की आड़ में होकर बातें करें तो ज्यादा अच्छा हो। अगर दुश्मन ने किसी तरह हम लोगों को देख लिया तो हमारी वह कार्रवाई बिल्कुल व्यर्थ हो जायगी जिसके लिए हम लोग आज यहां इकट्ठे हुए हैं।

सब लोग पेड़ों के झुरमुट की तरफ बढ़े। इसी समय एडवर्ड ने कहा, "क्या बेहतर न होगा कि हम लोग इस 'श्यामा' को भी पेड़ों की आड़ में कर लें! इसके भी देखे जाने का अंदेशा है।"

गोपालशंकर ने यह सुन कर कहा, "कोई जरूरत नहीं, मैंने ऐसी तर्कीब कर दी है कि इसे ऊपर से कोई देख न सकेगा अर्थात् हवा में उड़ने वाले किसी हवाई जहाज या गुब्बारे का सवार इसे यहां देख न पावेगा।"

थामसन ने यह सुन चलते चलते पूछा, "तो क्या आप इस हवाई जहाज के जिस हिस्से को जब चाहे अदृश्य कर सकते हैं?"

गोपाल०। हां यद्यपि सब अंशों में तो नहीं पर कुछ अंशों में जरूर।

फर्गूसन०। मगर मेरी समझ में जरा भी नहीं आता कि आपने क्या कार्रवाई कर दी है कि इतनी बड़ी चीज आंख के सामने से लोप हो जाती है!

थामसन०। यूरोप और अमेरिका के बड़े बड़े विद्वान इस फिक्र में

पड़े हुए थे और कुछ दिन हुए मैंने कहीं सुना था कि जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने इस विषय में कुछ आंशिक सफलता प्राप्त भी कर ली है कि हवा में ऊंचे उड़ता हुआ हवाई जहाज नीचे से दिखाई न पड़े, पर उसका प्रयत्न पूरा पूरा सफल नहीं हुआ, और आज आपको यही करता हुआ मैं अपनी आंखों से देख रहा हूं। आपने तो दुनिया भर के वैज्ञानिकों के कान काट डाले पंडितजी !

गोपाल०। (हंस कर) इसके लिए आप लोग मुझे बड़प्पन न दें। दुनिया के जितने बड़े बड़े आविष्कार आप देख रहे हैं प्रायः वे सभी किसी आप से आप हो जाने वाली अचानक और स्वाभाविक घटना के ही परिणाम हैं। मेरा यह आविष्कार भी जो 'श्यामा' को अलोप कर देता है वैसी ही एक घटना का फल है और एक दिन अचानक ही मुझे इसका पता लग गया।

फर्गूसन०। (हंस कर) यह कह के आप नामवरी से बचने की कोशिश भले ही करें पर वह आपका पीछा न छोड़ेगी ! एक ऐसा हवाई जहाज बना डालना जो हवा में उड़ते समय न सुनाई पड़े और न दिखाई दे, दुनिया के सब से आश्चर्यजनक आविष्कारों में समझा जायगा और अपने इस अविष्कार की बदौलत आप दुनिया के सब से बड़े धनी हो सकेंगे, क्योंकि भला कौन गवर्नमेन्ट होगी जो ऐसे आविष्कार को मुंहमांगा दाम देकर न खरीदना चाहे !

बातें करते हुए ये लोग पेड़ों की छाया के नीचे पहुंच गए जहां गोपालशंकर की इच्छानुसार सब कोई जमीन ही पर एक साफ जगह देख गोल घेरा बना कर बैठ गए और तब फिर बातें होने लगीं।

केमिल०। मेरी प्रार्थना है कि आप शुरू से सब हाल सिलसिलेवार कह जायं। काशी वाले रक्त-मंडल के अड्डे पर हमला होने के समय से जो आप गायब हुए तब से अब तक का पूरा हाल कृपा कर हम लोगों को सुना जाइए।

गोपाल०। अच्छी बात है, मैं सब हाल आपसे कहता हूं मगर बहुत

ही संक्षेप में क्योंकि आज जिस काम के लिए मैंने आप लोगों को यहां बुलाया है वह निहायत जरूरी है और उसमें देर करना खतरनाक होगा।

काशीजी के गंगा तट वाले रक्त-मंडल के अड्डे पर हमला करने का पूरा पूरा हाल तो आपलोग सुन ही चुके होंगे और यह भी जानते होंगे कि उस हमले का खास कारण यह था कि वे शैतान मिस रोज को पकड़ ले गये थे और इन्हें उनके पंजे से छुड़ाना जरूरी था। मिस रोज उनके कब्जे में कैसे जा पड़ीं यह तो इन्हीं की ज़ुबानी पूरी तरह सुनिएगा मगर संक्षेप में मैं कह देता हूं कि इन्हें रातोंरात मेरे ही नाम का धोखा दे कर वे दुष्ट ले भागे थे। (इतना कहते हुए गोपालशंकर की आंखें रोज की आंखों से जा मिलीं जो केमिल के बगल में बैठी एकटक उनकी तरफ देख रही थी।)

खैर मैंने किसी तरह इस बात का पता लगाया कि मिस रोज फलानी जगह हैं और तब उस मकान पर हमला करने का बन्दोबस्त हुआ जिसमें क्या क्या कार्रवाई हुई और उसका क्या नतीजा निकला यह आप लोगों से छिपा नहीं है। मैं सिर्फ अपना हाल बताए देता हूं।

जब मैं केमिल साहब से बिदा होकर उस मकान को घेर रखने वाले* बाग के अन्दर घुसा तो मैंने एक शेड के नीचे से एक मोटर ट्रक को निकल कर मकान के पिछवाड़े जाते देखा। उस मोटर का पिछला तख्त पकड़ कर मैं लटक गया और वह कुछ दूर जा बहुत बड़े फाटक की राह एक तहखाने में घुस गई। उसके भीतर घुसते ही तहखाने का दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। मोटर की रोशनी बुझ जाने से तहखाने में घोर अंधकार छा गया मगर मैंने अपनी बिजली की बत्ती बाली तो देखा कि नगेन्द्र-नरसिंह सीढ़ी चढ़ता हुआ ऊपर चला जा रहा है। मेरी उसकी दो दो बातें हुईं और उसी समय उसने न जाने क्या तर्कीब कर दी कि उस तहखाने की छत के पास की दीवार में रौशनदानों की तरह बने हुए दो बड़े बड़े गोल छेदों की राह पानी की मोटी धार उसके अन्दर गिरने लगी। उस

* 'शेर की मांद' नामक गल्प का अन्तिम भाग देखिए।

समय एक जंगले के अंदर बन्द मिस रोज की तरफ नगेन्द्रनरसिंह ने दिखाया और मेरा ख्याल उधर बंटते ही वह सीढ़ी चढ़ गायब हो गया तथा रास्ता भी बन्द करता गया। मुख्तसर यह कि मिस रोज को जब तक मैं उस जंगले से निकालूं तब तक तहखाने में घुटने घुटने भर पानी हो गया। वहां से बाहर निकलने का रास्ता कोई दिखता नहीं था और पानी पल पल में बढ़ता जा रहा था।

मैं उस वक्त की अपनी तबीयत का हाल आपसे क्या बताऊं! अपने मरने की मुझे उतनी फिक्र न थी जितना इस बात का ख्याल कि मिस रोज की कीमती जान इस वक्त मेरी सुपुर्दगी में है। इससे भी बढ़ कर यह खयाल सता रहा था कि नगेन्द्र के हाथों जक उठानी पड़ी।

देर तक तहखाने में इधर उधर तैरता रहा, यहां तक कि पानी पाटन के पास तक आ गया। मुझे अपने जीते बचने की बिल्कुल उम्मीद न रही। उस समय अचानक मुझे याद आया कि जिस ढालुएं रास्ते की राह वह मोटर इस तहखाने में आई उसका बाहरी दर्वाजा अवश्य पानी की सतह से ऊंचा होगा। यह सोचते ही मैं मिस रोज को लिए तैरता हुआ उस रास्ते की खोज में फिरने लगा। वह रास्ता एक ढालुईं सुरंग की तरह पर था। तहखाने की तरफ वाला उसका मुंह पानी की सतह के कुछ नीचे पड़ जाने के कारण मुझे उसके खोजने में बहुत कुछ दिक्कत उठानी पड़ी पर आखिर मैंने उसका पता लगा ही लिया परन्तु अफसोस, मेरी नाउम्मीदी का कोई ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि लोहे का एक जंगला सुरंग के मुंह को बन्द किए हुए है और उसके अन्दर जाने की कोई तर्कीब नहीं हो सकती। उस समय सचमुच ही मैं अपनी जिन्दगी से पूरी तरह पर नाउम्मीद हो गया।

मगर फिर भी मैंने हिम्मत न छोड़ी और बराबर इधर से उधर तैरता हुआ अपनी टार्च की मदद से निकल जाने की कोई राह तलाश करता ही रहा। पानी की सतह इस समय उन छेदों के पास तक जा पहुंची थी

जिनकी राह जल आ रहा था। मैं समझता हूं उस समय तहखाने में बारह तेरह फुट से कम पानी न रहा होगा, खैर तैरता हुआ मैं उन दोनों छेदों के पास गया जिनमें से पानी आ रहा था। बहुत मुश्किल से उचक कर मैंने छेद के किनारे को पकड़ा और तब उसके भीतर टार्च की रोशनी डाली। वह लगभग डेढ़ हाथ मोटे एक पाइप का मुंह था। मैंने देखा कि पानी की अवाई कम हो गई है, पहिले की तरह पूरा भर कर पानी इस पाइप से नहीं आ रहा है बल्कि पाइप ऊपर की तरफ से आधे से ज्यादा खुला हुआ है। पाइप की लम्बाई आठ फुट के करीब होगी और उसके दूसरे अर्थात् बाहरी सिरे पर एक तालाब या हौज की तरह बना हुआ कुछ दिखाई पड़ रहा था।

अब मैं ज्यादा आपसे क्या कहूं, बस यही समझिए कि किसी तरह अपनी जान पर खेल कर मैं मिस रोज को लिए उस डेढ़ हाथ मोटे नलके में से दम रोके हुए घसिटता हुआ बाहर निकला। जिस तरह की तकलीफ मुझे हुई मैं ही जानता हूं। सांस रोके रोके फेफड़ा मालूम होता था फट जायगा, पल पल में जान पड़ता था मैं बेहोश हो जाऊंगा, पर जिन्दगी बची थी और आप लोगों की कुछ खिदमत करनी बाकी थी इसी से किसी तरह उस भयानक रास्ते को तय करके उस पार निकल ही गया।

अब जिस जगह मैंने अपने को पाया वह एक लम्बा चौड़ा हौज था जो मकान की दीवार से सटा हुआ बना और ऊपर से खुला था। गंगा से उस हौज तक पानी आने के लिए एक चौड़ी नाली बनी हुई थी परन्तु इस समय उसका मुंह बन्द था और इसी से हम दोनों की जान बच गई थी। हौज का पानी उस छेद की राह नीचे के तहखाने में गिर कर हौज करीब करीब खाली हो गया था और इसी से पानी ले जाने वाले दोनों पाइप भी खाली हो चले थे नहीं तो अगर गंगाजी वाली नाली खुली रहती और हौज में उधर से पानी आता रहता तब तो तहखाने की छत तक पानी भर जाता और हम लोग किसी तरह भी जीते न बचते।

केमिल०। हां ठीक है, हम लोगों ने उस हौज को देखा था पर हमें यह गुमान बिल्कुल न हुआ कि यह ऐसे भयानक काम के लिए बना हुआ है। मगर हां यह तो बताइये कि जब आप सही सलामत बाहर निकल ही आए तो फिर हम लोगों से मिले क्यों नहीं? मैं समझता हूँ कि जिस समय आप बाहर आए हैं उस समय मैं उसी मकान में मौजूद रहा होऊंगा। आप कितनी देर के बाद उस तहखाने के बाहर निकले थे?

गोपाल०। मैं बिल्कुल नहीं कह सकता, क्योंकि समय का मेरा ज्ञान एकदम लुप्त हो गया था। जब तक मैं तहखाने में रहा मुझे एक एक पल एक एक युग के समान मालूम होता था।

थामसन०। ठीक है, जरूर ऐसा ही हुआ होगा, मैं आपकी उस समय की अवस्था को अच्छी तरह सोच सकता हूं जिसका खयाल करने से ही रोंगटे खड़े होते हैं। फिर भी आपकी हिम्मत को धन्य है। मैं आपकी जगह होता तो शायद डर और घबराहट से बेहोश ही हो जाता!

फर्गूसन०। इसमें क्या शक है!

गोपाल०। अगर मैं अकेला होता तो शायद मेरी भी वही हालत होती मगर मिस रोज के बचाने का खयाल मुझे हिम्मत दिला रहा था। (इतना कह गोपालशंकर ने पुनः रोज की तरफ देखा जिसने आंखें नीची कर लीं) खैर इस बात को जाने दीजिये और आगे की कथा सुनिए। तहखाने से निकल कर मेरा खयाल पलटा। मैं यह सोचने लगा कि अब अगर मैं अपने साथियों से न मिल कर बाला बाला ही कहीं जा छिपूं तो मेरे दोस्त और दुश्मन सभी यानी आप लोग भी और रक्त-मंडल वाले भी यही समझेंगे कि मैं तहखाने में डूब कर मर गया। वैसी हालत में वे लोग मेरी तरफ से निश्चिन्त हो जायंगे और मुझे अपनी कार्रवाई में बहुत मदद मिलेगी। यद्यपि मेरे दोस्तों को मेरे लिए कुछ तरद्दुद जरूर होगा मगर जिस काम का हम लोगों ने बीड़ा उठाया है वह बहुत खूबसूरती से पूरा हो सकेगा। वैसा करने में कोई दिक्कत थी तो सिर्फ इस

बात की कि मिस रोज का क्या होगा ? अगर मैं इन्हें छोड़ देता हूं तो जरूर सब भंडा फूट जायगा क्योंकि ऐसा तो हो ही नहीं सकता था कि उस खूनी तहखाने के अन्दर से मिस रोज सही सलामत निकल आवें और मैं न निकलूं। मिस रोज को देखते ही रक्त-मंडल वाले समझ जाते कि मैं भी जरूर बच गया और कहीं छिपा होऊंगा । वैसी हालत में मेरी कार्रवाई ठीक न उतरती। तब फिर क्या किया जाय ? मैंने अपने तरद्दुद का हाल मिस रोज से कहा और मैं इनका शुक्रगुजार हूं कि इन्होंने झट मेरा आशय समझ लिया और हिम्मत के साथ कुछ दिनों के लिए दुनिया के पर्दे से लोप हो जाना स्वीकार कर लिया। बस हम दोनों उठ खड़े हुए और छिपते छिपाते किसी तरह गंगा तट तक पहुंच गये जहां से किसी की नजर पर चढ़े बिना काशी पहुंच जाना रात का समय होने के कारण बहुत मुश्किल न था।

दूसरा दिन हम लोगों ने काशी में काटा। वहीं मैंने सुन लिया कि रक्त-मंडल के सब आदमी निकल भागे और कोई भी नहीं पकड़ा गया। मेरे और मिस रोज के भी मारे जाने या रक्त-मंडल के हाथ पकड़ जाने की जो अफवाह उड़ी उसे भी हम लोगों ने कौतूहल के साथ सुना। वहां से हम लोग आगरे आये जहां मुझे कई जरूरी इन्तजाम करने थे, और वहां से भी निपट कर हम दोनों सीधे (कुछ पीछे की तरफ हट कर बैठे हुए राजा गिरीशविक्रम की तरफ दिखा कर) इन राजा साहब की रियासत में पहुंच गये। यहां पर मैं कह देना चाहता हूं कि ये राजा साहब मेरे बहुत पुराने दोस्तों में से हैं और स्कूल तथा कालेज के दिनों में हम लोग लंगोटिया साथी थे।

थामसन, फर्गूसन और केमिल वगैरह ने यह सुन घूम कर राजा साहब की तरफ देखा मगर उनकी निगाहों में एक रूखापन था जिसे गोपालशंकर पहिले ही लक्ष्य कर चुके थे। उनकी और राजा साहब की चार आंखें हुईं और इसके साथ ही वे दोनों खिलखिला कर हंस पड़े।

थामसन ने यह देख ताज्जुब से पूछा, "यह क्या ? आप यकायक
हंसे किस बात पर ?"

गोपाल०। आप लोग जिस निगाह से राजा साहब को देखते चले
आए हैं और अब भी देख रहे हैं इस पर ! आप लोग शायद समझते होंगे
कि राजा साहब दुश्मनों से मिले हुए हैं और हम लोगों के विपक्षी हैं ?

फर्गूसन०। तो क्या इसमें भी कोई शक है ?

थामसन०। जिस चीठी ने मुझे यहां आने पर मजबूर किया उसमें
अगर यह साफ साफ लिखा न होता—"यहां आपको कुछ ऐसे आदमी भी
दिखाई पड़ेंगे जिनकी मौजूदगी नागवार मालूम होगी मगर आप उनसे
बिल्कुल रोक टोक न कोजिएगा" तो शायद या तो मैं ही यहां से हट
जाता या राजा साहब को ही वैसा करना पड़ता।

गोपाल०। (पुनः हंस कर) ठीक है, और मैंने इस बात को समझ
कर ही वैसा आप सभों को लिखाया था मगर खैर घबड़ाइये नहीं, आगे
का हाल सुनने ही से आप जान जांयगे कि राजा साहब ने कैसी खूबसूरती
से अपना पार्ट अदा किया और आप लोगों ने आदमी पहिचानने में
कितनी भारी भूल की।

थामसन०। अच्छा तो फिर जल्दी कहिए की क्या बात है ?

गोपाल०। मैं कहता हूं। मैंने अपने इस अज्ञातवास के लिए अपने
शहर से इतनी दूर जो धरमपूर को चुना इसके कई कारण थे। एक तो यह
कि आगरे या काशी में रह कर अपने को रक्त-मंडल के धूर्त जासूसों की
निगाह से छिपाए रहना असम्भव था, दूसरे इन राजा साहब से भी एक काम
लेना था, तीसरे रक्त-मंडल के किले के पास रहने पर यह उम्मीद थी कि
उसका भी कुछ भेद जान सकूंगा। आप लोगों से यह कहते मुझे बहुत
प्रसन्नता होती है कि मुझे इन तीनों ही कामों में आशातीत सफलता मिली।

मुझे यह विश्वास हो गया था कि जब तक हमारा कोई आदमी रक्त-
मंडल के साथ घुल मिल कर नहीं बैठेगा तब तक हमलोग उनके भीतरी भेदों

को न तो अच्छी तरह जान ही सकेंगे और न उसको परास्त ही कर सकेंगे। आप लोगों के जासूसों से यह काम होना मुश्किल था। इसके लिए कोई ऐसा एक दम नया आदमी खोजना चाहिए था जिस पर रक्त-मंडल को किसी तरह का शक न हो सके। इस काम के लिए मैंने राजा गिरीशविक्रम को चुना। आप लोगों को शायद न मालूम होगा कि मैं, लार्ड गेवर, और ये राजा गिरीशविक्रम, तीनों ही इंग्लैण्ड में सहपाठी और जिगरी दोस्त रह चुके हैं—अस्तु मेरा इन दोनों ही पर काफी जोर था। मेरे ही कहने से इन्होंने भारत सरकार के खिलाफ विरोध का झंडा खड़ा किया और सरकार के बागियों में गिना जाना पसंद किया। आज तक लार्ड गेवर अथवा मैंने इस मामले की ठीक ठीक खबर किसी को भी नहीं दी थी, आज पहिले पहिल आप लोग यह बात सुन रहे हैं।

फर्गूसन०। अच्छा! तो यह सब आप लोगों की मिली जुली और एकदम बनावटी कार्रवाई थी?

थामसन०। ओह, और इसके कर्ता-धर्ता आप थे! मैं खुद ताज्जुब करता था कि राजा गिरीशविक्रम जो कभी हमारे छोटे लाट के दोस्त थे अचानक ऐसा पलट क्यों गए, क्योंकि मैं इनके स्वभाव से परिचित था, मगर इसका कारण मैंने रक्त-मंडल को समझा। इस बात का मुझे गुमान भी न हुआ कि इस कार्रवाई के अन्दर आप छिपे हुए हैं!

गोपाल०। (हंस कर) आपने कारण को कार्य बना देने की भूल की! इनको सरकार का विपक्षी बना कर मैंने रक्त मंडल को अपने चंगुल में लाने की उम्मीद की थी क्योंकि इनकी रियासत रक्त-मंडल के किले ज्वालामुखी के सब से पास पड़ती है और इन्हें अपने हाथ में करने का कोई मौका वे लोग जाने न देंगे यह मेरा विश्वास था, और मेरा खयाल सही भी निकला। इन्होंने विद्रोह कर दिया है इस बात की सुनगुन पाते ही उसके जासूस इनके पास आने लगे और धीरे धीरे इनकी उनकी घनिष्ठता होने लगी। किस किस तरह क्या क्या हुआ यह तो अब आप लोग राजा

साहब की ही ज़ुबानी सुनिएगा पर मैं सिर्फ इतना कहे देता हूं कि धीरे धीरे राजा साहब का आना जाना उनके किले में हो गया और ये उनके पूरे विश्वासपात्र बन गए। इनकी मदद से मुझे दो तीन बातें ऐसी मालूम हुईं कि जो कभी जानने में नहीं आ सकती थीं और जिन्हें जान कर मुझे उम्मीद होने लगी है कि अब रक्त-मंडल पर हम लोग अवश्य विजयी हो सकेंगे।

इतना कह कर गोपालशंकर थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। थामसन यह देख उठ खड़े हुए और राजा गिरीशविक्रम के पास जाकर अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ाते हुए बोले, "राजा साहब, माफ कीजिएगा, हम लोगों ने आप पर अविश्वास कर बहुत बड़ा अन्याय किया, मगर हम लोग बहुत बड़े धोखे में डाले गए थे अस्तु आपको इसके लिए अधिक दु:खी न होना चाहिए!"

राजा गिरीशविक्रम ने उठ कर हंसते हंसते उनसे हाथ मिलाया और सब बाकी लोगों ने भी उनसे हाथ मिलाया। इसके बाद फिर सब लोग अपनी अपनी जगह बैठ गए।

केमिल०। अच्छा अब आप अपने हवाई जहाज के बारे में कुछ बताइये कि किस तरह ऐसी विचित्र चीज बनाने में आप सफल हुए?

गोपाल०। मेरा हवाई जहाज 'श्यामा' वही है जिसे एक बार रक्त-मंडल वालों ने पकड़ लिया था*। उस समय तक मैं ऐसा 'एग्ज्हास्ट' बनाने में सफल हो चुका था जो इञ्जिनों की आवाज को बिल्कुल कम कर देता था, अब उसे अलोप करने में भी मैं सफल हो गया हूँ। बहुत दिनों से मैं इस फिक्र में था कि कोई ऐसी तर्कीब निकाली जाय जिससे चीजें आदमी की आंखों की ओट हो सकें और इस सम्बन्ध में आंशिक सफलता भी पा चुका था। पूरा पूरा हाल और इसकी वैज्ञानिक व्याख्या तो मैं फिर कभी करूंगा जब समय की कमी न होगी, पर संक्षेप में बताए देता हूं कि श्यामा को अलोप करने के लिए मैं तीन प्रकार के उपाय काम में लाता हूं। एक तो

---

* पहिले भाग की 'मृत्यु-किरण' नामक गल्प देखिए।

यह है कि मैंने उसके भीतर एक यन्त्र ऐसा लगाया है जिसके द्वारा जिस रंग का धूआं मैं चाहूं पैदा कर सकता हूं। मान लीजिए कि मैं नीले आकाश में विचरण कर रहा हूं—जगह जगह बने हुए हजारों छेदों की राह निकला धूआं 'श्यामा' के अंग प्रत्यंग से निकल कर उसे नीले आवरण से ढक देता है और तब नीले आकाश में से उसे खोज निकालना कठिन हो जाता है। इसी तरह मिट्टी, बादल, घास की हरियाली, इत्यादि रंगों की भी मैं नकल कर सकता हूं। एक तर्कीब तो यह हुई, मगर दूसरी इससे बिलकुल भिन्न ही ढंग पर काम करती है। प्रत्येक वस्तु जो हमें दिखाई देती है इसका कारण क्या है? सिर्फ यही कि उस पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें उस पर से टकरा के लौटती और हमारी आंखों पर असर करती हैं। अगर हम कोई ऐसा मसाला बना सकें जो प्रकाश की उन सब किरणों को जो उस पर पड़ें हजम कर जा सके, लौटने न दे, तो वह चीज हमलोगों की आंखों को दिखाई न पड़ेगी या बहुत मुश्किल से दिखेगी। 'श्यामा' को गायब करने की दूसरी तर्कीब मैंने यही की है। उसके प्रत्येक बाहरी हिस्से बाडी विंग आदि पर मैंने अपनी ईजाद एक वार्निश लगाई है जो प्रकाश की किरणें पचा जाने में समर्थ है अर्थात् जिस समय उस वार्निश के अन्दर से बिजली का प्रवाह चलाया जाता है उस समय उस पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें वापस नहीं लौटतीं हजम होती जाती हैं और इसी कारण कुछ दूर पर से उसे देखना कठिन हो जाता है। परन्तु इन दोनों से बढ़ कर मेरी तीसरी तर्कीब सफल हुई है जो उच्च वैज्ञानिक तथ्यों की सहायता से काम करती है और जिसका भेद अभी मैं आप लोगों को न बताऊंगा फिर कभी मौका आने पर देखा जायगा।

थामसन०। खैर हम लोग उसे जानने के लिए दवाव भी नहीं डालते, आपकी जब इच्छा हो तब बताइएगा। मुझे तो सिर्फ इस बात से मतलब है कि अगर आपके 'श्यामा' की तरह के दस हवाई जहाज भी हम लोगों के पास हो जायं तो हम लोग रातो-रात उस कम्बख्त किले 'ज्वालामुखी'

को गारत कर सकते हैं।

गोपाल०। बेशक, और इसीलिए मेरी इच्छा है कि जहां तक जल्द हो सके 'श्यामा' की नकल के कुछ वायुयान तैयार कर लिये जायं। परन्तु इधर मेरे मित्र ये राजा गिरीशत्रिक्रम रक्त-मंडल के किले में जाकर हम लोगों के लिए और भी एक बड़ी ही कोमती बात का पता लगा लाए हं।

थामसन०। वह क्या ?

गोपाल०। (गिरीशविक्रम की तरफ देख के) आप ही इन लोगों को बताइये राजा साहब।

राजा०। वह बात यह है कि रक्त-मंडल ने जिस मृत्यु-किरण का आविष्कार किया है वह दूर दूर पर ही काम कर सकती है बहुत नजदीक या एक दम सर पर उससे कोई काम नहीं लिया जा सकता।

थामसन०। (चौंक के) इसका क्या मतलब ?

राजा०। यह कि अगर हमारा कोई वायुयान 'ज्वालामुखी' के ठीक सिर पर पहुंच जाय तो वहां से वह बेखटके बम गिरा सकता है। उस समय ये मृत्यु-किरणें उसका कोई भी नुकसान न कर सकेंगी।

यह बात सुनते ही सब लोग बेहद खुश हो गए और "हैं! यह बात है!! वाह, फिर क्या है? अब ये सब कहां जा सकते हैं!!" इत्यादि इत्यादि का सुर बांधने लगे। थोड़ी देर बाद गोपालशकर ने कहा, 'इस बात को जान कर और श्यामा के अलोप होने की सफलता देख कर ही आज मैंने आप लोगों को यहां बुलाया है। मैं चाहता हूं कि आज हम लोग यहीं पर युद्ध का एक ऐसा प्रोग्राम तैयार कर लें कि कम्बख्त दुश्मनों को अवश्य ही नीचा देखना पड़े। बड़े लाट से मैं मिल चुका हूं और उन्होंने सब बातें मेरी इच्छानुसार होने देने का वादा भी कर दिया है अस्तु अब उनसे कुछ पूछने की जरूरत नहीं। मैंने खुद जो कुछ इस विषय में सोचा है वह मैं आपसे कहता हूं उसे सुन कर आप लोग अपनी राय दें और तब तुरत ही और यहीं पर एक निश्चित मत कायम कर लिया जाय।

सब लोग आपस में सलाह करने लगे।

दो घंटे के ऊपर समय तक यह कुमेटी होती रही। इस बीच क्या क्या बातें हुईं और क्या क्या करने का निश्चय हुआ यह सब कुछ आगे चल कर हमारे पाठकों को मालूम ही हो जायगा, हाँ इतना हम इस जगह बता सकते हैं कि मिस रोज के बारे में यह निश्चय हुआ कि वे अभी और कुछ दिनों तक मिस्टर केमिल के पास न रह कर कहीं अन्यत्र ही रहें ताकि उनको देख रक्त-मंडल को गोपालशंकर के भी जीते रहने का संदेह न होने पावे। एडवर्ड (मिस्टर केमिल का भतीजा) कुछ दिनों तक गोपालशंकर के साथ रह कर 'श्यामा' के चलाने की तर्कीब जान ले और उसकी भिन्न भिन्न विशेषताओं से अवगत हो जावे, यह भी स्थिर हुआ।

सलाह मश्विरा समाप्त होने पर सब लोग उठ खड़े हुए। एडवर्ड और गोपालशंकर 'श्यामा' की तरफ बढ़े, बाकी लोग अलग हो कर जो जिधर से आया था उधर जाने के लिए घूमा। उस समय गोपालशंकर को इतना मौका मिला कि मिस रोज से एकान्त में कुछ बातें कर सकें जो उनसे हाथ मिलाने के लिए कुछ सकपकाती हुई सी आगे को बढ़ रही थीं। अपने दोनों हाथों में उन्होंने रोज का मुलायम पंजा दबा लिया और गहरी निगाहों से उसके सुन्दर चेहरे को देखते हुए बोले, "जाता हूँ रोज, अगर जीता रहा तो फिर तुमसे मिलूंगा।"

रोज ने घबड़ा कर कहा, "सो क्यों? सो क्यों?"

गोपालशंकर बोले, "जिस भयानक दल से मैंने युद्ध छेड़ा है वह कब मुझ पर हावी आ जायगा कुछ कह नहीं सकता, हां यह जरूर कह सकता हूं कि अगर जीता रहा तो पुनः तुमसे मिलूंगा और तब तुमसे वह वादा पूरा कराऊंगा जो तुम मुझसे कर चुकी हो!"

रोज का चेहरा लाल हो आया और उसकी निगाह नीची पड़ गई। जरा देर तक वह चुप रही, पर गोपालशंकर की आंखें स्पष्ट रूप से उत्तर मांग रही थीं। आखिर उसने बहुत ही धीरे से कहा, "हां, अगर ब्रिटिश

गवर्नमेंट पर आया हुआ यह तूफान तुम हटा सके तो मैं जरूर अपना वादा पूरा करूंगी।" मगर उसकी आंखें और चेहरा कह रहा था कि जो शर्त वह लगा रही है वह कोई बहुत जरूरी न थी।

गोपालशंकर ने आवेश के साथ उसका हाथ होठों के पास ले जाकर चूम लिया और तब एक दूसरे को प्रेम भरी चितवनों से देखते हुए दोनों अलग हुए। रोज अपने पिता के पास चली गई और गोपालशंकर उस छोटे गरोह की तरफ बढ़े जो अभी भी रुका हुआ शायद इन्हीं की राह देख रहा था।

अचानक गोपालशंकर ने थामसन से कहा, "हां यह तो बताइए कि मैंने कहा था कि नैपाल रेजीडेन्सी का कोई अफसर भी यहां मौजूद रहे,सो क्या कोई आया है?" थामसन ने कहा, "हमारे रेजीडेन्ट मिस्टर ग्रिफिथ खुद आने वाले थे पर ऐन मौके पर घोड़े से गिर जाने के कारण वे चुटीले हो गये ओर आ न सके। उन्होंने अपने दाहिने हाथ इन (रतनसिंह को बतला कर) रतनसिंह को भेजा है जो हमारे बहुत ही विश्वासी आदमी हैं।"

रतनसिंह यह सुनते ही आगे बढ़ आया। गोपालशंकर ने जांचने वाली गहरी निगाह उस पर डाली और तब कहा, "मिस्टर रतनसिंह, मैं चाहता हूं कि आपकी रेजीडेन्सी के कम्पौन्ड के भीतर किसी जगह गुप्त रीति से एक मैदान ऐसा तैयार कर लिया जाय जिसमें मैं जब चाहूं 'श्यामा' को उतार सकूं। वह जगह चारो तरफ से ऐसी घिरी हुई होनी चाहिए कि किसी को मेरे आने जाने का पता न लग सके अर्थात् पेड़ों और झाड़ियों आदि से वह सब तरफ से घिरी और छिपो रहनी चाहिए। क्या ऐसा हो सकता है?"

रतनसिह०। जी हां, क्यों नहीं हो सकता! हमारी रेजीडेन्सी वालों का विचार बहुत दिनों से रेजीडेन्सी ग्राउंड में एक फुटबाल फील्ड तैयार करने का रहा है, उसी बहाने से मैं मुनासिब मौके पर ऐसा मैदान बनवा सकूंगा।

गोपालशंकर ने कहा, "बस बहुत ठीक होगा, मगर खयाल रहे कि यह बात किसी तरह पर न फूटे कि मैं जीता हूं या मेरे वायुयान में फलां फलां गुण हैं अथवा उसी के आने जाने के लिए वह मैदान तैयार कराया जा रहा है।

रतनसिंह ने इसका विश्वास दिलाया और तब गोपालशंकर सभों से बिदा हो एडवर्ड को साथ लिए 'श्यामा' की तरफ बढ़े। सब लोग अपनी अपनी जगहों पर रुक कर उनके वायुयान के उड़ने की राह देखने लगे क्योंकि उन्होंने सभों को बाहर मैदान में आने से मना कर दिया था।

गोपालशंकर वायुयान के अन्दर जा बैठे। उसके पंखों को दो चार चक्कर दे इन्जिन चल जाने पर एडवर्ड भी उनके बगल में जा बैठा। वायुयान ने खरगोश की तरह उछलते हुए दो चक्कर मैदान के लगाये और धीरे धीरे ऊंचा होने लगा। अभी ही उसके इन्जिनों की कोई भी आवाज देखने वालों के कानों में नहीं आ रही थी।

धीरे धीरे 'श्यामा' ऊंचा होने लगा, साथ ही उसका रंग भी धुंधला पड़ने लगा। पंडित गोपालशंकर एडवर्ड को लिए आकाश में गायब हो गए।

जब आस्मान में चारो तरफ अच्छी तरह देखने पर भी 'श्यामा' का कहीं नाम निशान दिखाई न दिया तो मिस्टर थामसन ने संतोष की एक लम्बी सांस लेकर फर्गूसन से कहा, "गजब का आदमी है यह गोपालशंकर भी, मैं समझता हूँ कि आज कल के जमाने में दुनिया का सब से बड़ा वैज्ञानिक यही है!"

फर्गूसन ने कहा, "बेशक, और मुझे विश्वास होता है कि पंडित गोपालशंकर और उनके इस अलोप हो जाने वाले वायुयान 'श्यामा' की मदद से हम लोग उस कम्बख्त रक्त-मंडल पर अवश्य फतहयाबी पा सकेंगे जिसने बरसों से हमारी नाक में दम कर रक्खा है!"

क्या यह सोचना ठीक निकलेगा? क्या गोपालसिंह और 'श्यामा' रक्त-मंडल पर विजय पा सकेंगे?

॥ दूसरा भाग समाप्त ॥

११ वां संस्करण] १९७३ ई० [११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।